भोजपुरी लोक-गीत

[द्वितीय भाग]

सम्पादक

डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय

एम्० ए०, साहित्यरत्न, पी एच्० डी०

शकाब्द १८८८, संवत् २०२३

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक :

श्री मौलिचन्द्र शर्मा

सचिव, प्रथम शासन निकाय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

द्वितीय संस्करण : ११०० प्रतियाँ

शक १८८८, संवत् २०२३

मूल्य : [illegible] .००

मुद्रक :

सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

प्रकाशकीय

वाङ्मय के जिन अंगों में समाज का अतीत बोलता है, उनमें लोकगीतों का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। लोक-गीतों की बोलियाँ समय के साथ बदलती रहती हैं परन्तु विषयों की प्राचीनता बहुत कुछ बनी रहती है। विषय और उसकी विविधता की दृष्टि से इन गीतों का विपुल साहित्य है। बीसवीं शती में जब साहित्य के इतिहासिक परिशीलन की ओर विद्वानों का ध्यान गया तब गीतों के क्रमबद्ध संकलन और संपादन की ओर भी कुछ साहित्य-अध्येताओं की दृष्टि आकृष्ट हुई। हिन्दी में इस प्रकार का पहला काम पं० रामनरेश त्रिपाठी ने किया था, तब से लेकर अब तक हिन्दी में लोकगीतों के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण काम हुआ है और अनेक जनपदीय लोकगीतों के संकलन और अध्ययन प्रकाशित हुए हैं। सम्मेलन ने हिन्दी की जिन तीन मैथिली, राजस्थानी और भोजपुरी उपभाषाओं के लोकगीत प्रकाशित किये हैं वे अत्यधिक लोकप्रिय और साहित्य की दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

भोजपुरी लोकगीतों का संकलन दो भागों में प्रकाशित है। इसका मुख्य कारण गीतों का प्राचुर्य तथा भाषा का लम्बा क्षेत्र और उसकी उर्वर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। इन गीतों में भाषा की मधुरता और भावों का रसवाही निर्झर हृदय-सम्पन्न प्रत्येक पाठक को सराबोर कर देता है। लोकगीत स्वतः ही भाव-सम्पन्न होते है, पुनः उनमें भोजपुरी भाषा का संयोग उनकी मधुरता को और भी बढ़ा देता है। ग्रंथ के द्वितीय भाग का यह द्वितीय संशोधित, परिवर्द्धित संस्करण है इसमें २७ से अधिक विषयों के गीत सुबोध अनुवाद के साथ संकलित हैं। प्रथम भाग में भोजपुरी भाषा एवं गीतों की विषयगत पृष्ठभूमि पर विद्वत्तापूर्ण विवेचन के साथ प्रमुख विषयों के गीतों का संकलन है।

लोकगीत अब तक मौखिक साहित्य रहा है। इसके लिखित न होने के कारण इसके संकलन का कार्य अत्यन्त श्रम से ही साध्य हुआ है, लेकिन अब भी लोकगीतों का बहुत सारा साहित्य अलिखित और बिखरा पड़ा है, जिसके संकलित करने के लिए पूरी लगन और निःस्वार्थ श्रम की अपेक्षा है। डा० कृष्णदेव उपाध्याय को जिस प्रकार की अड़चनों का सामना भोजपुरी लोकगीतों के संग्रह कार्य में करना पड़ा है, उनका उल्लेख उन्होंने अपने वक्तव्य में किया है। इन अड़चनों का अनुभव कर यही कहा जा सकता है कि साहित्य के निःस्वार्थ जिज्ञासु ही इस महत्त्वपूर्ण कार्य को करने में क्षम हो सकते हैं।

आशा है, यह परिवर्द्धित, संशोधित संस्करण पाठकों एवं अनुसन्धानकर्त्ताओं के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

मौलिचन्द्र शर्मा
सचिव
प्रथम शासन निकाय

भूमिका

"सुहृद-संघ" के अधिवेशन में मैंने ग्राम्य-गीतों के सम्बन्ध में कहा था—

"इन सरल पदों में देश की यथार्थ दशा वर्णित है। यहाँ की संस्कृति इनमें संरक्षित है। सभ्यता तो बाह्य आडम्बर है, कल तुर्कों की थी, आज अंग्रेजों की है। भारतीयता हमारे गाँव के रहने वालों में है, जो शहरों के क्षण-भंगुर आभूषणों से अपने स्वाभाविक रूप को छिपा नहीं चुके हैं; जिनमें युगों से वेदना सहने की शक्ति है, जो सुख-दुःख में, हर्ष-विषाद में, जगत्स्रष्टा को भूलते नहीं हैं; जो वर्षा के आगमन से प्रसन्न होते हैं, जो खेतों में जाड़े-गर्मी में, प्रकृतिदेवी के निकट अपना समय बिताते हैं। इन गानों में हम मनुष्य के जीवन के प्रत्येक दृश्य को देखते हैं, कन्या के ससुराल चले जाने पर माता के करुण स्वर सुनते हैं, पुत्र के जन्म पर माता-पिता के आनन्द की ध्वनि पाते हैं, खेतों के बह जाने पर हताश किसान के क्रन्दन, ब्याह के अवसर पर बधाई के गान, गृहिणी के विरह की व्यथा, सन्तान की असामयिक मृत्यु पर मूक वेदना—अर्थात् मानव जीवन की नैसर्गिक कविता का रसास्वादन करते हैं।"

ग्राम्य-गीतों के कई संग्रह इधर प्रकाशित हुए हैं। सम्मेलन ने "मैथिली लोकगीत" प्रकाशित कर एक बहुत बड़ी कमी पूरी की। अब भोजपुरी के गीतों का विशद सङ्कलन प्रकाशित हो रहा है। हमारा लोकसाहित्य इस प्रकार सुरक्षित और सुप्रचलित होगा। पण्डित कृष्णदेव जी उपाध्याय ने जिस परिश्रम और लगन से इस महत्त्वपूर्ण कार्य को समाप्त किया है, वह प्रशंसनीय है।

इस पुस्तक को पढ़ने से यह स्पष्ट हो जायगा कि हमारे भिन्न-भिन्न प्रान्तों में किस उच्च श्रेणी की कविता है जो अब तक पुस्तकों में संगृहीत नहीं है। इनमें हमारे सामाजिक जीवन की कितनी अच्छी झलक मिलती है। इस जीवन में कितनी स्वाभाविकता है। इन पदों में कितना रस है, शब्दों का आडम्बर कहीं नहीं, और न कहीं अलङ्कार की खोज।

उपाध्यायजी ने लगभग एक सौ पृष्ठ की टिप्पणियाँ लिखकर पुस्तक की उपयोगिता बहुत बढ़ा दी है। इनसे प्रान्तान्तर के निवासियों को गीतों को समझने में सहायता मिलेगी। आशा है कि साहित्य-जगत् इस पुस्तक का आदर करेगा।

हिन्दू विश्वविद्यालय
काशी
१७।५।४८

अमरनाथ झा

समर्पण-पत्र

जिन्होंने बचपन में गीत गा-गा कर बड़े प्रेम से मुझे सुलाया था; जिन्होंने जवानी में विविध प्रकार की सेवाओं से इस शरीर को संवर्धित किया था; जिनका हृदय प्रेम, करुणा तथा दया का असीम आगार था, जिनके असामयिक निधन से मेरे जीवन की अनेक अभिलाषाएं सदा के लिए विलीन हो गईं तथा जो अपने इस प्यारे पुत्र को बिलखती छोड़कर परमधाम को चली गईं—

उन्हीं

परम-पुत्र-वत्सला, प्रेममयी माँ

श्रीमती मूर्तिदेवी जी

के चरण-कमलों में यह तुच्छ कृति

सादर, सप्रेम समर्पित

—तुम्हारा अनाथ पुत्र

"सरवन"

विषय-सूची

वक्तव्य

किसी देश के लोक-गीत उस देश की जनता के हृदय के उद्‌गार हैं। वे उनकी हार्दिक भावनाओं के सच्चे प्रतीक हैं। यदि किसी देश की सभ्यता का अध्ययन करना हो, तो सर्वप्रथम उनके लोक-गीतों का अध्ययन आवश्यक होगा। लोक-गीत जन-समाज की वस्तु है, अतः उनमें जनता का हृदय लिपटा रहता है। ये गीत कृत्रिमता से कोसों दूर रहते हैं; गाँव के 'अशिक्षित' कवि के हृदय में जो भाव उमड़ पड़ते हैं, उन्हें वह टूटी-फूटी अगेय पंक्तियों में गाने लगता है, वही लोक-गीत का रूप धारण कर लेते हैं। अतः इस कविता में एक स्वाभाविक स्वच्छन्दता रहती है, जो काव्य-कला में निपुण कवियों की पंक्तियों में नहीं मिल सकती। कविता किसी विशेष उद्देश्य को लेकर लिखी जाती है—चाहे उसका उद्देश्य कवि के आश्रयदाता को प्रसन्न करना होता हो अथवा नायिका-भेद का वर्णन आदि। वह अलंकार के बोझिल भार से दबी हुई रहती है तथा छन्दशास्त्र की नपी-तुली संकुचित नालियों से होकर प्रवाहित होती है। परन्तु लोक-गीत अथवा ग्राम-गीत का एकमात्र उद्देश्य 'स्वान्तः सुखाय' होता है। फागुन के मादक मास में मस्त भोजपुरिया जवान जब मस्ती में आकर होली या 'फगुआ' गाने लगता है, तब वह कुछ समय के लिए अपनी सुध-बुध खो देता है और तन्मय होकर झूमता दिखाई पड़ता है। इसी प्रकार चैत्र के रमणीय दिनों में 'चैती' या 'घाँटी' गाने वाला व्यक्ति 'अरे हमरी अटरिया हो रामा, सुगना बोले हो' का मधुर राग अलापता हुआ अपने को भूल-सा जाता है। कहने का आशय यह है कि लोक-गीत जनता की सम्पत्ति होने के कारण उनकी संस्कृति के दर्पण हैं; अतः इन गीतों का अध्ययन इस दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है।

भारतवासियों का जीवन सदा से संगीतमय रहा है। संसार में शायद ही कोई दूसरी जाति होगी, जिसके जीवन पर संगीत का इतना प्रचुर प्रभाव पड़ा हो। प्रत्येक उत्सव, पर्व और त्योहार के अवसर पर समयोचित गीत गाकर मनोविनोद करना हमारी दिनचर्या का एक आवश्यक अंग है। पुत्र-जन्म, यज्ञोपवीत, विवाह और द्विरागमन आदि समस्त उत्सवों के अवसरों पर स्त्रियाँ अपने कोमल कलकण्ठों से रमणीय गीत गाकर अपना तथा उपस्थित जनमण्डली का पर्याप्त मनोरंजन किया करती हैं। विभिन्न मासों में ऋतुओं के अनुसार विभिन्न गीत गाये जाते हैं; जैसे—सावन के मन भावन मास में कजली गाई जाती है, तो फागुन के मस्त महीने में होली। इस प्रकार संस्कार सम्बन्धी तथा ऋतु सम्बन्धी गीतों की हमारे यहाँ प्रचुरता है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी गीत हैं, जो इन उपर्युक्त दोनों श्रेणियों से पृथक् हैं। इन गीतों को जाति-विशेष के लोग ही प्रायः गाते हैं; जैसे—बिरहा को प्रायः अहीर लोग गाते हैं और पचरा को दुसाध जाति के व्यक्ति। इस प्रकार ग्राम-गीतों की इतनी अधिकता है कि इनका वर्णन करना कठिन है।

हमारी ऐसी धारणा है कि भारतवर्ष ग्राम-गीतों की सम्पत्ति में संसार के अन्य देशों से सबसे अधिक धनवान् है और भारत के अन्य प्रान्तों की अपेक्षा 'भोजपुर' प्रान्त की उर्वरा भूमि इस विषय में सबसे अधिक समृद्धिशालिनी है। भोजपुरी भाषा में ग्राम-गीतों का अनन्त भाण्डार भरा पड़ा है, जिनका संग्रह करने के लिए साहित्य-सेवकों की एक सेना की आवश्यकता है। इन गीत-रत्नों को प्रकाश में लाना आवश्यक ही नहीं ; परन्तु हमारा पवित्र धर्म भी है।

ग्राम-गीतों के संग्रह की उपेक्षा

इन गीतों के प्रति हमारी अत्यन्त उपेक्षा चिर-काल से चली आ रही है। हमने इन गीतों को उपेक्षित दृष्टि से ही नहीं देखा, प्रत्युत इनका तिरस्कार भी किया, जिसके फलस्वरूप न जाने कितने अनमोल गीत-रत्न सदा के लिए विलुप्त हो गये। हमने इन गीतों को संग्रह करने के लिए आज तक भी कोई विशेष यत्न नहीं किया है। जहाँ इंगलैण्ड में इन गीतों के संरक्षण तथा संग्रह के लिए 'फोक लोर सोसाइटी' स्थापित हैं, वहाँ इस देश में इसकी अभी चर्चा तक नहीं है। जहाँ पाश्चात्य देशों में इस 'जन-साहित्य' के अध्ययन के लिए अनुसन्धान-कर्ता विद्वानों की मण्डली काम कर रही है, वहाँ इस देश में ये गीत अनुसन्धान की कोटि में भी नहीं आते। इस दिशा में बंगाल में डाक्टर डी० सी० सेन की अध्यक्षता में बहुत कुछ कार्य हुआ है ; परन्तु भोजपुरी में तो अभी इसका श्रीगणेश ही समझना चाहिए। यह हर्ष का विषय है कि समय के परिवर्तन के साथ ही लोगों की मनोवृत्ति में भी परिवर्तन हो चला है और कुछ अधिकारी विद्वानों का ध्यान इन गीतों के संग्रह तथा प्रकाशन की ओर आकृष्ट हुआ है।

सर्वप्रथम इन भोजपुरी लोक-गीतों के संग्रह तथा प्रकाशन की ओर भाषा-शास्त्र के उत्कट विद्वान् तथा परम गुणग्राही मनीषी डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन का ध्यान आकृष्ट हुआ, जिन्होंने कुछ गीतों का संग्रह कर 'रायल एशियाटिक सोसाइटी' की पत्रिका (सन् १८८५ और ८६) में अनुवाद के साथ छपवाया। परन्तु ग्राम-गीत के संग्रह का सर्वप्रथम सामूहिक प्रयास पं० रामनरेश त्रिपाठीजी का था, जिन्होंने इस प्रान्त के ही नहीं, बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में घूमकर कई हजार गीतों का संग्रह किया और अपने संगृहीत गीतों में से कुछ चुने हुए गीतों का संग्रह इन्होंने अपनी कविता-कौमुदी में 'ग्राम-गीत' के नाम से छपवाया। त्रिपाठीजी का यह कार्य सुतरां प्रशंसनीय है तथा इन गीतों की ओर जन-रुचि को आकृष्ट करने का श्रेय उन्हीं को है। परन्तु, त्रिपाठीजी का यह संग्रह शुद्ध भोजपुरी-गीतों का संग्रह नहीं है, बल्कि इसमें भोजपुरी के साथ ही खड़ी बोली तथा अवधी के भी गीत मिले हुए हैं। इन गीतों का बहुत कुछ संग्रह डाक्टर उदय-नारायण तिवारी एम०ए०, डि-लिट् ने अपनी डाक्टरेट की थीसिस के संबंध में किया था ; परन्तु दुःख है कि उनका यह संग्रह अभी प्रकाशित नहीं हुआ है। अभी हाल ही में 'भोजपुरी-ग्राम-गीतों में करुण-रस' नामक पुस्तक भी छपी है, जिसमें भोजपुरी के बहुत से गीतों का संग्रह किया गया है। इस संग्रह में गीत तो बहुत हैं; परन्तु उनका संग्रह वैज्ञानिक-पद्धति से नहीं किया गया है। फिर भी संग्रहकर्ता हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। उनका परिश्रम श्लाघनीय है। परन्तु, इन गीतों का सर्व-

प्रथम वैज्ञानिक पद्धति से संग्रह तथा प्रकाशन का कार्य इन पंक्तियों के विनम्र लेखक ने किया है, जिसकी चर्चा आगे की जायेगी।

लोक-गीतों की ओर मेरा सर्वप्रथम झुकाव

मेरे साहित्यिक जीवन के अरुणोदय में मेरी भी प्रवृत्ति इन ग्रामगीतों के प्रति कुछ विशेष नहीं थी। सावन में कजली और चैत मास में चैती सुनता था और आनन्द भी लेता था; परन्तु इन ग्रामीण गीतों के पीछे इस काञ्चन काया को जेठ की दुपहरी में, साँय-साँय कर चलने वाली 'लू' में जलाना पड़ेगा, इसका कभी स्वप्न में भी विचार नहीं आया था। परन्तु एक ऐसी घटना हुई, जिसके कारण मेरे साहित्यिक जीवन की धारा में प्रत्यावर्तन हुआ और तब से मैं इन ग्राम-गीतों के पीछे पागल बन बैठा।

कुछ वर्ष हुए कि मेरी छोटी बहन श्रीमती जानकी देवी का विवाह हुआ। जब उसके गवने का दिन समीप आया, तब मेरी पूजनीया माताजी ने उसे कुछ गीतों को लिखा दिया, जिससे ससुराल में जाने पर विशेष उत्सवों पर उन्हें गाया जा सके। तब से उन गीतों की कापी मेरी बहन के पास पड़ी रही। कुछ दिनों के बाद जब मैं अपनी बहन के यहाँ पहुँचा, तब वहाँ से चलते समय उसने उन गीतों को लाकर मुझे दिया और उनको छपवा देने के लिए कहा। मैंने अन्यमनस्क होकर उत्तर दिया कि इनके छपवाने में बड़ा खर्च पड़ेगा और कुछ लाभ भी नहीं होगा, अतः इसे रहने दो। यह सुनकर मेरी बहन का मुख-मण्डल उदासीन हो गया, परन्तु फिर भी उसने उन्हें छपवाने का आग्रह किया। छोटी बहन के इस प्रेम तथा आग्रह को भला मैं कैसे टाल सकता था। उन गीतों को जब मैं घर लाया और यह प्रस्ताव माताजी के सामने रक्खा, तो उन्होंने इसका समर्थन ही नहीं किया ; बल्कि छपवाने के लिए बड़ा ही हठ किया। एक तो बहन का प्रेम दूसरे पूजनीया माताजी का आदेश, इस प्रकार यह कार्य करना मेरे लिए अनिवार्य ही नहीं, धर्म भी हो गया।

मैंने इस कार्य को अपने हाथ में तो लिया ; परन्तु ज्यों-ज्यों इस कार्य में प्रवृत्त होता गया, त्यों-त्यों मेरी कठिनाइयाँ बढ़ती ही गईं। प्रथम जो गीत लिखे गये थे, वे सब एक ही सिलसिले में थे। कौन गीत कहाँ समाप्त होता है और दूसरे का प्रारम्भ कहाँ से होता है, इसका समझना कठिन था। दूसरी कठिनाई यह थी कि गीतों का विभाजन नहीं किया गया था। अतः कौन गीत किस संस्कार से संबंध रखता है, इसका निश्चय करना दुस्तर था। ऐसी दशा में हताश होकर मैंने उस गीत की पुस्तक को अपनी बहन के पास लौटा दिया और उनका श्रेणी-विभाजन कर सुन्दर अक्षरों में लिख भेजने को लिखा। बहन ने फिर दुबारा उन गीतों को मेरी सूचना के अनुसार बड़े परिश्रम से लिखकर तैयार किया और मेरे पास भेजा। बहन की इस तत्परता को देखकर मैं आश्चर्यित हो गया। अब मैंने समझा कि इन गीतों से किसी प्रकार भी पिण्ड नहीं छूट सकता। अतः उसके सम्पादन में दत्तचित्त होकर जुट गया।

भोजपुरी गीतों को उनके ठीक उच्चारण के साथ लिखना बड़ा कठिन कार्य है। जो इस भाषा के मर्मज्ञ नहीं हैं, उनके लिए तो यह कार्य प्रायः असंभव ही है। मैं गीतों के पाठ को ठीक

कर उनका अर्थ लिखता था और कहीं-कहीं समान भाव वाला किसी अन्य कवि का पद्य मिल गया, तो उससे उनकी तुलना भी करता था। परन्तु गीतों के शुद्ध पाठ का निर्णय करने में बड़ी कठिनाई पड़ती थी। मेरी पूजनीया माता श्री मूर्ती देवीजी (जन्म संवत् १८८० ई०, मृत्यु १५ जनवरी सन् १९४८ ई०) को असंख्य गीत स्मरण थे। जब वे गीत गाकर सुनाने लगती थीं, तो उनका घण्टों तक ताँता न टूटता था। देहाती कहानियों की तो वे अक्षय भाण्डार थीं; अतः जब कभी किसी गीत के पाठ की शुद्धता में मुझे सन्देह होता था, तब वह गीत उनसे गवा कर सुनता था और उनको शुद्ध करता था। इस प्रकार, गीत जिस रूप में गाये जाते हैं, उसी शुद्ध रूप में इनका संग्रह यहाँ किया गया है। इन गीतों का सम्पादन करते समय मुझे उनके भाव बड़े ही मर्मस्पर्शी, मोहक तथा मनोरम लगे। इन गीतों में रस की मात्रा इतनी अधिक है कि सहृदयों का हृदय बलात् इनकी ओर खिंच जाता है। धीरे-धीरे मुझे इन ग्राम-गीतों के पढ़ने, सुनने और गाने में स्वाद आने लगा और अब तो यह स्वाद इतना उत्कृष्ट जँचने लगा है कि इसके आगे बड़े-बड़े कवियों की कविता भी फीकी लगती है। इस प्रकार ग्राम-गीतों की ओर मेरा झुकाव अनायास ही उक्त घटना के कारण हुआ।

लोक-गीत-संग्रह की यात्राओं के कुछ अनुभव

अब मुझे अपनी बहन के गानों से ही सन्तोष नहीं हुआ; क्योंकि बहन ने जो गाने लिखे थे, वे केवल संस्कार संबंधी ही थे। ऋतु संबंधी गीतों तथा विभिन्न जातियों के द्वारा गाये जाने वाले गानों का उनमें संग्रह नहीं था। अतः मैंने यह निश्चय किया कि जितने प्रकार के भी गीत मिल सकें, उन सभी का संग्रह होना चाहिए। इसके लिए मुझे कई गीत-अन्वेषण यात्राएँ करनी पड़ीं; जिनका संक्षिप्त विवरण आगे दिया जाता है।

लोक-गीतों के संग्रह के लिए मुझे भोजपुरी प्रांत में अनेक बार यात्राएँ करनी पड़ी हैं। स्कूल के अध्यापक को यों ही स्कूल की घिसघिस से फुरसत नहीं मिलती। फिर कहीं गृहस्थी का भार भी उसके सिर पर हो, जो अनिवार्य है, तो उसका ईश्वर ही मालिक है। स्कूल में कहीं डायरी न भरने का डर बना रहता है, तो कहीं रजिस्टर की भूल-भुलैया से दिमाग भूला रहता है। लड़कों की काँव-काँव से छुटकारा पाकर हल में जोते गये बैल की तरह थके-माँदे घर पर लौटे, तो फिर वही लवण, तैल, तन्दुल की चिन्ता चैन नहीं लेने देती। इस प्रकार एक स्कूली मास्टर का जीवन वह जीवन है, जहाँ साहित्य-सेवा का समय तथा अवसर ही नहीं मिलता। परन्तु, मैं विषयान्तर में चला गया। सन् १९४२ में मुझे बलिया में रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। उस समय इन गीतों के संग्रह के लिए मुझे बार-बार गाँवों में जाना पड़ता था। स्कूल से अवकाश मिला कि किसी गाँव में गीतों की खोज में निकल पड़ता था। किसी अहीर से अथवा हरिजन से प्रार्थना कर दो-चार गीत लिख लेता था। ये यात्राएँ बड़ी दुःखदायी होती थीं। कभी-कभी दिन-दिन भर घूमने पर भी कोई गीत नहीं मिलता था; क्योंकि गवैया गाने के लिए तैयार नहीं होता था। जेठ की दुपहरी में किसी चमार या दुसाध (एक अस्पृश्य जाति) के घर में जाना, जब घर के एक भाग में शूकरावतार भी विराजमान हों, कितना कष्ट-कर है—इसे भुक्त-भोगी ही समझ सकते हैं। घर

में न तो बैठने को स्थान और न खड़े होने की जगह। गन्दगी का तो कहना ही क्या। दुर्गन्ध की मात्रा भी कुछ कम नहीं होती थी। ऐसी भीषण परिस्थिति में एक अस्पृश्य जाति के घर जाकर उससे प्रार्थना कर गीत लिखना, सचमुच गीतों के पीछे पागल व्यक्ति का ही कार्य हो सकता है। मेरी गीत-यात्रा के अनुभव बड़े ही मनोरंजक तथा दु:खद हैं ; परन्तु इनमें से केवल दो-तीन का वर्णन ही पर्याप्त होगा।

जाड़े के दिन थे। संभवत: माघ का महीना था। स्कूल से छुट्टी पाई और अपने प्रियमित्र पं० चन्द्रशेखर पांडेय के साथ उनके गाँव सुरहिया को गीत-संग्रह के लिए निकल पड़ा। सुना था कि उनके गाँव में कोई स्त्री है, जो 'निरवानी' या सोहनी के बहुत से गाने जानती हैं। सन्ध्या की गाड़ी पकड़ उनके गाँव पहुँचा। दूसरे दिन सबेरे हम दोनों उस स्त्री के घर गये और उससे गीत गाने की प्रार्थना की। गवैयों की, चाहे वे स्त्री हों या पुरुष यह विशेषता है कि कहने पर उसी समय गीत नहीं गाते। वे जब मस्ती में आयेंगे तभी गायेंगे, अन्यथा नहीं। जब मेरे मित्र ने बताया कि एक सज्जन उसके गीत को लिखने के लिए दूर से आये हैं, तब उसे विश्वास ही नहीं हुआ और गीत गाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। मैंने समझा कि अब वह यात्रा निरर्थक सिद्ध हुई ; परन्तु मेरे मित्र ने, जो धैर्य के धनी हैं, फिर प्रार्थना की और साथ ही धमकी भी दी, तब कहीं उसने गाना स्वीकार किया, परन्तु घर पर नहीं, खेत में। हम दोनों फिर दोपहर के बाद उसके घर गये और उसके साथ खेत पर चले, जो वहाँ से काफी दूर था। वह स्त्री खेत में बैठकर सोहनी करने लगी और गीतों में अपने परिश्रम को मानों भुलाने के लिए गीत गाने लगी। मैं अपने मित्र के साथ खेत की मेड़ पर बैठ गया और वहीं बैठकर उसके गाने को लिखने लगा। उस रास्ते जो ही निकलता था, वही हम लोगों को देखकर आश्चर्यित होता था तथा सन्देहात्मक दृष्टि से देखकर यह पूछता था कि यहाँ आप लोग क्यों बैठे हैं ? स्त्री ने जो गाने गाये, वे बड़े ही सुन्दर थे। संभवत: वे वियोगात्मक बैलेड थे, जिनमें किसी वियोगिनी स्त्री का हृदय पति-वियोग से टूक-टूक हो रहा था। गीत लिखते-लिखते समय संध्या हो चली, अँधेरा छा गया, भगवान् सूर्य ने भी अपना व्यापार बन्द कर दिया ; परन्तु उस स्त्री का गाना जारी था। मैं जाड़े के मारे मेड़ पर बैठा ठिठुर रहा था ; परन्तु गीत लिखने का लोभ मुझे छोड़ता न था। अँधेरे के कारण जब लिखना असंभव हो गया, तब मेरे मित्र पास की एक झोपड़ी से एक टिमटिमाता हुआ दीपक उठा लाये। मेरा लिखना जारी रहा। करीब एक घड़ी रात जाने पर वह गीत समाप्त हुआ। तब कहीं हम घर लौटे।

परन्तु कुछ कष्ट अभी और बाकी था। इन्द्र भगवान् जो पहले से ही बादलों की गड़गड़ाहट के द्वारा मुझे गीत लिखने को मना कर रहे थे, मेरी अवज्ञा को सहन न कर सके और उन्होंने भी कोप कर वृष्टि प्रारम्भ कर दी। वह भी मूसलाधार। वहाँ न तो छिपने के लिए कोई छप्पर था और न शरण लेने के लिये घर। एक तो जाड़े की रात, दूसरे मूसलाधार वर्षा। हम बिल्कुल पानी-पानी हो गये। मित्र के घर जब लौटे, तो शरीर जाड़े के मारे काँप रहा था। किसी प्रकार रात्रि बिताई। दूसरे दिन सबेरे ही उठ कर बलिया का रास्ता लिया। यहाँ आने पर अत्यन्त शीत लग जाने के कारण ज्वर ने आक्रमण कर दिया ; परन्तु इतना ही सन्तोष रहा कि कुछ अनुपम गीत तो हाथ लगे।

एक दूसरी घटना बिहार प्रान्त की है। बिहार के आरा जिले में धान बहुत पैदा होता है। सरथुआ नामक गाँव में मेरी बहन की ससुराल भी है। अतः यह निश्चय किया कि वहीं चल कर धान की रोपनी के समय गाये जाने वाले गीतों का संग्रह करूँ। उस गाँव में मुसहर नामक एक अस्पृश्य जाति की बड़ी बस्ती है। इन मुसहरों की स्त्रियाँ धान की रोपनी करती हैं और साथ-साथ गीत भी गाती जाती हैं। एक दिन वहीं चल कर इन गीतों को लिखने की तय पाई। धान के खेतों की मेड़ बड़ी ऊँची होती है, जिससे खेत में पानी रोका जा सके और यह मेड़ बड़ी पतली भी होती हैं; अतः उन पर चलना अनभ्यस्त व्यक्ति के लिए टेढ़ी खीर है। धान के खेतों में दोनों ओर पानी भरा रहता है और उनके बीच में पतली मेड़ होती है। जिस दिन गीत लिखना था, उस दिन कागज-कलम लेकर मैं उस खेत की ओर चल निकला। खेत की मेड़ पर धीरे-धीरे पैर रखता जा रहा था। अनभ्यस्त होने के कारण पैर लड़खड़ा रहे थे। अस्तु, किसी प्रकार घटना-स्थल पर पहुँचा। मैं खेत की मेड़ पर बैठ गया और स्त्रियाँ खेत में रोपनी के गीत गाने लगीं। परन्तु इन मेड़ों पर बैलेन्स करके बैठना भी कुछ कम कठिन नहीं है, फिर बैठकर कुछ लिखना तो और भी कठिन। गीतों का गाना प्रारम्भ हुआ और मैंने उन्हें लिपि-बद्ध करना शुरू किया। गिरने के डर से एक हाथ से मेड़ को पकड़े रहता था और दूसरे से लिखता था। गीत के लिखने में मैं इतना तन्मय हो गया और यह भूल-सा गया कि मेड़ पर बैठा हुआ हूँ। किसी कारण मेड़ पर से मैंने अपना हाथ हटा लिया। बस फिर क्या था। मैं भदाक् से उलट कर पानी में गिर पड़ा और कीचड़ में लथ-पथ हो गया। सारा शरीर कीचड़ से सन गया। जब खेत में से उठा, तब मेरी आकृति उस समय उस भैंस के समान थी, जो कीचड़ में से लोट कर अभी आया हो। मुसहर की स्त्रियाँ मे ी आकृति को देखकर हँसने लगीं और मैं लज्जा के मारे जमीन में गड़ गया। अपने इस गीत-संग्रह-मिशन पर मुझे भी रोष आया और अपनी मूर्खता पर दुःख हुआ। परन्तु, मैंने अध्यवसाय से काम लिया। अब की बार मैंने यह निश्चय किया कि खेत में पानी में खड़े होकर ही गीत लिखूंगा, जिससे मेड़ से गिरने की पुनरावृत्ति अब न हो। ऐसा ही हुआ। मैं पानी में खड़ा हो गया और गीत लिखने लगा। मुसहरिनें कोरस में रोपनी के गीत गा रही थीं। उस दिन मैंने लगभग एक दर्जन गीत लिखे। कुशल यही था कि वे गीत बहुत लम्बे नहीं थे। जब घर लौटा, तब मेरे संबंधी ने मजाक में मेरा रूप देख कर कहा कि आज तुमने मुसहरिनों के साथ खूब होली खेली है।

तीसरी घटना गोरखपुर जिले की है। वहाँ मैं अपने एक अनन्य मित्र के घर था। वे ग्राम-गीतों के पीछे मेरी लगन को जानते थे। एक दिन उन्होंने कहा कि अमुक गाँव में एक अहीर रहता है, जो बिरहा बहुत सुन्दर गाता है। इसके अतिरिक्त वह रामायण और महाभारत भी गाता है, जो देहाती गीतों में है। उससे मिल कर कुछ बिरहा-संग्रह की मेरी उत्कण्ठा अत्यन्त प्रबल हो गई। हम दोनों ने उसके पास चलना निश्चित किया। उसका घर वहाँ से कई कोस दूर पड़ता था, जहाँ पर जाने के लिए पैदल छोड़ कर दूसरा कोई रास्ता नहीं था। हम लोग चल पड़े। जेठ का महीना था। गर्मियों की छुट्टी थी। दुर्भाग्यवश छाता लेना हम लोग भूल गये। जिस गाँव को हमें जाना था, उसका रास्ता हममें से कोई नहीं जानता था। ज्यों-ज्यों दिन बढ़ता

गया सूर्य की किरणें तेज होती गईं। गर्मी बढ़ती गई। जोरों की लू चलने लगी। नीचे भूभूरि और ऊपर प्रचण्ड किरणें! कुशल यही था कि हम लोगों के पैरों में जूते थे, नहीं तो भाड़ के चने की गति प्राप्त होती। साँय-साँय कर लू चल रही थी। हम लोग चलते जारहे थे; परन्तु रास्ते का अन्त नहीं था। जिससे पूछते कि अमुक गाँव कितनी दूर है, वही कहता कि 'पावा भर' (¼ मील) है चले जाइए, अब तो आ गये।" हम लोग सेर भर रास्ता चले गये; परन्तु यह पाव भर समाप्त नहीं हुआ। रास्ते में कोई गाँव भी नहीं दिखाई पड़ता था, जहाँ जाकर विश्राम लेते। गर्मी के मारे शरीर जला जा रहा था और प्यास के मारे कण्ठ सूख रहा था। यदि पहले से यह जानता कि इस यात्रा में इतना कष्ट होगा, तो यह दुःसाहस ही नहीं करता। अन्त में राम-राम करते उस अहीर के गाँव पहुँच ही गये।

अहीर के घर पहुँच मैं एक टूटी खाट पर बैठ गया और मेरे मित्र ने हम लोगों के आने का प्रयोजन उससे कह सुनाया। प्रथम तो उसने हम लोगों के मिशन पर ही सन्देह किया। दो सज्जन इस जेठ की दुपहरी में कोसों से पैदल चले आ रहे हैं; किसलिए? दो चार बिरहों को लिखने के लिए! यह हो नहीं सकता। ये कोई सी० आई० डी० के आदमी तो नहीं हैं, जो कोई भेद लेने के लिए आये हैं। उसने अपना यह सन्देह प्रकट भी कर दिया और बिरहा लिखाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया। उसने पूछा कि आप बिरहा लिखकर क्या करेंगे? परन्तु हमारे उत्तर से उसकी शंका का समाधान नहीं हुआ। संयोग ऐसा हुआ कि उस गाँव के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति मेरे मित्र के परिचित थे। फिर उन्हीं को लाया गया। जब उन्होंने उसे विश्वास दिलाया कि ये सी० आई० डी० के आदमी नहीं है, बल्कि 'विद्वान्' ब्राह्मण हैं, तब कहीं वह बिरहा लिखाने को तैयार हुआ। वह बड़ा ही अच्छा बिरहा का गवैया था। उसने २०-२५ बिरहे लिखाये। सन्ध्या होने पर हमने उससे विदा ली। चलती बार वह फिर कहने लगा कि बिरहा लिखकर कहीं मुझे फँसा मत दीजिएगा। हमने उसे आश्वासन दिया। अन्धेरी रात में रास्ता अनजान होने के कारण भूल गया और हम लोग भटकते-भटकते आधी रात को कहीं घर पहुँचे।

इस प्रकार लोक-गीत-यात्राओं में अनेक रोचक घटनाएँ हुईं, जिन्हें लिखने का लोभ विस्तार-भय से संवरण करना पड़ रहा है। इस प्रस्तुत संग्रह में से कुछ गीत उन नौजवान रंगरूटों को गवाकर लिखे गये हैं, जो गत लड़ाई में भर्ती होने के लिए बलिया के रिक्रूटिंग आफिसर के पास आते थे। मैं उस समय उनके घर रात को नियम से जाता था और जो रंगरूट गाना जानता था, उसे गाने को कहता था। वे बड़े प्रेम से गाने गाते थे और मैं उन्हें लिखता जाता था। एक दिन एक रंगरूट ने बड़ा ही मर्मस्पर्शी गाना गाया, जिसमें अपनी प्रिया से बिछोह का वर्णन था। समयानुकूल होने के कारण मुझे वह गाना बड़ा ही अच्छा लगा और अपनी स्त्री के भावी वियोग से दुःखी होकर वह रंगरूट रोने लगा। जिन लोगों ने अपने गाने मुझे लिखाये थे, उनका नाम मैंने अपनी पुस्तक में देने को उनसे कहा था; परन्तु आज अनेक वर्षों के बीत जाने से मुझे उनका नाम स्मरण नहीं है। संभवतः उनमें से बहुतों की आत्माएँ भी अब इस संसार में न होंगी। फिर भी उन अज्ञात हुतात्माओं के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना मेरा परम कर्त्तव्य है। यदि उनका दर्शन

मुझे प्राप्त न होता, तो संभवतः इन गीतों में से अनेक अनमोल गीत सदा के लिए विलुप्त हो जाते।

लोक-गीतों के संग्रह में कठिनाइयाँ

लोक-गीतों के संग्रह में अनेक कठिनाइयाँ हैं, जिसका अनुभव मुझे पग-पग पर होता रहा है। लोक-गीत-साहित्य लिखित नहीं, बल्कि मौखिक है। अतः गानेवाले विभिन्न व्यक्तियों के पास जाकर ही इनका संग्रह किया जा सकता है। लोक-गीतों के संग्रह में सबसे बड़ी कठिनाई यह हो रही है कि इनके गानेवालों का धीरे-धीरे अब अभाव हो रहा है। शहर की स्त्रियाँ पाश्चात्य सभ्यता की गंध या दुर्गन्ध लग जाने के कारण इन गीतों से घृणा करने लगी हैं और इन्हें गाना तो दूर रहा, इन्हें सुनना भी असभ्यता का सूचक समझती हैं। देहातों में भी जहाँ पश्चिमी सभ्यता का प्रकाश पहुँच गया है और लड़कियाँ कुछ पढ़ने-लिखने लगीं हैं, ठीक यही दशा है। आजकल की नव-शिक्षा-दीक्षिता पुत्रियाँ, और पुत्रवधुएँ इस कला से नितान्त वंचित हैं। रह गई गाँव की बूढ़ी स्त्रियाँ, उनके पास ही यह अनमोल सम्पत्ति आज भी सुरक्षित है। परन्तु, उनके पास बैठकर यदि इन गीतों का संग्रह शीघ्र नहीं कर लिया गया, तो निश्चय ही ये अनमोल रत्न सदा के लिए लुप्त हो जायेंगे।

(१) गवैयों का अभाव

यह तो स्त्रियों के गीतों की बात हुई। पुरुषों के द्वारा गाये जानेवाले गीतों के विषय में भी यही बात समझनी चाहिए। अहीरों और धोबियों के लड़के जो शिक्षित हो गये हैं, वे अपने बपौती के गानों को याद करना और गाना अपने सम्मान के विरुद्ध समझते हैं। वे इन्हें असभ्य गीत मानते हैं, और यदि जानते भी हों, तो लज्जा के मारे नहीं गाते; परन्तु अभी भी गाँवों में दो-चार बूढ़े अवश्य मिल जायेंगे, जो इस कला को सुरक्षित बनाये हुए हैं। परन्तु, ये वृद्ध-वशिष्ठ अँगुलियों पर गिनने योग्य हैं और कराल काल की प्रतीक्षा में दिन काट रहे हैं। दूसरी बात यह है कि इन गवैयों को कोई प्रोत्साहन नहीं दिया जाता है; अतः यह कला आप से आप बिना मौत मरती चली जा रही है। यदि इन गीतों के संरक्षक इन बूढ़ों से ये गीत नहीं लिखे गये, तो ये उनके साथ ही सदा के लिये नष्ट हो जायेंगे। आजकल गीत-संग्रहकर्त्ता को यह जानने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ती है कि अमुक गीत का गाने वाला कौन व्यक्ति है और यदि वह बड़ी कठिनाई से मिल जाता है, तो उससे गीत गवाकर लिखना भी बड़ा ही कठिन कार्य होता है।

(२) पर्दे की कठोर प्रथा

भोजपुरी प्रदेश में पर्दे की बड़ी कठोर प्रथा है। पत्नी पति के सामने दिन में कभी नहीं निकल सकती। जेठ और ससुर से पर्दा करना तो स्वभाव सिद्ध है। अधिक क्या कहा जाय, एक स्त्री दूसरी स्त्री से भी पर्दा करती है। घर में नयी आयी हुई बहू गाँव की दूसरी स्त्रियों के सामने नहीं निकल सकती। गाँव में उच्च वर्ण की जातियों की स्त्रियाँ पर्दे से बाहर निकल कर पुरुष के सामने बातचीत करने की कल्पना तक नहीं कर सकतीं। अभी तक पर्दे का वहाँ इतना संगठित

चरखा के मनहर रूप सुखद छवि छावहु हो।
सखिया घर-घर चरखा चलावहु जुग[1] पलटावहु हो।।२।।
चरखा सुराज[2] के सिंगार[3] से हिय हुलसावन हो।
सखिया बिहँसि बिहँसि सब कातहु, साज सजावहु हो।।३।।
चरखा सुदरसन चक्र[4] से सोक नसावन हो।
सखिया कातहु मनवाँ लगाइ, त राम गुन गावहु हो।।४।।
ललना जनम के बधइया[5] से मोद बढ़ावन हो।
सखिया सब मिलि चरखा चलावहु जुग पलटावहु[6] हो।।५।।

कोई देश-प्रेमिका अपनी अन्य सखियों से कह रही है कि ऐ सखी! तुम सब लोग मिलकर चरखा चलाओ और इस युग में परिवर्तन कर दो! चरखा का राग (गीत) अत्यन्त सुहावना तथा मन को अच्छा लगता है। चरखा चलाकर देश के दुःख को टाल दो।।१।।

चरखा का रूप अत्यन्त सुन्दर है तथा शोभा देता है। हे सखियो! चरखा चलाकर इस युग में परिवर्तन कर दो।।२।।

चरखा स्वराज्य का श्रृंगार (शोभा) है। हृदय को प्रसन्न करने वाला है। सब सखियाँ मिलकर इसे कातें।।३।।

चरखा भगवान् के सुदर्शन चक्र के समान शोक को नष्ट करने वाला है। ऐ सखियो! मन लगाकर इसे कातो और राम का गुण-गान करो।।४।।

पुत्र का जन्म आनन्द को बढ़ाने वाला होता है। ऐ सखियो! सब मिलकर चरखा चलाओ और इस युग में क्रान्ति उत्पन्न कर दो।।५।।

(४)

प्रसंग—पुत्र-जन्म के अवसर पर पुत्र की माता के उछाह का वर्णन। सास की उक्ति।

कातत रहलों चरखवा; सबदिया[7] सुनइले नु हो।
ललना बहुअरि[8] के भइले ललनवा; उठेला घरवा मंगल हो।।१।।
चुर-चुर बोले मोर चरखवा; मगन हमार मन भइले हो।
ललना जुटि[9] गइली सखिया सहेलरि; बिहँसि गावे मंगल हो।।२।।
हथवा में लेके तेल उबटन; नाउनि बरिनिया अइली हो।
ललना हँसि-हँसि सब के लगावे; हरखि गावे मंगल हो।।३।।
बहुअरि लागे सब के गोड़[10]; ललन लेके गोदिया में हो।
ललना जुग-जुग जीये मोर ललनवा; गोतिनि गावे मंगल हो।।४।।

१. समय। २. स्वराज्य। ३. शोभा। ४. सुदर्शन-चक्र। ५. आनन्द। ६. बदल दो। ७. शब्द। ८. बधू के। ९. एकत्रित होगई। १०. गोड़ लगना, प्रणाम करना।

सास कहती है कि मैं चरखा कात रही थी और उसका शब्द सुनाई पड़ रहा था। इतने में मेरी बधू को लड़का (पुत्र) हुआ और घर में मंगल गीत गाये जाने लगे ॥१॥

मेरा चरखा 'चुर-चुर' शब्द कर रहा था और मेरा मन उसमें मग्न था। इतने में सब सखियाँ जुट गईं और प्रसन्न होकर गीत गाने लगीं ॥२॥

नाइन और बारिन हाथ में तेल और उबटन लेकर आईं और हँस-हँस कर सब को लगाने लगीं ॥३॥

बधू पुत्र को गोदी में लेकर सब को प्रणाम करने लगी। सब दायादिनों ने आशीर्वाद दिया कि यह बच्चा युग-युग जीता रहे। गोतिन सब मंगल गाने लगीं ॥५॥

प्राचीन काल में बूढ़ी स्त्रियों के लिए चरखा चलाने की प्रथा थी, जो अब धीरे-धीरे नष्ट हो रही है। क्या ही अच्छा हो, यदि फिर से यह प्रथा चालू हो जाय।

(५)

प्रसंग—पुत्र का जन्म तथा माता का पुत्र को देशसेवक बनाने की इच्छा।

सून[१] लागे दिया बिनु मन्दिल; माँग सेनुर[२] बिनु हो।
ललना ओइसन[३] सून तिरिया[४] गोद; से एक बालक बिनु हो ॥१॥

सून लागे महल अटरिया; अवरु खेत धरतिया नु हो।
ललना नाहीं नीक लागे सुख भोग; से एक सँतति[५] बिनु हो ॥२॥

बड़-बड़ भइले जतनवा; उपइया, उपचरवा नु हो।
ललना जब रे किरिपा[६] भइले राम के; गोदिया बालक खेले हो ॥३॥

पुतवा के देबो भारत मइया के सेउवा[७] में, मातवा के सेउवा में हो।
ललना, पूत करिहें देसवा के काम; त जनम सुफल होइहें हो ॥४॥

मनवा में इहे अभिलाख; इहे एक साध[८], इहे एक सधिया नु हो।
ललना पूत मोर होवे देस सेवक; राम से बिनति करो हो ॥५॥

जिस प्रकार से दीपक बिना घर और सिन्दूर के बिना माँग सूनी मालूम पड़ती है, उसी कार से स्त्री की गोद बालक के बिना सूनी लगती है ॥१॥

केवल एक सन्तान (पुत्र) के बिना महल, खेत, पृथ्वी और सब सुख व्यर्थ मालूम होता है, अच्छा नहीं लगता ॥२॥

पुत्र के लिए मैंने बड़े-बड़े यत्न, उपाय तथा उपचार किये, परन्तु जब राम की कृपा हुई तभी पुत्र पैदा हुआ ॥३॥

१. शून्य, सूना। २. सिन्दूर। ३. उसी तरह। ४. स्त्री। ५. सन्तति, पुत्र। ६. कृपा। ७. सेवा। ८. इच्छा।

मैं अपने पुत्र को भारत माता की सेवा में लगाऊँगी। यह देश का काम करेगा, जिससे इसका जन्म सफल हो जायेगा ॥४॥

माता कहती है कि मेरे मन में यही अभिलाषा है, यही इच्छा है कि मेरा लड़का देश की सेवा करने वाला बने। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है ॥५॥

(६)

प्रसंग—पुत्र के होनहार होने के लक्षण दिखाई पड़ने पर माता का पुत्र के लिए अन्य स्त्रियों से आशीर्वाद माँगना।

जेहि घर जनमे ललनवा; त ओहि घरे धनि-धनि[1] हो।
रामा धनि-धनि कुल परिवार; त धनि-धनि लोग सब हो ॥१॥

बँसवा के जरिया जनमे बाँस; त रेंड़वा[2] के रेंड़ जनमे हो।
रामा देबी कोखिया[3] जनमे देवतवा; त देसवा के काम आवे हो ॥२॥

होनहार बिरवा के पातवा; चीकन[4] भल लागेला हो।
रामा पुतवा के ओइसन लछनवा; निरखि मन बिहँसेला हो ॥३॥

देहु-देहु सखिया असीस; ललन मुँहवाँ चूमहु हो।
रामा गोदिया में लेइ लपटावहु; हियरा जुड़ावहु[5] हो ॥४॥

'भारत माता' होइहें सेवकवा; त मोर पूत हो।
रामा अस पूत जुग-जुग जीयसु; त इहे हम असीसत[6] हो ॥५॥

माता कहती है कि जिस घर में पुत्र का जन्म होता है वह घर धन्य है, वह परिवार तथा कुल धन्य है और वहाँ के सब लोग धन्य हैं ॥१॥

जिस प्रकार से बाँस की जड़ में बाँस और रेंड़ (एरण्ड) की जड़ में रेंड़ पैदा होता है, उसी प्रकार से देवी, सती, साध्वी स्त्री की कोख से देवता स्वरूप (सुन्दर, सुशील) बालक का जन्म हुआ है ॥२॥

जिस प्रकार होनहार पौदे का पत्ता पहले ही चिकना-चिकना निकलता है, उसी प्रकार इस होनहार बालक के सुन्दर लक्षण को देखकर मन प्रसन्न होता है ॥३॥

माता कहती है—ऐ सखियो ! तुम लोग आशीर्वाद दो और बालक के मुंह को चूमो। इसे गोदी में लेकर अपने हृदय को शान्त करो ॥४॥

माता कहती है—मेरा लड़का भारत माता का सेवक होगा। तब सखियाँ कहती हैं कि ऐसा लड़का अनेक युगों तक जीता रहे, यही हम लोग आशीर्वाद देती हैं ॥५॥

१. धन्य। २. एण्ड का वृक्ष। ३. पेट। ४. चिकना। ५. सन्तुष्ट करो। ६. आशीर्वाद देती हैं।

इस गीत में "होनहार" बिरवान के होत चीकने पात" इस कहावत का बड़ा सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(७)

प्रसंग—पुत्र-जन्म के उत्सव में स्त्रियों से चरखा चलाने तथा स्वदेशी वस्त्र पहनने की प्रार्थना।

आवहु मोर परोसिनि; गोत[1] देयादिनि हो।
ललना, होरिला जनमवा के सोहर; गाई सुनावहु हो॥१॥
होरिला मनोहर गोदिया में; किलकेला[2] सुख होला हो।
ललना देखि-देखि उमड़त[3] मनवा; अननवा मनावहु हो॥२॥
सब मिलि एहि खुसिहलिया[4] में; सखिया सहेलरि[5] हो।
ललना छोड़ि देहु कपड़ा बिदेसी; सुदेसिया के पहिरहु हो॥३॥
अवरु चलावहु चरखा; सबहि मिलि गावहु हो।
ललना भारत नइया मँझधारवा; त पार लगावहु हो॥४॥

किसी स्त्री के लड़का पैदा हुआ है। वह अपनी दायादिनों से कहती है कि ऐ मेरी पड़ोसिनि, गोतिनि और दायादिन तुम लोग आओ और पुत्र-जन्म के समय का सोहर तुम लोग गाकर सुनाओ॥१॥

मेरी गोदी में जब सुन्दर बालक खेलता है तब मुझे अत्यन्त सुख होता है। उसे देखकर मेरा मन उमंग से भर जाता है और आनन्दित होता है॥२॥

ऐ सखियो! इस आनन्दोत्सव के उपलक्ष में तुम सब लोग मिलकर के विदेशी कपड़े को छोड़ दो और स्वदेशी वस्त्र को पहनो॥३॥

तुम सब लोग मिलकर गाओ और चरखा चलाओ, इस प्रकार मँझधार में पड़ी हुई भारत माता की नाव को पार लगाओ॥४॥

यदि स्त्रियाँ विलासिता को छोड़कर इस उपदेश का पालन करें, तो कितना अच्छा हो।

(८)

प्रसंग—राम के पैदा होने पर अन्य स्त्री का पुत्र-प्राप्ति का उपाय पूछना।

देखत कोइलरि घिनावनि[6]; बोलत सोहावनि हो[7]।
कोइलरि तोरि बोली लागेले सुहावन; देवता जे मोहेले हो॥१॥
गया में मोहेले गजाधर[8]; परयाग बेनीमाधव हो।
कोइलरि गोकुला में मोहेले कन्हैया; अवध राजा दशरथ हो॥२॥

---

१. गोत्र। २. खेलना। ३. उमँगित होना। ४. आनन्दोत्सव। ५. सहेली। ६. घृणास्पद। ७. मधुर। ८. गदाधर (विष्णु)।

मचिया[1] ही बैठेलीं कोसिला रानी; सिंहासन राजा दसरथ हो।
आरे कोसिला कवन ब्रत कइलू; रमइयांजी के पावेलू हो॥३॥

गंगा त हमहू नहइलीं; सुरुज गोड़वा लागीले हो।
आरे भूखीलें हम अवतार रमइयाजी के पाइलें हो॥४॥

भूखल[2] ब्राह्मन जेंवाइलें[3]; लँगटा[4] के बसतर[5] हो।
आरे तुलसी के दिअरा[6] बराइलें[7]; रमइयाजी के पाइलें हो॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि देखने में कोयल काली होने के कारण घृणास्पद है; परन्तु उसकी बोली ऐसी मधुर, ऐसी सुहावनी लगती है कि जिससे देवता भी मुग्ध हो जाते हैं॥१॥

ऐ कोयल! तुम्हारी मधुर बोली को सुनकर गया में गदाधर (विष्णु), प्रयाग में बेनी माधव, गोकुल में कृष्ण और अयोध्या में राजा दशरथ मोहित हो जाते हैं॥२॥

राजा दशरथ सिंहासन पर और रानी कौशिल्या मचिया पर बैठी हुई हैं। तब कोई स्त्री पूछती है कि ऐ कौशल्या! तुमने कौन सा व्रत किया, जिससे तुम्हें राम ऐसा पुत्र मिला॥३॥

कौशल्या ने उत्तर दिया—मैंने गंगा में स्नान किया, सूर्यदेव को प्रणाम किया और रविवार का व्रत किया; तब राम ऐसे पुत्र को पाया॥४॥

मैंने भूखे ब्राह्मण को भोजन दिया; नंगे को वस्त्र दिया और तुलसीजी के चौतरे पर दिया जलाया; तब रामचन्द्र को प्राप्त किया॥५॥

(९)

प्रसंग—फूल तोड़ने के लिए आई हुई अन्य स्त्री के साथ माली का व्यभिचार तथा उसे मार डालने के लिये पति का उद्यत होना।

कवना बने फूलेला सुपरिया;[8] त कवना बने नरियर[9] हो।
आरे कवना बने फूलेला पलसवा; लोहँन[10] हम जाइबि हो॥१॥

बाबा बने फूलेला सुपरिया; त भइया बने नरियर हो।
आरे सइयां बने फूलेला पलसवा; लोहँन हम जाइबि हो॥२॥

फूल लोहँ चलली कवनि देई, हथुवा डलियवा ले-ले हो।
आरे फूल पर के लाल भँवरवा;[11] अँचरवा धइ बिलमावेला हो॥३॥

बुअरा से अइले कवन लाल; अड़पी तड़पि[12] बोले हो।
धनिया कहवाँ लगवलू अतना बेर; त हम से बतावहु हो॥४॥

१. छोटी खाट। २. भूखा हुआ। ३. भोजन कराया। ४. नंगा। ५. वस्त्र। ६. दीपक। ७. जलाया। ८. सुपारी। ९. नारियल। १०. चुनने के लिये। ११. उपपति। १२. क्रोधित होकर।

आरे फूल लोहें गइलीं फुलवरिया में; हाथ के डलियवा ले-ले हो।
आरे फूल पर के लाल भँवरवा; अँचरवा धरि बिलमावेला[1] हो ।।५।।
लिहलन[2] ढाल तरुवरिया; त अवरु कटरिया नु हो।
चल-चल ना ससुरजी के धियवा; भँवरवा हम मारबि हो।।६।।
थर-थर काँपेले मलिनिया; दुनहु[3] कर जोरेले हो।
राजा हमरा के बलु[4] मारि डाल; भवरवाँ जानि मारहु हो।।७।।
जइसे सून[5] गोदिया बालक बिनु, नयना कजरवा बिनु हो।
आरे ओइसे सून हमार फुलवरिया; त एक रे भँवरवा बिनु हो।।८।।

कोई स्त्री कहती है कि किस बन में सुपारी फूलती है, किस बन में नारियल फलता है तथा किस बन में पलाश में फूल आते हैं। वहीं मैं फूलों को चुनने के लिए जाऊँगी।।१।।

पिता के बन में सुपारी फूलती है, भइया के बन में नारियल फलता है और पति के बन में पलाश फूलता है। मैं उन्हें चुनने के लिए जाऊँगी।।२।।

हाथ में डाली को लेकर कोई स्त्री फूल चुनने के लिए चली। वहाँ फूल पर रहने वाले लाल भवरें—फूल की सेवा करने वाले माली ने आँचर पकड़ कर विलम्ब कर दिया।।३।।

जब स्त्री फूल चुनकर घर लौट कर आयी, तब उसका पति द्वार पर गरजता, तड़पता हुआ आया और स्त्री से पूछने लगा कि बताओ, तुम इतनी देर कहाँ रहीं।।४।।

स्त्री ने उत्तर दिया—मैं हाथ में डाली लेकर फूल चुनने को गयी थी। वहाँ पर लाल फूल पर बैठे हुए भंवरे ने मेरा आँचर पकड़ लिया और विलम्ब कर दिया।।५।।

पति ने स्त्री का आशय समझ लिया और वह ढाल और तलवार लेकर कहने लगा कि ए ससुरजी की लड़की! तुम मेरे साथ चलो; मैं उस भौंरे को मार डालूँगा।।६।।

इस समाचार को सुनकर मालिन थर-थर काँपने लगी और हाथ जोड़ कर कहने लगी कि मुझे मार डालो; परन्तु भँवरा (मेरे पति) को मत मारो।।७।।

जैसे बालक के बिना गोद तथा काजल के बिना आँखें सूनी मालूम पड़ती हैं, उसी तरह से हमारी फुलवारी भी एक इसी भँवरे के बिना सूनी हो जायेगी।।८।।

इस गीत में पत्नी का पति-प्रेम सराहनीय है। वह स्वयं अपने प्राण देकर भी अपने पति के प्राण को बचाना चाहती है। इससे अधिक त्याग और क्या हो सकता है। पत्नी का प्रेम आदर्श रूप में यहाँ पाया जाता है।

(१०)

प्रसंग—पुत्रहीन राजा दशरथ का शोक करना और कौशल्या का उनको समझाना। पुत्र होने पर उपहार वितरण।

---

१. विलम्बकर देना। २. ले लिया। ३. दोनों। ४. बल्कि। ५. शून्य, रहित।

सोने के खड़उँवा[1] राजा दशरथ; चटर-चटर[2] करे हो।
हेलनि[3] हमें हार हेलवा लेइ जाहुँ; त रानि मोर उदासल हो ॥१॥

पइसी जगावेले हेलनिया; उठी ना सिर साहब हो।
साहब देखि निरबंसिया[4] के मुंह; आजु रे दिन कइसन हो ॥२॥

आताना बचन राजा सुनले; सुनहि ताहि पवलनि हो।
राजा गोड़ मूड़[5] तानेले चदरिया; सुतेले गज ओबर हो ॥३॥

पइसी[6] जगावेली कोसिला रानी; उठीना सिर साहब हो।
साहब उठि के करिना दतुवनिया;[7] त अवरु असननवा[8] नु हो ॥४॥

कइसे के उठि हम कोसिला रानी; हमरा बड़ सोच बाटे हो।
आरे नीच ही जाति के हेलनियां; हमे निरबंसी कहे हो ॥५॥

आरे कोसिला के भइले राजा रामचन्द्र; सुमित्रा के लछिमन हो।
आरे कैकेई के भरत भुआल;[9] तीनहु घरवा[10] सोहर हो ॥६॥

ओबरिन बोलेलीं कोसिला रानी; सुन राजा दसरथ हो।
ए राजा सोने के तिलरिया[11] गढ़ाव; हेलनिया पहिरावहु हो ॥७॥

सोने के खड़ाऊँ पर चढ़कर राजा दशरथ चटर-चटर शब्द कर रहे हैं। वह हेलनि नामक दासी से कहते हैं कि मेरी रानी उदासीन है; अतः यह हार ले जाकर दे आओ ॥१॥

हेलनी घुसकर जगाती है कि ऐ राजा! उठिए। वह मन में कहती है कि आज मैंने निःसन्तान पुरुष का मुँह देखा है। न मालूम आज कैसा दिन है ॥२॥

इतना ही बचन राजा अभी सुनने पाये थे कि दुःखी होकर राजा ने सिर से पैर तक चादर तान ली और अन्धेरे घर में जाकर सो गये ॥३॥

रानी कौशिल्या ने जाकर राजा से कहा कि ऐ राजा, उठिये। आप उठकर दतौन तथा स्नान कीजिए ॥४॥

तब राजा दशरथ ने कहा—ऐ कौशल्या! मैं कैसे उठूँ? मुझे अत्यन्त दुःख हो रहा है। नीच जाति की स्त्री हेलनी मुझे निःसंतान कहती है ॥५॥

इसी समय कौशल्या के रामचन्द्र, सुमित्रा के लक्ष्मण तथा कैकेयी के भरत पैदा हुए और तीनों घरों में सोहर गाया जाने लगा ॥६॥

घर (सूतिका गृह) में से रानी कौशल्या ने राजा दशरथ से कहा कि ऐ राजा! सोने का हार गढ़ाओ और हेलनी को पहिराओ ॥७॥

१. खड़ाऊँ। २. चटचट की आवाज। ३. किसी का नाम। ४. पुत्रहीन। ५. सिर। ६. प्रवेश करके। ७. दतौन। ८. स्नान। ९. भूपाल, राजा। १०. घर। ११. हार।

पुत्रहीन दशरथ की दशा इस गीत में बड़ी सुन्दर रीति से चित्रित की गई है। वास्तव में पुत्रहीन पुरुष अपने को बड़ा अभागा समझता है ; इसलिए संभवतः शास्त्रकारों ने कहा है कि "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति।"

(११)

प्रसंग—पुत्रहीन स्त्री का विलाप तथा सखियों का उससे प्रश्नोत्तर।

चलहु न सखिया सहेलरि जमुना नहायहु[1] हो।
सखिया जमुना के निर्मल नीर कलस भरि लावहु हो॥१॥
केहू सखी जल भरे केहू सखी मुँहवा धोवली हो।
आहो केहू सखी ठाढ़े नहाई तिरिया एक रोवेली हो॥२॥
की तोहे सासु, ससुर दुःख देले नइहर[2] दूर बाड़े हो।
बहिनि किया तोर कन्त विदेस कवन दुःख रोवेलू हो॥३॥
ना मोर सासु, ससुर दुःख देले; नइहर दूर बाड़े हो।
नाहि मोर कन्त विदेसे; कोखी[3] के दुख रोइलें हो॥४॥

कोई स्त्री अपनी सखियों से कहती है कि ऐ सखियो! तुम लोग जमुना नहाने के लिए चलो और उनके निर्मल जल को घड़े में भर कर लाओ॥१॥

कोई सखी जल भरती है, कोई मुँह धोती है, कोई खड़ी स्नान करती है और एक स्त्री रोती है॥२॥

तब एक स्त्री ने उससे पूछा कि तुम क्यों रोती हो? क्या सास-ससुर ने तुम्हें दुःख दिया है, अथवा तुम्हारा मायका अत्यन्त दूर है। ऐ बहिन! क्या तुम्हारा पति विदेश चला गया? तुम किस दुःख से रोती हो? ॥३॥

स्त्री ने उत्तर दिया—न तो मेरे सास और ससुर ने दुःख दिया है, न मेरा मायका दूर है और न मेरा पति ही विदेश गया है। मैं कोख के दुःख—पुत्र न होने—से रोती हूँ।

सचमुच कोख का दुःख स्त्रियों के लिए सब से बड़ा दुःख है। वन्ध्या होना उनके दुःख की चरम सीमा है। इसलिए पुत्रवती होने के लिए देवी-देवताओं को वे पूजती फिरती हैं।

(१२)

प्रसंग—वर्षा-काल में पति के आने की आशा में स्त्री का शृंगार करना।

रीमि झिमि देव बरीसे, अँगनवा मोरे कीच करे हो।
मोरी सासु बरजहु आपन कन्हैया, अँगनवा मोरे कीच करे हो॥१॥

१. स्नान करो। २. मायका। ३. पेट।

साम्राज्य छाया हुआ है,जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता ; ऐसी दशा में इन स्त्रियों से गीत लिखना कितना कठिन कार्य है, यह पाठक स्वयं समझ सकते हैं। गाँव की ७० या ८० वर्ष की बूढ़ी स्त्रियाँ भी किसी अपरिचित व्यक्ति के सामने आने में लज्जा करती हैं। संस्कार संबंधी तथा विभिन्न देवता संबंधी जितने गीत हैं, वे इन्हीं बूढ़ी दादियों की संपत्ति हैं जिनको उनसे लेना बड़ा ही कठिन कार्य है। इस पर्दे की प्रथा के कारण गीत-संग्रहकर्ताओं का सारा हौसला पस्त हो जाता है। कहा जाता है कि स्वर्गीय श्री मन्नन द्विवेदी ग्राम-गीतों के बड़े प्रेमी थे। वे जाँत पर गाये जानेवाले गीतों जिन्हें 'जँतसार' कहते हैं—का संग्रह करना चाहते थे ; परन्तु पर्दे की घनघोर प्रथा के कारण कोई सभ्य घर की स्त्री उनके सामने आकर नहीं गा सकती थी। हताश होकर उन्होंने दूसरी तरकीब निकाली। रात्रि के पिछले पहर में जब प्रायः जँतसार गाया जाता है—वे उस घर के पिछवाड़े, (पृष्ठ भाग) जहाँ से गीत की आवाज आती थी खड़े हो जाते थे, और वहीं चुपके से खड़े हो गीतों को सुनकर नोट कर लिया करते थे। इन पंक्तियों के लेखक को भी इस प्रथा के कारण इन गीतों के संग्रह में बड़ा कष्ट उठाना पड़ा है। बलिया में मेरे घर के पास ही एक नौकरानी रहती थी, जो दूसरों के बर्तन माँजकर अपनी जीविका चलाती थी। उसे सोहर और जँतसार बहुत याद थे, और उसका गला भी बड़ा मीठा था। एक दिन मैंने उससे उन गीतों को लिखा देने के लिए कहा परन्तु उसने स्पष्ट इन्कार कर दिया। मेरी धर्मपत्नी ने जब उसे आर्थिक लोभ दिखलाया, तब वह इस शर्त पर राजी हुई कि वह कमरे के अन्दर दरवाजा बन्द करके गायेगी और मेरी धर्मपत्नी भी उसके साथ रहेंगी और लिखनेवाला बाहर बैठकर गीत लिखे। निदान ऐसा ही हुआ। वह कमरे के अन्दर मेरी स्त्री के साथ बैठी और मैं बहुत दूर बरामदे में बाहर बैठा, तब जाकर कहीं उसने गाना गाया। गाँवों में नीच वर्ण की स्त्रियाँ खेतों में अपने आप ही गीत गाती रहेंगी; परन्तु जब उन्हें यह ज्ञात हो जाय कि उनका गाना कोई ध्यान से सुन रहा है, तो वे तुरन्त ही बन्द कर देंगी। किसी के कहने पर तो वे कदापि गीत नहीं गा सकतीं। इस कारण किसी अपरिचित स्त्री से गीत गवाकर लिख लेना प्रायः असंभव ही है।

(३) पुनरावृत्ति में असमर्थता

गवैये जब अपनी मस्ती में आते हैं, तभी गाते हैं और जब गाने लगते हैं, तब बड़े सुर में गाते हैं। जब तरंग में आकर ऊँचे स्वर के साथ वे गाना गाने लगते हैं, तब अपनी सुध भी वे भूल जाते हैं, गीत की कथा तो बहुत दूर रही। उदाहरण के लिए 'लोरकी' नामक गाना लीजिए। यह वीररस का एक प्रबन्धात्मक गीत है, जिसके गानेवाले अब बहुत ही कम रह गये हैं। बलिया के एक मेरे मित्र ने —जो वकील हैं—इस गाने को लिखने का एक बार प्रयास किया और बहुत अन्वेषण के बाद एक गवैये को ढूँढ़ मँगाया। वह उस गीत को गाने लगा और वे लिखने लगे। पहले तो उस गवैये की गति मन्द थी; परन्तु ज्यों-ज्यों कथानक आगे बढ़ता गया, उस गवैये को भी जोश आने लगा। थोड़ी ही देर में वह अपने हाथ-पैर पटकते हुए बड़ी भाव भंगी के साथ बड़े ही ताल-स्वर से गीत गाने लगा। उसे देखकर यह ज्ञात होता था कि किसी देवी या देवता का इस पर आवेश हो गया है। अब तो उस गाने को लिखना तो दूर रहा, समझना भी कठिन था। उससे धीरे-धीरे गाने

की प्रार्थना की गई ; परन्तु कौन सुनता है ? गवैयों की मेल गाड़ी जब एक बार छूट जाती है, तब वह गन्तव्य स्थान पर ही रुकती है, बीच में कदापि नहीं। जहाँ कहीं सुनने में असावधानी होने के कारण गीत लिखना छूट जाता था, वहाँ उससे दुहराकर गाने के लिए कहा जाता था ; परन्तु वह उसे दुहराने में असमर्थ था। वह कहाँ तक गीत गा गया है, यह उसे स्वयं नहीं मालूम था। अतः उस दिन हताश होकर उन्होंने गीत लिखना छोड़ दिया। दूसरे दिन वे तीन अन्य व्यक्तियों को साथ लेकर गीत लिखने बैठे, जिससे यदि एक व्यक्ति के गीत की कोई पंक्ति छूट गई, तो दूसरा उसे लिख लेगा। दूसरे दिन भी वही दृश्य उपस्थित हुआ। तीनों उत्साही लेखकों ने बहुत कोशिश की कि उस गीत को लिख लें ; परन्तु गायक की द्रुतगति के कारण, तथा गीत को बीच में ही दुहराकर गाने में उसकी असमर्थता के कारण वे लोग उस गीत को नहीं लिख सके और हताश होकर उन्हें अपना यह दुःसाहस छोड़ना पड़ा। वह गीत आज भी मेरी फाइल में उसी अधूरी दशा में पड़ा हुआ है।

सभी गायिकाओं के विषय में भी यही बात समझनी चाहिए। स्त्रियाँ किसी उत्सव के अवसर पर प्रायः कोरस में ही गाना गाती हैं। अतः प्रथम तो रागों की भिन्नता के कारण उन्हें समझना ही कठिन होता है। यदि किसी प्रकार समझकर उस गीत को लिखने बैठे ; परन्तु कोई शब्द या पंक्ति समझ में न आने के कारण लिखने से छूट गई, तो स्त्रियाँ उस पंक्ति को दुहराने में असमर्थ होती हैं। वह पंक्ति उन्हें तभी स्मरण आ सकती है, जब वे उस गीत को पुनः प्रारम्भ से गावें। गवैयों की पुनरावृत्ति की इस असमर्थता के कारण संग्रहकर्त्ता को बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है और कभी-कभी एक ही गीत को लिखने में घण्टों लग जाते हैं।

(४) गवैये सर्वदा गाने को तैयार नहीं

संग्रहकर्त्ता के सामने एक और भी कठिनता होती है और वह यह है कि वे किसी गवैये के पास जाकर जब चाहें तभी गाना गवाकर नहीं लिख सकते। गवैये ऋतु के अनुकूल ही गीत गाना पसन्द करते हैं। जैसे, यदि वे सावन में कजली गायेंगे, तो फागुन में होली या फाग और चैत में चैता या घाटो। यदि आप चाहें कि किसी गवैये के पास जाकर सावन में दो चार चैता लिख लें, तो यह असंभव ही समझिये। बड़े दिन की छुट्टियों में मैंने एक गाँव में जाकर एक गवैये से 'फाग' गवाकर लिखना चाहा ; परन्तु उसने कहा कि बाबूजी यह तो फागुन में ही गाया जा सकता है। मैंने उस समय आने में अपनी असमर्थता प्रकट की और इन गीतों को लिखाने के लिए बड़ा आग्रह किया। तब उसने बड़े विनम्र शब्दों में कहा कि "बाबूजी क्या करूँ, इस समय हृदय में उमंग नहीं आ रही है, जब फागुन में मस्ती आयेगी तब गाऊँगा।" मैं निराश होकर घर लौट आया और फागुन मास तक उस गीत को लिखने की प्रतीक्षा करता रहा। इस प्रकार विभिन्न गीतों के विभिन्न ऋतुओं में ही गाये जाने के कारण संग्रहकर्त्ता को उस समय की प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यदि किसी ने बे-मौसिम कोई गाना गा भी दिया, तो न तो उसमें उसका दिल रहता है और न वह सुर ही।

दूसरी एक और भी कठिनाई है। किसी कार्य-विशेष को करते समय गाये जाने वाले गीतों

का एक्शन सॉंग की यह एक विशेषता है कि वे उस कार्यविशेष को करते समय ही याद आते हैं। जैसे जँतसार जाँत पीसते समय ही विशेष याद आता है। यदि किसी स्त्री से अनवसर में जँतसार गाने को कहिए तो संभवतः—वह स्वीकार न करेगी और यदि आपके सम्मान के लिए उसने स्वीकार भी कर लिया, तो संभवतः वह गीत गाने में अपने को असमर्थ पायेगी। संभवतः उस कार्य-विशेष का वातावरण ही उन्हें गीत गाने को प्रेरित करता है। एक अहीर की स्त्री से उसके घर प्रातःकाल जाकर मैंने सोहनी के गीत गाने की बिनती की। उसने कहा कि दोपहर के बाद जब खेत में सोहनी करने जाऊँगी तभी गाऊँगी, इस समय कदापि नहीं। सोहनी के इन गीतों के लिए मुझे दिन भर प्रतीक्षा करनी पड़ी और अन्त में उसका फल मुझे क्या मिला, इसका वर्णन गत पृष्ठों में हो चुका है। इस प्रकार, एक ही गाने के संग्रह के लिए कभी एक दिन और कभी दो-तीन दिन तक लग जाते हैं और ऋतु-विशेष के गीतों के लिए तो महीनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है। ऐसी दशा में संग्रहकर्त्ता का बहुत-सा समय व्यर्थ ही नष्ट होता है। गवैये गीत गाने में कोई नाज-नखरा करते हों, ऐसी बात नहीं है। जब उनके हृदय में उमंग ही नहीं आती, तब क्या गावें और कैसे गावें? इस प्रकार संग्रहकर्त्ता के पास धैर्य के साथ ही साथ समय भी चाहिए, नहीं तो वह संग्रह-कार्य नहीं कर सकता।

(५) संकुचित मनोवृत्ति

गवैयों की संकुचित मनोवृत्ति भी गीत-संग्रह में कुछ कम बाधा नहीं उपस्थित करती। प्रायः यह देखा जाता है कि इन ग्राम-गीतों को गाने वाले अपने गीतों को लिपिबद्ध कराने में बड़ा संकोच दिखाते हैं। वे संग्रहकर्त्ता का स्वागत नहीं करते, बल्कि बहाना बनाकर उन्हें टाल देना चाहते हैं। संभवतः वे यह समझते हैं कि इन गीतों के लिख लिये जाने पर हमारा आदर या सम्मान नहीं रहेगा। अपनी गोरखपुर की ग्राम-गीत की यात्रा में मैंने बहुत प्रयास किया कि गोरखपन्थी साधुओं —जो सारंगी बजाकर तथा उस पर भरथरी-चरित गाकर अपनी पेट पूजा का आयोजन करते फिरते हैं—से मिल कर 'गोपीचन्द तथा भरथरी चरित' पूरा लिख लूँ; परन्तु किसी ने यह गीत लिखाना स्वीकार नहीं किया। मैंने कुछ लालच देकर एक साधु को तैयार भी किया; परन्तु वह केवल एक ो अध्याय लिखा कर चलता बना। ये साधु सोचते हैं कि यदि हर गीत की पुस्तक छप जायेगी, तो हमारी जीविका ही जाती रहेगी। यह इनकी संकुचित मनोवृत्ति ही कही जा सकती है। इन भिक्षार्थियों को क्या मालूम कि इन गीतों के लिपि बद्ध हो जाने से हमारे साहित्य की कितनी अनमोल निधियाँ नष्ट हो जाने से बच जायेंगी। इस मनोवृत्ति के कारण भी गीतों का मिलना कठिन होता जा रहा है।

लोक-गीत-संग्रह की मेरी योजना

इन उपर्युक्त कठिनाइयों का सामना करता हुआ, समय तथा धन का अपव्यय करता हुआ और स्वास्थ्य-रत्न को खोता हुआ आज मैं लगभग १२ वर्षों से इन लोक-गीतों का संग्रह लगातार करता चला आ रहा हूँ। दूसरे संग्रहकर्त्ताओं को धनकुबेरों का धन प्राप्त था और रईस तथा

राजाओं की सहायता। परन्तु मुझे इस कार्य में न तो किसी धनकुबेर ने कानी कौड़ी दी है और न किसी राजा तक मेरी पहुँच ही है। मैं तो लोक-गीतों के इस बीहड़ बन में निराश्रित, अकेला विचरता रहा हूँ। पाश्चात्य देशों में यह कार्य बड़ी-बड़ी संस्थाएँ किया करती हैं, जिन्हें गवर्नमेन्ट भी सहायता देती है। बंगाल के ग्राम-गीतों का जो संग्रह डाक्टर डी० सी० सेन की अध्यक्षता में हुआ है, वह कलकत्ता विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान या संरक्षण में हुआ था और उन गीतों के संग्रह के लिए अनेक वेतन-भोगी संग्रहकर्त्ता रक्खे गये थे। परन्तु मुझे इस कार्य में न तो किसी विश्वविद्यालय से ही सहायता मिली है और न संयुक्तप्रान्तीय सरकार का ही ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। कुछ सहायता मिलने की कथा तो बहुत दूर रही, इस क्षेत्र में मैं अपना कार्य बिना किसी वाचिक या आर्थिक सहायता के अकेला करता चला आ रहा हूँ। हाँ, एक वस्तु मुझे अवश्य मिली है! और वह है हिन्दी जनता की इन गीतों के प्रति कठोर उपेक्षा!! परन्तु भवभूति की इन पंक्तियों को यादकर बड़ी आशा होती है कि कभी तो कोई इस कार्य की कद्र करने वाला उत्पन्न होगा—

"उत्पत्स्यतेति भुवि कोपि समानधर्मा,
कालोह्ययं निरवधिः विपुला च पृथ्वी"

मैंने इन बारह वर्षों के बीच में कई हजार गीतों तथा कहानियों का संग्रह किया है, जो विभिन्न दृष्टियों से बड़े महत्त्व की हैं। भोजपुरी ग्राम-गीत प्रायः दो प्रकार के पाये जाते हैं—एक तो वे हैं, जिनमें केवल गेयता है कथा नहीं। दूसरे वे हैं, जो प्रबन्धात्मक या कथात्मक हैं और साथ ही गेय भी हैं। दूसरे शब्दों में इन्हें गेय गीत और कथात्मक गीत कह सकते हैं। अँग्रेजी में संभवतः इनका नामकरण 'लिरिक' और 'बैलेड' शब्दों से किया जा सकता है। मैंने जो गीतों तथा कहानियों का विपुल संग्रह किया है, उन्हें निम्नांकित पाँच भागों में प्रकाशित करने का मेरा विचार है।

(१) भोजपुरी लोक-गीत, प्रथम भाग—

यह हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन द्वारा सं० २००० में प्रकाशित हो चुकी है। इसका दूसरा संस्करण सं० २०११ में छप चुका है।

(२) भोजपुरी लोक-गीत, द्वितीय भाग—

यह पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत है।

(३) भोजपुरी लोक-गाथा तृतीय भाग—

उपर्युक्त दो भागों में केवल उन्हीं गीतों का संग्रह है, जो गेय (लिरिक) हैं तथा जिनमें कथानक नहीं है; परन्तु इस तीसरे भाग में उन गीतों का संग्रह है, जो वर्णनात्मक हैं, अर्थात् जो किसी लम्बे आख्यान को लेकर लिख गये हैं तथा गाये भी जाते हैं। यह भाग भी लिखकर तयार है और शीघ्र ही प्रकाशित होनेवाला है।

(४) भोजपुरी लोक-कथा—

इस भाग में उन देहाती कथाओं या घरेलू कहानियों का संग्रह है, जो गाँव की बूढ़ी दादियाँ अपने बच्चों से सोते समय कहती हैं अथवा उनका मन बहलाने के लिए उन्हें सुनाया करती हैं। ये कथाएँ बड़ी ही मनोरंजक हैं तथा भारतीय संस्कृति की प्रतीक हैं।

(५) भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन

इस भाग में भोजपुरी लोक-साहित्य—लोक-गीत, कहानियाँ, पहेलियाँ मुहावरे आदि की विस्तृत तथा गहन समीक्षा की गई है। इसमें उपर्युक्त चारों भागों की छानबीन कर जिस निर्णय पर हम पहुँचे हैं, उसकी गम्भीर समालोचना है। मैंने अपनी पी० एच० डी० की थीसिस का विषय 'भोजपुरी लोक-साहित्य का अध्ययन' रखा है। यह भाग मेरी उसी अनुसंधानपूर्ण थीसिस का परिवर्धित रूप है। इस प्रकार मैंने उपर्युक्त पाँच भागों में अपने लोक-गीतों के संग्रह तथा उसके अध्ययन को प्रकाशित करने का विचार किया है। आशा है, भगवान् की दया से मेरी यह योजना शीघ्र ही पूर्ण तथा सफल होगी।

अब मैं उन सज्जनों को धन्यवाद देना अपना परम कर्त्तव्य समझता हूँ, जिनकी प्रेरणा, उत्साह तथा सहायता से मुझे अपने इस कठिन कार्य में बल और सम्बल मिला है। मेरी पूजनीया माताजी के ही आशीर्वाद का यह फल है कि मैं इन गीतों के दो भागों को प्रकाशित करने में समर्थ हो सका हूँ। भोजपुरी ग्राम-गीत का प्रथम भाग इनके ही गाये गये गीतों के संग्रह का फल है। सच तो यह है कि यदि उनकी आज्ञा न होती, तो मैं इस दुस्तर कार्य में प्रवृत्त भी नहीं होता। ये गीत इनकी ही वस्तु हैं; अतः इस पुस्तक को उन्हीं के चरणों में समर्पित कर मैंने केवल अपने कर्त्तव्य का ही पालन किया है।

सर्वप्रथम मैं डाक्टर अमरनाथ झा, वाइस चान्सलर हिन्दू विश्वविद्यालय काशी को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपनी स्वाभाविकता और उदारता के कारण इस विनम्र लेखक की इस पुस्तक की भूमिका लिखने की प्रार्थना स्वीकार की और उसे लिखकर इसको महत्त्व प्रदान किया है। पितृकल्प ज्येष्ठ भ्राता पं० बलदेव उपाध्याय एम० ए० साहित्याचार्य, प्रोफेसर संस्कृत विभाग, हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी की सतत प्रेरणा और पथ-प्रदर्शन यदि मुझे न मिलता, तो इस कार्य का सम्पादन कठिन ही नहीं असंभव था। सच तो यह है कि मेरा साहित्यिक जीवन ही उन्हीं की देन है, उन्हीं की कृति है। अतः केवल धन्यवाद देकर उनसे उऋण होना कठिन है। मेरे अनुज पं० वासुदेव उपाध्याय एम० ए० ने इन गीतों के तथा कहानियों के ऐतिहासिक दृष्टिकोण को मुझे बतलाने की कृपा की है। डाक्टर उदयनारायण तिवारी, एम० ए० डि० लिट्, प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने मुझे इन गीतों के संग्रह के लिए सदा उत्साह प्रदान किया है। अतः मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। मेरे अनन्य मित्र पं० सत्यनारायण शास्त्री, वाइस प्रिन्सिपल दरबार संस्कृत कालेज, जोधपुर तथा पं० चन्द्रशेखर पाण्डेय व्याकरणाचार्य ने अनेक गीत प्रदान करने की कृपा की है; अतः मैं इन दोनों सज्जनों का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। अन्त में हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग के उत्साही तथा योग्य सहायक-मन्त्री पं० रामप्रताप त्रिपाठी शास्त्री को धन्यवाद

देना मैं कैसे भूल सकता हूँ, जिन के उद्योग तथा तत्परता के कारण ही यह पुस्तक इतनी शीघ्र और सुन्दर छप सकी है।

संभव है कि इस पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ अनजान में रह गई हों। दयालु पाठक इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे।

काशी
रामनवमी सं० २००५
१७-४-१९४८

—**कृष्णदेव उपाध्याय**

सोहर

(१)

प्रसंग—पुत्र जन्म के अवसर पर सास और ननद के द्वारा विभिन्न पदार्थों का दान।

सासु जे भेजेलीं नउनिया[1]; त ननदी बरिनिया[2] हू रे।
ललना गोतिनि अपने प्रभु जाइ; गोतिनिया हमहीं पाइच[3] रे॥१॥
सासु जे आवेलीं गवइत ; ननदी बजवइत रे।
ललना गोतिनि आवेली विसाधल[4]; गोतिनी घर सोहर रे॥२॥
सासु लुटावेली रुपैया; त ननदी मोहरवा नु रे।
ललना गोतिनी लुटावेली बनडरवा[5]; गोतिनिया फेरिहें पाइच रे॥३॥
सासु के डासेलीं खटियवा; ननदी के मचियवा हू रे।
ललना गोतिनी के पलंग रेसमिया; गोतिनिया फेरिहें पाइच रे॥४॥
सासु के दिहलीं चुनरिया; त ननदी पिअरिया[6] हू रे।
गोतिनी के लाहारा पटोरवा[7]; गोतिनिया फेरिहें पाइच रे॥५॥

बधू को लड़का हुआ है। अतः सास ने नाइन को तथा ननद ने बारिनि को गाँव सन्देशा भेजने के लिए बुलवाया। बधू की दायादिन ने अपने पति से कहा कि मैं भी कुछ देकर अपना ऋण चुकाऊँगी॥१॥

सास गाते हुए, ननद बजाते हुए और दायादिन क्रुद्ध होकर सोहर गाने के लिए आयी॥२॥

प्रसन्न होकर सास ने रुपया लुटाया, ननद ने मुहरें लुटाईं और दुष्टा दायादिन ने रूई के बीज दान में दिये॥३॥

सास को बैठने के लिए खटिया, ननद के लिए मचिया और दायादिन के लिए रेशम का पलंग दिया गया॥४॥

बधू ने पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में सास को चुनरी दिया, ननद को पीला वस्त्र दिया परन्तु दायादिन को रेशमी वस्त्र प्रदान किया (क्योंकि दायादिन का बदला चुकाना था)॥५॥

देहातों में ऐसी प्रथा है कि पुत्र जन्म या विवाह में जो नेग मिलता है, वही लौटाया जाता है। अतः दायादिन को वधू ने रेशमी वस्त्र दिया।

१. नाई की स्त्री। २. बारी की स्त्री। ३. ऋण, बदला। ४. क्रुद्ध। ५. रुई का बीज। ६. पीला वस्त्र। ७. रेशमी वस्त्र।

प्रसंग—पुत्र जन्म के अवसर पर पुत्र की माता की सासु की प्रसन्नता का वर्णन।

पुत्र जनम मन भावन; मंगल हम गाइबि हो।
ललना जुग-जुग[१] जीए मोर ललनवा; निरखि सुख पाइबि हो।।१।।
बहुजी के कोखिया[२] भरइले; उमड़ि हिय मोर गइले हो।
ललना लेइके ललनवा के गोद; बिहँसि हम खेलाइबि हो।।२।।
बाजत बा विमल बधइया[३]; उठेला नित मँगल हो।
ललना गंगा में लहर हिलोरे; ललनवा के लोभाइबि हो।।३।।
भइले सुरुजवा के साज; त कोखिया सुफल भइले हो।
ललना के देखि के सुरतिया; हमार नयना जुड़ाइल[४] हो।।४।।

बूढ़ी सास कहती है कि पुत्र का जन्म बड़ा आनन्द देने वाला होता है। इस उछाह भरे अवसर पर मैं मंगल गीत गाऊँगी। मेरा (पौत्र) युग-युग जीता रहे और उसे देखकर मैं सुख पाती रहूँ।।१।।

मेरी बधू की कोख भर गई अर्थात् उसको पुत्र-रत्न उत्पन्न हुआ और मेरा हृदय आनन्द से उमड़ गया है। मैं अपने पुत्र (पौत्र) को ोद में लेकर प्रसन्न होकर खेलाऊँगी।।२।।

घर में मंगल वाद्य बज रहा है। नित्य गीत गाये जाते हैं। मेरे हृदयरूपी गंगा में लहरें हिलोर मार रही हैं। मैं अपने पुत्र को खिलौनों से लुभाऊँगी।।३।।

जब सूर्य भगवान् की प्रार्थना हुई, तब कोख सुफल हो गयी अर्थात् पुत्र उत्पन्न हुआ। अब मैं अपने पुत्र के रूप को देखकर अपनी आँखों को सन्तुष्ट करूँगी।।४।।

पुत्र जन्म के आनन्ददायक अवसर पर बाजा बजना, मंगल गीत गाना तथा नाच का होना प्रायः साधारण घटना है। यह परम्परा बहुत प्राचीन जान पड़ती है। कालिदास ने रघु के जन्मोत्सव के समय का क्या ही सुन्दर वर्णन किया है—

"सुखश्रवा मंगलतूर्यनिस्वनाः, प्रमोदनृत्यैः सह वारियोषिताम्।
न केवलं सद्मनि मागधीपतेः, पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि।।

—रघुवंश ३।१९

(३)

प्रसंग—पुत्र जन्म के अवसर पर चरखे के कातने का वर्णन।

सखिया सब मिलि चरखा चलावहु जुग पलटावहु हो—टेक।
चरखा के राग सोहावन अति मन भावन हो।
सखिया सब मिलि चरखा चलावहु देस दुःख टारहु हो।।१।।

१. चिरकाल तक। २. कोख, हृदय। ३. मंगल, वाद्य। ४. सन्तुष्ट।

मेटी डाल सिर के सेनुरवा; नयन भरि काजल हो।
दाँत के मिसिया[1] अवरु सिंगार; कन्हैया घरवा नाहीं अइहें हो॥२॥
करबों[2] में सिर के सेनुरवा; नयन भरि काजल हो।
सासु करबों में सोलहो सिंगार; बलमु[3] मोर नित अइहे हो॥३॥

कोई स्त्री कहती है कि वर्षा रिमझिमकर बरस रही है। अतः मेरे आँगन में कीचड़ हो गया है। ऐ मेरी सास! अपने लड़के को मना करो; वह मेरे आँगन को और अधिक कीचमय कर रहा है॥१॥

इस पर क्रोधित होकर सास कहती है कि तुम अपनी माँग का सिन्दूर मिटा डालो और अपनी आँखों का काजल धो डालो। अपने दाँतों की मिस्सी तथा शृंगार को नष्ट कर दो। मेरा बालक तुम्हारे घर नहीं जायेगा॥२॥

इस पर बधू उत्तर देती है कि मैं अपने सिर में सिन्दूर लगाऊँगी, अपनी आँखों में काजल करूँगी और मेरा पति मेरे घर नित्य ही आयेगा॥३॥

इस गीत से सास की कुटिल मनोवृत्ति का अच्छा परिचय मिलता है।

(१३)

प्रसंग—बधू के द्वारा सुन्दर पुत्र पैदा होने पर सासु तथा ननद का सुन्दर पुत्र-जन्म का कारण पूछना तथा वधू का उत्तर।

पनवाँ अइसन धनि पातरि; कुसुम अइसन सुन्दर हो।
मोरे रामा उनहूँ के भइले नन्दलाल; होरिलवा[4] बड़ा सुन्दर हो॥१॥
मचिया बइठलि उत सासु बहुअवा से पूछेली हो।
आहो बहुआ[5] कवन-कवन तप कइलू; होरिलवा बड़ा सुन्दर हो॥२॥
माघ ही पुस के महिनवा त गंगा नहइली अगिनि नाहीं तापीले हो।
सासु निहुरि के सुरुज गोड़ लगलीं; होरिलवा भइले सुन्दर हो॥३॥
मचिया बइठलि उत ननदी; बहुअवा से पूछली हो।
आहो भउजी कवन-कवन फल खइलू; होरिलवा बड़ा सुन्दर हो॥४॥
खइलों में अमवा इमिलिया[6] अवरु घवद[7] के केरवा नु हो।
आहो फोरि फोरि खइलों नरियरवा[8] होरिलवा भइले सुन्दर हो॥५॥

सास कहती है कि मेरी बधू पान के समान पतली है और फूल के समान सुन्दर है। उसके एक बहुत सुन्दर पुत्र पैदा हुआ है॥१॥

१. काला पाउडर। २. करूंगी। ३. प्रियतम। ४. बालक। ५. बधू। ६. इमली। ७. झुण्ड, गुच्छा। ८. नारियल।

मचिया पर बैठी हुई सास अपनी बधू से पूछती है कि ऐ बधू ! तुमने कौन-कौन सा तप किया है, जिसके कारण तुम्हें इतना सुन्दर बालक पैदा हुआ है॥२॥

बधू ने कहा—पूस और माघ के महीने में मैं गंगा स्नान करती थी और अग्नि से अपने शरीर को गर्म नहीं करती थी। झुककर मैं सूर्य को प्रणाम करती थी, अतः मुझे सुन्दर बालक मिला है॥३॥

मचिया पर बैठी ननद ने पूछा—ऐ भावज ! तुमने कौन से फल खाये, जिससे इतना सुन्दर बालक पैदा हुआ है॥४॥

भावज ने उत्तर दिया—मैंने आम, इमली और केले खाये। नारियल को तोड़ कर चखा, इसीलिए इतना सुन्दर बालक पैदा हुआ है॥५॥

(१४)

प्रसंग—नन्दजी के पुत्र-जन्म के अवसर पर धाय का पारितोषिक माँगना।

नन्दजी के भइलबा आनन्द; त मुनि सब हरसेले[१] हो।
आहो ललना धगड़िनि के पड़ेला हंकार; त बेगि चलि आवहु हो॥१॥
काहाँ बाड़ी अगड़िनि धगड़िनि;[२] विधि के बनावल हो।
आहो ललना छिनसु[३] रमइया[४] जी के नार; त अवरि[५] सुतावहु हो॥२॥
अइलिनि अगड़िनि धगड़िनि; विधि के बनावल हो।
रानी का देबू हमरा के दान; रमइया के निछावर[६] हो॥३॥
लेबि हम सोना के केरी छुड़िया; रूपहि केरा खापड़ हो।
रानी लेबि हम गजमोती के हार; रमइया के निछावर हो॥४॥
काहां पाइबो सोने केरे छुड़िया; रूपहि केरा खापड़[७] हो।
धगड़िनि काहाँ पइबों मोती के हार; रमइया के निछावर हो॥५॥
साध ही फूलेले बेइलिया; साध[८] ही फूले कँवल हो।
रानी साध ही जन्मेले होरिलवा, साध ही उठे सोहर हो॥६॥

नन्दजी को पुत्र पैदा हुआ है। अतः सब मुनि लोग प्रसन्न हैं। धाय को बुलाया गया है कि तुम शीघ्र चली आओ॥१॥

माता कहती है कि धाय कहाँ है ? विधि के द्वारा बनाये गये बालक के नाल (नार) को वह काटे और उसे उबटन लगाकर सुलावे॥२॥

धाय दौड़ती हुई आयी और उसने रानी से पूछा कि तुम मुझे बालक के निछावर के रूप में क्या दोगी॥३॥

१. प्रसन्न होना। २. धाय। ३. काटना। ४. पुत्र। ५. उबटन लगाना। ६. न्यौछावर। ७. खप्पर। ८. इच्छा, अभिलाषा।

मैं सोने का चाकू और चाँदी का खप्पर लूँगी। बालक के निछावर के रूप में मैं गजमुक्ता का हार लूँगी ॥४॥

तब रानी ने उत्तर दिया—मैं सोने का चाकू, चाँदी का खप्पर और मोती की माला कहाँ पाऊँगी ? जिससे अपने बालक के लिए मैं तुम्हें निछावर दे सकूँ ॥५॥

धाय ने कहा—अभिलाषा से ही लता फूलती है, इच्छा से कँवल (कमल) फूलता है, चिरकालिक इच्छा से ही बालक उत्पन्न होता है और साध से ही सोहर गाया जाता है। अतः बहुत साध के बाद पुत्र के उत्पन्न होने के कारण मुझे बहुमूल्य निछावर अवश्य दो ॥६॥

पुत्र-जन्म के उपलक्ष में धाय, नौकर, चाकर इनाम माँगते हैं। अन्य स्त्रियाँ आभूषण माँगती है। चूँकि धाय जाति शिशु की अधिक सेवा करती है। अतः उसकी 'माँग' अधिक होना स्वाभाविक ही है॥

जोग

(१)

प्रसंग—ब्याह के लिए वर का आना और सास की उसके प्रति उक्ति।

हमरा पिछुवारवा चनानवा ना।
आरे छनन[1] बिछन गइली डढ़िया ना॥१॥
ताहि तरे उतरे कवन दुलहा ना;
खींचि खींचि पगिया[2] बान्धेले ना॥२॥
चिठिया जे लिखलीं कवन देई ना;
जोगवा[3] जनि लागसु ना॥३॥
मोरबाबू पढ़ल पण्डित ना;
जोगवा जनि लागसु ना॥४॥
चिठिया जे लिखेली कवन देई ना;
जोगवा हम लाइबि ना॥५॥
जाहि जोगे धिया हमार बससु[4] ना;
जोगवा हम लाइबि ना॥६॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे मकान के पीछे चन्दन का वृक्ष है और उसकी डालें इधर-उधर फैली हुई हैं॥१॥

उसी वृक्ष के नीचे कोई दूल्हा विवाह करने के लिए आता है और खींच-खींच कर पगड़ी को बाँधता है॥२॥

उसकी माता अपने पुत्र के पास पत्र लिखती है जिससे उसे जोग (टोना) न लगे॥३॥

वह कहती है कि मेरा पुत्र पण्डित है अत: उसे जोग नहीं लग सकता है॥४॥

परन्तु उसकी सास उसके पास पत्र लिखकर उसे जोग लगाने के लिए कह रही है॥५॥

जिस जोग (टोना) के कारण मेरी पुत्री का पति के घर में आदर होगा, उस जोग को मैं अवश्य करूंगी॥६॥

पति के मन को वश में करने के लिए स्त्रियाँ अनेक तन्त्र-मन्त्र करवाती हैं, उसी को जोग कहते हैं।

१. विस्तार, फैलाव। २. पगड़ी। ३. टोना। ४. आदर प्राप्त करना, रहना।

(२)

प्रसंग—मथुरा से कृष्ण का सन्देश लेकर आये हुए उद्धवजी के प्रति किसी विरहिणी गोपी की उक्ति।

बसहर[1] घरवा ए ऊधो; रामा झिलि मिलि बाती।
पिया ले में सुतली ए ऊधो; रामा अँचरा डसाई ॥१॥

जौं हम जनिति ए ऊधो; रामा पिया जइहें चोरी।
रेसम के डोरिया ए ऊधो; रामा घींचि[2] बाँध बँधितीं ॥२॥

रेसम के डोरिया ए ऊधो; रामा टूटि फाटि जइहें।
बचन के बान्हल पियवा; रामा से हो काहाँ पइबो ॥३॥

जवनी डहरिया[3] ए ऊधो; रामा पिया गइले चोरी।
तवनी डहरिया ए ऊधो; रामा बगिया लगाओं ॥४॥

बगिया के ओते[4] रे ओते; रामा केरा नरिअर[5] लाई।
अँगना ससुर ए ऊधो; रामा दुअरा भसुरा ॥५॥

कइसे के बहरा रे होखीं; रामा बाजेला नुपुर।
गोड़ के नुपुरवा ए ऊधो; रामा फाँड़े बाँधि लेहूँ ॥६॥

अलप जोबनवा[6] ए ऊधो; रामा हिदंवे लगाई ॥७॥

पत्र मधे[7] पान ए ऊधो; रामा फर मधे नरियर।
तिरिया मधे राधा ए ऊधो; रामा पुरुख मधे कान्हा ॥८॥

कत ले पहिरों ए ऊधो; रामा कत समझो गूना[8]।
सोना के सिंधोरवा ए ऊधो; रामा लागि गइले धूना[9] ॥९॥

मोरा लेखे आहो ए ऊधो; रामा दिन भइले रतिया।
मोरा लेखे आहो ए ऊधो; रामा जमुना भयाती[10] ॥१०॥

भनहिं विद्यापति ए ऊधो; रामा सुनु-सुनु ब्रिज नारी।
धिरिजा धरहु ए राधा; रामा मिलिहें मुरारी ॥११॥

कोई विरहिणी गोपी कह रही है कि ऐ ऊधो, मेरा घर बाँस का बना हुआ है और उसमें जलते हुए दीपक की बत्ती झिलमिला रही है। मैं आँचर बिछाकर अपने पति के साथ सो गयी ॥१॥

१. बाँस का। २. खींचकर। ३. डहर, मार्ग। ४. ओट, किनारा। ५. नारियल। ६. स्तन। ७. मध्य, बीच में। ८. गुण, प्रशंसा। ९. घुन। १०. भयावनी डराने वाली।

जो मैं जानती कि मेरा पति चोरी चला जायेगा, तो मैं रेशम की डोर से उसे खींचकर बाँधती ॥२॥

ए ऊधो ! रेशम की डोरी तो टूट जायेगी, लेकिन बचन से बाँधा हुआ (प्रतिज्ञाबद्ध) पति कहाँ जा सकता है ॥३॥

ए ऊधो ! जिस रास्ते से मेरा पति चोरी गया है अर्थात् परदेश गया है उस रास्ते में मैं बगीचा लगाऊँगी ॥४॥

बगीचे के किनारे-किनारे पर मैं केला और नारियल लगाऊँगी ॥५॥

परन्तु आँगन में ससुर हैं और द्वार पर भसुर खड़ा है। मैं कैसे बाहर जाऊँ, क्योंकि पैर के नूपुर बज रहे हैं ॥६॥

ऐ उधो ! मैं पैर के नूपुरों को अपने आंचर में बाँध लूँगी और अपने छोटे जोबन को हृदय (चोली) में छिपा लूँगी ॥७॥

पत्तों में पान, पेड़ों में नारियल, स्त्रियों में राधा और पुरुषों में कृष्णजी श्रेष्ठ हैं ॥८॥

मैं कब तक वस्त्र पहिनूँ (अपने को अलंकृत करूँ) और कहाँ तक कृष्ण के गुण गाऊँ। मेरे सोने के (बहुमूल्य) सिंघोरे में घुन लग गया अर्थात् बहुत दिन व्यतीत हो गये फिर भी कृष्ण जी लौट कर नहीं आये ॥९॥

ए ऊधो ! मेरे लिए दिन रात अर्थात् अन्धकारमय हो गया है और मेरे लिए सुन्दर जमुना आज भयावनी बन गयी है ॥१०॥

विद्यापति कहते हैं कि ऐ ब्रज की नारी ! सुनो, ऐ राधा ! धैर्य को धारण करो, तुम्हें कृष्णजी अवश्य मिलें ॥११॥

विद्यापति की यह काकली सचमुच सुधा से भी मीठी है।

(३)

प्रसंग—भाई का बहन की ससुराल में जाना तथा बहिन के द्वारा अपने निक कष्टों का निवेदन। भाई का घर लौटकर अपनी माता से बहन के कष्टों की चर्चा।

बैठहु ए भइया चनन[1] पिढ़िया[2] रे ना।
भइया तिरिया[3] धनुहिया गजोबर[4] रे ना ॥१॥
बैठहु ए भइया मालिन का अगवसवा[5] रे ना।
भइया मोर दुःख जाने ले मलिनिया रे ना ॥२॥
बिनहा[6] मापल भुँइयाँ लीपन रे ना।
भइया आँआ[7] भरल बरतन माँजीले रे ना ॥३॥

१. चन्दन। २. पीढ़ा। ३. तीर, बाण। ४. अन्धेरा घर। ५. बरामदा। ६. बीघा। ७. आँवा।

मन भरि भइया कूटन पीसन रे ना।
भइया मन भरि सीझेले[1] रसोइया रे ना ॥४॥

पहिलि ठिकरियाँ[2] हमरि भोजनिया रे ना।
भइया ओहु में कुकुर बिलरिया रे ना ॥५॥

भइया ओहु में चेरिया लँउड़िया रे ना।
भइया ओहु में लहुरि[3] ननदिया रे ना ॥६॥

इहे-इहे दुख, भइया अमवा से जनि कहिह रे ना।
भइया मचिया बइठल अमवा रोइहे रे ना ॥७॥

इहे-इहे दुख भइया बाबा से जनि कहिह रे ना।
भइया सभवा बइठल बाबा रोइहे रे ना ॥८॥

इहे-इहे दुख भइया भउजी से जनि कहिह रे ना।
भइया अइलैं-गइलैं[4] भउजी उघटिहे[5] रे ना ॥९॥

इहे-इहे दुख भइया चाचा जनि कहिह रे ना।
भइया जिन चाचा कइले अगुवइया[6] रे ना ॥१०॥

बहिनि का रोअले[7] भींजल चुनरिया रे ना।
भइया का रोअले भींजल पटुकवा रे ना ॥११॥

बैठहु ए पुता चनन पिढ़ैया रे ना।
पूता कह ना बहिनि कुसलैया रे ना[7] ॥१२॥

जइसहिं घमवासे बेइलि[8] सुखेले रे ना।
ओइसहिं[9] ए सुखेले बहिनियां रे ना ॥१३॥

जइसहिं ए अमवा गंगा न छछैली[10] रे ना।
ओइसहिं ए अमवा रोएलि बहिनिया, रे ना ॥१४॥

धनि तोर एक पूता कठिन करेजवा रे ना।
पूता रोअति[11] बहिनि छोड़ि अइले रे ना ॥१५॥

बहन अपने भाई से कहती है कि ऐ भइया! तुम चन्दन के पीढ़े पर बैठो और अपने तीर धनुष को अँधेरे घर में रख दो॥१॥

१. पकता है। २. छोटी, सूखी रोटी। ३. छोटी। ४. आवागमन। ५. व्यंग रूप से किसी दोष का कथन। ६. बिचवाई। ७. कुशल समाचार। ८. बेला का फूल या लता। ९. उसी प्रकार से। १०. बाढ़ से मुक्त उमड़ना। ११. रोती हुई।

ऐ भइया! मालिन के बरामदे (अपना घर छोटा होने के कारण) में बैठ जाओ। मेरे दुःख को मालिन ही जानती है ॥२॥

बहन अपने दुःखों का निवेदन करती हुई कहती है कि मुझे एक बीघे के बराबर लम्बा चौड़ा आँगन तथा रसोई घर रोज लीपना पड़ता है तथा मुझे नित्य इतना अधिक बर्तन माँजना पड़ता है जितना कोहार के आँवे में अँट सके ॥३॥

मुझे एक मन रोज कूटना और पीसना पड़ता है और एक मन अन्न की रसोई बनानी पड़ती है ॥४॥

पहिली रूखी, सूखी रोटी ही मेरा भोजन है और उसमें भी कुत्ते और बिल्ली उसे आकर खा जाते हैं ॥५॥

उस रोटी में भी घर की दासियाँ अपना हिस्सा माँगने लगती हैं और छोटी ननद अपने भाग के लिए अलग चिल्लाती है ॥६॥

यही सब मुझे दुःख है। परन्तु माताजी से इन दुःखों को मत कहना, क्योंकि मचिया पर बैठी हुई माता इन दुःखों को सुनकर रोने लगेगी ॥७॥

इन दुःखों को मेरे पिताजी से मत कहना, क्योंकि लोगों के बीच में बैठे हुए पिताजी इन दुःखों को सुनकर रोने लगेंगे ॥८॥

इन दुःखों को मेरी भावज से मत कहना, क्योंकि जब मैं मायके आऊँगी, तब वह इन बातों को कहकर व्यंग्य करेंगी ॥९॥

इन दुःखों को मेरे चाचाजी से मत कहना, क्योंकि उन्होंने ही इस विवाह में अगुआ का काम किया था अर्थात् बिचवैया बनकर उन्होंने ही यह विवाह कराया था ॥१०॥

इस दुःख को कहते-कहते रोने से बहन की सारी चूनरी भींग गई और इस दुःख से दुःखी होकर रोने से भाई के सारे कपड़े भींग गये ॥११॥

जब भाई लौटकर अपने घर गया, तब माता ने कहा कि ऐ पुत्र! चन्दन के पीढ़ा पर बैठो और बहिन का सब समाचार कहो ॥१२॥

तब भाई (पुत्र) ने उत्तर दिया—ऐ माता! जिस प्रकार से धूप के कारण लता सूख जाती है, उसी प्रकार से मेरी बहन सूख गई है ॥१३॥

जिस प्रकार से गंगा बाढ़ के कारण उमड़ जाती है, उसी प्रकार से बहिन की आँखों में आँसू उमड़े पड़ते हैं ॥१४॥

माता ने कहा—ऐ पुत्र! धन्य तुम्हारा कठोर हृदय है, जो तुम ोती हुई बहिन को छोड़कर चले आये हो (उसके दुःखों को सुन) उसे अपने साथ ही क्यों नही लेते आये ॥१५॥

इस गीत में लड़की के दुःखों का सजीव वर्णन किया गया है, उसके दुःखों को सुनकर पत्थर का हृदय भी मोम की भाँति पिघल जायेगा। उसके लिए ससुराल क्या है रौरव नरक है। माता का कोमल हृदय इस गीत में स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। अपनी पुत्री के दुःख को सुनकर रोना और उसे न लाने के लिए पुत्र को डाँटना स्वाभाविक ही है ॥१६॥

सेहला

(१)

प्रसंग—ससुराल में विवाह के लिए गये हुए बच्चे दुलहे से रात भर जगकर अपने मौर तथा वस्त्र को सँभालने की प्रार्थना।

तोरा सिर के सेहरा[1] ओलरी[2] परी,
तोर बाबा न लीहे सँवार[3]।
दुलहा नींद नेवार[4] न नींद नेवार,
सारी रात दुलहा नींद नेवार ॥ १ ॥
तोरा कान के सोना ओलरी परी,
तोर चाचा न लींहे सँवार।
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार,
सारी रात दुलहा नींद नेवार ॥ २ ॥
तोरा मुख के बीड़ा ओलरी परी,
तोर भइया न लींहे सँवार।
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार,
सारी रात दुलहा नींद नेवार ॥ ३ ॥
तोरा अंग के जोड़ा[5] ओलरी परी,
तोर जीजा[6] न लींहे सँवार।
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार,
सारी रात दुलहा नींद नेवार ॥ ४ ॥
तोरा सेज के दुलहिन ओलरी परी,
तोर भाभी[7] न लींहे जगाय।
दुलहा नींद नेवार न नींद नेवार,
सारी रात दुलहा नींद नेवार ॥ ५ ॥

कोहबर में गये हुए दूल्हे से स्त्रियाँ कहती हैं कि तुम्हारे सिर पर लगाया हुआ सेहरा झुक रहा है (क्योंकि तुम निद्रालु हो रहे हो)। तुम्हारा पिता इसको

१. मौर। २. झुक रहा है। ३. सँभालना। ४. रोको। ५. वस्त्र विशेष। ६. बहनोई, बहन का पति। ७. सरहज।

यहाँ पर सँवार कर नहीं रख सकता। ऐ वर! तुम आज सारी रात अपनी नींद को रोको ॥१॥

तुमने अपने कानों में जो सोने के कुण्डल लगा रक्खे हैं, वे भी (तुम्हारे निद्रालु होने से) झुक रहे हैं। उन्हें तुम्हारा चाचा नहीं सँवार सकता। ऐ वर! आज सारी रात अपनी नींद को रोको॥२॥

तुमने अपने मुँह में जो पान का बीड़ा खाने के लिए लिया है, वह भी मुँह से बाहर गिर रहा है। उसे तुम्हारा भाई ठीक नहीं कर सकता। अतः ऐ वर! तुम आज सारी रात जागो॥३॥

तुमने जो कपड़े शरीर पर पहन रक्खे हैं, वे भी सिकुड़ कर दब रहे हैं। उन्हें तुम्हारा जीजा (बहनोई) नहीं सँभाल सकता। ऐ दूल्हा! तुम आज सारी रात अपनी नींद को रोको॥४॥

तुम्हारी सेज पर सोने वाली स्त्री भी निद्रा के कारण झुक-झुक कर गिर रही है। तुम्हारी सरहज (साले की स्त्री) उसे नहीं सँभाल सकती। ऐ दूल्हा, आज सारी रात अपनी नींद को रोको॥५॥

उपर्युक्त गीत में बाल-विवाह की एक झलक स्पष्ट दिखाई पड़ रही है। वर विवाह करने के लिए गया है; परन्तु वह तना छोटा है कि रात भर जगकर विवाह के कृत्य को समाप्त नहीं कर सकता और बीच ही में सो जाता है। इसलिए ससुराल की स्त्रियाँ उसे रात भर जगने के लिए बार-बार कह रही हैं। अब भी ऐसे कितने दुधमुँहे बच्चों का विवाह हो जाता है, जिन्हें यह भी नहीं मालूम कि मेरा विवाह हुआ भी है या नहीं। परन्तु सौभाग्यवश यह प्रथा धीरे-धीरे कम हो रही है।

(२)

प्रसंग—विवाह करने के लिए जाते हुए वर के विभिन्न अंगों का वर्णन।

दुलहा तोरे हाथे नवरंगिया रे ॥ टेक ॥
दुलहा के सिर पर मउरि[१] सोभे,
तोर लरिया में लागल झुनझुनिया[२] रे।
दुलहा के काने कुण्डल सोभे,
तोर मोती में लागल झुनझुनिया रे ॥ १ ॥
दुलहा के अंगे जोड़ा सोभे,
तोरा नीमा में लागल झुनझुनिया रे।
दुलहा के पांवे मोजा सोभे,
मेहुद में लागल झुनझुनिया रे ॥ २ ॥
दुलहा के सेजे लाढ़ो[३] सोभे,
तोर घँघुटा में लागल झुनझुनिया रे ॥ ३ ॥

१. मौर, वर के सिर का ताज। २. घुंघुरू। ३. स्त्री का नाम।

विवाह करने के लिए जाते हुए वर से घर की स्त्रियाँ कह रही हैं कि ऐ दुलहा! तुम्हारे हाथ में नारंगी है। तुम्हारे सिर पर मौर (सेहला) शोभित हो रहा है और माला में घुँघरू हैं। तुम्हारे कान में कुण्डल सुशोभित हैं और मोती की माला में झुनझुनिया लगी हुई है॥१॥

दुलहा के अंग में वस्त्र सुशोभित हो रहे हैं, उसके नीमा में झुनझुनिया लगे हुए हैं, उसके पैर में मौजे अच्छे लगते हैं तथा मेहद में घुंघुरू लगे हुए हैं॥२॥

दुलहा की सेज पर लाढ़ो नामक सुन्दरी सुशोभित हो रही है और घूँघट में घूंघरू लगे हुए हैं॥३॥

(३)

प्रसंग—वर के विवाह में मउरि बनाने के लिए मालिन से कहना।

देबि रे मलिनिया सोना के रे सुइया;[1]
अब गुथि[2] लाउ रे मलिनिया सोना के रे मउरी ॥ १ ॥
सेहला लेके ठाढ़ भइली रे मलिनिया;
अब के तोरा करिहें सेहलवा के मोल ए ॥ २ ॥
बाबा जे हमरो कवन लाल;
अब उहे बाबा करिहें सेहलवा के मोल ए ॥ ३ ॥
भइया जे हमरो कवन भइया;
अब उहे भइया करिहें सेहलवा के मोल[3] ए ॥ ४ ॥

दूल्हा की माता कहती है कि ऐ मालिन! मैं तुम्हें सोने की सुई दूंगी, तुम मेरे बालक के लिए सोने की मौर बनाकर ले आओ॥१॥

सेहला लेकर मालिन खड़ी हो गई और पूछने लगी कि इसका मोल भाव कौन करेगा॥२॥

इस पर बालक ने उत्तर दिया कि मेरे पिताजी और भइया मिलकर इस मौर का मोल-भाव करेंगे और तुम्हें इसका दाम चुकायेंगे॥३-४॥

(४)

प्रसंग—दुलहा के विभिन्न अंगों का तथा विवाह करके स्त्री के साथ लौटते समय पत्नी और पति का वर्णन। मार्ग की स्त्रियों की उक्ति।

दुलहा के सिरे पगिया भला सोमे; दुलहिन के सोमे अनार कलिया।
फुलवरिया में डेरा गिरा दे रे; भला बगिया में डेरा गिरा दे रे ॥ १ ॥
दुलहा के मुखे बीड़ा सोभा; दुलहिन दांते मिसिया रे।
दुलहा के अंगे जोड़ा भी सोमे; दुलहिन का सोमे चोलिया रे ॥ २ ॥
बगिया में दुलहा के सेजे दुलहिन सोमे; दुलहिन के सोमे लोकनिया रे ॥ ३ ॥

१. सूई। २. गूँथना। ३. दाम लगाना।

दुलहा के सिर पर पगड़ी तथा बधू के गले में हार सुशोभित हो रहे हैं! ऐ वर! इसी बाग में अपना डेरा गिरा दो ॥१॥

वर के मुख में पान अच्छा लगता है और स्त्री के दांतों में मिस्सी। दुलहा के अंग में वस्त्र सुशोभित है और दुलहिन के अंग में चोली ॥२॥

बाग में दुलहा की सेज पर दुलहिन अच्छी लगती है और दुलहिन के साथ दासी अच्छी लगती है ॥३॥

(५)

प्रसंग—विवाह के लिए जाते हुए वर का अपने माता-पिता आदि से बारात के विभिन्न उपकरणों को सजाने की प्रार्थना।

बाबा जे हमरा कवन दादा हरीवाले बने।
उहे बाबा सेहला सँवारत आजु हम दुलह बने ॥ १ ॥
दादी जे हमरा कवन दादी हरीवाले बने।
उहे दादी वाले सिर आंचर आजु हम दुलह बने ॥ २ ॥
फूफा जे हमरा कवन फूफा हरीवाले बने।
उहे फुफा जोड़वा संवारे त आजु हम दुलह बने ॥ ३ ॥
फूआ जे हमरा कवन फुआ हरीवाले बने।
उहे फूआ डाले सिर आंचर आजु हम दुलह बने ॥ ४ ॥
बाबा जे हमरा कवन बाबा हरीवाले बने।
उहे बाबा साजेले बारात त आज हम नौसे[1] बने ॥ ५ ॥
अम्मा जे हमरो कवन अम्मा हरीवाले बने।
उहे अम्मा डाले सिर आंचर आजु हम दुलह बने ॥ ६ ॥

विवाह करने के लिए जाने वाला वर कहता है कि मेरे दादाजी सेहला सँवारेंगे और मैं दूल्हा बनकर जाऊंगा ॥१॥

हमारी दादी आज मेरे सिर पर आँचर डालेंगी अर्थात् मेरा 'परिछावन' कर मुझे आशीर्वाद देंगी ॥२॥

मेरा फूफा मेरे पहिनने के वस्त्रों को सँवारेगा और मैं दूल्हा बनकर आज जाऊँगा ॥३॥

मेरी फूआ मेरे सिर पर आँचर रखकर परिछावन करेगी और मैं वर बन कर जाऊँगा ॥४॥

---

१. दूल्हा।

मेरा पिता बारात साजेगा और मैं 'नौशाह' बनकर विवाह करने जाऊँगा ॥५॥

मेरी माता मेरे सिर पर आँचर रखकर मेरा परिछावन करेगी और आशीर्वाद देगी ॥६॥

(६)

प्रसंग—माता के द्वारा मौर का दाम लगाना।

मलहोरिआ के गलि ए निकलु मोर लाल बने ।
अब कर मउरी के मोल, सहाना लाल बने ॥ १ ॥
मलाहोरिन ह मनमोहनी; मोर लाल बने ।
अब दुलहा कमल का फूल सहाना लाल बने ॥ २ ॥

अर्थ स्पष्ट है।

विवाह

(१)

सन्दर्भ—पुत्री के पैदा होने के कारण माता अपने भाग्य को कोसती है तथा सन्ताप कर रही है।

जाहि[1] दिन बेटी हो तोहार[2] जनम भइले; पेड़ री[3] मोर घहराइ[4] ए ।
मांस मछरिया बेटी मन ही न भावेला; पेड़ री मोर घहराइ ए ॥ १ ॥
जाहि दिन बेटी हो तोहरो जनम भइले; भइली भदउआ[5] के रात ए ।
सासु ननद घरे दिअरो[6] न बारेली[7]; उ हो प्रभु बोलेले कुबोल[8] ए ॥ २ ॥
जाहि दिन बेटी हो तोहरो बिआह होइहें; बाबा के हिरदया जुड़ाइ[9] ए ।
धन-धन बेटी हो तोहरो जनम भइले; देवतन[10] लिहले बसेढ़[11] ए ॥ ३ ॥
भइले बिआह परेला सिर सेनुर; नव लाख माँगे दहेज ए ।
घर में के भाँड़ा[12] आँगन देई पटकबि; सतरु[13] के धिया[14] जनि होइ ए ॥ ४ ॥
जाहु हम जनितीं कि धिआ कोखि जनमिहें; पिहितीं हम मरिचि झरार[15] ए ।
मरिचि के झारे[16] झुरे धिया मरि जइती; छूटि जइते गरेहुआ[17] सन्ताप ए ॥ ५ ॥

माता कहती है कि ऐ बेटी ! जिस दिन से तुम्हारा जन्म हुआ है, उसी दिन से मेरी पेंडुरी में दर्द हो रहा है। मुझे मांस और मछली का खाना तनिक भी अच्छा नहीं लगता ॥१॥

ऐ बेटी ! जिस दिन से तुम्हारा जन्म हुआ है, उस दिन से मुझे भादों की रात ही दिखाई पड़ती है अर्थात् तुम्हारे जन्म के कारण मुझे सारा संसार अंधकारमय दिखाई पड़ रहा है। मे ी सास और ननद सूतिकागृह में दीपक भी नहीं जलातीं और पति भी बुरी बोली बोलते हैं ॥२॥

ए बेटी ! जिस दिन तुम्हारा विवाह होगा, उस दिन तुम्हारे पिता का हृदय सिर का भार उतर जाने के कारण सन्तुष्ट होगा। बेटी ! तुम्हारा जन्म धन्य (अधन्य) है कि देवता भी (मेरे घर को छोड़कर) दूसरे स्थानों में निवास करते हैं (पुत्री पैदा होने के कारण उन्होंने मेरे घर को छोड़ दिया है) ॥३॥

१. जिस। २. तुम्हारा। ३. मांस-पिण्ड वा नस। ४. दर्द होना। ५. भादो मास। ६. दीपक। ७. जलाना। ८. बुरी बोली। ९. सन्तुष्ट होना। १०. देवता। ११. वास-स्थान। १२. भाँड़ा बर्तन। १३. शत्रु। १४. धीता, लड़की। १५. कड़ुआ। १६. गर्मी। १७. अत्यधिक।

माता कहती है कि जब तुम्हारा विवाह होगा, तुम्हारी माँग में सिन्दूर पड़ेगा और दूल्हा नव लाख रुपया दहेज में माँगेगा तो (गरीबनी होने के कारण) मैं अपने घर के सब बर्तनों को उसे देने के लिए आँगन में लाकर पटक दूँगी। शत्रु को भी लड़की कभी न पैदा हो॥४॥

यदि मैं जानती कि मुझे लड़की पैदा होगी, तो काली मिर्च को पीस कर पी जाती (जिससे गर्भ गिर जाता) उस मिर्च की गर्मी से लड़की मर जाती और मेरा पुत्री जन्म से उत्पन्न बहुत बड़ा दुःख छूट जाता॥५॥

समाज में पुत्री का जन्म कितना दुःखदायी समझा जाता है, इसका बड़ा ही मार्मिक चित्रण इस गीत में किया गया है। पुत्री-जन्म से उत्पन्न माता के दुःख का वर्णन करना कठिन है। पुत्री के पैदा होने से 'पेड़ुरी के घहराने' तथा 'भदउवा के रात' होने में माता की विषम वेदना छिपी हुई है। इसीलिए प्राचीन आचार्यों ने पुत्री-जन्म को बड़ा दुःखदायी बतलाया है।

"पुत्रीति जाता महती हि चिन्ता; कस्मै प्रदेयेति महान् वितर्कः।
दत्त्वा सुखं प्राप्स्यति वा न वेति; कन्या पितृत्वं खलु नाम कष्टम्॥"

(२)

सन्दर्भ—ससुर को दान-दहेज देने के लिए पुत्री की प्रार्थना अपने पिता से। पिता के द्वारा समधी का उचित सत्कार।

खम्भवनि[1] ओट[2] धरि बेटी हो कवन बेटी; बाबा से अरज हमार ए।
लाल ही घोड़ा चितकाबर[3] घोड़ा; सोने के जड़ल लगाम ए॥१॥
उ ही घोड़वा मोरा ससुर के दीह; लीहें बाबा नाम तोहार ए।
एक हाथे ले-ले समधी वही के दहेड़िया[4]; एक हाथे घोड़ा के लगाम ए॥२॥
समधी मनावन[5] चलेले कवन लाल; जइसे अजोधा के राम ए।
समधी मनावत छतिया लगवले, बिहले गलइचा बिछाइ ए॥३॥
हमरा त समधी हो दान वहेजवा; हमरा त धन भोंडार ए।
सुन्नर बाड़ी हमार बेटी कवन बेटी; नीमन[6] बाड़े हमार जान ए॥४॥
न हम चाहीं समधी दान रे दहेजवा; न हम चाहीं धन भोंडार ए।
सुन्नर चाहिले पतोहिया[7] ए समधी; नीमन कुल बन दान ए॥५॥
कुलवा बखानीले राजा दरबरिया, बेटी मड़उआ[8] के बीच ए॥६॥

कोई पुत्री अपने पिता से खंभे की ओट से कह रही है कि पिताजी! आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि आप मेरे ससुर को लाल और चितकबरा (कर्बुर) घोड़ा दीजिए, जिसके मुँह में सोने की लगाम लगी हुई हो॥१॥

१. खम्भा। २. छिपकर। ३. कर्बुर। ४. बर्तन। ५. प्रसन्न करना। ६. अच्छा। ७. पुत्र-वधू। ८. मंडप।

यदि ऐसा घोड़ा आप मेरे ससुर को दीजिएगा, तो वह आपका सदा नाम लेंगे अर्थात् आपकी प्रशंसा करेंगे ॥२॥

इतना सुनकर पिता ने एक हाथ में दही और दूसरे हाथ में घोड़े का लगाम ले लिया और समधी को मनाने के लिए वह उस प्रकार चला, जैसे अयोध्या में राम चलते हैं ॥३॥

समधी को प्रसन्न करते समय पिता ने उसे छाती से लगाया और गलीचा बैठने के लिए बिछा दिया तथा कहने लगा कि ऐ समधी ! मेरा दान, दहेज, धन और अन्न का भण्डार सब कुछ यही मेरी सुन्दर बेटी है, जो मुझे प्राणों से भी प्यारी है ॥४॥

तब समधी ने कहा—न तो मैं दान-दहेज चाहता हूँ और न धन तथा अन्न का भण्डार ही चाहता हूँ। मैं तो अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाली सुन्दरी पुत्र-बधू (पतोहू) चाहता हूँ ॥५॥

(क्योंकि) राजा के दरबार में उच्च कुल की और मण्डप में सुन्दर पतोहू की प्रशंसा होती है ॥६॥

(३)

सन्दर्भ—पति के द्वारा तालाब में पत्नी की प्राप्ति तथा दोनों में वार्तालाप।

केकरा ही नदिया रे झिलमिल[1] पनिया;
अरे केकरा ही नदिया सेवार ए।
केकरा ही नदिया चल्हवा[2] मछलिया;
कवन दुलहा लावेला जाल ए ॥ १ ॥
बबा के नदिया रे झिलमिल पनिया;
भइया के नदिया सेवार ए।
ससुर के नदिया रे चल्हवा मछलिया;
मोहन दुलहा लावे महजाल ए ॥ २ ॥
एक जाल लवले दुलहा दुई जाल लवले;
बाझि गइले घोंघवा[3] सेवार ए।
सतीर जाल जब लवले कवन दुलहा,
बाझि गइल कनियाँ कुँआर ए ॥ ३ ॥
दाँत ताहार देखलीं ए दुलहा बिजुली चमके;
अवरु ओठ ताहार कतरल[4] पान ए।
अतना सुरत रउरा बाड़े ए दुलहा;
कवन बिधि रहलीं कुंआर ए ॥ ४ ॥

१. निर्मल। २. मछली का एक विशेष प्रकार। ३. घोंघा। ४. काटा हुआ।

बाबा मोर करेले दँवरिया[1];
अवरु भइया मोर करे कुरुखेत ए।

चाचा मोर करेले जिरवा के लदनियाँ[2];
ओहि बिधि रहलीं कुँआर ए।।५।।

बाबा मोर छोड़ले दँवरिया;
अवरु[3] भइया छोड़ले कुरु खेत[4] ए।

चाचा मोर छोड़ेले जिरवा के लदनियाँ;
अब हम करबि[5] बियाह ए।।६।।

किसकी नदी में निर्मल पानी है और किसकी नदी में सेवार है। किसकी नदी में चल्हवा नामक मछली मिलती है और कौन दूल्हा उस मछली को मारने के लिए जाल लगाता है ।।१।।

पिताजी की नदी का जल निर्मल है, भइया की नदी में सेवार है। ससुर की नदी में चल्हवा मछली मिलती है और मोहन दूल्हा उसे मारने के लिए जाल लगाता है ।।२।।

दूल्हे ने एक जाल लगाया, दूसरा जाल भी लगाया; परन्तु उस जाल में घोंघा और सेवार फँस गया। जब उस दूल्हे ने तीसरी बार जाल लगाया तथा उसमें कुँआर (क्वारी) कन्या फँस गयी।।३।।

तब उस कन्या ने दूल्हे से कहा कि ऐ दूल्हा! तुम्हारा दाँत बिजुली के समान चमक रहा है; तुम्हारा होंठ काटे (तराशे) गये पान के समान पतला है। जब तुममें इतना सौन्दर्य है तब तुम इतने दिनों तक कुँआरे कैसे रहे? ।।४।।

दूल्हे ने उत्तर दिया—मेरा पिता दँवरी (सूखे, कटे हुए अन्न पर बैलों का हाँकना या चलाना) करता है, मेरा भाई ऊसर खेत को जोतता है, मेरा चाचा जीरा की लदनी (व्यापार) करता है। इसीलिए मैं इतने दिनों तक कुँआरा रह गया।।५।।

अब मेरे पिता ने दँवरी करना, भइया ने खेत जोतना और चाचा ने जीरा का व्यापार करना छोड़ दिया है। अब मैं तुमसे विवाह करूँगा।।६।।

इस गीत से पता चलता है कि प्राचीन समय में जब रेलें नहीं थीं, तब व्यापार घोड़ों तथा बैलों के ज़रिये से हुआ करता था। व्यापार अर्थ का सूचक 'लदनी' शब्द इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

१. दौरी। २. लदनी (व्यापार के लिए घोड़े या बैल की पीठ पर सामान लादना)। ३. और। ४. क्रूर, असर। ५. करूँगा।

(४)

सन्दर्भ—बालक पति के मिलने पर स्त्री की अपने पिता से मनोव्यथा का वर्णन। पिता का कोरा जवाब।

एह पार गंगा रे ओह पार जमुना;
बिचवा में परि गइले रेत[1] ए।
ताहि रंगरेतवा पर जोगी एक बइठेले;
जोगिआ लिहले बेलमाइ[2] ए ॥ १ ॥
छोड़ु-छोड़ु जोगिआरे हमरो अँचरवा;
हम हई कनिया कुँआर ए।
धावल धूपल अइलीं कवन बेटी;
बइठेली बाबा जी के जांघ ए ॥ २ ॥
कवन-कवन सुखवा तोहरा ए बेटी;
उ हो सुख कह समझाइ ए।
खाये के बाटे बाबा सोने के थारी;
अँचवे के रूपे के थार ए ॥ ३ ॥
सूते के बाटे बाबा लाल पलंगारी;
बालक रउरे दमाद ए।
बाहर देखिलें गइया रे भँइसिआ[3]
भीतर कोठवा अटारी ए ॥ ४ ॥
बड़ ही घर देखि बेटी बिआहिलें;[4]
ना जानि छोट ना बड़ ए।
हरी-हरी देखिलें ककरी के बतिया;
ना जानि तीत[5] ना मीठ ए ॥ ५ ॥
बड़ ही जानि बेटी तोहि के बिअहलीं;
ना जानि छोट ना बड़ ए।
छोट हीं से बड़ होइहें ए बेटी
जो कुल[6] रखबू हमार ए ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है इस पार में गंगा है और उस पार जमुना बह रही है। इन दोनों नदियों के बीच में रेत पड़ गयी है। उसी रेत पर एक जोगी बैठता है। उसने पकड़कर मुझे आने में देर कर दी ॥१॥

१. बालू। २. विलम्ब करना। ३. भैंस। ४. विवाह किया। ५. तिक्त। ६. प्रतिष्ठा रखना।

ऐ जोगी! तुम मेरे आँचर को छोड़ो; मैं कुँआरी कन्या हूँ। इतना कहकर वह कन्या दौड़ती हुई चली आई और अपने पिता के जाँघ पर बैठ गई ॥२॥

कन्या को ससुराल से आया हुआ देखकर पिता ने पूछा कि ऐ बेटी, तुमको कौन-कौन सा सुख है, उसको समझा कर कहो। बेटी ने उत्तर दिया—ऐ पिता! खाने के लिए मुझे सोने की थाली और हाथ धोने के लिए चांदी का बड़ा थाल मिलता है ॥३॥

मेरे सोने के लिए लाल पलंग है। परन्तु दुःख की बात यह है कि तुम्हारा दामाद बिल्कुल बच्चा है। मैं बाहर गाय और भैंस देखती रहती हूँ और भीतर अटारी को देखती हूँ ॥४॥

पिताजी! आपने उच्च कुल तथा घर देखकर विवाह कर दिया; परन्तु यह नहीं देखा कि दामाद छोटा है या बड़ा। पिता ने उत्तर दिया—ककरी की बतिया (छोटा फल) देखने में हरी, हरी तथा सुन्दर लगती है; परन्तु क्या मालूम कि यह तीत (तिक्त) है या मीठा ॥५॥

ऐ बेटी! बड़ा कुल देखकर मैंने तुम्हारा विवाह कर दिया। लड़का छोटा है या बड़ा, इस बात को मैंने नहीं देखा। यदि तुम मेरे कुल की प्रतिष्ठा रक्खोगी, तो छोटे ही से मेरा दामाद धीरे-धीरे बड़ा हो जायेगा ॥६॥

इस गीत में बाल-विवाह की सुन्दर झाँकी मिलती है। देहातों में आज भी ऐसे सैकड़ों उदाहरण देखने को मिलेंगे, जिनमें पति अत्यन्त छोटा तथा स्त्री प्रौढ़ा होती है।

(५)

सन्दर्भ—बर का सरहज को दहेज में माँगना। सरहज का क्रोध करना तथा ससुर का उसे समझाना।

नदिया के तीरे मालिन दोना लगावेली; दोना[1] के घनी फुलवारी ए।
सांझे में छुटेले कन्हइआ के गइआ; चरी गइलि घनी फुलवारी ए ॥ १ ॥
एईलि चरी गइलि बेइलि चरी गइलि; चरी गइलि चम्पा के डाढ़ ए।
तीनु फूल मोर चरी गइलि गइया रे; मउलेला[2] चम्पा के डाढ़ ए ॥ २ ॥
बरिज[3] कन्हइआ रे आपन गइया; चरी गइलि घनी फुलवारी ए।
झारा रे झरोखा चढ़ि सासु निरेखेली; कँत दल[4] आवे बरियाति ए ॥ ३ ॥
हथिया अचास आवे घोड़वा पचास आवे; कत्थक आवेला बहुत ए।
कत्थक[5] कत्थक जन करु सरहजि; कत्थक राउर बरियाति ए ॥ ४ ॥
मुँहे पटुक[6] देके बोलेले कवन दुलहा; ससुर से अरज हमार ए।
हाथी ही घोड़ा ससुर कुछुऊ ना लेबों; सरहज लेबे हम आइ ए ॥ ५ ॥
अतना बचन सरहज सुनही ना पवलीं; चलती ससुर दरबार[7] ए।
अइसन बर ससुर कतही ना देखेलीं; माँगेला पूत बहुआर[8] ए ॥ ६ ॥

१. खदोना। २. मसल देना। ३. मना करो। ४. झुंड। ५. गवैया। ६. कपड़ा, पट। ७. घर, स्थान। ८. बधू।

जनि बहु हुरकहु जनि बहु झनकहु[1]; जनि मन करहुँ उदास ए।
सोनवा ही रूपवा बहु बरधो[2] लदाइबि; पूत बहु रखबो छिपाइ ए ॥ ७ ॥

नदी के नीर पर मालिन दोना लगाती है और पास मे दोना के पत्ते के लिए घनी फुलवारी है। कृष्ण की गाय सन्ध्या को ही छूट गयी और उसने घने बगीचे को चर लिया ॥१॥

मालिन कहती है कि उसने एला, बेला और चम्पा की बेल को चबा लिया। गाय ने तीनो फूलों की लता को चर लिया और चम्पा की डाल को मसल दिया ॥२॥

मालिन कहती है—ऐ कृष्ण ! तुम अपनी गाय को मना करो। यही मेरी फुलवारी को चर गयी है। झरोखे पर बैठ कर उसकी सास कहती है कि देखूँ (मेरी पुत्री के विवाह मे) कितनी बारात आती है ॥३॥

हाथी पचास और घोडा पचास आते है और बहुत से गाने वाले कत्थक भी आ रहे हैं। मुँह को कपडे से ढककर दूल्हा अपने ससुर से प्रार्थना करते हुए कहता है कि ऐ ससुरजी ! मैं हाथी या घोडा कुछ भी नही लूँगा। मैं तो केवल सरहज (साले की स्त्री) को लेने आया हूँ ॥४-५॥

इतनी बात को सुनकर सरहज अपने ससुर के पास जाकर कहने लगी कि ऐ ससुर जी ! ऐसा दमाद मैंने कही नही देखा, जो आपकी पतोहू (पुत्र-वधू) को दहेज मे माँग रहा हो ॥६॥

तब ससुर ने उत्तर दिया कि तुम क्रोध मत करो और अपने मन को उदास मत करो। मैं सोना और चादी को बैल पर लाद कर दहेज मे दूँगा और पतोहू (तुम्हे) को छिपा कर रक्खूँगा ॥७॥

आजकल के दूल्हे ऐसी ही ऊँटपटांग चीजे दहेज मे माँग बैठते हैं, जिनको देना कन्या-पक्ष वालो की शक्ति से बाहर होता है। दहेज की ऐसी प्रथा जितनी जल्दी बन्द हो जाय उतना ही अच्छा।

(६)

सन्दर्भ—पुत्री को अविवाहित देखकर पिता की घोर चिन्ता तथा उसके विवाह के पश्चात् सुख की नींद सोना।

मरिचो के पतवा झलारी[3] हो; बाबा नगर में सोर होइ जाइ ए।
जेकरा ही घरे बाबा धिअवा कुँआरी; से कइसे सोवे निरभेद[4] ए ॥ १ ॥
अतना बचनवा सुनही न पवले; उठले दवन अहराइ[5] ए।
पयरा[6] बेसाहि[7] बाबा घरे चलि अइले; नैना झराझरि[8] लोर ए ॥ २ ॥

---

१. क्रुद्ध होना। २. बैल। ३. झुंड। ४. निश्चिन्त। ५. क्रोधित। ६. पंचांग। ७. खरीदकर। ८. झड़ी लगाना।

हटिआ के सेनुरा मँहग भइले बेटी टिकुली भइले अनमोल ए।
टिकुली सेनुरवा के कारण बेटी हो; छोड़लू तूं देस हमार ए ॥ ३॥
भइया बहिन मिलि एक कोखी जामिले[1]; दुधवा हम पिअलीं ढकोर[2] ए।
तोहरो लिखल भइया बाबा चउपरिया[3]; हमरो लिखल दूर देस ए ॥ ४॥
आवरे बजनिआ[4] भइया बजवा बजावहु; सहनाई[5] सबद सुनावहु ए।
बराहमन[6] बरुआ गोतर उचारहु; करबि हम धिया के बिआह ए ॥ ५॥
कलसा के ओट भइल बोलेले कवन दुलहा; मेहरि[7] से अरज हमार ए।
जग[8] बिधनस[9] जनि कर मोर मेहरि; खेइबि हम नइआ तोहार ए ॥ ६॥
कथि के तोर नाव नवैया; कथि के लागल करुआर[10] ए।
कवन दुलहा चली के नाव खेवइया; कवन सुन्नरी उतरेली पार ए ॥ ७॥
सोनन के मोरा नाव नवइया; रूपहि लागत करुआर ए।
दुलहा जे हमरो भइले खेवइआ; सुन्नरी उतरेली पार ए ॥ ८॥
बाबा के पिछुवरवा घनी बसवरिआ[11]; बहि गइले सीतल बयारि ए।
ताहि तर बाबा हो पलंगवा डसावेले; तब उ[12] सुतेले नीरभेद ए ॥ ९॥

कोई लड़की कहती है कि मिर्च में बहुत पत्ते लगे हुए हैं। सारे शहर में यह बात प्रसिद्ध हो गयी है। ऐ पिताजी! जिसके घर में कुँआरी लड़की है, वह भला निश्चिन्त कैसे सो सकता है॥१॥

इतना बचन पिता अभी ठीक से सुन भी न पाया था कि वह क्रोधित होकर उठा। बाजार से पत्रा (पंचांग) को खरीद कर घर गया और उसकी आँखों से (पुत्री के विवाह की चिन्ता के कारण) आँसुओं की झड़ी लग गयी॥२॥

पिता ने पुत्री से कहा—ऐ बेटी! बाजार में सिन्दूर महँगा मिलता है और टिकुली का दाम अमूल्य हो गया है अर्थात् विवाह के बाजार में वर का मूल्य अत्यधिक है। इसी सिन्दूर और टिकुली के कारण तुम मेरा घर छोड़ रही हो॥३॥

पुत्री ने उत्तर दिया—भाई और बहन हम दोनों माता के एक ही पेट से हुए हैं। हमने माता का दूध भी खूब पीया; परन्तु भइया पिता के घर पर रहेगा और मेरे भाग्य में दूर देश जाना लिखा है॥४॥

पिता कहता है—ऐ बाजा बजाने वाले! तुम लोग आओ और शहनाई बजाकर उसका मधुर शब्द सुनाओ। श्रेष्ठ वेदपाठी ब्राह्मण गोत्र का उच्चार करें। मैं आज अपनी लड़की का विवाह करूँगा॥५॥

---

१. पैदा हुई। २. अधिक। ३. चौपाल, घर। ४. बजाने वाला। ५. शहनाई (वाद्यविशेष)। ६. ब्राह्मण। ७. स्त्री। ८. यज्ञ। ९. विध्वंस (नष्ट)। १०. पतवार। ११. बासों का झुंड। १२. वह (पिता)।

विवाह होते समय कलशे की ओट से दूल्हा अपनी भावी स्त्री से प्रार्थना करता है कि ऐ स्त्री ! तुम इस यज्ञ का नाश मत करो, मैं तुम्हारी जीवन रूपी नौका को खेऊँगा अर्थात् पार लगाऊँगा ॥६॥

स्त्री पूछती है—तुम्हारी नाव किस वस्तु की बनी है, उसमें किस चीज का पतवार लगा है। कौन दूल्हा उसे खेवेगा और कौन सुन्दरी पार उतरेगी ॥७॥

दूल्हा ने कहा—मेरी नाव सोने की बनी हुई है ; चाँदी का पतवार उसमें लगा है। मैं (दूल्हा) उसे खेऊँगा और तुम सुन्दरी पार उतरोगी ॥८॥

विवाह होने के पश्चात् लड़की कहती है—और पिता के घर के पीछे घनी बँसवार है; शीतल हवा बह रही है। उसी के नीचे मेरा पिता पलंग बिछाकर निश्चिन्त सो रहा है ॥९॥

(७)

प्रसंग—किसी दुलहा का मालिनी के पास जाकर मऊरी बनवाने के लिए कहना तथा मालिनि का उत्तर।

माहँहि[1] बाट मालिन कुँइयाँ[2] रे खनावेलीं;
कुँइयाँ के पीयर[3] माटी ए ।
ताहि ऊपर मालिनि केवड़ा लगावेली;
केवड़ा के सीतल बतास[4] ए ॥ १ ॥

मलिया जे सूतेले घर घबराह;
मालिनि सूतेली फुलवारी ए ।
धावल धूपल अइले कवन दुलहा,
ठाढ़ भइले केवड़ा के छाँह ए ॥ २ ॥

मलिया जे पइठेला मालिनि जगावेला;
ऊठु मालिनि भइल भिनुसार[5] ए ।
मुंहवाँ उघारि जब देखेले मलिनियाँ;
दुअरा कवन दुलहा ठाढ़ ए ॥ ३ ॥

किया तोरा बाबू दे काज परोजन;[6]
किया तोरा भइया के बिआह ए ।
नाहीं मोरा मालिनि काज परोजन;
नाहीं मोरा भइया के बिआह ए ॥ ४ ॥

---

१. मध्य, बीच। २. कूप। ३. पीला। ४. बात, हवा। ५. प्रात:काल। ६. प्रयोजन, मतलब।

अपना बाबाजी के हमहीं दुलरुआ;
हमरो लगनियाँ[1] अगुताई[2] ए।
मौर आज बात सुनु कवन मलिनिया;
नीमन मऊरिया[3] गूथ[4] देहु ए ॥ ५ ॥
नीमन ही नीमन जन करु बाबू;
नीमन मऊरिया कइसन होई ए।
अवढ़ी[5] पवढ़ी गुथिहे ए मालिनि,
दवना[6] मरुबाबा चारो चिड़िया जोड़ा हंस ए ॥ ६ ॥
अइसन मउरी उरेहु[7] ए मालिनि,
मउरि देखि रँहस[8] लोभाई ए ॥ ७ ॥

बीच रास्ते में ही मालिन ने एक कुँआ खुदवाया और उस कुएँ की मिट्टी पीली थी। उसी के ऊपर मालिन ने केवड़े का पेड़ लगाया, जिसकी हवा अत्यन्त शीतल थी ॥१॥

माली घर में सोता था और मालिन फुलवारी में सोती थी। दौड़ता हुआ कोई दूल्हा वहाँ पर आया और केवड़े की शीतल छाया के नीचे खड़ा हो गया ॥२॥

माली ने फुलवारी में घुसकर मालिन को जगाया और कहा कि उठो, सवेरा हो गया है। मुँह का परदा हटाकर जब मालिन ने देखा, तो मालूम हुआ कि द्वार पर कोई दूल्हा खड़ा है ॥३॥

मालिन ने उससे पूछा—ऐ बाबू! तुम्हारा कौन सा कार्य है, यहाँ आने का क्या प्रयोजन है? क्या तुम्हारे भाई का विवाह होने वाला है? तब उस दूल्हे ने कहा—ऐ मालिन! मेरा यहाँ कोई कार्य नहीं है और न मेरे भाई का विवाह ही है ॥४॥

मैं अपने पिताजी का दुलरुआ (प्यारा) लड़का हूँ। हमारे विवाह का लग्न शीघ्रता के कारण निकट पड़ गया है। ऐ मालिन! तुम मेरी बात सुनो और एक सुन्दर मौर (सेहरा) मेरे लिए तैयार कर दो॥५॥

मालिन ने कहा—ऐ बाबू नीमन-नीमन (सुन्दर) मत कहो। मुझे नहीं मालूम कि सुन्दर सेहरा कैसा होता है?॥६॥

इस पर दूल्हे ने उत्तर दिया—ऐ मालिन! उस मउरि के किनारे पर दवने के वृक्ष के ऊपर चार चिड़ियायें और एक जोड़ा हंस चित्रित करना। तुम मेरे सेहरे को इस प्रकार से चित्रित करना जिसको देखकर लोग (ससुराल की स्त्रियाँ) प्रसन्न होकर लुब्ध हो जायँ ॥७॥

इस गीत में दूल्हे का बन-ठन कर ससुराल जाने का प्रयत्न लक्षित होता है। इसीलिए वह सुन्दर मौर पहिनने के लिए इतना लालायित और उत्सुक दीख पड़ता है।

१. लग्न। २. शीघ्रता। ३. मौर। ४. गूँथना। ५. किनारे पर ६. वृक्ष विशेष। ७. चित्रित करना। ८. एकान्त।

(८)

प्रसंग—पुत्री की पिता से सुन्दर बर खोजने की प्रार्थना। पत्नी की खोज में निकले हुए युवक से पिता की भेंट तथा उसका दहेज माँगना।

मोरा पिछुअरवा रे तालवा बहुत बा;
पुरइन मारेले हिलोर ए।
ताहि पइसि कवन दुलहा सुनरा रे;
धोतिया कचारे ले, पूछैली कवन सुहवा बात ए॥ १॥
केकर हवऽ तूँ हूँ अलर से दुलर;
केकर हवऽ तुँह लाल ए।
केकरा पोखरवा नहइल बर सुन्दर;
कहवाँ ही करेल पयान ए॥ २॥
बाबा के हूँई हम अलर से दुलर;
भइया के हम हुई लाल ए।
ससुर पोखरवा हम नहइलीं बर कामिन;
सेनुरा बनीजी कइले जाइ ए॥ ३॥
लहंगा पहिरी के निकले कवन बेटी;
सुनी बाबा बचन हमार ए।
देस पइठि बाबा बर एक खोजहुँ;
जे बर सरबर नहाइ ए॥ ४॥
घर में के खटिया आंगन ले बिछवले;
बैठहु दुलहा दमाद ए।
दुलहा दुलहिन मिलि एक मन भइले
सुन दुलहिन बात हमार ए॥ ५॥
तोहरा ही बाबा के सोना के कटोरवा;
से हो लेबी हमहूँ दहेज ए।
हमरा ही बाबा के सोना के कटोरवा;
पीयले कवन भइया दूध ए॥ ६॥
दूधवा पियत भइया अलुरी बहुत करे;
माँगे प्रभु बहिनी तोहार ए।
अतना बचन जब सुनेले कवन दुलहा;
खटिया में चले झकझोर ए॥ ७॥
जेकर बहिनियाँ हमही बियाहीले;
से माँगे बहिनी हमार ए॥ ८॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे तालाब है और इसमें पुरैन (कमल) का पत्ता हिलोरे मार रहा है अर्थात् लहरों से खेल रहा है। उस तालाब में घुसकर कोई सुन्दर दूल्हा स्नान कर अपनी धोती निचोड़ता है और कोई स्त्री उससे बात पूछ रही है॥१॥

तुम किसके लाड़ले पुत्र हो? किसके तालाब में स्नान कर रहे हो और कहाँ जा रहे हो॥२॥

दूल्हे ने उत्तर दिया—मैं अपने पिता का लाड़ला पुत्र हूँ, अपनी माता का लाल हूँ, अपने ससुर के तालाब में स्नान कर रहा हूँ और सिन्दूर का व्यापार करने के लिए जा रहा हूँ॥३॥

सुन्दर लँहगा पहन कर वह लड़की अपने पिता के पास गई और उससे कहने लगी—ऐ बाबा! मेरी बात सुनो। देश-देश में घूमकर मेरे लिए ऐसा वर खोजना, जो तालाब में स्नान कर रहा हो॥४॥

पिता ऐसे ही वर को खोजकर घर लाया और घर में रक्खी हुई चारपाई को आगन में बिछाकर उससे कहा कि तुम यहाँ बैठो। दूल्हा और दुलहिन—दोनों मिलकर एक मन हो गये अर्थात् दोनों में प्रेम हो गया। तब दूल्हा ने दुलहिन से कहा॥५॥

तुम्हारे पिता के पास एक सोने का कटोरा है, उसको मैं दहेज में लूँगा। तब दुलहिन ने कहा—उस कटोरे में मेरा भाई दूध पीता है॥६॥

दूध पीता हुआ मेरा भाई बहुत ज़िद करता है और तुम्हारी बहन को माँगता है। इतना बचन सुनते ही वह दूल्हा क्रोधित होकर चल पड़ा॥७॥

वह कहने लगा—जिसकी बहन से हमने विवाह किया है, वही मेरी बहन को माँग रहा है॥८॥

(९)

प्रसंग—दामाद का इप्सित दहेज न मिलने के कारण रूठ जाना तथा उसकी प्राप्ति पर प्रसन्न होकर घर को लौटना।

सजन[1] गढ़ घेरि अइले हो—टेक
अमवा से मीठ इमिलिया ए बाबा,
महुअन लागि गइले कोंच[2] ॥ १ ॥ सजन गढ़०
कोठा से ऊँच कोठरिया ए बाबा,
अहो बाबा रुनुझुनु[3] लागल केवारी ॥ २ ॥ सजन गढ़०
ताहि पइसि सुतेले बेटी के बाबा,
कइसे सुतेले निरभेद ॥ ३ ॥ सजन गढ़०
कुछु सुतीलें कुछु जागिलें बेटी,
अहो बेटी कुछुरे दहेजवा के सोच ॥ ४ ॥ सजन गढ़०

१. सज्जन, बराती लोग। २. कोंहता (महुआ का एक फल)। ३. सुन्दर।

गइआ भी दिहलीं भइसिआ ए बेटी,
　　अवरु बरध धेनु गाइ ए ॥ ५ ॥ सजन गढ़०

अतना दहेज हम बेटी के देलीं,
　　काहे लागि रुसेले[1] दमाद ए ॥ ६ ॥ सजन गढ़०

गइआ तू देल भँइसिआ ए बाबा,
　　छुड़ी[2] लागि रुसेले दमाद ए ॥ ७ ॥ सजन गढ़०

होखे द बिहान यह फाटे द हो बेटी,
　　लागे देहु हाजीपुर के हाट[3] ए ॥ ८ ॥ सजन गढ़०

जब रे कवन दुलहा छुड़ीं हाथ लिहले,
　　बिहँसि चलेले बरिआति[4] ए ॥ ९ ॥
　　साजन छोड़ले दुआर ए ।

कोई लड़की कहती है कि बारात के लोगों ने घर को घेर लिया। ऐ पिताजी ! आम से अधिक मीठी इमली ही लगती है और महुआ में कोंइता (फल) भी लग गया (परन्तु मेरा विवाह अभी तक नहीं हुआ) ॥१॥

ऐ पिताजी ! कोठा से ऊँची यह कोठरी है, जिसमें सुन्दर केवाड़ लगा हुआ है। उसमें प्रवेश कर आप निश्चिन्त कैसे सो रहे हैं॥२-३॥

पिता ने कहा—ऐ बेटी ! दहेज के सोच के मारे कुछ जगा हुआ हूँ और कुछ सो भी रहा हूँ ॥४॥

मैंने अपने दामाद को गाय भी दी, भैंस भी दी और बैल भी दिया ॥५॥

इतना दहेज मैंने अपनी बेटी के लिए दिया। फिर भी न मालूम दामाद क्यों रुष्ट है ॥६॥

लड़की ने कहा—पिताजी ! आपने गाय भी दी, भैंस भी दी; परन्तु चाकू के लिए आपका दामाद क्रुद्ध है ॥७॥

पिता ने कहा—बेटी ! सबेरा होने दो और हाजीपूर का मेला (बाजार) लगने दो ॥८॥

(पिता ने चाकू खरीद कर दामाद को दे दिया) जब दामाद ने हाथ में चाकू लिया, तब प्रसन्न होकर सारी बारात चली गयी और सब ने दरवाजा छोड़ दिया ॥९॥

इस गीत में बाल-विवाह का संकेत है। दामाद का चाकू जैसी तुच्छ वस्तु के लिए रुष्ट होने से पता चलता है कि दूल्हा बहुत छोटी आयु का था, नहीं तो बच्चे जैसे खिलौने के लिए रुष्ट होते हैं, उसी प्रकार वह चाकू के लिए रुष्ट नहीं होता।

१. रुष्ट होना। २. चाकू। ३. बाजार। ४. बारात।

(१०)

प्रसंग—ससुराल में पति तथा पत्नी का वार्तालाप तथा परिहास।

अलबेल दुलहा निंदिया घुरुमे रे ॥ टेक ॥

कहवाँ ही उपजेला नरिअर बिरवा रे,
कहवाँ ही डटइल पान ए ॥ १ ॥ अलबेल०

ससुरा में उपजेला नरियर बिरवा रे;
नइहर डटइल पान ए ॥ २ ॥ अलबेल०

से हो पान खइले मोर कवन दुलहा;
बिहँसत पइसे ले अवास ए ॥ ३ ॥ अलबेल०

हँसि बोले बिहँसि बोले कवन सुहवा रे;
देखि प्रभु दाँतवा के जोति रे ॥ ४ ॥ अलबेल०

कइसे देखावो सुहना दाँतवा के जोतिया रे;
आरे मड़वन सासु बहूत रे ॥ ५ ॥ अलबेल०

मड़वा के लोग प्रभु अँचरा छिपाइब;
हम रउरा जोरबी सनेह रे ॥ ६ ॥ अलबेल०

हम रउरा जाइबि कोहबरवा में रे;
अलबेल दुलहा निंदिया घुरुमे रे ॥ ७ ॥

सुन्दर दुलहा नींद के मारे झूम रहा है। कहाँ नारियल का पेड़ पैदा होता है और कहाँ डारी वाला पान पैदा होता है॥१॥

स्त्री कहती है कि ससुराल में नारियल का पेड़ पैदा होता है और मायके में डाँट वाला पान होता है॥२॥

उस पान को मेरे दूल्हे ने खाया और हँसते हुए ब्याह करने के लिए मेरे घर आया ॥३॥

हँसकर वह स्त्री कहती है कि ऐ पति ! मैं आपके दाँतों की ज्योति को देखना चाहती हूँ॥४॥

पति ने कहा—मैं अपने दाँतों की ज्योति को तुम्हें कैसे दिखलाऊँ ; क्योंकि इस मण्डल में सास तथा अन्य बहुत सी स्त्रियाँ हैं॥५॥

स्त्री ने उत्तर दिया—मण्डल के लोगों को मैं अपने आँचल से छिपा लूँगी। तब हम और आप एकान्त में प्रेम करेंगे॥६॥

हम और आप फिर 'कोहबर' में चलेंगे। मेरा सुन्दर दूल्हा नींद के मारे मतवाला हो रहा है॥७॥

(११)

प्रसंग—दहेज में एक तोता के न मिलने के कारण बर तथा समधी का रूठना और लड़की के पिता को उन्हें प्रसन्न करना तथा लाचार होकर तोता दे देना।

के बर उठावल महला दुमहला,
खिड़कीन लागे चारो ओर ए।
ताहि चढ़ि बैठेला सबुज[1] रे सुगवा,
लेला किसुनजी के नाम ए ॥ १ ॥
महल के एने[2] ओने[3] फिरेले कवन दुलहा,
परि गइले सुगवा पर दीठि ए।
हमरा ससुरजी के सबुज रे सुगवा;
उहे हम लेबों दहेज ए ॥ २ ॥
हाथी हम देबि घोड़ा हम देबि;
बरहो बरध धेनु गाय ए।
एक नाहिं देबि बाबू सबुज रे सुगवा;
लेला किसुनजी के नाम ए ॥ ३ ॥
अतना बचन जब सुनले कवन समधी;
उलटा नगारा दिआई ए।
रूसे अजनिया रूसे बजनिया;
रूसे[4] सजन सब लोग ए ॥ ४ ॥
घोड़ा चढ़ि रूसेले कवन दुलहा,
चन्दन सोभेला लिलार ए।
धावहु नउआ[5] रे धावहु बरीअवा[6];
समधी के पकड़ि ले आउ ए ॥ ५ ॥
जेठ बइसखवा के ठीक दुपहरिआ;
समधी मोर रूसल जाइ ए।
सोने के पिंजड़ा बनाउ मोर समधी;
सबुज ही सुगवा बझाइ ए ॥ ६ ॥
हँसे अजनिया हँसे बजनिया;
हँसे सजन सब लोग ए।
घोड़वा चढ़ल जे हँसेले कवन दुलहा;
चन्दन सोभेला लिलार[7] ए ॥ ७ ॥

१. आसमानी रंग। २. इधर। ३. उधर। ४. रुष्ट होना। ५. नाई। ६. बारी। (एक जाति विशेष जो पत्तल बनाती है)। ७. ललाट।

किसने दो मंजिल का मकान बना कर तैयार किया है, जिसमें चारों ओर खिड़कियाँ लगी हुई हैं। उस मकान पर चढ़कर सबुज रंग का तोता बैठता है और कृष्णजी का नाम लेता है॥१॥

इस महल के इधर उधर ब्याहने आया हुआ दूल्हा घूम रहा था, जिसकी दृष्टि उस तोते पर पड़ गई। वह कहने लगा—मेरे ससुर के पास सबुज रंग का सुग्गा है, उसे दहेज में मैं अवश्य लूंगा॥२॥

ससुर ने कहा—मैं हाथी दूँगा, घोड़ा दूंगा, बारह बैल और दूध देने वाली गाय मैं देने के लिए तैयार हूँ। परन्तु सबुज रंग के उस सुग्गे को मैं नहीं दे सकता, जो कृष्ण का नाम सदा लिया करता है॥३॥

समधीजी इतना बचन सुनते ही क्रोधित होकर अपने नगर को लौट जाने के लिए तैयार हो गये। बाजा बजाने वाले तथा अन्य लोग सब रुष्ट हो गये॥४॥

दूल्हा, जिसके ललाट पर चन्दन सुशोभित था, रुष्ट होकर घोड़े पर चढ़कर चल पड़ा। तब उसके ससुर ने कहा कि नाई और बारी! तुम लोग दौड़कर जल्दी जाओ और समधीजी को पकड़ कर ले आओ॥५॥

बैसाख और जेठ की दुपहरी में मेरा समधी रुष्ट होकर चला जा रहा है। ऐ मेरे समधी! सोने का पींजड़ा बनाओ, और लो, इस सबुज रंग के मेरे सुग्गे को बझाकर रक्खो॥६॥

इतना सुनते ही बाजा बजाने वाले तथा अन्य बाराती लोग प्रसन्न हो गये। घोड़े पर चढ़ा हुआ दुलहा, जिसके ललाट पर चन्दन सुशोभित था, प्रसन्न हो गया॥७॥

देहातों में मन-वांछित दहेज न मिलने के कारण मार-पीट की भी नौबत आ जाती है। इसका कारण समधी की कुटिलता होती है। इस गीत में सुग्गे के न मिलने पर समधी का रूठना उसकी क्षुद्रता का द्योतक है॥

(१२)

प्रसंग—स्त्री का पति से देश-प्रेमी वर खोजकर उसी से विवाह करने की प्रार्थना।

हमरे धिया के जोग बर खोजु बाबा हो;
धिया मोर भयली सेयान[१] हो ॥ १ ॥
जाहु जाहु बाबा हो मति बेर करहु हो;
अतना[२] बचन लेहु मान हो ॥ २ ॥
अइसन धिया बाबा मोर बढ़ि गइली;
जइसे बढ़े दुजिया[३] के चान हो ॥ ३ ॥
पनिया पचत नाहीं बाबा मोरे पेटवा हो;
सोचत साँझवा बिहान[४] हो ॥ ४ ॥

१. युवती। २. इतना। ३. द्वितीया। (दूज) ४. सबेरा।

धिया से उरिन हम कब अपना होइबो हो;
कब करब बाबा कन्यादान हो ॥ ५ ॥

उतर जाहु बाबा देस नयपालवा[1] हो;
दक्खिन कासी परमान हो ॥ ६ ॥

पूरब में बाटे बाबा पटना सहरवा हो;
पच्छिम कासमीर[2] जान हो ॥ ७ ॥

अइसन बर बाबा खोजहु सुदेसिया[3] हो;
जे हो निपुन, गुनवान हो ॥ ८ ॥

देसवा के दुःख देखि जियरा पसीजे हो;
हरदम देस के धियान हो ॥ ९ ॥

अइसन बर लागि धियवा बिअहबों हो;
एहि जियवा के हमार चाह[4] हो ॥ १० ॥

स्त्री पति से कहती है कि मेरी पुत्री के लिए योग्य वर खोजना, क्योंकि मेरी पुत्री अब सयानी (वयस्क) हो गयी है ॥१॥

अब तुम वर खोजने के लिए जाओ। देर मत करो। मेरे इस बचन को मान लो ॥२॥

मेरी पुत्री इस प्रकार जल्दी बड़ी हो गयी, जैसे दूज का चन्‍मा बढ़ता है (जो पन्द्रह दिन के भीतर ही अपनी पूर्णता को प्राप्त कर लेता है) ॥३॥

ऐ पति! मेरे पेट में पानी नहीं पचता है अर्थात् मुझे किसी प्रकार भी सान्त्वना नहीं मिलती और सवेरे तथा साँझ को इसी का सोच लगा रहता है ॥४॥

मैं अपनी लड़की से उऋण कब होऊँगी और कब कन्यादान करूँगी ॥५॥

ऐ पति! उत्तर दिशा में नैपाल देश तक और दक्षिण में काशी तक जाओ ॥६॥

पूरब में पटना शहर है और पश्चिम में काश्मीर देश है ॥७॥

ऐ पति! ऐसा स्वदेशी अर्थात् देशभक्त वर खोजो, जो निपुण और गुणवान हो ॥८॥

जिसका हृदय देश के दुःख को देखकर द्रवीभूत हो जाय और उसे सर्वदा देश की भलाई का ध्यान हो ॥९॥

ऐसे ही बर से मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगी। यही मेरे हृदय की अन्तिम अभिलाषा है ॥१०॥

इस गीत में भारत के चार प्रसिद्ध स्थानों तथा देशों का नाम आया है। वे हैं—पटना काशी, नैपाल और काश्मीर। गढ़वाल जिले में उत्तरकाशी नामक एक स्थान है। इसीलिए इस काशी को दक्षिण काशी कहा गया है। वर की खोज के लिए नैपाल तथा काश्मीर जैसे सुदूर

१. नैपाल २. काश्मीर ३. स्वदेशी (देशभक्त)। ४. इच्छा, अभिलाषा।

तथा दुर्गम देशों में जाना 'अखण्ड भारत' का द्योतक है। इस गीत में माता की मनोकामना सराहनीय है। क्या आजकल की अन्य स्त्रियाँ ऐसे वर को खोजने के लिए हठ करेंगी ?

(१३)

प्रसंग—छोटी बच्ची का विवाह न करने के लिए पुत्री की पिता से मार्मिक प्रार्थना।

बाल बिआह[१] जनु करु मोरे बाबा हो;
बाल बिआह दुःख के खानि हो ॥ १ ॥
बैलवा से बछिया[२] ना जोरहु बाबा हो;
मानहु बिनती हमार हो ॥ २ ॥
बचिया के करहु बिआहवा ना बाबा हो;
नाहीं बिआह हँसी खेल हो ॥ ३ ॥
येहि रे बिआहवा पर देखि लेहु बाबा हो;
दुनिया के लादल भार हो ॥ ४ ॥
जब होइहें बेटी सयान मोरे बाबा हो;
खोजि सेयान बर बिआह हो ॥ ५ ॥
धरम, करम अवरु सेवा सतकरवा हो;
देसवा के जाने व्यवहार हो ॥ ६ ॥
पढ़ि लिखि गुन ढंग सिखि लेहि बाबा हो;
तब करु बेटी के बिआह हो ॥ ७ ॥
बाल बिअहवा से देस नास भइले;
डगमग डोलतिया नाव हो ॥ ८ ॥

कोई लड़की अपने पिता को समझाती हुई कहती है कि ऐ पिताजी ! बाल-विवाह मत कीजिए, क्योंकि यह सब दुःखों का खजाना है ॥१॥

तुम मेरी प्रार्थना को मान जाओ बूढ़े बैल से बछिया को मत जोड़ो अर्थात् बूढ़े वर से छोटी कन्या का विवाह मत करो ॥२॥

विवाह कोई हँसी-खेल नहीं है, अतः छोटी बच्ची का विवाह मत करो ॥३॥

ऐ पिता ! तुम देख लो, इसी विवाह के ऊपर दुनिया का सारा भार लदा हुआ है ॥४॥

ऐ पिता ! जब बेटी सयानी होगी, तब उसके लिए युवा वर खोजकर उससे विवाह कर देना ॥५॥

तुम ऐसे गुणी वर से विवाह करना, जो अपना धर्म, कर्म, सेवा, सत्कार तथा देश के समस्त व्यवहारों को जानने वाला हो ॥६॥

१. विवाह २. वत्सा, बछड़ी।

ऐ पिता! जब लड़की पढ़-लिखकर, सब गुणों को सीखकर तैयार हो, तभी उसका विवाह करना चाहिए॥७॥

बाल-विवाह करने से देश का नाश हो गया—यह भारत गारत हो गया—और हिन्दू समाज की नाव डगमग डोल रही है (न मालूम कब डूब कर नष्ट हो जाय)॥८॥

इस गीत में बाल-विवाह न करने के लिए जो अपील की गयी है, वह बड़ी ही मार्मिक तथा हृदय-स्पर्शी है। कितने स्वार्थी तथा मूढ़ पिता 'अष्टवर्षा भवेत् गौरी नववर्षा तु रोहिणी' इस बाबा वाक्य को प्रमाण मानकर कितनी ही दुधमुंही बच्चियों का विवाह कर देते हैं और इसका जो दुष्परिणाम होता है, उसे आँसू बहाकर जीवन भर भोगते रहते हैं। बाल-विवाह जितना निन्दित है, वृद्ध विवाह उतना ही गर्हित और घृणास्पद। बहुत से पोपले मुंह वाले बाबा—जिनके गाल धंसे और चाम सिकुड़े रहते हैं—वर बनने का शौक करते हैं। ऐसे लोगों की उपमा इस गीत में बैल से उचित ही दी गयी है। यदि यह बाल और वृद्ध-विवाह बन्द हो जाय, तो सचमुच हिन्दू-समाज की डगमगाती हुई नाव नाश के सागर में डूबने से बच जाय, नहीं तो ईश्वर ही मालिक है। क्या बूढ़े बाबा लोग इस अपील पर ध्यान देंगे?

बहुरा के गीत

(१)

प्रसंग—भार से बोझी हुई नाव को पार लगा देने के लिए किसी स्त्री की व्याकुलता।

लँवगे सोपरिया बोझाइल[1] मोरी नइया;
के नइया लाई पार ए ॥ १ ॥

बाबा के जनमल भइया जे रहिते;
धीरे-धीरे नइया लइते[2] पार ए ॥ २ ॥

ससुर के जनमल देवर जे रहिते;
हँसत खेलत नइया पार ए ॥ ३ ॥

राम खेवइया किसुन बोझवइया;[3]
के अब नइया लाइ पार ए ॥ ४ ॥

जो हम जनिती ज साम खेवइया;
कीनिती[4] पनबट्टा[5] भरि पान ए ॥ ५ ॥

सबके दीहिती हम एक-एक बिरवा;
हरि जी के दिहिती खोंइछा[6] झारि[7] ए ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि लौंग और सुपारी के भार से मेरी नाव लदी हुई है। इसको कौन पार लगायेगा ॥१॥

यदि मेरे पिता से उत्पन्न मेरा सगा भाई होता, तो वह धीरे-धीरे इस नाव को पार लगाता ॥२॥

यदि मेरे ससुर से उत्पन्न देवर होता, तो वह हँसते-खेलते मेरी नाव को पार लगा देता ॥३॥

रामजी खेनेवाले हैं और श्रीकृष्णजी इस पर भार लादने वाले हैं। अतः अब कौन मेरी नाव को पार लगायेगा ॥४॥

१. लदी हुई। २. लगाती। ३. लादने वाला। ४. खरीदती। ५. पान रखने का पात्र। ६. आँचर। ७. झाड़कर।

यदि मैं जानती कि मेरा पति ही केवल इस नाव को खेने वाला है, तो फिर मैं एक पनबट्टा भरकर पान खरीद लेती ॥५॥

सबको मैं पान का एक एक बीड़ा देती और अपने पति को सारा आँचर झाड़कर पान दे देती ॥६॥

(२)

प्रसंग—सास की दुष्टता का वर्णन। बधू की उक्ति सास के प्रति।

कोरी[1] नदियवे[2] सासु दहिया जमवली[3]।
रचि[4] एक अमरित[5] लावेली जोरनवा[6] ए हरी ॥ १ ॥
अपने त बेचें सासु गाँव का गोयेड़वा[7]।
हरि हरि हमरा के भेजे जमुना पार ए हरी ॥ २ ॥
हरि हरि ना जाइबि गोखुला में दही बेचें ए हरी ॥ ३ ॥
अपने त बेचें सासु सऊवाँ[8] रे कोदउवा।
हरि हरि हमरा से माँगे झीन[9] गोहुआ[10] ए हरी ॥ ४ ॥
हरि हरि ना जाइबि; गोखुला में देही बेचें ए हरी ॥ ५ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरी सास ने नयी मिट्टी की हँड़िया में दही को जमाया और उसमें थोड़ा अमृत का जामन डाल दिया ॥१॥

उस मीठी दही को सास तो गाँव के आसपास ही बेंचती है; परन्तु मुझे जमुना के उस पार दही बेचने के लिए भेजती है ॥२॥

कृष्ण की दुष्टता के कारण अब मैं दही बेंचने के लिए गोकुल नहीं जाऊँगी ॥३॥

सास स्वयं तो दही के मूल्य के स्थान में सावाँ और कोदों लेकर उसे बेंच देती है; परन्तु मुझसे दही बेचकर अच्छा गेहूँ लाने को कहती है ॥४॥

इसलिए अब मैं गोकुल में दही बेचने के लिए नहीं जाऊँगी ॥५॥

(३)

प्रसंग—शृंगार कर किसी स्त्री का बाजार जाना और उसके अलौकिक सौन्दर्य को देखकर किसी राजा का मुग्ध हो जाना।

पहिरि[11] ओहिरि रेसमी चलली बजरिया[12]।
परि गइले राजावा के दीठि[13] गोरिया[14] रेसमी ॥ १ ॥

१. बिना प्रयोग में लायी गयी, नदी। २. मिट्टी का छोटा पात्र। ३. जमाया। ४. थोड़ा सा। ५. अमृत। ६. दूध को जमाने के लिए उसमें डाला गया खट्टा पदार्थ। ७. नजदीक, पास। ८. मोटा कदन्न। ९. पतला, अच्छा। १०. गेहूँ। ११. पहनकर; १२. बाजार। १३. दृष्टि। १४. सुन्दरी।

किया गोरी रेसमी रे साँचवा के ढारल[1]।
किया तोहारा के गहेला[2] सोनार गोरिया रेसमी ॥ २ ॥

नाहिं मोरा राजावा रे साँचवा के ढारल।
नाहिं हमरा के गहेला सोनार गोरिया रेसमी ॥ ३ ॥

जनम त देला राम माई रे बापवा।
सुरति[3] उरेहे[4] भगवान् गोरिया रेसमी ॥ ४ ॥

जब रेसमी नामक कोई स्त्री अपना शृंगार कर बाजार को चली जा रही थी, उस समय किसी राजा की दृष्टि उस पर पड़ गयी ॥१॥

उन्होंने उससे पूछा कि ऐ सुन्दरी ! क्या तुम साँचे में ढाली गयी हो अथवा तुमको किसी सोनार ने बनाया है (जिसके कारण तुम्हें यह अलौकिक सौन्दर्य प्राप्त हुआ है) ॥२॥

स्त्री ने उत्तर दिया—ऐ राजा ! न तो मैं साँचे में ढाली गयी हूँ और न मुझे किसी सोनार ने ही गढ़ा है ॥३॥

मेरे माता और पिता ने मुझे जन्म दिया है और भगवान् ने मेरे सौन्दर्य को चित्रित किया है अर्थात् बनाया है ॥४॥

(४)

प्रसंग—पति के सकुशल गंगापार उतर जाने के लिए पत्नी की गंगाजी से लहर कम करने की प्रार्थना।

गंगा त हई मोर माई, केवट मोर भाई।
रचि एक लहरि सकोर[5] उतरि जाइबि पार ॥ १ ॥

कइसे में लहरि सकोरीं, आइलि रितु[6] मोर।
तोरा सामी हउवे[7] पेंवरकिया[8], उतरि जइहें पार ॥ २ ॥

हमरो त भींजे लामी केसिया, पिछुआरा भींजे मोर।
पियवा के भींजेला चदरिया, उतरि जइहें पार ॥ ३ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि गंगाजी तो मेरी माता है और मल्लाह मेरा भाई है। हे गंगा ! तुम थोड़ी सी अपनी लहर को कम कर लो, जिससे मैं पार उतर जाऊँ ॥१॥

तब गंगा ने उत्तर दिया—मैं अपनी लहर को कैसे कम करूँ। मेरी ऋतु (वर्षाऋतु) अब आ गई है। तुम्हारा पति बहुत बड़ा तैराक है, वह पार उतर जायेगा ॥२॥

---

१. ढाली गयी। २. गढ़ता है। ३. सौन्दर्य। ४. चित्रित करना। ५. खींच लेना, कम करना। ६. ऋतु। ७. है। ८. पैराक, तैराक।

स्त्री कहती है कि मेरे पीछे के हिस्से में लम्बे केश भींग रहे हैं। मेरे प्रियतम की चादर भींग रही है। परन्तु मेरा पति उतर जायेगा॥३॥

(५)

प्रसंग—सुन्दर स्त्री की प्राप्ति के लिए किसी जोगी का वंशी बजाना।

मोरा पिछुवरवा ठूंठि पाकरि ए राम।
राम ताहि चढ़ि जोगी बंसी बजावेला ए राम॥१॥
काहि लागि जोगी बंसी बजावेला, काहि लागि छिपावेला ए राम।
सांवरि लागि जोगी बंसी बजावेला, भइया लागि छिपावेला ए राम॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि घर के पीछे एक सूखा पाकड़ का वृक्ष है, उस पर चढ़ कर एक जोगी वंशी को बजाता है॥१॥

किसलिए वह जोगी वंशी बजाता है और किसलिए अपने को छिपाता है। सुन्दरी स्त्री की प्राप्ति के लिए वह वंशी बजाता है और इसलिए अपने को छिपाता है॥२॥

(६)

प्रसंग—आदर्श सतीत्व का चित्रण। दुष्ट केवट के द्वारा स्त्री का यौवन माँगना तथा दण्ड स्वरूप केवट का हाथ अपने पति द्वारा कटवा डालने की स्त्री की प्रतिज्ञा।

के मोरा लादी रे अरिचि मरिचिया;[१]
के मोरा लादी अब जीरा ए हरी॥१॥
के मोरा लादी रे सोने के टिकुलिया;[२]
एहि बनिजरवा के दीठि ए हरी॥२॥
ससुर मोरे लदिहे रे अरिचि मरिचिया;
भसुर मोर लदिहे रे जीरा ए हरी॥३॥
सइयां मोरे लदिहें सोने के टिकुलिया;
एहि बनिजरवा के दीठि ए हरी॥४॥
माथा मीसे गइलीं रे बाबा के तालाबावा;
बेसुली[३] मोर गइले हेराई[४] ए हरी॥५॥
गोड़[५] तोरा लागिलें केवटा मलहवा;
एहि दहे[६] जलिया लगाउ ए हरी॥६॥
जाहु तोरा सांवरि हो जलिया लगाइबि;
हमरा के का देबू दान ए हरी॥७॥

१. मिर्च। २. बिन्दी। ३. सिर की बिन्दी। ४. भूल गई। ५. पैर। ६. हृद, तालाब।

तोहरा के देबि केवटा दुनो काने तड़िवन[1];
अवरु गलहिं बीचे हार ए हरी ॥ ८ ॥
आगि लगाइबि सँवरो दुनो काने तड़िवन;
बजर परहु गले हार ए हरी ॥ ९ ॥
तोहरा त बाटे सँवरो दुठे[2] नवरँगिया;[3]
हमरा के ओहि में से दान ए हरी ॥ १० ॥
जेकर लगले केवटा लाख रूपइया;
से हो नाहिं कइले नेवान[4] ए हरी ॥ ११ ॥
अइसन बोली जनि बोल ए मलहवा;
पिया से कटाइबि तोर हाथ ए हरी ॥ १२ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि अब मेरे जीरा और मिर्च को कौन लाद कर ले जायेगा ॥१॥

इस व्यापारी (पति) की कृपा-दृष्टि के बिना मेरी सोने की बनी हुई टिकुली (बिन्दी) को कौन लाद कर ले जायेगा ॥२॥

वह स्त्री स्वयं उत्तर देती है—मेरा ससुर मेरी मिर्च को लादेगा और मेरा भसुर (जेठ) मेरे जीरे को लाद कर ले जायेगा ॥३॥

मेरा पति मेरी सोने की टिकुली को लाद कर ले जायेगा ॥४॥

मैं अपने बालों को मींसने के लिए अपने पिता के तालाब पर गयी। वहीं पर मेरी सिर की बिन्दी खो गयी ॥५॥

वह स्त्री मल्लाह से प्रार्थना करती है कि ऐ केवट! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। इस तालाब में जाल लगाकर मेरी बिन्दी को निकाल दो ॥६॥

मल्लाह ने पूछा—ऐ स्त्री! यदि मैं तालाब में जाल लगाऊँगा, तो तुम इसके लिए पुरस्कार स्वरूप क्या दोगी? ॥७॥

स्त्री ने कहा—मैं तुम्हें अपने दोनों कानों के ताटंक और गले का हार दूँगी ॥८॥

मल्लाह ने कहा—ऐ साँवरी! मैं तुम्हारे ताटंक में आग लगा दूँगा और उस गले के हार में बज्र पड़ जाय (ये दोनों चीजें मेरे लिए व्यर्थ हैं) ॥९॥

ऐ साँवरी! तुम्हारे पास दो नारंगी (स्तन) हैं। उसी में से कोई मुझे दान कर दो ॥१०॥

सती स्त्री ने उत्तर दिया—ऐ केवट! जिसने मेरी प्राप्ति के लिए लाखों रुपया खर्च किया है, उसने भी इन को अभी नहीं चखा है ॥११॥

ऐ मल्लाह! ऐसी बुरी बातें मत कहो। नही तो मैं अपने पति से तुम्हारी दोनों बाहों को कटवा लूँगी ॥१२॥

१. ताटंक (कान का गहना)। २. दो। ३. नारंगी (स्तन)। ४. पहली बार किसी भोज्य पदार्थ को खाना।

पिड़िया के गीत

(१)

प्रसंग—किसी स्त्री के अत्युत्कट सपत्नी-द्वेष का वर्णन।

कहवाँहि[1] तुलसी के नइहर[2], कहवाँहि सासुर ए राम ॥ १ ॥
कहवाँहि तुलसी जनमली, त के जरी रोवेला ए राम ॥ २ ॥
बिरिदावने तुलसी के नइहर, गोखुला[3] हवे सासुर ए राम ॥ २ ॥
मथुरा में तुलसी जनमली, मलहोरिया[4] जरी रोवेला ए राम ॥ ४ ॥
मारबि में तुलसी के लट[5] धइ, कानों[6] में लसारबि[7] ए राम ॥ ५ ॥
हमरा बालमू सँग सोवेली त, सिरवा गमक[8] देली ए राम ॥ ६ ॥
काहे तुहु मरबु हो लट धइ, कानो में लसरबू ए राम ॥ ७ ॥
आरे होई जाइबि अगिनि के जोती, त तपिहें नारायन[9] ए राम ॥ ८ ॥
आरे होई जाइबि तुलसी के मनिया[10], तजपिहें नारायन ए राम ॥ ९ ॥
आरे होइ जाइबि तुलसी के पतिया[11], त ठाकुर[12] सिर चढ़बि ए राम ॥१०॥

कहाँ तुलसी का मायका है और कहाँ ससुराल है? तुलसी का जन्म कहाँ हुआ है, कौन इसकी जड़ के पास बैठकर रो रहा है॥१-२॥

वृन्दावन में तुलसी का मायका है, गोकुल में ससुराल है, मथुरा में इनका जन्म हुआ है और माली इनके जड़ के पास बैठकर रो रहा है॥३-४॥

संभवत कोई पति तुलसी के पत्ते को साथ लेकर सोता है, अतः उसकी स्त्री कहती है कि मैं तुलसी की जटा पकड़ कर मारूँगी तथा कीचड़ से लपेट दूँगी। यह मेरे पति के साथ सोती है और सिर पर सुगन्ध देती है॥५-६॥

तुलसी ने उत्तर दिया—तुम मुझे क्यों मारोगी तथा कीचड़ में क्यों सानोगी। मैं सती होने के कारण अग्नि की ज्योति बन जाऊँगी, जिसे भगवान (पति) भी तापेंगे॥७-८॥

मैं तुलसी की माला बन जाऊँगी, तो नारायण (पति) भी उसको जपेंगे। यदि तुलसी का पत्ता बन जाऊँगी, तो ठाकुरजी के सिर पर चढ़ूँगी अर्थात् मेरा सर्वत्र आदर होगा॥९-१०॥

१. कहाँ। २. मायका। ३. गोकुल। ४. माली। ५. जटा। ६. कीचड़। ७. गाड़ना। ८. सुगन्ध। ९. पति। १०. माला। ११. पत्ता। १२. देवता।

(२)

प्रसंग—पति के आभूषण न बनवाने पर किसी स्त्री का दुःख प्रकट करना।

सब के सिपाही सब के नथिया[1] गर्हाइ गइले ॥ १ ॥
सब के सिपाही सब के तिलरी[2] गर्हाइ[3] गइले ॥ २ ॥
हमरो सिपाही[4] मन राजी भइले ए ऊधो ॥ ३ ॥
हमरो ही राम बनवासी भइले ए ऊधो ॥ ४ ॥
सब के सिपाही सब के कण्ठा गर्हाइ गइले ॥ ५ ॥
हमरो सिपाही हमरा के समुझाइ गइले ॥ ६ ॥

कोई स्त्री—जिसका पति संभवत: सिपाही था—कह रही है कि सब स्त्रियों के पतियों ने अपनी स्त्रियों के लिए नाक में पहनने की नथिया (आभूषण विशेष) और तिलरी—गले का हार—बनवा दिया है॥१-२॥

परन्तु ऐ ऊधो! मेरा पति स्वतन्त्र है, अपनी स्वेच्छा के अनुसार ही काम करता है। आज वह बन परदेस को चला गया है॥३-४॥

फिर वह स्त्री कहती है—सब स्त्रियों के पतियों ने उनके लिए कण्ठा (गले का एक आभूषण) गढ़ा दिया है, परन्तु मेरा पति मुझे केवल सान्त्वना देकर चला गया है। मेरे लिए उसने कभी गहना नहीं बनवाया॥५-६॥

(३)

प्रसंग—पति के आने के लिए स्त्री की प्रतीक्षा। न आने पर ननद से उसकी शिकायत।

सोने के थारी में जेवना परोसलों ॥ १ ॥
जेवना[5] के लेके महुइया तर खड़ी, ए इमिलिया तर खड़ी ॥ २ ॥
आरे ननदी के भइया तोर नचनिया,[6] मोर नजरिया में गड़ी ॥ ३ ॥
पाँच पाँच पानवा के बिरवा[7] लगवलीं ॥ ४ ॥
बिरवा के लेके महुइया तर खड़ी, ए इमिलिया तर खड़ी ॥ ५ ॥
आरे ननदी के भइया तोर नचनिया, मोर नजरिया[8] में गड़ी[9] ॥ ६ ॥
फूल हजारी[10] के सेज डसवलीं[11] ॥ ७ ॥
सेजिया के लेके महुइया तर खड़ी, इमिलिया तर खड़ी ॥ ८ ॥
आरे ननदी के भइया तोर नचनिया, मोर नजरिया में गड़ी ॥ ९ ॥

भावज अपनी ननद से कह रही है कि ऐ ननद! तुम्हारा भाई नचनिया (नाचनेवाला) है। सोने की थाली में भोजन परोसकर मैं महुआ तथा इमली के वृक्ष के नीचे खड़ी रही॥१—३॥

१. नाक का गहना। २. हार। ३. गढ़ाना या बनवाना। ४. पति। ५. भोजन। ६. नर्तक। ७. पान। ८. नजर, दृष्टि। ९. चुभना। १०. एक फूल का नाम। ११. बिछाया।

पाँच पाँच पान का बीड़ा लगाकर मैं पति के खाने के लिए आम तथा इमली के वृक्ष के नीचे खड़ी रही। परन्तु मेरे नर्तक पति को फुरसत कहाँ। वह मेरी नजरों में गड़ गया है॥४—६॥

मैंने हजारा नामक फूल को लेकर सेज पर बिछाया था और पति के आने के लिए आम तथा इमली के वृक्ष के नीचे खड़ी होकर प्रतीक्षा कर रही थी (परन्तु वह नहीं आया)। ए ननद! तुम्हारा भाई नाचनेवाला है। उसका सौन्दर्य मेरी आँखों में गड़ गया है॥

(४)

प्रसंग—नवोढ़ा स्त्री का पति को घर में आने का निमन्त्रण। लज्जा के कारण पति की विवशता।

कि बाह[1] रे सइयाँ, जेवना[2] बहाने घर अइह[3] ॥ १ ॥
कइसे में आई धनिया, जेवना बहनवे रे ॥ २ ॥
कि बाह रे धनिया, आमा खाड़ा बाड़ी[4] दरवजवे ॥ ३ ॥
जाहु तोहरा ए सइयाँ, आताना सरामिया[5] रे ॥ ४ ॥
कि बाह रे सइयाँ, काहे के कइल[6] मोर गवनवा ॥ ५ ॥
कि बाह रे० ।
नइहर में रहितीं सखिन संग खेलितीं रे ॥ ६ ॥
कि बाह रे सइयाँ सोइती मयेरिया[7] जो के ओदिये ॥ ७ ॥
कि बाह रे सइयाँ ।

कोई स्त्री अपने लजीले पति से कहती है कि ऐ सैयाँ! भोजन करने के बहाने सुरत-संभोग के लिए तुम मेरे घर में अवश्य आना॥१॥

पति उत्तर देता है—ऐ धनिया! मैं भोजन करने के काम से तुम्हारे घर कैसे आऊँ। मेरी माता तो सामने दरवाजे पर खड़ी है॥२-३॥

इस पर स्त्री कहती है—ऐ पति! यदि तुम्हें इतनी लज्जा लगती है, तो तुमने मेरा गवना क्यों कराया॥४-५॥

स्त्री कहती है—यदि मैं मायके में रहती, तो सखियों के साथ खेलती और अपनी माता की गोद में सोती॥६-७॥

गाँवों में पर्दा प्रथा की अधिकता के कारण बहुधा ऐसा देखा जाता है कि गवना के बाद वर और वधू का महीनों तक परस्पर दर्शन भी नहीं होता। और पति यदि स्त्री के घर में आता भी है, तो भीगी बिल्ली की तरह दबे पाँव, जिससे कोई उसे देख न सके। ऐसे ही पति का उपर्युक्त गीत में चित्रण हुआ है।

१. भोजन। २. काम से, बहाने। ३. आना। ४. है। ५. लज्जा। ६. किया। ७. माता।

(५)

प्रसंग—लड़कियों के द्वारा रात्रि में पिड़िया लगाने का वर्णन।

कवन भइया उठेले, रतिया बिरतिया;[1] अवरु अधिरतिया[2] ए हरी ॥ १ ॥
आरे कवन बहिना उठेली भिनुसार[3] ए हरी ॥ २ ॥
राम भइया उठेले रतिया बिरतिया अवरु अधिरतिया ए हरी ॥ ३ ॥
आरे पारबती बहिना उठेली भिनुसार ए हरी ॥ ४ ॥
आरे कवन बहिना लावेली, गोबर के रे पिड़िया[4] ॥ ५ ॥
आरे कवन भइया लावेले, नवरंगिया ए हरी ॥ ६ ॥
पारबती बहिना लावेली, गोबर के रे पिड़िया ॥ ७ ॥
आरे राम भइया लावेले, नवरँगिया ए हरी ॥ ८ ॥

कोई स्त्री कहती है कि कौन भाई रातबिरात और आधी रात को जगता है और कौन बहन प्रातःकाल उठती है ॥१-२॥

वह स्वतः उत्तर देती है—राम नामक भाई आधी रात को उठता है और पार्वती बहन प्रातःकाल जगती है ॥३-४॥

कौन बहन गोबर की पिड़िया (पिण्ड) बना रही है और कौन भाई पूजा के लिए फल आदि लाता है ॥५-६॥

पार्वती बहन गोबर की पिड़िया बनाती है, और भाई राम फल या नारंगी लाता है ॥७-८॥

लड़कियाँ रात को उठकर पिड़िया बनाती हैं और उनके भाई पूजा आदि सामग्री जुटाते हैं।

इसी प्रथा का संकेत उपर्युक्त गीत में किया गया है।

(६)

प्रसंग—भाई का बहन के घर जाना। भाई के आने से बहन को अपार आनन्द।

कवन फुलवा फूलेला हरदिया[5] अइसन ना;
ए गुलाब अइसन ना ॥ १ ॥
बान्धेले कवन भइया पगरिया[6] के पेंचवा[7] ना;
ए पगरिया के पेंचवा ना ॥ २ ॥

१. रात-बिरात। २. आधी रात। ३. प्रातःकाल। ४. पिण्ड। ५. हलदी। ६. पगड़ी। ७. तह।

चलि भइले भइया बहिनिया के देसवा ना;
ए बहिनिया के देसवा ना ॥ ३ ॥
गाँव केरा लोग कहेला हवलदार अइले ना;
ए सूबिदार अइले ना ॥ ४ ॥
कहेली कवन बहिना हमार भइया अइले[१] ना;
ए हमार भइया अइले ना ॥ ५ ॥

कौन फूल हरदी के समान पीला फूलता है और कौन गुलाब के समान लाल फूलता है ॥१॥

कौन भाई अपनी पगड़ी को खींच-खींच कर बाँधता है और बहन के देश (घर) को चला जाता है ॥२-३॥

जब वह आदमी अपनी बहन के गाँव में गया, तब उस गाँव का कोई आदमी यह कहने लगा कि सूबेदार आ रहा है और किसी ने कहा—हवलदार आ रहा है ॥४॥

जब बहन ने उस आदमी को देखा, तब वह कहने लगी कि यह तो मेरा भाई आ रहा है, मेरा भाई आ रहा है ॥५॥

ससुराल में भाई को आता देखकर बहन के हृदय में कितना अपार आनन्द होता है, इसका अनुभव तो बहन का हृदय ही कर सकता है। इसका वर्णन लेखनी से परे है। इसीलिए उपर्युक्त गीत में बहन के द्वारा आनन्द के मारे 'मोर भइया अइले ना' की द्विरुक्ति की गयी है।

(७)

प्रसंग—प्रातःकाल के समय शिवजी का पार्वती को फूल तोड़कर लाने का आदेश।

आरे भइले भिनुसार धरम के री बेरिया[२] ॥ १ ॥
आरे उठ गउरा[३] लोढ़ फुलवारी लालाना ॥ २ ॥
आरे कइसे में उठीं ईसर[४] महादेव जी ॥ ३ ॥
आरे मोरा गोदी गनपति बेटा लालाना ॥ ४ ॥
आरे गनपति के सुताइ द सोने के खटोलवा ॥ ५ ॥
आरे उठ गउरा लोढ़ फुलवारी लालाना ॥ ६ ॥
आरे टूटि जइहें खटिया[५] मुरुकि जइहें बहियाँ ॥ ७ ॥
आरे गिरि जइहें गनपति बेटा लालाना ॥ ८ ॥

शिवजी पार्वती से कहते हैं कि ऐ पार्वती ! अब प्रातःकाल हो गया है, यह धर्म की वेला (समय) है। अब तुम फूलवारी से फूल चुन लाओ ॥१-२॥

१. आया। २. समय। ३. गौरी (पार्वती)। ४. ईश्वर। ५. खटोला।

पार्वती ने उत्तर दिया—ऐ महादेव ! मैं कैसे उठूँ ? मेरी गोदी में बालक गणेशजी सो रहे हैं॥३–४॥

शिवजी ने कहा—ऐ पार्वती ! तुम सोने के खटोले में गणेश को सुला दो और फुलवाड़ी में जाकर फूल तोड़ो॥५–६॥

इस पर पार्वती ने उत्तर दिया—(गणेशजी के मोटेपन के कारण) खटोला टूट जायेगा और गिर जाने से उनकी बाहें मुड़क जायेंगी॥७–८॥

गणेशजी अपनी मोटाई तथा स्थूलता के लिए लड़कपन ही से प्रसिद्ध हैं। बाद में तो ये स्थूलता के उपमान ही बन गये। मल्लिनाथ ने भी इनको 'तुन्दिल' कहकर प्रार्थना की है।

"तं नरं वपुषि कुञ्जरं मुखे; मन्महे किमपि तुन्दिलं महः" ॥

(८)

प्रसंग—भावज की ननद से उसके भाई की शिकायत।

राति जाड़[1] बहुत लागेला मोर ननदी रे ॥ १ ॥
ननदी के भइया बाड़ा निरदरदी[2] रे ॥ २ ॥
खींचि खींचि ओढ़ेला रजइया[3] मोरे ननदी रे ॥ ३ ॥
बाड़ा हवे रगरी[4] बाड़ा हवे झगरी[5] रे ॥ ४ ॥
खींचि खींचि ओढ़ेले रजइया मोर ननदी रे ॥ ५ ॥

भावज कहती है कि ऐ ननद ! शीत ऋतु में रात्रि में बहुत जाड़ा लगता है। परन्तु तुम्हारा भाई बड़ा ही निर्दयी है॥१–२॥

वह मेरी रजाई (लिहाफ) को अपनी ओर खींच कर ओढ़ लेता है। वह बड़ा हठी तथा झगड़ालू है, क्योंकि वह बार-बार मेरी रज़ाई को खींचकर ओढ़ लेता है॥३—५॥

भावज का ननद से किया हुआ यह परिहास कितना मीठा है। ननद के भाई की शिकायत कितनी व्यंग्यपूर्ण है। इसे सहृदय ही समझ सकते हैं।

(९)

प्रसंग—प्रोषित्पतिका स्त्री के पति के वियोग में सुखपूर्वक रहने की अनिच्छा।

सोने के थारी में जेवना परोसलों रे ॥ १ ॥
जेइबि कइसे जेवाइबि कइसे रे ॥ २ ॥
मोहनी भरलि जँजिरिया ए राम खोलबि कइसे रे ॥ ३ ॥
जड़वा के मगजी रजइया ए राम ओढ़बि कइसे रे ॥ ४ ॥

१. शीत। २. निर्दयी। ३. लिहाफ। ४. हठी। ५. झगड़ालू।

पाँच पाँच पानवा के बिरवा लगवलीं ॥ ५ ॥
चाभबि कइसे चभाइबि कइसे रे ॥ ६ ॥
मोहनी भरलि जँजिरिया ए राम खोलबि कइसे रे ॥ ७ ॥

वियोगिनी स्त्री कहती है कि पति के बिना मैं सोने के थाल में कैसे खाऊँगी, रजाई कैसे ओढ़ूँगी, पान कैसे चाभूँगी तथा पति के प्रेम के स्मारक अपने कमरे की जंजीर को कैसे खोलूँगी।

(१०)

प्रसंग—मोरंग देश को जाते हुए भाई से पिड़िया की पूजा के लिए बहन का वहाँ से लड्डू तथा चिउड़ा माँगना।

मोरँग देसे तुहु जइह ए राम भइया;
ले अइह ए भइया मोरँगी लड्इया[1] हो ॥ १ ॥
मोरँग देसे तुहु जइह ए राम भइया;
ले अइह ए भइया सुरुका[2] चिउरवा[3] हो ॥ २ ॥
लडुआ चिउरवा से हम पूजबि पिड़िअवा हो ।
तोहरी बधइया[4] भइया पिड़िया बरतिया हो ॥ ३ ॥
घिवही लडुइया बहिना भइले मँहगवा हो ।
छोड़ि देहु ए बहिना पिड़िया बरतिया हो ॥ ४ ॥
सुरुका चिउरवा मँहग भइले बहिना हो ।
छोड़ि देहु ए बहिना पिड़िया बरतिया हो ॥ ५ ॥
अइसन बोली जनि बोल राम भइया हो ।
तोहरी बधइया भइया पिड़िया बरतिया हो ॥ ६ ॥

कोई बहन अपने भाई से कह रही है कि ऐ भाई! तुम मोरंग देश जाना और वहाँ से मेरे लिए उस देश के बने लड्डू लेते आना। ॥१॥

जब तुम वहाँ जाना तो मेरे लिए सुरुका (हल्का तथा पतला चिउड़ा) लेते आना ॥२॥

ऐ भाई! मैं उस लड्डू और चिउड़े से पिड़िया को पूजूँगी। यह व्रत भाई की मंगल-कामना से ही किया जाता है ॥३॥

इस पर भाई ने उत्तर दिया—ऐ बहन! घी लड्डू इस समय महँगा हो गया है; इसलिए तुम पिड़िया का व्रत करना छोड़ दो ॥४॥

१. लड्डू। २. पतला तथा हल्का चिउड़ा। ३. चिउड़ा। ४. मंगल-कामना से।

ऐ बहन! सुरुका चिउड़ा आज कल महँगा हो गया है; अतः पिड़िया का व्रत करना छोड़ दो ॥५॥

बहन ने उत्तर दिया—ऐ भाई! तुम ऐसे बचन मत कहो। तुम्हारी ही बधाई में मैं यह व्रत कर रही हूँ ॥६॥

बहन का प्रेम भाई के प्रति कितना प्रगाढ़ है।

(११)

प्रसंग—आम के पौधे की सेवा में लगी हुई पुत्री का ससुराल से बिदाई का सन्देश आने पर कुछ दिनों तक उसे टालने की पिता से प्रार्थना।

अँगना बहारि[1] बुअरा घूरवा[2] लगवलीं रे।
जामि गइले अमावा के गाँछि[3]; ए बाबा के तोर फेड़ बासी[4] ॥ १ ॥
जब-जब अमावा में भइले दुई पतवा रे।
नउवा ले आवेला निआर[5]; ए बाबा के तोर फेड़ बासी ॥ २ ॥
दस दिन फेरू[6] बाबा हमरो निअरवा रे।
अमवा के करबि रछपाल[7]; ए बाबा के तोर फेड़[8] बासी ॥ ३ ॥
जब जब अमवा भइले चार पतवा रे।
बभना[9] ले आवेला निआर; ए बाबा के तोर फेड़ बासी ॥ ४ ॥
चार दिन फेरू बाबा हमरो निअरवा रे।
अमवा के करबि[10] रछपाल; ए बाबा के तोर फेड़ बासी ॥ ५ ॥

पुत्री अपने पिता से कहती है कि मैंने आँगन में झाड़ू लगाकर उसके घूरे (कूड़ा, करकट) को द्वार पर लगा दिया है। वहाँ पर एक आम का पौधा जम गया है ॥१॥

जब आम में दो पत्ते निकल आये, उसी समय ससुराल से बिदाई का सन्देश लेकर नाई चला आया ॥२॥

पुत्री कहती है—ऐ पिता! मेरी बिदाई के दिन को दस दिन के लिए और टाल दो। मैं इस आम के पौधे की रक्षा (सेवा) करूँगी, नहीं तो मेरे चले जाने पर इस आम में कौन जल देगा? ॥३॥

जब आम में चार पत्ते निकल आये उस समय ब्राह्मण फिर बिदाई का दिन लेकर चला आया ॥४॥

फिर पुत्री ने पिता से कहा—ऐ पिता! मेरी बिदाई के दिन को चार दिन के लिए और टाल दो। मैं आम की रक्षा करूँगी। नहीं तो मेरे बिना तुम्हारे आम के वृक्ष को कौन सींचेगा ॥५॥

१. बुहार कर। २. कूड़ा-करकट। ३. पौधा। ४. सींचेगा। ५. लड़की के बिदाई का सन्देश। ६. टाल दो। ७. रक्षा ८. पेड़, वृक्ष। ९. ब्राह्मण। १०. करूँगी।

(१२)

प्रसंग—कृष्ण के साथ क्रीड़ा करने के कारण कूबरी के प्रति व्यंग्य वचन।

कूबरी का नाकवा बेसरिया[१] सोभेला रे।
किसुनजी का सोभेला गरवा में हारवा रे॥ १॥
भले भले कूबरी मचवले तू कजरी[२] रे। टेक
कूबरी का गरवा हसुलिया सोभेला रे।
किसुन जी का माथे सोभे मोर के मुकुटवा रे॥ २॥
भले भले कूबरी मचवले तू कजरी रे। टेक

गोपियाँ कह रही हैं कि कूबरी की नाक में बेसर (गहना) सुशोभित है तथा कृष्ण के गले में माला शोभित है॥१॥

कूबरी के गले में हँसुली सुशोभित है और कृष्ण के सिर पर मोर का मुकुट विराजमान है। ऐ तुमने कृष्ण के साथ खूब आनन्द किया॥२॥

(१३)

प्रसंग—ससुराल के कष्टों से पीड़ित किसी स्त्री का मायके जाने के लिए भाई के आने की प्रतीक्षा।

कवना ही मासे गोद[३] पाकी हो; चुनि-चुनि खाइबि ए राम।
कहिया बीरन[४] भइया अइहें हो; नइहर जाइबि ए राम॥ १॥
कातिक मासे गोंद पाकी हो; चुनि-चुनि खाइबि ए राम।
अगहन मासे भइया अइहें हो; नइहर जाइबि ए राम॥ २॥
गइया के अवहे[५] बछरुआ[६] हो; पिये के बेरि[७] भइल ए राम।
माई का अवहे धियवा हो; रसोइया बेरि भइल ए राम॥ ३॥
आमा जे पोसेलि धियवा हो; जइसे घिव[८] गागरि हो राम।
बाबा जे धिया भठिआवेले[९] हो; जइसे घुरवा हो राम॥ ४॥

कोई स्त्री कहती है कि किस मास में गोदा (गूलर का फल) पकता है, जिसे मैं चुनकर खाऊँगी। (क्योंकि ससुर के घर में खाने को अन्न नहीं मिलता)। किस दिन मेरा भाई आयेगा, जब मैं मायके चली जाऊँगी॥१॥

१. बेसर। २. क्रीड़ा, आनन्द। ३. गोदा या गूलर का पका फल। ४. भाई। ५. दुःख का अनुभव होना। ६. बछड़ा। ७. बेला, समय। ८. घी। ९. गड्ढा खोदकर गाड देना।

वह स्वत: उत्तर देती है—कातिक मास में गूलर का फल पकता है। मैं उसे चुन-चुनकर खाऊँगी। अगहन के महीने में मेरा भाई आयेगा, तब मैं मायके चली जाऊँगी ॥२॥

जिस प्रकार दूध पिलाने के समय बछड़ी की अनुपस्थिति गाय को कष्ट देती है, उसी प्रकार से रसोई बनाने के समय लड़की का अभाव माता को मर्मान्तिक कष्ट देता है ॥३॥

स्त्री कहती है—माता अपनी पुत्री को उसी प्रकार पालती पोसती तथा उसकी सावधानी से रक्षा करती है, जिस प्रकार लोग घी के घड़े की रक्षा करते हैं। परन्तु पिता अपनी पुत्री का उसी प्रकार से कुपात्र पति के साथ विवाह कर दूर करता है, जिस प्रकार से घर का कूड़ा और कर-कट ॥४॥

(१४)

प्रसंग—पति का परदेश से सपत्नी लाने की बात अपनी स्त्री से कहना। सौत लाने पर पत्नी द्वारा दोनों को तंग तथा परेशान करने की धमकी।

हम त जाइबि बिदेसवा, हो काजारा झरि[1] लागे ॥ १ ॥
हमरा के काइ[2] लेअइब[3] हो, काजारा झरि लागे ॥ २ ॥
तोहि के लाइबि हम चोलिया हो, काजारा झरि लागे ॥ ३ ॥
तोहि पर लाइबि सवतिया[4] हो, काजारा झरि लागे ॥ ४ ॥
जो तुहु लेअइब सवतिया हो, काजारा झरि लागे ॥ ५ ॥
सवति के माँग[5] फोरि देबों हो, काजारा झरि लागे ॥ ६ ॥
झोंटा झोंटउवलि[6] करबों हो, काजारा झरि लागे ॥ ७ ॥
जो तुहु सवति लेअइब हो, काजारा झरि लागे ॥ ८ ॥
सेजिया पर आगि लगाइबि हो; काजारा झरि लागे ॥ ९ ॥
दूनो बेकति[7] उदबासबि[8] हो, काजारा झरि लागे ॥ १० ॥
जो तुहु धनि माँग फोरबू हो; काजारा झरि लागे ॥ ११ ॥
तरकुल[9] पर खोंता[10] लगाइबि हो; काजारा झरि लागे ॥ १२ ॥
जो तुहु खोंता लगाइबि हो, काजारा झरि लाने ॥ १३ ॥
खोंता पर लुनुकी[11] लगाइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ १४ ॥
दूनो[12] बेकति जरि जाइब हो, काजारा झरि लागे ॥ १५ ॥
जो तुहु अगिया लगइबू हो, काजारा झरि लागे ॥ १६ ॥
चिल्हिया[13] होइ मँडराइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ १७ ॥

१. झड़ना, गिर जाना। २. क्या। ३. लाओगे। ४. सपत्नी। ५. सिर। ६. सिर के बालों को जोरों से खींचकर आपस में झगड़ा करना। ७. व्यक्ति (जोड़ा)। ८. परेशान कर घर से खदेड़ देना। ९. ताड़। १०. घोंसला। ११. आग की चिनगारी। १२. दोनों। १३. चील।

दूनो बेकति उड़ि जाइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ १८ ॥
जो तुहु ए पिया ऊपर उड़ि जाइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ १९ ॥
गुरदेलिया[1] से मारि गिराइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ २० ॥
दूनो बेकति गिरि जाइबि हो, काजारा झरि लागे ॥ २१ ॥

कोई पति अपनी स्त्री से कहता है कि मैं आज परदेश जाऊँगा। स्त्री पूछती है—तुम मेरे लिए क्या लाओगे॥१—२॥

पति ने कहा—मैं तुम्हारे पहनने के लिए चोली लाऊँगा और तुम्हारे ऊपर एक सौत भी लाऊँगा॥३—४॥

यह सुनकर स्त्री ने उत्तर दिया—यदि तुम सौत लाओगे, तो मैं उसके सिर को फोड़ डालूंगी और उसके सिर के बालों को खींचकर झगड़ा करूँगी॥५—७॥

स्त्री ने फिर कहा—यदि तुम सौत लाओगे तो मैं तुम दोनों को, जब सेज पर सोते रहोगे उसी समय उसमें आग लगा दूंगी (जिससे तुम दोनों जल कर खाक हो जाओगे) और इस प्रकार तुम दोनों को बेचैन कर घर से भगा दूंगी॥८—१०॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री ! यदि तुम सौत का सिर फोड़ दोगी, तो मैं ताड़ वृक्ष पर घोंसला बनाऊँगा (और उसके साथ उसी में रहूँगा)॥११—१२॥

स्त्री ने कहा—यदि तुम ताड़ के वृक्ष पर घोंसला लगाओगे, तो मैं आग की चिनगारी से उस घोंसले को जला दूँगी। इस प्रकार तुम दोनों प्राणी जल कर मर जावोगे॥१३—१५॥

पति ने उत्तर दिया—यदि तुम आग लगाओगी, तो मैं चील (पक्षी) बनकर आकाश में घूमता रहूँगा। हम दोनों प्राणी (सौत और मैं) आकाश में उड़ जायेंगे॥१६—१८॥

स्त्री ने कहा—ऐ पति ! यदि तुम ऊपर आकाश में उड़ जाओगे, तो मैं गुरदेलि से मारकर तुम दोनों को गिरा दूंगी। इस प्रकार तुम दोनों व्यक्ति (प्राणी) गिर कर मर जाओगे॥१९—२१॥

इस गीत में सौतिया डाह का जो प्रचण्ड तथा उग्र रूप पाया जाता है, वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं। भोजपुरी में एक कहावत है कि "काठो के सवति नीमन ना लागे" अर्थात् काठ की सौत भी अच्छी नहीं लगती ; परन्तु यदि वह षोडशवर्षीया रमणीय रमणी हो, तो फिर पूछना ही क्या। इस गीत में कोई स्त्री सौत लाने पर अपने पति तथा सौत को विभिन्न प्रकार से मार डालने की बात कहती है। पति के चिड़िया बनकर आकाश में उड़ने पर वह उसे गुरदेलि से मारने की धमकी देती है। इससे उसके हृदय के दुःख का अनुमान करना सहज है।

१. देहाती धनुष; जिसमें वाण के स्थान पर मिट्टी की बनी गोली मारने के काम में लाई जाती है।

(१५)

प्रसंग—पति का परदेश जाना तथा पत्नी की सखियों का उसे समझाना।

सोने के थारी में जेवना परोसलों ।
जेवना न जेवें ओहि बाग में, जाहाँ झरेला[1] पाताई[2] ॥ १ ॥
साम चलले परदेस को, सखिया बिलमाई[3] ॥ टेक
पाँच-पाँच पानवा के बिरवा लगवलीं ।
बिरवा ना चाभे ओहि बाग में, जाहाँ झरेला पाताई ॥ २ ॥
साम चलले परदेस को, सखिया समुझाई ॥ टेक
कलिया[4] चुनि-चुनि सेजिया दसवलीं ।
सेजिया ना सोवे ओहि बाग में, जाहाँ झरेला पाताई ॥ ३ ॥
साम चलले परदेस को सखिया समुझाई ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा था। परन्तु पति ने उस बगीचे में, जहाँ पेड़ से पत्ते गिर रहे थे, भोजन नहीं किया। मेरा पति परदेश जाने को तैयार है; परन्तु मेरी सखियाँ उसे समझा-बुझाकर रोकना चाहती हैं॥१॥

मैंने पाँच-पाँच पान का एक बीड़ा लगाया था। परन्तु मेरा पति पान को उस बाग में नहीं चाबता, जहाँ पत्ते गिर रहे हैं॥२॥

मैंने फूलों को चुन-चुनकर सेज पर बिछाया था; परन्तु पति सेज पर नहीं सोता, क्योंकि बगीचे में पत्ते झड़ रहे हैं॥३॥

पति परदेश जाने के लिए तैयार है और मेरी सखियाँ उसे समझा कर रोक रही हैं॥४॥

इस गीत में स्त्री का पति-प्रेम स्पष्ट रूप से झलक रहा है। वह पति की सेवा विविध प्रकार से करने के लिए तैयार है; परन्तु दुराग्रही पति उसे स्वीकार नहीं करता और परदेश जाने पर तुला बैठा है॥

(१६)

प्रसंग—पति के द्वारा दूसरी स्त्री रख लेने पर, पत्नी का उसे उलाहना। पत्नी की उक्ति पति के प्रति।

हमरा के बिसराइ[5] हरि, ल अइले गोरी । टेक
हरि रउरा बटुआ[6] में, लाल लाल डोरी ।
खोलि विहले बटुआ, लगाइ विहले चोरी ॥ १ ॥

१. गिरता है। २. पत्ता। ३. विलम्ब कर दिया। ४. फूल। ५. विस्मृत कर। ६. रुपया रखने की छोटी थैली।

झझर[1] गडुअवा, गंगा जल पानी ।
पनिया ना पियेला, लगाइ विहले चोरी ॥ २ ॥
कलिया चुनि चुनि सेजिया डसवलीं ।
सेजिया न सोवेला, लगाइ विहले चोरी ॥ ३ ॥
हमरा के बिसराइ हरि ले अइले गोरी ।

स्त्री कहती है कि मेरा (कामुक) पति मुझे विस्मृत करके के नयी गोरी स्त्री (कुलटा) को लेकर परदेश चला गया है। मेरे पति के रुपयों की थैली में लाल-लाल डोरी लगी हुई है। उसने थैली खोलकर मुझे ही चोरी लगा दी है॥१॥

सुन्दर सुराही में मैंने गंगाजल रक्खा है। पति नहीं पीता और मुझे चोरी लगाता है॥२॥

फूलों को चुन-चुनकर मैंने सेज पर बिछाया। परन्तु पति उस पर नहीं सोता। वह किसी गोरी (सुन्दरी) स्त्री को लेकर परदेश चला गया है और मुझे बिल्कुल भूल गया है॥३॥

प्रायः ऐसा देखा जाता है कोई-कोई पति अपनी साध्वी स्त्री को छोड़कर किसी कुल्टा सुन्दरी के प्रेम-जाल में फँसकर परदेस चले जाते हैं और घर की सुधि भी नहीं लेते। उनकी पतिव्रता स्त्री उनके नाम की माला जपती हुई दुःख के साथ अपना जीवन बिताती है।

(१७)

प्रसंग—जमुना के किनारे पत्नी का पानी भरना। पति के द्वारा उसका घड़ा फोड़ना। इस पर पत्नी का उसके सिर को काट लेने की धमकी।

चलु चलु जमना तिरवा भरन[2] गगरी । टेक
जहवाँ ससुर सूबेदारवा भरेले गगरी ॥ १ ॥
जहवाँ भसुर सूबेदारवा भरेले गगरी ॥ २ ॥ चलु चलु०
जहवाँ सइयाँ सूबेदारवा फोरेला गगरी ॥ ३ ॥
हनि के मारे गुरदेलिया[3], फूटेले गगरी ॥ ४ ॥ चलु चलु०
राउर सिरवा उतारि के बनाइबि गगरी ॥ ५ ॥
राउर जुलुफी[4] उतारि के बनाइबि गेड़ुरी[5] ॥ ६ ॥ चलु० चलु
राउर बहिना बोलाइ के भराइबि गगरी ॥ ७ ॥
आपन भइया बोलाइ के फोराइबि[6] गगरी ॥ ८ ॥ चलु चलु०

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि जमुना के किनारे गगरी भरने के लिए चलो, जहाँ मेरा सूबेदार ससुर तथा सूबेदार जेठ पानी भरता है॥१—२॥

१. सुराही। २. भरने के लिए। ३. देहाती धनुष। ४. लम्बे बाल। ५. घड़ा रखने के लिए रस्सी का गोला, वेष्टन। ६. फोड़वा दूँगी।

जहाँ मेरा सूबेदार पति जोरों से गुरदेलि चलाकर घड़े को फोड़ देता है।।३—४।।

(स्त्री पानी भरने के लिए गयी ; पति ने उसका घड़ा फोड़ दिया) इस पर अत्यन्त क्रोधित होकर वह स्त्री कहती है—ऐ पति ! तुम्हारे सिर को काट कर मैं घड़ा बनाऊँगी और तुम्हारे लम्बे बालों को काट कर मैं गेड़ुरी (रस्सी का बना हुआ घड़ा रखने के लिए गोला, वेष्टन) तैयार करूँगी।।५—६।।

तुम्हारी बहन को बुलाकर मैं घड़ा भराऊँगी और अपने भाई को बुलाकर तुम्हारी बहन का घड़ा फोड़वा दूँगी।।७—८।।

इस गीत में स्त्री के स्वाभिमान की जितनी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी है ; परन्तु उसके क्रोध की मात्रा अधिक है। पति के छोटे से अपराध पर उसे इतना अधिक दण्ड देना औचित्य की सीमा को पार करता हुआ जान पड़ता है।

(१८)

प्रसंग—गहना बनवाने के कारण सास का पतोहू से बैर करना।

पाँच रुपइया के नथिया गहंवलीं[1] रे ।। १ ।।
पाँच पचीस छका तीस के झुलनिया रे ।। २ ।।
झुलनी के कारन मोर सासु बइरिनिया[2] रे ।। ३ ।।
पाँच रुपइया के हसुली गहंवलीं रे ।। ४ ।।
पाँच पचीस छका तीस के झुलनिया[3] रे ।। ५ ।।
ननदी कारन ननदोई बइरिनिया रे ।। ६ ।।

कोई स्त्री कहती है कि मैंने पाँच रुपये की नथिया बनवाई और पचीस-तीस रुपये की झुलनी गढ़वाई है।।१—२।।

इस झुलनी के कारण मेरी सास मुझसे बैर करने लगी है।।३।।

मैंने पाँच रुपये की हँसुली बनवाई और तीस रुपये की झुलनी। ननद मुझसे द्वेष करने लगी है और इसी कारण ननदोई भी मेरा बैरी हो गया है।।५—६।।

(१९)

प्रसंग—पति को मोह लेने के कारण, पत्नी का किसी कुलटा कलवारिन को इसके लिए उपालम्भ करना।

पाँच रुपइया के तिलरी गहंवलीं रे ।। १ ।।
तिलरी पर जादू चलवले रे, जमुनी कलवारिन ।। २ ।।
पियवा से पिरीत छोड़वेले रे, जमुनी कलवारिन ।। ३ ।।

१. बनाया। २. बैरिन। ३. झुलनी (नाक का एक गहना)

पाँच रुपइया के पहुँची गहँवलीं रे ॥ ४ ॥
पहुँची पर जादू चलवले रे जमुनी कलवारिन ॥ ५ ॥
पियवा जे हमरा के बिसरलसि रे, जमुनी कलवारिन ॥ ६ ॥

स्त्री कहती है—मैंने पाँच रुपये का हार बनवाया है; परन्तु जामुन रंग की काली उस कलवार की स्त्री ने जादू चला दिया है और पति से प्रेम करना छुड़ा दिया है ॥ १—३॥

मैंने पाँच रुपये की पहुँची (हाथ का आभूषण) बनवाया। उस कुलटा कलवारिन ने ऐसा जादू किया है, जिससे पति मुझे भूल गया है ॥४—६॥

(२०)

प्रसंग—मिथ्यावादी पति के प्रतिज्ञा भंग करने पर पत्नी के द्वारा 'अविश्वास' का प्रस्ताव पास करना।

राति कहे पिया नथिया गढ़ा देबि ॥ १ ॥
होत भिनुसाहरा[1] बिसरि गइली[2] बतिया रे ॥ २ ॥
मैं ना पतियाई[3] लबजी[4] रउरी बतिया[5] रे ॥ ३ ॥
बारी उमिरिया सइयाँ भइले परदेसिया रे ॥ ४ ॥
राति कहे पिया तिलरी गढ़ा देबि ॥ ५ ॥
होत भिनुसाहरा बिसरि गइली बतिया रे ॥ ६ ॥
मैं न पतियाईं लबजी रउरी बतिया रे ॥ ७ ॥
बारी उमिरिया सइयाँ भइले परदेसिया रे ॥ ८ ॥

कोई स्त्री अपनी सखी से कह रही है कि पति रात में यह कहता है कि मैं तुम्हारे लिए नथिया गढ़ा दूँगा, परन्तु प्रातःकाल होते ही वह अपनी बात (प्रतिज्ञा) को भूल जाता है। मैं उस झूठे की बात का विश्वास अब नहीं कर सकती ॥ १—३॥

छोटी उम्र में ही मेरा पति परदेसी हो गया ॥४॥

रात में वह सोने का हार बनवा देने के लिए कहता है; परन्तु प्रातःकाल होते ही वह अपनी बात को भूल जाता है। ऐसे झूठे आदमी की बात का विश्वास अब मैं नहीं कर सकती ॥५—७॥

छोटी उम्र में ही मेरा पति परदेश चला गया है ॥८॥

कितने पति रात्रि में अपने स्त्रियों को प्रसन्न करने के लिए अनेक प्रकार के वादे कर देते हैं; परन्तु काम निकल जाने पर फिर उस वादे को पूरा नहीं करते। इस गीत में ऐसे ही किसी पति का वर्णन है। स्त्री ने भी उस पर 'अविश्वास' का प्रस्ताव पासकर उसकी झूठी प्रतिज्ञा करने की चाल को सदा के लिए धूल में मिला दिया है।

१. प्रातःकाल। २. भूल गयी। ३. विश्वास करूँगी। ४. झूठी। ५. बात, प्रतिज्ञा।

(२१)

प्रसंग—पत्नी का प्रगाढ़ पति-प्रेम का वर्णन।

काहावाँ से आवेले[1] राम लछुमन; काहावाँ से आवेले सइयाँ हो ॥ १ ॥
घरवा में दियरा[2] बारि द[3] सखी; अब घरवा में दियरा हो ॥ २ ॥
पुरुब से आवेले राम लछुमन; पछिम से आवेले सइयाँ हो ॥ ३ ॥
घरवा में दियरा बारि द सखी; अब घरवा में दियरा हो ॥ ४ ॥
दुअरा बइठाइबि[4] हम राम लछुमन; आँगन बइठाइबि सइयाँ हो ॥ ५ ॥
घरवा में दियरा बारि द सखी; अब घरवा में दियरा हो ॥ ६ ॥
दाल भात खिआइबि हम राम लछुमन; पूआ खिआइबि सइयाँ हो ॥ ७ ॥
घरवा में दियरा बारि द सखी; अब घरवा में दियरा हो ॥ ८ ॥
दुअरा सुताइबि हम राम लछुमन; सेजिया सुताइबि सइयाँ हो ॥ ९ ॥
घरवा में दियरा बारि द सखी; अब घरवा में दियरा हो ॥१०॥

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है—राम और लक्ष्मण कहाँ से आ रहे हैं? और कहाँ से मेरा पति आ रहा है। ऐ सखी! तुम मेरे घर में अब दीपक जला दो॥१—२॥

वह आप ही आप फिर कहती है—राम और लक्ष्मण पूरब से आ रहे हैं और मेरा पति पश्चिम से आ रहा है। ऐ सखी! तुम मेरे घर में दीपक जला दो॥३—४॥

मैं राम और लक्ष्मण को द्वार पर बैठाऊँगी और अपने पति को आँगन में ले जाकर बैठाऊँगी। ऐ सखी! तुम मेरे घर में दीपक जला दो॥५—६॥

मैं राम और लक्ष्मण को दाल और भात खिलाऊँगी और अपने पति को पूआ खिलाऊँगी। ऐ सखी! मेरे घर में तुम दीपक जला दो॥७—८॥

मैं राम और लक्ष्मण को द्वार पर सुलाऊँगी और पति को अपनी सेज पर सुलाऊँगी। इसलिए ऐ सखी! तुम मेरे घर में दीपक जला दो॥९—१०॥

इस गीत में पत्नी का प्रगाढ़ पति-प्रेम दिखाई पड़ रहा है।

(२२)

प्रसग—राम के घर में गाय की चोरी होने से सीता का रोना। ननद के द्वारा सीता को समझाना।

पाँच ही आम के कोइलिया[5] हो; के मोरा बाग लगाई।
केई जे रचेला किआरी[6] हो; केई ढेकुली[7] चलाई ॥ १ ॥
रामचन्द्र ढेकुली चलावे हो; सीता रचेली किआरी।

१. आते हैं। २. दीपक। ३. जला दो। ४. बिठाऊँगी। ५. अधपका आम। ६. क्यारी। ७. कुएँ से पानी निकालने का देहाती ढंग।

राम के घरवा में चोरवा घुसले हो; धेनु लेगइले चोराइ ॥ २ ॥
रोवेली सीता मोर भउजिया हो; काजारा झरि[1] जाई ॥ ३ ॥
टाका ही टूकि के काजर हो; ननदी हटिये बिकाई ।
लाख रुपइया के गइया हो; ननदी कहवाँ से आई ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे बगीचे में पाँच अधपके आम हैं। ऐसे मेरे बाग को कौन लगायेगा अर्थात् कौन सींचेगा और कौन ढेकुली चलायेगा ॥१॥

वह स्वतः कहती है---रामचन्द्र ढेकुली चलाते हैं और सीताजी उन वृक्षों में पानी देने के लिए क्यारी बना रही हैं। राम के घर में चोर घुस गये और उनकी दूध देने वाली गाय को चुरा ले गये ॥२॥

इस पर सीताजी रोने लगीं और उनके रोने से आँखों में लगा हुआ काजल गिरने लगा। तब सीता की ननद ने कहा कि ऐ भावज ! चुप रहो, रोओ मत ; क्योंकि तुम्हारी आँखों का काजल गिर रहा है ॥३॥

इस पर सीता ने उत्तर दिया---ऐ ननद ! काजल तो दो चार पैसे का है, वह तो बाजार में मिल जायेगा। परन्तु गाय तो लाख रुपये की है, वह कहाँ से आयेगी ॥४॥

इस गीत में वर्णित घटना ऐतिहासिक सत्य से रहित है। यहाँ पर सीता तथा राम का अर्थ किसी साधारण स्त्री तथा पुरुष से समझना चाहिए।

(२३)

प्रसंग---घर से लुप्त हो गये पति को पत्नी के द्वारा सब तीर्थ-स्थानों में उसे खोजना, परन्तु न मिलने पर दुःख प्रकट करना।

सोने के थारी में जेवना परोसलों;
जेवना ना जेवें, छपित भइले ना ।
मोर पातर बलमुआ छपित भइले ना ॥ १ ॥ टेक ॥

मचिया बइठल रउरा सासु सोहागिन कवन रतिया ना ।
हरि के बिहलू जनमवा कवन रतिया ना ॥ २ ॥

जनम त बिहलीं, करम नाहिं बिहली; कवन पपिया ना ।
लिलरा भरलसि टँकिया; कवन पपिया ना ॥ ३ ॥

कासी में खोजलीं; अजोधा में खोजलीं; मथुरा जी में ना ।
उनुकर लिखल बा फकिरिया; बिंदराबन में ना ॥ ४ ॥

---

१. झरना, गिरना।

झझरे गड़ुअवा गंगाजल पानी;
पनिया पीये छपित भइले ना ।
मोर पातर बलमुआ छपित भइले ना ॥ ५ ॥
मचिया बइठल रउरा सासु सोहागिन कवन रतिया ना ।
हरि के दिहलू जनमवा कवन रतिया ना ॥ ६ ॥
जनम त दिहली, करम नाहिं दिहलीं; कवन पपिया ना ।
लिलरा मरलसि टँकिया; कवन पपिया ना ॥ ७ ॥
कासी में खोजलीं, अजोधा में खोजलीं; मथुरा जी में ना ।
उनुकर लिखल बा फकिरिया; बिरिदाबन में ना ॥ ८ ॥

कोई स्त्री—जिसका पति घर से गायब हो गया है—कहती है कि मने सोने की थाली में पति के लिए भोजन परोसा था ; परन्तु मेरा पतला प्रियतम बिना भोजन किये ही घर से लुप्त हो गया ॥१॥

वह स्त्री सास से कहती है—मचिया पर बैठने वाली ऐ श्रेष्ठ सास ! तुमने किस रात्रि में मेरे पति को पैदा किया था —उसको जन्म दिया था ॥२॥

सास ने कहा—मैंने जन्म तो दिया, परन्तु उसको कर्म (भाग्य) नहीं दिया। न मालूम किस पापी ने उसके ललाट में टाँकी मारी है (जिससे वह गायब हो गया है) ॥३॥

स्त्री कहती है—मैंने काशी, अयोध्या, मथुरा तथा वृन्दावन में सब जगह उन्हें ढूंढ लिया। परन्तु पति कहीं नहीं मिला। मालूम होता है उसके भाग्य में फकीरी (वैराग्य) ही लिखा है ॥४॥

शेष गीत का अर्थ पूर्ववत् समझना चाहिए ॥

(२४)

प्रसंग—किसी दुष्ट देवर का अपनी भावज के साथ भोग-लिप्सा का वर्णन।

पांच रुपइया प्रभु चवरी के खुँटवा;[१] कि चलि भइले ना ।
हरि मोरे हाजीपुर की हटिया; कि चलि भइले ना ॥ १ ॥
एक ओरि बिकाला रे खैर[२] सोपरिया; कि एक ओरिया ना ।
माखामालवा के चोलिया; कि एक ओरिया ना ॥ २ ॥
काहि लागि[३] बिकाला खैर सोपरिया; कि काहि लागि ना ।
माखामालवा के चोलिया; कि काहि लागि ना ॥ ३ ॥
पिया लागि बिकाला रे खैर सोपरिया, कि धनिया[४] लागि ना ।
माखामालवा के चोलिया; कि धनिया लागि ना ॥ ४ ॥

१. किनारा। २. कत्था। ३. लिये। ४. स्त्री।

छोटकी ननदिया रे भादों के बिजुलिया; कि छींटि[1] देले ना ।
हरि के खैर सोपरिया; कि छींटि देले ना ॥ ५ ॥
छोटका देवरवा रे गोहुवन[2] सापावा; कि मींसि[3] देले ना ।
मोर मखमल के चोलिया; कि मींसि देले ना ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति अपनी चादर के खूँट में पाँच रुपये बाँधकर हाजीपुर के मेले में चला गया ॥१॥

उस मेले में एक ओर कत्था और सुपारी बिकती है और दूसरी ओर मखमल की चोली बिकती है ॥२॥

किसलिए उस मेले में कत्था और सुपारी बिकती है और किसलिए मखमल की चोली बिकती है ॥३॥

पति के खाने के लिए खैर तथा सुपारी बिकती है और स्त्री के पहिनने के लिए मखमल की चोली बिकती है ॥४॥

मेरी छोटी ननद भादों की बिजुली के समान चमकने वाली तथा सुन्दरी है। वह मेरे पति के खैर तथा सुपारी को छींट देती है ॥५॥

मेरा छोटा देवर गोंहुवन साँप के समान भयंकर है। वह मेरी मखमल की चोली को मसल देता है अर्थात् मेरे स्तनों का मर्दन करता है ॥६॥

इस गीत में दुष्ट देवर को गोहुँवन साँप से उपमा बड़ी ही मार्मिक है।

(२५)

प्रसंग—पति से सुरत-संभोग करने की पत्नी की प्रार्थना।

सोने के थारी में जेवना परोसलीं;
जेंवना ना जेवें चढ़ि आइल बंगले पर ।
आजु बालम सूति[4] रह अँचरे पर ॥ १ ॥ टेक
सूति रह अँचरे पर, बिराज छतिये पर ।
मोहर माला आजु पहिराव छतिये[5] पर ॥ २ ॥
झाझर गडुअवा गंगाजल पानी ।
पनिया न पीये, चढ़ि आइल बँगले पर ॥ ३ ॥
आजु बालम०
पाँच ही पान के बिरवा[6] लगवलीं ।
बिरवा न चाभे चढ़ि आइल बंगले पर ॥ ४ ॥
आजु बालम०

---

१. छिड़क दिया। २. विषैला साँप। ३. मसल देना। ४. सो रहो। ५. स्तन। ६. बीड़ा।

फूल हजारी के सेजिया डसवलीं ।
सेजिया न सूते[1] चढ़ि आइल बँगले पर ॥ ५ ॥
आजु बालम०

कोई स्त्री कहती है कि सोने की थाली में मैंने पति के लिए भोजन परोसा था। परन्तु भोजन उसने नहीं किया और मेरे बँगले पर चढ़ आया। ऐ पति ! आज तुम मेरे आँचर पर सो रहो ॥१॥

तुम मेरे आँचर पर सोओ, मझसे चिपट कर छाती पर सोने की माला पहराओ ॥२॥

वह स्त्री फिर कहती है--सुराही में मैंने गंगा जल रक्खा; परन्तु पति ने जल नहीं पिया और मेरे बँगले पर चढ़ आया ॥३॥

पाँच पान का मैंने बीड़ा लगाया था, परन्तु बिना उसे चाभे ही वह मेरे बंगले पर चढ़ आया ॥४॥

हजार फूलों को मैंने सेज पर बिछाया था; परन्तु सेज पर न सोकर वह मेरे बंगले पर चला आया ॥५॥

(२६)

प्रसंग --भोजन न करने तथा सेज पर न सोने के कारण पत्नी के द्वारा किसी परदेसी पति की शिकायत।

सोने के थारी में जेवना परोसलीं;
जेवना न जेवें विदेसिया[2] यार बिना ।
कइसे कटी मोर रतिया यार बिना ॥ १ ॥ टेक
फाटेले छतिया हमार अपना यार बिना ।
कइसे करबि दिल के बतिया[3] यार बिना ॥ २ ॥
झझरे गडुअवा सुराही के पानी ।
पानिया न पीये बिदेसिया यार बिना ॥ ३ ॥
कइसे कटी० ।
पाँच ही पान के बिरवा लगवलीं ।
बिरवा न चाभे बिदेसिया यार बिना ॥ ४ ॥
कइसे कटी० ।
फूल हजारी के सेजिया डसवलीं ।
सेजिया न सोवे बिदेसिया यार बिना ॥ ५ ॥
कइसे[4] कटी मोर रतिया यार बिना ।

१. सोता है। २. परदेशी। ३. बातें। ४. कैसे।

कोई स्त्री कहती है कि मैंने सोने की थाली में पति के लिए भोजन परोस कर रक्खा था, परन्तु उसने भोजन नहीं किया। आज उस यार (पति) के बिना मेरी रात कैसे कटेगी ॥१॥

पति के बिना—उसके वियोग में—मेरी छाती फटी जा रही है। आज उसके बिना अपने दिल की बातें मैं किससे कहूँगी ॥२॥

सुराही में मैंने उसके लिए पानी रक्खा था, परन्तु उसने नहीं पिया ॥३॥

पाँच-पाँच पान का बीड़ा लगाया था ; परन्तु उसने नहीं चबाया। हजारों फूलों से मैंने सेज सजाई थी ; परन्तु परदेशी पति उस पर नहीं सोया ॥४—५॥

(२७)

प्रसंग—पर पुरुष के प्रति किसी कुलटा स्त्री की उक्ति।

सोने के थारी में जेवना परोसलीं;
जेवना तू जेंइल मुसाफिर मोर घरे ना ।
तू त बसि जा मुसाफिर मोर घरे ना ॥ १ ॥

कइसे हम बसी सांवरो[1] तोर घरवा; जोहत होइहें ना ।
मोर सुन्नरि बटिया; जोहत[2] होइहें ना ॥ २ ॥

जोहत होइहें बटिया, गिरत होइहें लोरवा; टूटत होइहें ना ।
उनुकर चोली के बनवा;[3] टूटत होइहें ना ॥ ३ ॥

झझरे गडुअवा गंगा जल पानी;
पनिया तू पील आजु मोर घरे ना ।
तू त बसि जा मुसाफिर मोर घरे ना ॥ ४ ॥

कइसे हम बसी सांवरो तोर घरवा; जोहत होइहें ना ।
मोर सुन्नर तिरियवा;[4] जोहत होइहें ना ॥ ५ ॥

जोहत होइहें बटिया, गिरत होइहें लोरवा, टूटत होइहें ना ।
उनुकर चोली के बनवा; टूटत होइहें ना ॥ ६ ॥

कोई कामुक पुरुष पथिक रूप में किसी गाँव में गया है। उसे देख कोई कुलटा स्त्री कहती है कि ऐ पथिक ! सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा है ; तुम उसे खाओ और मेरे घर में सो जाओ ॥१॥

पथिक ने कहा—ऐ साँवली ! मैं तुम्हारे घर में कैसे रहूँ ? मेरी सुन्दरी स्त्री मेरी बाट जोहती होगी ॥२॥

१. साँवली स्त्री। २. प्रतीक्षा करना। ३. बन्धन, बन्द। ४. स्त्री।

वह मेरी प्रतीक्षा करती होगी ; मेरे वियोग के कारण उसके आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी होगी और उसके चोली के बन्धन —स्तनों की पीनता के कारण—टूटते होंगे॥३॥

स्त्री ने कहा—मैंने तुम्हारे लिए सुराही में पानी रक्खा है। उसे तुम पी लो और मेरे घर पर रह जाओ॥४॥

कामुक पथिक ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारे घर पर कैसे रहूँ। रोती हुई मेरी स्त्री मेरी प्रतीक्षा करती होगी॥५—६॥

गोधन के गीत

(१)

प्रसंग—भाई बहन का वार्तालाप।

नदिया के तीरवा कवन भइया खेले हो सिकार।
कहि भेजवली कवन बहिना भइया हो हमार ॥ १ ॥
कवन बिधि[1] रहबों[2] मे भइया के ही मान।
कोठि[3] बाड़े चउरा, पनबटवा बाड़े हो पान ॥ २ ॥
भली बिधि रहिबों में भइया के रे मान ॥ ३ ॥

बहन कहती है कि नदी किनारे मेरा भाई शिकार खेलता है। किसी बहन ने अपने भाई के पास कहलवा भिजवाया कि मैं किस प्रकार से रहूँगी ॥१॥

भाई ने उत्तर दिया—घर में, भण्डार में चावल रक्खा हुआ है तथा पनबट्टा में पान रक्खा हुआ है। उसे खाकर तुम अच्छी तरह से रहना ॥२॥

बहन ने कहा—हाँ, अब मैं अच्छी तरह से रहूँगी ॥३॥

(२)

प्रसंग—गाँव के सब लोगों को मार डालने की किसी स्त्री की ईश्वर से प्रार्थना।

गाँव के गँउवाँ[4] हो कवन राम, उनहू[5] के दइव हर ले जाय।
गाँव के कयथा[6] हो कवन राम, उनहू के दइव[7] हर[8] ले जाय ॥ १ ॥
गाँव के सोनरा हो कवन राम, उनहू के दइव हर ले जाय।
गाँव के बाभना हो कवन राम, उनहू के दइव हर ले जाय ॥ २ ॥

कोई स्त्री कहती है कि गाँव का मुखिया अमुक पुरुष है, वह मर जाय। गाँव का कायस्थ— लिखने का पेशा करनेवाला अमुक आदमी है वह भी मर जाय ॥१—२॥

गाँव के सोनार को ब्रह्मा नष्ट कर दें तथा गाँव के ब्राह्मण को भी भगवान मार डालें ॥३—४॥

---

१. प्रकार, तरह। २. रहूँगी। ३. अन्न रखने के लिए मिट्टी का घड़ा, बड़ा पात्र। ४. ग्रामणी, अगुवा। ५. उसको भी। ६. कायस्थ। ७. दैव, भाग्य। ८. नष्ट कर दे।

गोधन के दिन स्त्रियाँ गाँव तथा घर के सब लोगों को मर जाने के लिए प्रार्थना करती हैं। उसी का इस गीत में वर्णन है।

(३)

प्रसंग—गोधन का जाना।

फालाना[1] राम[2] बहुरिया[3] रूसल नइहर जासु।
पाने फूले अझुरइले[4] गोधन अकुताइल जासु[5] ॥ १ ॥
रामचन्द्र बहुरिया रूसल नइहर जासु।
पाने फूले अझुरइले गोधन अकुताइल जासु ॥ २ ॥

अमुक पुरुष की स्त्री रुष्ट होकर अपने मायके जा रही है। पान और फूल से असंतुष्ट होकर गोधन भी शीघ्रता से चला जा रहा है॥१॥

रामचन्द्रजी की स्त्री रुष्ट होकर चली जा रही है। पान और फूल से असंतुष्ट होकर गोधन जल्दी से चला जा रहा है॥२॥

(४)

प्रसंग—बहन की भाई के लिए शुभ-कामना।

कवन भइया चलले अहेरिया,
कवन बहिनी देली असीस हो ना ॥ १ ॥
जियसु रे मोर भइया;
मोरा भऊजी के बाढ़े सिर सेनुर हो ना ॥ २ ॥
मोहन भइया चलले अहेरिया,
पार्वती बहिनी देली असीस हो ना ॥ ३ ॥
जियसु रे मोर भइया;
मोर भउजी के बाढ़े सिर सेनुर हो ना ॥ ४ ॥

कौन भाई शिकार को गया है और कौन बहन उसे आशीर्वाद दे रही है। मेरा भाई जीता रहे और मेरी भावज के सिर का सिन्दूर बढ़े॥१—२॥

मोहन भाई शिकार के लिए गया है, पार्वती बहन उसे आशीर्वाद देती है कि मेरा भाई जीता रहे और मेरी भावज सौभाग्यवती बनी रहे॥३—४॥

१. अमुक। २. पुरुष। ३. स्त्री। ४. फँस जाना। ५. जा रही है।

नागपंचमी के गीत

(१)

प्रसंग—भक्त का नाग को भिक्षा देने के लिए लोगों से प्रार्थना।

जवन[1] गलिया हम कबहूँ ना देखलीं;
उ गलिया देखवलल[2] हो मोरे नाग दुलरुआ ॥ १ ॥
जे मोरा नाग के गेहूँ भीखि दीहें;
लाले-लाले बेटवा बिअइहें[3] हो मोरे नाग दुलरुआ ॥ २ ॥
जे मोरा नाग के कोदो भीखि दीहें;
करिया-करिया मुसरी[4] बिअइहें हो मोरे नाग दुलरुआ ॥ ३ ॥
जे मोरा नाग का भिखिया ना दीहें;
दूनो बेकति जर जइहें हो मोरे नाग दुलरुआ ॥ ४ ॥
जे मोरा नाग का भीखि उठि दीहें;
दुनो बेकति[5] सुखी रहिहें हो मोरे नाग दुलरुआ ॥ ५ ॥
जवन गलिया हम कबहूँ ना देखलीं;
उ गलिया देखवलल हो मोरे नाग दुलरुआ[6] ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है कि जिस गली को हमने कभी भी नहीं देखा था, प्यारे पुत्र नाग (सर्प) ने उस गली को मुझे दिखलाया ॥१॥

जो मेरे प्यारे नाग को गेहूँ भिक्षा के रूप में देगा, वह सुन्दर-सुन्दर बालक पैदा करेगा ॥२॥

जो मेरे प्यारे नाग को कोदो (कुअन्न) भिक्षा के रूप में देगा, उसे काली-काली चुहिया (बुरी संतान) पैदा होगी ॥३॥

परन्तु जो मेरे प्यारे नाग को भिक्षा नहीं देगा, वे दोनों व्यक्ति (स्त्री तथा पुरुष) मर जायेंगे ॥४॥

जो मेरे नाग को नित्य प्रति भिक्षा देंगे, वे दोनों व्यक्ति सुखी रहेंगे ॥५॥

ऐ मेरे प्यारे नाग ! जिस स्थान पर मैं कभी भी नहीं गयी थी, तुम्हारे कारण (भिक्षा के लिए) उन-उन स्थानों को जाना पड़ा ॥६॥

१. जो। २. दिखलाई। ३. प्रसव करेंगी। ४. चुहिया। ५. व्यक्ति। ६. प्यारा।

जँतसा

(१)

प्रसंग—पति के परदेस चले जाने पर उसे ढूँढने के लिए पत्नी का अपने भाई को भेजना। बहनोई के न मिलने पर भाई की कुल-रक्षा के लिए बहन से प्रार्थना।

ए राम हरि मोर गइले बिदेसवा; त दुइ नवरंगिया[1] लगवले हो राम।
ए राम हरि जी के लावल नवरंगिया; त नवरंग झुरा[2] गइले हो राम ॥ १ ॥
ए राम भइया मोरे अइले हो पहुनवा; त नवरंग छाँह[3] ठाढ़[4] भइले हो राम।
ए राम बहिना केकर[5] लावल नवरंगिया, त नवरंग झुरा गइले हो राम ॥ २ ॥
ए राम हरिजी के लावल नवरंगिया; त नवरंग झुरा गइले हो राम।
ए राम बहिना पिसि देहु जीरवा[6] सतुइया; त हम जइबो बहनोई[7] खोचे हो राम ॥ ३ ॥
ए राम पुरुब खोजलीं पछिमवा; त अवरु दखिनवा हो राम।
ए राम तीनु भुवन खोजि अइली; त कतहूँ बहनोइया न मिले हो राम ॥ ४ ॥
ए राम घींचि[8] बान्हे बहिन आंचरवा; त बाबा कुलवा रखिह[9] हो राम।
ए राम प्रभु जी के जिनगी अताना दुःख; त मरला कताना[10] दुःख हो राम ॥ ५ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति दो नारंगी के वृक्षों को लगाकर परदेश चला गया है। पति के द्वारा लगाये गये दोनों नारंगी के वृक्ष अब सूख गये ॥१॥

मेरा भाई पाहुन बनकर मेरे घर आया और वह नारंगी की छाया में खड़ा हो गया। भाई ने बहन से पूछा—ये नारंगी के वृक्ष किस के द्वारा लगाये गये हैं, जो अब सूख रहे हैं ॥२॥

बहन ने कहा—ये नारंगी के वृक्ष मेरे पति के द्वारा लगाये गये थे। इस पर भाई ने कहा—ऐ बहन! तुम बारीक सत्तू मेरे खाने के लिए पीस कर दो। मैं अपने बहनोई (तुम्हारा पति) को खोजने के लिए जाऊँगा ॥३॥

(बहनोई को खोजकर भाई आया और बहन से कहने लगा) मैंने पूरब, पश्चिम, दक्षिण देश में तथा तीन भुवन में उनको खोजा, परन्तु मेरा बहनोई कहीं भी नहीं मिला ॥४॥

भाई बहन से कहता है—तुम अपने आँचल को खींचकर बाँधना अर्थात् अपने स्तनों की रक्षा करना और इस प्रकार अपने पिता के कुल की लाज रखना। इस पर बहन ने कहा—जब मेरे

१. नारंगी। २. सूख गया। ३. छाया। ४. खड़ा। ५. किसका। ६. पतला। ७. बहन का पति। ८. खींचकर। ९. रखना। १० कितना।

पति की जिन्दगी में इतना दुःख है, तब उनके मर जाने पर न मालूम कितना कष्ट झेलना पड़ेगा ॥५॥

(२)

प्रसंग—परदेस से आए हुए पति से स्त्री का समाचार पूछना ।

हाथे गुरदेलिया[१] ए हरिजी; चढ़ली जवनिया[२] नु रे जी ।
कइसे-कइसे रहलीं ए हरिजी, उतरी[३] बनिजिया नु रे जी ॥ १ ॥
दिन भरि रहलों ए धनिया; राजावा के नोकरिया नु रे जी ।
साँझि बेरि रहलों ए धनिया, मलिनिया सेजरिया[४] नु रे जी ॥ २ ॥
हम तोंसे पूछिलें ए हरिजी, पूछि भेद लाई नु रे जी ।
कइसे-कइसे मिलिलि ए हरिजी, मलिनिया सेजरिया नु रे जी ॥ ३ ॥
फूलवा के सेजवा ए धनिया, बेनिया[५] डोलावत नु रे जी ।
ओइसे ओइसे[६] मिलल ए धनिया, मलिनिया सेजरिया नु रे जी ॥ ४ ॥
हम तोंसे पूछिलें ए धनिया, पूछि भेद[७] लाई नु रे जी ।
कइसे - कइसे रहलू ए धनिया, आपन नइहरवा नु रे जी ॥ ५ ॥
दिन भर रहली ए हरिजी, सखियन संगवा नु रे जी ।
साँझि[८] बेरि[९] रहलों ए हरिजी, आमा जी के गोदिया[१०] नु रे जी ॥ ६ ॥
ओइसे-ओइसे रहलों ए हरिजी, आपन नइहरवा नु रे जी ॥ ७ ॥

कोई स्त्री पति से पूछती है—गुरदेल हाथ में लिए हुए ऐ युवक पति ! उत्तर देश में व्यापार करने जब तुम गए, तब तुमने अपने समय को वहाँ कैसे-कैसे बिताया ॥१॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री ! मैं दिन भर राजा की नौकरी करता था और रात को मालिन के साथ सेज पर सोता था ॥२॥

स्त्री ने पति से भेद (रहस्य) जानने के लिए पूछा कि यह तो बतलाओ कि मालिन से तुम्हारा संबंध कैसे हुआ ?॥३॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री ! जब मैं फूल की सेज पर सोता था, तब मालिन मुझे पंखा झला करती थी। इस प्रकार से मालिन से सेज पर मेरा संबंध हो गया ॥४॥

पति ने स्त्री का रहस्य जानने के लिए उससे पूछा कि तुम तो बतलाओ कि मायके में तुम अपने दिन कैसे बिताती थीं ? ॥५॥

स्त्री ने उत्तर दिया—ऐ पति ! दिन भर मैं अपनी सखियों के साथ खेला करती थी और रात को अपनी माता की गोद में सोती थी ॥६॥

इस प्रकार मायके में मैंने अपने दिन बिताये ॥७॥

---

१. धनुष। २. यौवन। ३. उत्तर प्रदेश। ४. सेज, शय्या। ५. पंखा। ६. वैसे। ७. रहस्य। ८. सन्ध्या। ९. वेला, समय। १०. गोद।

(३)

प्रसंग—परदेश से लौटे हुए पति का कुएँ पर पानी भरती हुई अपनी स्त्री को पहचान कर प्रेमालाप करना ; परन्तु स्त्री का उसे न पहचानना।

ए राम राहहिं बाटे[1] एक सांकरि[2] कुइयाँ;
सँवरिया एक पानी भरेले हो राम।
ए राम घोड़वा चढ़ल एक सवदागर[3] अइले;
पानी के पियासल[4] भइले हो राम ॥ १ ॥
ए राम सावरों केकर हऊ तुहुँ धियवा;
आरे केकर पतोहिया हऊ हो राम।
ए राम सावरों कवना अभागा के तिरियवा[5];
पनिया भरे कुइयाँ आवेलू हो राम ॥ २ ॥
ए राम लछन जी के हईं हम धियवा;
भरत जी के पतोहिया हईं हो राम।
ए राम तोहरा अइसन पियवा मोर पातर;
से हो परदेसे गइले हो राम ॥ ३ ॥
ए राम ओहि रे अभागा के तिरियवा;
पनिया भरे कुइयां अइलीं हो राम ॥ ४ ॥
ए राम काहावां हवे तोर कुटनरिया;[6]
काहावां पिसनरिया[7] हवे हो राम।
ए राम आंगाना में हवे कुटनरिया;
ओसरवा पिसनरिया हवे हो राम ॥ ५ ॥
ए राम रंग महल सोवनरिया;
त साँकरि गलिया आइबि हो राम।
ए राम चारु कोने चार दीप जरेला;
दुआरे पहरू[8] ठनके हो राम ॥ ६ ॥
ए राम गोद पईसि सोवे लहुरा देवरा;
कइसे रउरा आइबि हो राम ॥ ७ ॥
ए राम चारु कोने चार दीप फोरबि;
दुआरे पहरुआ खेदबि हो राम।

१. रास्ता। २. सँकरी। ३. सौदागर। ४. प्यासा। ५. स्त्री। ६. कूटने का स्थान। ७. पीसने का स्थान। ८. पहरेदार।

ए राम गोद पइसि खेदबि लहुरा[1] देवर;
हम रउरा निरबिघिन[2] सोइबि हो राम ॥ ८ ॥

ए राम मचिया बइठल रउरा सासु;
सरब गुनवा आगरि[3] हो राम।
ए राम आजु घरे चोरवा पइसिहें;
जगले[4] रउरा रहबि हो राम ॥ ९ ॥

ए राम अइसन बहू बउराहिनि[5];
त कतहूँ ना देखली हो राम।
ए राम आपन कन्हैया नाहिं चिन्हेले;
त अवरू काहि चिन्हिहें हो राम ॥ १० ॥

रास्ते में एक छोटा कुँआ है। उस कुएँ पर कोई सुन्दरी पानी भरती थी। इतने में घोड़े पर चढ़ा हुआ पानी का प्यासा कोई व्यापारी आ गया ॥१॥

सौदागर ने स्त्री से पूछा—ऐ साँवरी स्त्री! तुम किसकी लड़की हो और किसकी पतोहू (पुत्र-बधू) हो। किस अभागे पुरुष की तुम स्त्री हो, जो कुएँ पर पानी भरने के लिए आयी हो ॥२॥

स्त्री ने उत्तर दिया—मैं लक्ष्मण की लड़की हूँ, और भरत की पतोहू हूँ। मेरा पति तुम्हारे समान ही पतला है। वह इस समय परदेश गया है ॥३॥

मैं उसी अभागे की स्त्री हूँ और कुएँ पर पानी भरने के लिए आयी हूँ ॥४॥

पुरुष ने पूछा—तुम्हारा अन्न कूटने वाली तथा जाँत पीसने वाली घर की दायादिन कहाँ रहती है। स्त्री ने उत्तर दिया—आँगन में अन्न कूटने वाली तथा बरामदे में जाँत पीसने वाली दायादिन रहती है ॥५॥

रंगमहल में सोने के लिए मैं रहती हूँ। तुम सँकरी गली से होकर चले आना। मेरे घर के चारों कोने में चार दीप जलते हैं तथा द्वार पर पहरेदार आवाज लगाते रहते हैं—'जगे रहो, जगे रहो' ॥६॥

फिर कुछ कह कर वह स्त्री कहती है कि मेरी गोद में छोटा देवर सोता है। तुम कैसे आओगे ॥७।

पुरुष ने उत्तर दिया—चारों कोने में जलते हुए दीपकों को मैं फोड़ दूँगा। द्वार पर आवाज देते हुए पहरेदारों को मैं भगा दूँगा तथा घर में घुसकर छोटे देवर को खदेड़ दूँगा। तब हम और तुम निर्विघ्न सोयेंगे। ॥८॥

उस स्त्री ने अपनी सास से कहा—मचिया पर बैठने वाली ऐ सास! तुम सब गुणों की खान हो। आज मेरे घर में चोर घुसने वाला है। तुम जरा जागती रहना ॥९॥

१. छोटा २. निर्विघ्न। ३. खजाना। ४. जगा हुआ। ५. पागल।

सास ने उत्तर दिया---ऐसी पागल पतोहू मैंने कहीं भी नहीं देखी। जब वह अपने पति को नहीं पहचानती, तो और किसे पहचानेगी ॥१०॥

इस गीत में पति का काइयाँपन तथा स्त्री का सीधापन देखने योग्य है। अन्त समय तक स्त्री का पति को न पहचानना उसकी ग्रामीणता का द्योतक है।

(४)

प्रसंग---गर्भाधान के बाद छद्म रूप में स्त्री का पति के पास परदेस में जाना। उसे न पहचानकर पति का उसके सौन्दर्य पर मोहित होना तथा शुल्क रूप में अँगूठी देना।

मोरा पिछुआरावा[1] ए ननदी; चम्पवा के फूलवा नु रे जी।
चम्पवा के फूलवा ए ननदी; रहेला गरभवा[2] नु रे जी ॥ १ ॥
इहे गरभवा ए ननदी; केकरा सिरे ढारबि[3] नु रे जी।
आरे साम मोर गइले ए ननदी; राजवा के नोकरिया नु रे जी ॥ २ ॥
देवर मोर हउवे[4] ए ननदी; लरिका गदेलवा[5] नु रे जी।
इहे गरभवा ए ननदी; केकरा सिरे ढारबि नु रे जी ॥ ३ ॥
हाथवा के लेहु ए भऊजी; बांस के कोइनियाँ[6] नु रे जी।
काँखे जांति[7] लेहु ए भऊजी; बांस के चँगेलिया[8] नु रे जी ॥ ४ ॥
नेटुइन भेसवे ए भऊजी; भइया आगे पहुँचहु नु रे जी।
एक कोसे गइलीं ए ननदी; दूसरे कोसे गइलीं नु रे जी ॥ ५ ॥
तीसर कोसे सोरवा[9] ए ननदी; नेटुइन आइल नु रे जी।
काई[10] तुहु लेबू ए नेटुइन; दरद के मोलवा नु रे जी ॥ ६ ॥
काई तुहु लेबू ए नेटुइन; सूरति के मोलवा[11] नु रे जी ॥ ७ ॥
टाकावा[12] से टुकिया ए राजावा; दरद के मोलवा नु रे जी।
सुरति के मोलवा ए राजावा; भइले अनमोलवा नु रे जी ॥ ८ ॥
किया तुहु लेबू ए नेटुइन; ढेबुआ[13] कउड़िया[14] नु रे जी।
किया तुहु लेबू ए नेटुइन; ललकी मोहरिया[15] नु रे जी ॥ ९ ॥
नाहिं हम लेबि ए राजवा; ढेबुआ कउड़िया नु रे जी।
हम हू त लेबि ए राजवा; हाथवा के मुँदरिया[16] नु रे जी ॥१०॥
मुँदरी जब लिहली ए नेटुइन; घरवा के लवटली नु रे जी।
घरो राति गइली ए ननदी; पछिली पहरिया नु रे जी ॥११॥

१. घर का पिछला भाग। २. गर्भ। ३. ढालना। मत्थे मढ़ना। ४. है। ५. नादान। ६. कच्चे बाँस की पतली शाखा। ७. दबाकर। ८. बाँस की दौरी। ९. हल्ला। १०. क्या। ११. मूल्य। १२. दो पैसा। १३. पैसा। १४. कौड़ी। १५. अशरफी। १६. अँगूठी।

होत भिनुसारवा[1] ए ननदी; रोवेला घरिलवा[2] नु रे जी।
बरहो बरसि पर ए ननदी; लवटेला बनिजरवा नु रे जी ॥ १२ ॥
केकर जनमल ए भइली; रोवेला होरिलवा[3] नु रे जी।
जिन्हि कर होइहें ए ननदी; हाथ के मुंदरिया नु रे जी ॥ १३ ॥
उनका[4] जनमल[5] ए ननदी; रोवेला होरिलवा नु रे जी ॥ १४ ॥

भावज अपनी ननद से कह रही है कि ऐ ननद! मेरे घर के पीछे चम्पा का फूल है। उसके रस को लेने के लिए आए हुए भँवरे (कामुक जन) के द्वारा गर्भ रह गया ॥१॥

यह गर्भ-धारण मैं किसके मत्थे मढ़ूँ; क्योंकि मेरा पति राजा की नौकरी करने के लिऐ परदेस चला गया है ॥२॥

मेरा देवर अभी बहुत छोटा है। अतः यह गर्भ मैं किसके मत्थे मढ़ूँ। ॥३॥

भावज ने उत्तर दिया—तुम अपने हाथ में बाँस की कच्ची पतली छड़ी ले लो और अपने काँख में बाँस की बनी चँगेली (छबड़ी) दबाकर ले लो ॥४॥

नेटुआ की स्त्री का रूप बनाकर तुम मेरे भाई (अपने पति) के पास पहुँच जाओ ॥५॥

भावज नेटुइन के बेस में एक कोस गयी, दो कोस गयी; परन्तु तीसरा कोस जाते ही हल्ला हो गया कि एक नेटुइन आ रही है ॥६॥

परदेस में स्थित राजा (पति) ने उससे पूछा कि ऐ नेटुइन! मेरे दर्द को दूर करने के लिए तुम क्या लोगी और अपनी सुन्दरता का तुम कितना मूल्य लोगी ॥७॥

नेटुइन ने उत्तर दिया—दर्द को दूर करने के लिए मैं केवल एक टका—दो पैसा लूँगी। परन्तु मेरे सौन्दर्य का मूल्य अनमोल (अमूल्य) है ॥८॥

राजा ने फिर पूछा—ऐ नेटुइन! तुम अपने सौन्दर्य के लिए कौड़ी लोगी या पैसा लोगी अथवा लाल (पीली) मुहर (अशरफी) लोगी ॥९॥

नेटुइन ने उत्तर दिया—न तो मैं कौड़ी लूँगी, न पैसा लूँगी और न अशरफी ही लूँगी। मैं तो केवल तुम्हारे हाथ की अँगूठी लूँगी ॥१०॥

(राजा ने प्रसन्न होकर मुंदरी उसे दे दी) नेटुइन उस अँगूठी को लेकर अपने घर लौट आयी ॥११॥

घर लौटकर आने पर एक घड़ी रात बीती, पिछली पहर की रात भी बीत गयी; परन्तु प्रातःकाल होते ही उस स्त्री को लड़का पैदा हुआ ॥१२॥

इतने ही में बारह वर्ष के बाद उसका पति परदेश से लौटकर चला आया। ननद ने भावज से पूछा कि ऐ भावज! यह किसके द्वारा पैदा किया गया बालक रो रहा है? ॥१३॥

भावज ने उत्तर दिया—जिसके हाथ की यह मुझे दी गई अँगूठी होगी, उन्हीं के द्वारा पैदा किया गया यह बालक रो रहा है ॥१४॥

१. प्रातःकाल। २. बालक। ३. नवजात शिशु। ४. उनका था, उनसे। ५. पैदा हुआ।

देहातों में प्रायः यह देखा जाता है कि यदि किसी स्त्री को दुराचार के द्वारा गर्भ रह जाता है, तो वह उसे या तो गिरा देने का प्रयत्न करती है अथवा सच्चे अभियुक्त को छोड़कर उस पातक को किसी सगे संबंधी या अन्य किसी आदमी के मत्थे मढ़ना चाहती है। इस गीत में भावज की 'केकरा सिरे ढारबि नु रेजी' यह उक्ति इसी मनोवृत्ति की सूचना देती है। गाँवों में व्यभिचार करने के कारण पुरुष को सामाजिक दण्ड उतनी मात्रा में नहीं दिया जाता, जितना स्त्री को दिया जाता है। उपर्युक्त गीत में भावज का नेटुइन का गर्हित रूप धारण कर परदेस को जाना इसी बात को द्योतित करता है। यह अच्छा ही हुआ कि उसका पति परदेस में मिल गया, नहीं तो उसे भीषण यन्त्रणाएँ भोगनी पड़तीं।

(५)

प्रसंग—पुत्राभाव के कारण स्त्री की चिन्ता तथा व्रत आदि करने पर पुत्र की प्राप्ति।

ए राम मोरा पिछुवरवा सिरिसिया; हहर झहर करे हो राम।
ए राम ताहि तरे[1] सोवे पियवा पातर; निनियो ना आवेला हो राम ॥ १ ॥
ए राम होखे व बिहनवा[2] फहफारे देहु; सिरिसि काटाइ देबि हो राम।
ए राम जरी से कटइबो रे सिरिसिआ; पलंग रे सलाइ[3] देबि हो राम ॥ २ ॥
ए राम एक ओर सोवे राजा कुँअर; एक ओर रानियवा सोवे हो राम।
ए राम तबहूँ ना सेजिया सोहासिल[4]; एक रे बालक बिनु हो राम ॥ ३ ॥
ए राम अतना बचनिया रानी सुनली; त सुनही ना पावेली हो राम।
ए राम गोड़े मुड़े[5] तानेली चदरिया; सुतेली गाजा[6] ओबरि हो राम ॥ ४ ॥
ए राम पइसि जगावे लहुरा देवर; उठ भऊजी[7] दतुवन करहु हो राम।
ए राम देवरू लाज रे केरि बतिया; से कहलो ना जाला नु हो राम ॥ ५ ॥
ए राम राउर भइया बोले बिरही[8] बोलिया; करेजवा हमरो सालेला[9] हो राम।
ए राम उनकर दारुन बोलिया त; एक रे होरिलवा बिनु हो राम ॥ ६ ॥
ए राम भऊजी हमरो कहल तुहु करितू; होरिलवा जनम लिहिते हो राम।
ए राम निति उठि गंगा रे नहइतू; सुरुज जल दिहितू हो राम ॥ ७ ॥
ए राम निति उठि करितू बरतवा[10]; होरिलवा जनम लिहिते हो राम।
ए राम निति उठि गंगा रे नहइलों; सुरुज जलवा दिहिलीं हो राम ॥ ८ ॥
ए राम करहु ना पवलीं अतवरवा[11]; होरिलवा भुइयाँ लोटे हो राम।
ए राम भऊजी अताना उकिति[12] हम दिहली; त हमरा के काई दिहबू[13] हो राम ॥ ९ ॥

१. नीचे। २. प्रातःकाल। ३. छील कर, पतला करके। ४. सुन्दर। ५. मुण्ड, सिर। ६. अन्धेरा घर। ७. भावज। ८. व्यंग। ९. दुःख देना। १०. व्रत। ११. रविवार। १२. उक्ति, उपाय। १३. दोगी।

ए राम फिरि घूमि अइह हो आगानवाँ; बबुआ के खेलाई लिह हो राम।
ए राम कतनो हम होरिला खेलाइबों[1]; त नइयाँ[2] होइहें भइया जी के हो राम॥ १० ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे सिरिस (शिरीष) का वृक्ष हवा के कारण हहरा रहा है। मेरा पतला पति उसी वृक्ष के नीचे सोता है ; परन्तु उसको नींद नहीं आती॥१॥

प्रातःकाल होने पर तथा उग्रा के निकल जाने पर मैं इस वृक्ष को कटवा दूँगी और इसे काटकर पलंग बनवा लूँगी॥२॥

पति ने कहा—इस पलंग पर एक ओर राजा का कुँवर मैं सोता हूँ और दूसरी ओर उस कुँवर की रानी (स्त्री) सोती है। फिर भी यह पलंग एक पुत्र के बिना सुन्दर नहीं लगता॥३॥

रानी ने इतना वचन अभी सुना भी नहीं था कि वह उदासीन हो कर सिर से पैर तक चद्दर तानकर अँधेरे घर में जाकर सो गयी॥४॥

घर में घुसकर छोटे देवर ने उसे जगाया और कहा कि तुम दातुन करो। भावज ने कहा—ऐ देवर! यह लज्जा की बात है। मैं तुम से कैसे कहूँ कि मैं क्यों रुष्ट हूँ। ।५॥

तुम्हारा भाई व्यंग्य तथा कटुवचन बोलता है, जिससे मेरे हृदय में मार्मिक वेदना होती है। केवल एक पुत्र के बिना वह मुझसे ऐसे कठोर वचन कहा करते हैं॥६॥

देवर ने कहा कि यदि तुम मेरा कहना करो, तो तुम्हें पुत्र अवश्य पैदा होगा। तुम नित्य उठकर गंगा स्नान करो और भगवान सूर्य को अर्घ्य दो॥७॥

यदि तुम नित्य उठकर व्रत करो, तो तुम्हें पुत्र अवश्य पैदा होगा। भावज ने देवर का कहना मानकर नित्य गंगा नहाना तथा सूर्य को अर्घ्य देना शुरू किया॥८॥

अभी वह 'रविवार' का व्रत करने भी न पायी थी कि पुत्र पैदा हो कर जमीन पर लोटने लगा॥९॥

देवर ने कहा—भावज! मैंने तुमको पुत्र उत्पन्न होने के लिए इतना उपाय बतलाया है। इसके लिए तुम मुझे क्या दोगी? भावज ने उत्तर दिया—तुम घूम फिरकर आँगन में आना और बालक को खेलाना। देवर ने कहा—मैं कितना ही बालक को खेलाऊँ; परन्तु वह मेरे भाई का ही पुत्र कहलायेगा॥१०॥

(६)

प्रसंग—किसी कोइरी की लड़की पर राजा का दृष्टिपात तथा उसके साथ कामुक चेष्टा का सम्पादन।

कावाना सहरिया के कोइरिनि बिटिया,[3]
कावाना सहरिया बैंगन बेंचे कोइरिनिया।
आरे गाजीपुरवा के हवे कोइरिनि बिटिया,
हाजीपुर सहरवा में बैंगन बेंचे कोइरिनिया॥ १ ॥

१. खेलाउँगा। २. नाम, यश। ३. बेटी।

बैंगन बेचली कोइरिनि डंडी[1] चमकवली,
आरे पड़ि गइलि राजावा के नजर कोइरिनिया ।
चारु चौखण्डवा के बीचे खम्भा रे गड़वले,
ताहि बीचे डासे[2] सुख सेजिया कोइरिनिया ।। २ ।।
आधिहिं राति राजा बहियां रे लफवले,
कोइरिनि रोवेले अछोधारावा[3] कोइरिनिया ।
किया तोरे कोइरिनि माई मन परली,
किया रे सहोदरा जेठ भाई कोइरिनिया ।। ३ ।।
नाहिं मोरे राजावा रे माई मन परली,
नाहिं रे सहोदरा जेठ भाई कोइनिरिया ।
देखत जे मन परले कोइरी के छोकड़वा,[4]
जकरा संगे खेलनी फुलगेदवा कोइरिनिया ।। ४ ।।

किस शहर की रहनेवाली यह कोइरिनि की लड़की है तथा किस शहर में बैंगन बेचने के लिए जा रही है। वह गाजीपुर की बिटिया है और हाजीपुर मेले में बैंगन बेचने जा रही है।।१।।

बैंगन बेचते समय इसने डंडी चमकायी अर्थात् कम तौला। इतने में राजा की दृष्टि उस पर पड़ गयी। राजा ने चौड़े आँगन के बीच में खम्भा गाड़कर मण्डप बनवाया और उसी के बीच में सुख देनेवाली सेज को बिछा दिया।।२।।

(सुरत संभोग की इच्छा से) आधी रात को राजा ने अपना हाथ बढ़ाया। इस पर कोइ-रिनि की लड़की फूट-फूटकर रोने लगी। राजा ने उस से पूछा कि क्या तुम्हें माता याद आ गई अथवा सहोदर जेठा भाई मन पर जम गया है।।३।।

बिटिया ने कहा—ऐं राजा! न तो मुझे माता ही याद आई और न जेठा भाई ही। वह कोइरी का छोकड़ा (पुत्र—मेरा पति याद आ रहा है) जिसके साथ मैं सदा फूलगेना खेलती थी।

(७)

प्रसंग—परदेस में गये हुए पति के पास पत्नी का पत्र भेजना तथा पति का स्त्री को दूसरा विवाह करने का उपदेश।

कहिके गइले पियवा जे छव रे महीनवा;
आरे बीति गइले बारहो बरिस रे बिदेसिया ।

१. वह लकड़ी का टुकड़ा जिसमें तराजू के पलड़े रस्सी से बँधे रहते हैं। २. बिछाया.। ३. अक्षय धारा, लगातार रोना। ४. लड़का, पुत्र।

दिनवा गनत मोरे अँगुरी रे खिअइली;
आरे बटिया जोहत नयना लोर रे बिदेसिया ॥ १ ॥

कथि के करबि हम कारवा रे कागाजवा;
आरे कथि के करबि मसिहानि रे बिदेसिया ।
आरे मोरे पिछुअरवा भीखम रे कयथवा;
एकली चिठिअवा लिखि देहु रे बिदेसिया ॥ २ ॥

आरे आसपास लिखिह जे सरबा रे सनेसवा;
बीचे ठहीं बारहो वियोग रे बिदेसिया ।
आरे चिठि पढ़ि चलि आउ पियवा छयलवा;
तोरी धनि अलप वयस रे बिदेसिया ॥ ३ ॥

बाट के चलत बटोहिया भइया हितवा;
एकली चिठियवा लेले जइहे रे बिदेसिया ।
हमरो चिठियवा बलमू जी के दीहे;
बात रे कहिहे समुझाई रे बिदेसिया ॥ ४ ॥

तोहरा बलमू जी के चिन्हलों ना जनलों;
कइसे कहबि समुझाई रे बिदेसिया ।
हमरा बलमू जी के हाथ गुरदेलिया;
आरे चिरई मारेले छैला नाग रे बिदेसिया ॥ ५ ॥

चिठिया जे पढ़ले हरि मन मुसुकइले;
कत धनि लिखेली बियोग रे बिदेसिया ।
बाट के चलत बटोहिया तुहु रे सारवा;
हमरो सनेस लिहले जाहु रे बिदेसिया ॥ ६ ॥

हमरो सनेस ओहि धनिया से कहिह;
आरे कई घालु[2] दोसर बिआह रे बिदेसिया ।
तोहरा धनिया के चिन्हलों ना जनलों;
कइसे कहबि समुझाई रे बिदेसिया ॥ ७ ॥

आरे हमरा धनिया के लामी लामी केसिया;
बटिया चलेली अंग मोरि रे बिदेसिया ।
आरे दोसर बिआह करो तोर माई रे बहिनिया;
चरखा काति के कुल[3] राखबि रे बिदेसिया ॥ ८ ॥

१. पति। २. कर डालो। ३. बंश की प्रतिष्ठा ।

कोई प्रोषितपतिका स्त्री कहती है कि मेरा पति छः मास में परदेस से आने के लिए कह गया था ; लेकिन आज बारह वर्ष बीत गये। उनके आने के दिन गिनते-गिनते मेरी अंगुली घिस गयी और रास्ते को देखते देखते आँखों में आँसू भर आये ॥१॥

मैं किस चीज का कागज बनाऊँगी और किस चीज की स्याही बनाउँगी। मेरे घर के पीछे रहने वाले भीखम नाम के ऐ कायस्थ ! तुम मेरे पति के पास एक चिट्ठी लिख दो ॥२॥

तुम चिट्ठी के किनारे के आस-पास समाचार लिखना और उसके बीच में मेरे बिरह के कष्टों को लिखना कि ऐ शौकीन प्रियतम ! इस चिट्ठी को पढ़ते ही चले आओ, क्योंकि तुम्हारी स्त्री अभी कम उम्र की है ॥३॥

वह स्त्री राह में चलते हुए बटोही से कहती है कि मेरे भाई लगोगे, तुम मेरी एक चिट्ठी लेते जाओ। मेरे इस पत्र को मेरे पति को दे देना और सब बातों को उसे समझाकर कह देना ॥४॥

बटोही ने कहा—मैं तुम्हारे पति को न जानता हूँ और न पहचानता हूँ। तुम्हारे सन्देश को समझाकर मैं कैसे कहूँगा। स्त्री ने कहा—मेरे पति के हाथ में गुरदेल है और वह बगीचे में चिड़ियों को मारता फिरता है ॥५॥

(बटोही ने जाकर पति को पत्र दे दिया) उस पत्र को पढ़कर वह मन में मुसकराने लगा और कहने लगा कि स्त्री ने अपना वियोग कितना अधिक बढ़ा-चढ़ाकर लिखा है ॥६॥

उसने रास्ते में जाते हुए बटोही से कहा कि मेरे साले बटोही ! तुम मेरे सन्देश को लेते जाना और मेरा यह सन्देश मेरी स्त्री से कह देना कि "तुम अपना दूसरा विवाह कर डालो"। बटोही ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारी स्त्री को नहीं पहचानता ; अतः तुम्हारे सन्देश को उससे कैसे कहूँगा ॥६॥

परदेशी पति ने उत्तर दिया—मेरी स्त्री के बाल लम्बे-लम्बे हैं और वह अपने अंगों को मोड़ती-ऐंठती हुई रास्ते पर चलती है। (बटोही ने आकर स्त्री से उसके पति का सन्देश कह सुनाया। यह सुनकर वह कहने लगी) दूसरा विवाह तुम्हारी (पति की) माँ और बहनें करें, मैं चरखा चलाकर अपने कुल के मर्यादा की रक्षा करूँगी ॥८॥

(८)

प्रसंग—पति के परदेस जाने पर सास के द्वारा कष्ट दिये जाने के कारण स्त्री का घर से भाग जाना, पति से भेंट तथा उसका व्यंग्य आदेश।

ए राम हरि मोरे गइले बिदेसवा;
सकल दुःखवा देई गइले हो राम।
ए राम सासु ननदिया बिरही बोलेली;
केकर कमाई[1] खइबू हो राम ॥ १ ॥

१. उपार्जन।

ए राम ससुर दसरथ लछुमन देवर;
ऊनुकर कमाई खाइबि हो राम ।
ए राम उहे लछुमन दिहलेनि जबनिया;[१]
त हमरो घरे बिअहिया[२] भइल हो राम ॥ २ ॥
ए राम काँखे जाँति लिहली दउरिया;[३]
त हाथे के बढ़निया[४] लिहली हो राम ।
ए राम धई लिहली गोड़िनिया के भेसिया;[५]
त पतई[६] बाहारे[७] लगली हो राम ॥ ३ ॥
ए राम बारहो बरिस पर अइले;
त बगिया में ठाढ़ भइले हो राम ।
ए राम तियवा केकरि[८] हऊ तुहु धियवा;[९]
त केकरि पतोहिया हऊ हो राम ॥ ४ ॥
ए राम कावाना अभागावा के तिरिया;[१०]
त बगिया बहारेलू हो राम ।
ए राम हरि मोरे गइले बिदेसवा;
त बगिया बहारेलीं हो राम ॥ ५ ॥
ए राम सासु रे ननदी बिरही बोलेली;
त केकरि कमाई खइबू हो राम ।
ए राम ससुर जी के जामल[११] लछुमन देवर;
त उनुकर[१२] कमाई खाइबि हो राम ॥ ६ ॥
ए राम धई लिहलीं[१३] गोड़िनी के भेसिया;
त पतई बहारे अइलीं हो राम ।
ए राम तिरिया चलि जइतु आपन नइहरवा;
त सब कुलवा रहि जइते[१४] हो राम ॥ ७ ॥

कोई प्रोषितपतिका स्त्री कह रही है कि मेरा पति विदेश चला गया है और मुझे वियोग का सब दुःख दे गया है। मेरी सास और ननद मुझे व्यंग्य वाक्य बोलती हुई यह कहती हैं कि तुम किसकी कमाई (आय) खाओगी ॥१॥

मैं उनसे कहती हूँ—दशरथ मेरे ससुर हैं और लक्ष्मण मेरे देवर हैं। मैं उन्हीं की कमाई खाऊँगी। मेरे देवर लक्ष्मण के जबान देने से ही मेरे पति का विवाह मेरे घर हुआ (अन्यथा नहीं होता) ॥२॥

---

१. जबान, वचन। २. विवाह। ३. दौरी। ४. झाड़ू। ५. वेश। ६. पत्ता। ७. झाड़ू देना। ८. किसकी। ९. लड़की। १०. स्त्री। ११. पैदा हुआ। १२. उनका। १३. धर लिया, बना लिया। १४. रक्षा हो जाना।

(सास और ननद के बहुत दुःख देने पर) वह स्त्री अपने काँख में दौरी और हाथ में झाड़ू लेकर घर से निकल पड़ी। उसने गोड़िन (एक जाति-विशेष) का रूप धारण कर पत्तियों को बुहारना शुरू कर दिया ॥३॥

इतने में बारह वर्ष के बाद अपने घर को लौटनेवाला उसका पति उस बागीचे में चला आया और खड़ा हो गया। उसने उस स्त्री से पूछा—तुम किसकी लड़की तथा किसकी पतोहू हो ॥४॥

तुम किस अभागे पुरुष की स्त्री हो, जो बाग में झाड़ू लगा रही हो? इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया—मेरा पति परदेश को चला गया है, इसीलिए निराश्रिता होकर मैं बाग में झाड़ू लगा रही हूँ ॥५॥

मेरी सास और ननद व्यंग वचन बोलती हैं कि तुम किसकी कमाई खाओगी? मैं उनसे कहती हूँ—मेरे ससुर से उत्पन्न लक्ष्मण नाम का मेरा देवर है, मैं उसी की कमाई खाऊँगी ॥६॥

उन लोगों के इसी दुर्व्यवहार के कारण मैं गोड़िन का वेश धारण कर घर से निकल पड़ी हूँ और बागीचे में पत्तियों को बुहार रही हूँ। इस पर उस कठोर-हृदय पति ने उत्तर दिया—यदि तुम मेरे घर से निकल कर अपने मायके चली जातीं, तो मेरे कुल की रक्षा हो जाती। (भावार्थ है कि बागीचे में झाड़ू लगाकर तथा व्यभिचार करके तुमने कुल में कलंक लगा दिया) ॥७॥

(९)

प्रसंग—लखिया नामक स्त्री पर दलसिंह की नजर का पड़ना तथा उसके लिए व्याकुल हो जाना।

छव महीनवा के लखिया अलवतियाँ[1] रे ना;
ए लखिया खिरिकिनी[2] पियेले बयेरिया[3] रे ना।
घोड़वा चढ़ल तुहु दलसिंह राजावा रे ना;
ए दलसिंह परि गइली लखिया के नजरिया रे ना ॥ १ ॥
का तुहु दलसिंह बंसी लगवले बाड़ हो ना;
तोहरा अइसन हमरा सामी के नोकरिहा[4] बाड़े हो ना।
आताना बचन दलसिंह सुनही ना पवले हो ना;
ए दल बाबू गोड़े[5] मुड़े तानेले चदरिया हो ना ॥ २ ॥
पहसि जगावेले दल के मइया रे ना;
ए बबुआ उठि के ना कर बतुअनिया रे ना।

१. नव-प्रसूता स्त्री। २. खिड़की। ३. हवा। ४. नौकर। ५. पैर।

कइसे हम उठि आमा तोहरी बचनिया रे ना;
ए आमा मोरी बुधिया छोरेली[1] लखिया रानी रे ना॥ ३ ॥
चेरिया जे रहिती दल मरिती गरिअइती[2] रे ना;
ए दल बाबू लखिया के केहू ना जाबाबवा देला रे ना ॥ ४ ॥

लखिया को पुत्र हुए छः महीने बीत गये। एक दिन खिड़की पर बैठकर वह हवा खा रही थी। घोड़े पर चढ़ा हुआ दर्लसिंह नामक राजा वहाँ आया और उसकी नजर लखिया के ऊपर पड़ गयी॥१॥

लखिया ने कहा—ऐ दर्लसिंह! तुम क्या आँखों की बंसी लगा रहे हो! तुम्हारे समान मेरे पति के पास नौकर हैं। इतने वचन को सुनकर क्रुद्ध होकर दर्लसिंह सिर से पैर तक चादर तानकर सो गया॥२॥

उसकी माता ने दर्लसिंह को जगाकर कहा—बच्चा! उठो, दातुन करो। दर्लसिंह ने कहा—माता! मैं कैसे उठूँ? मेरी बुद्धि को लखिया ने छीन लिया है—मैं इस समय हत-बुद्धि हो रहा हूँ॥३॥

माता ने कहा—ऐ दर्लसिंह, यदि वह दासी होती, तो मैं उसे गाली देती और मारती। परन्तु वह तो रानी है। भला कौन उसको जवाब दे सकता है॥४॥

(१०)

प्रसंग—परदेस से लौटने पर पति का स्त्री की कुशल पूछना। स्त्री के द्वारा सास तथा भावज की निठुरता का वर्णन तथा पति का उन्हें दण्ड देने का निर्णय करना।

बेरि हि बेरि तोहि बरजों ए बिदेसिया;
आरे अगहन गवनवा जनि कराऊ रे बिदेसिया।
अगहन गवनवा जब करइबे रे बिदेसिया;
आरे भादों पँयितवा[3] जनि फेरू रे बिदेसिया ॥ १ ॥
भादो पँयितवा जब फेरबे रे बिदेसिया;
आरे उतरी बनिजिया जनि जइहे रे बिदेसिया।
उतरी बनिजिया जब जइबे रे बिदेसिया;
आरे दुअरा फुलवरिया जनि जइहे रे बिदेसिया ॥ २ ॥
माई बहिनियाँ फुलवा लोहिहें रे बिदेसिया;
आरे हम धनिया बाटवा तोर जोहबि[4] रे बिदेसिया।
बारहो बरसि पर लवटल बनिजारवा;
बरवा तर ढारे जिरवा गोनी रे बिदेसिया ॥ ३ ॥

१. छीन लेती है। २. गाली देती है। ३. प्रस्थान। ४. प्रतीक्षा करूँगी।

माई लेई दऊरे रे पिढ़वा अवरु पनिया;
बहिना रे सिहासन लिहले ठाढ़ ।
पनिया पियहुँ पाटे बइठहु रे बनिजरवा;
आरे कहु ना रोहनियाँ[1] कुसल बाई ॥ ४ ॥
उहवाँ से गोनिया उठवले रे बिदेसिया;
आरे सेज पर ढारे जिरवा गोनी रे बिदेसिया ।
पनिया पियहूँ पाटे बइठहु रे बनजरवा;
आरे कहु ना रोहनिया कुसल बाई ॥ ५ ॥
हमरी रोहनिया कुसल बाड़ी ए सँवलिया;
आरे कहु ना रे आपन कुसल बात ।
तोहरी ही मइयाँ सइयाँ बड़ी रे दरुनिया[2] ;
आरे तेलवा नापि रे नापि देई ॥ ६ ॥
तोहरी ही बहिना पियवा बड़ी रे निठूरिया[3],
लोइया[4] रे गनिके हाथे देई ॥ ७ ॥
होखे व बिहान, फह[5] फाटे व ए धनिया,
आरे आमा के लेदबि दूर देस ।
होखे व भिनसार[6], दिन चढ़े व ए धनिया,
आरे बहिना के पठवबि[7] पर देस ॥ ८ ॥
अइसन बोलिया[8] जनि बोलिहो रे बिदेसिया।
आरे आमारे देखवली सनसार रे बिदेसिया ॥ ९ ॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ पति ! मैं तुमसे बार-बार मना करती थी कि अगहन में गौना मत कराओ। यदि तुम अगहन में अपना गौना कराओगे तब भादों में मायके जाने के मेरे प्रस्थान को मत लौटावो ॥१॥

यदि तुम भादों में मेरे जाने के प्रस्थान को लौटाओगे तब उत्तर दिशा में व्यापार करने मत जावो। यदि उत्तर दिशा में जावोगे तो द्वार पर लगी हुई बाटिका में मत जाना ॥२॥

तुम्हारी माता और बहन उस बाटिका से फूल चुनेंगी और मैं तुम्हारी बाट को जोहूँगी— प्रतीक्षा करूँगी, × × × बारह वर्ष के बाद व्यापारी पति परदेस से लौटकर आया और वट वृक्ष के नीचे बैठ गया ॥३॥

यह सुनकर माता पानी और पीढ़ा लेकर दौड़ी और बहन बैठने के लिए सिंहासन लेकर खड़ी हो गयी। माता ने कहा —बच्चा ! पानी पियो और पीढ़े पर बैठो। अपने स्वास्थ्य का समाचार तो कहो। ॥४॥

१. स्वास्थ्य। २. दारुण। ३. निष्ठुर। ४. गीले आटे का एक टुकड़ा। ५. उषा। ६. प्रातःकाल। ७. भेजूंगा। ८. वचन।

वहाँ से उठकर, अपना सामान लेकर वह व्यापारी घर आया और स्त्री की सेज पर बैठ गया। स्त्री ने कहा—पानी पियो और पीढ़े पर बैठो। तुम्हारे स्वास्थ्य का समाचार तो ठीक है॥५॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ साँवली स्त्री! मेरा स्वास्थ्य ठीक है। तुम अपना कुशल क्षेम कहो।

स्त्री ने कहा—तुम्हारी माता बड़ी दारुण-कठोर है। वह नाप करके तेल लगाने के लिए मुझे देती है॥६॥

ऐ पति! तुम्हारी बहन बड़ी निष्ठुर है। वह आटे की लोइयाँ मुझे गिन कर देती है (क्योंकि चुराकर मैं उसे खा न डालूं)॥७॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री! प्रातःकाल होने दो तथा उषा दिखाई पड़ने दो, मैं अपनी माता को दूर देश खदेड़ दूंगा। ऐ स्त्री! प्रभात होने दो तथा कुछ दिन चढ़ जाने दो, मैं बहन को परदेस भेज दूंगा॥८॥

इस पर उस साध्वी स्त्री ने कहा—ऐ पति! ऐसी कठोर बातें मत कहो। (माता के साथ यह व्यवहार ठीक नहीं है) क्योंकि माता ने संसार दिखाया है अर्थात् इस लोक में उसी ने तुम्हें पैदा किया है॥९॥

(११)

प्रसंग—किसी विधवा पुत्री का विलाप। कर्म की प्रबलता को बतलाते हुए पिता का उसे आश्वासन देना।

ए राम काहे के त लवल[1] घनी बगिया;
त काहे[2] के फुलवरिया हो राम ॥ १ ॥
ए राम काहे के कइल मोर बिअहवा;
त काहे के गवनवा हो राम ॥ २ ॥
ए राम सीतल छाँह खातिर लवलीं बगिचवा;
त फूलवा के लोहें फुलवरिया हो राम ॥ ३ ॥
ए बेटी जँघिया[3] पवित्तर[4] खातिर कइली तोर बिअहवा;
त सुख लागि गवना तोर कइलीं हो राम ॥ ३ ॥
ए बाबा सिर मोर जरेला सिनुर बिनु;
त नयना काजर बिनु हो राम ॥ ५ ॥
ए बाबा गोद मोर जरेला बालक बिनु;
त सेजिया कन्हैया[5] बिनु हो राम ॥ ६ ॥
ए बेटी सिर तोर भरलीं सेनुरवा से;
त नयना काजर लेइ हो राम ॥ ७ ॥

---

१. लगाया था। २. किसलिए। ३. जंघा। ४. पवित्र। ५. पति।

ए बेटी सेजिया तोर भरलीं कन्हैया लेइ;
त बालक लेइ गोदिया हो राम ॥ ८ ॥
ए बाबा अगुआ[1] के मुवो जेठ पुतवा;
त बाभना के पोथि जरि जासु हो राम ॥ ९ ॥
ए बाबा जोतिसी[2] जरि जासु पातारवा;[3]
त हाजामा[4] के फूटसु करमवा हो राम ॥ १० ॥
ए राम आपन करमवा नाहिं देखलू ए बेटी;
त अगुआ के गारी काहे देलू ए राम ॥ ११ ॥
ए राम जोतिसी, बाभनवा तोर काहिरे बिगरले;[5]
त आपने करमवा दुःख भोगलू हो राम ॥ १२ ॥

कोई लड़की अपने पिता से पूछती है कि ऐ पिताजी ! आपने घना बगीचा तथा फुलवाड़ी क्यों लगाई। आपने मेरा विवाह तथा गवना किस लिए किया ? ॥१–२॥

इस पर पिता ने उत्तर दिया—मैंने शीतल छाया प्राप्त करने के लिए बागीचा तथा फूल लोढ़ने के लिए फुलवाड़ी लगाई थी। ऐ बेटी ! अपनी जाँघ को पवित्र करने के लिए मैंने (तुम्हारा) विवाह किया और पति के साथ सुखपूर्वक रहने के लिए मैंने तुम्हारा गौना कर दिया ॥३–४॥

(संभवतः गौना होते ही लड़की का पति मर गया था ; अतः वह दुःखित होकर कहती है कि) ऐ पिताजी ! मेरा सिर सिन्दूर के बिना जल रहा है (शोभाहीन मालूम होता है) आँखें काजल के बिना सुन्दर नहीं लगतीं ! मेरी गोद बालक के बिना सूनी मालूम पड़ती है और मेरी सेज (शय्या) पति के बिना अच्छी नहीं लगती ॥५—६॥

पिता ने उत्तर दिया—ऐ बेटी, मैंने तेरा सिर सिन्दूर से और आँखें काजल से सुशोभित कर दी थीं अर्थात् तुम्हारा विवाह करके मैंने सिर और आँखों को सुशोभित करने के लिए अवसर दिया था। मैंने तुम्हारी गोद को बालक से तथा सेज को पति से सुशोभित किया था ॥७–८॥

पति के शीघ्र ही मर जाने से दुःखी वह लड़की कहती है—ऐ पिताजी ! मेरा विवाह करानेवाले अगुआ का जेठा लड़का मर जाय, पोथी देखकर विवाह का शुभ मुहूर्त्त बतलानेवाले ब्राह्मण की पुस्तक जल जाय, और पंचांग देखकर जन्मकुण्डली का फल विचारनेवाले ज्योतिषी के पंचांग में आग लग जाय और नाई का भाग्य फूट जाय (क्योंकि इन लोगों ने ऐसे वर से मेरा विवाह कराया था, जो इतना अल्पायु निकला) ॥९–१०॥

इस पर पिता ने कहा—ऐ बेटी ! तुम अपने खोटे भाग्य को क्यों नहीं देखतीं ? अगुआ को व्यर्थ में क्यों गाली देती हो ? ज्योतिषी और ब्राह्मण ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? तुम अपने कर्म-फल के कारण ही यह दुःख भोग रही हो ॥११–१२॥

१. विवाह करानेवाला। २. ज्योतिषी। ३. पत्रा, पंचांग। ४. नाई। ५. बिगाड़ा है, नुकसान किया है।

(१२)

प्रसंग—किसी उच्च कुल की स्त्री का गलती से नीच कुल के पुरुष से विवाह कर लेना तथा पति के नीच कुल का पता लगने पर उसे मार डालने की धमकी।

सगरे नगरिया ए चोरिला[1] बंसिया बजावेल;
आरे हमरे नगरिया तुहु काहे न बजावेल रे की।
तोहरा नगरिया ए रजलो कुकुरा[2] भूकत[3] बा;
आरे कुकुरा भूंकेला; पहरू ठनकेला[4] रे की ॥ १ ॥
कुकुरा के देबो ए चोरिला[5] दूध भात खोरवा[6];
आरे पहरू के मदिये मताइबि[7] रे की।
तोहरा त बाड़े ए रजलो दूध भात खोरवा;
आरे हमरा सतुइवा[8] के आसरा[9] रे की ॥ २ ॥
दूध भात खोरवा ए पियवा तोहि परतेजबो;
आरे अइसन छैला[10] में न परतेजबि[11]; रे की।
तोहरा त बाड़े ए रजलो दखिन के चीरवा;
आरे हमरा लुगरिया[12] के आसरा रे की ॥ ३ ॥
तोहरा तो बाड़े रजलो छिपवा से लोटवा;
आरे हमरो उलविया[13] के आसवा रे की।
छिपवा से लोटवा ए चोरिला तोहि परतेजबों;
आरे अइसन छैला में ना परतेजबि रे की ॥ ४ ॥
एक बन गइलीं दूसर बन गइलीं;
आरे चोरिला के मइया सुअरि[14] चरावेले रे की।
खोलहु राजा बेटी दखिन के चिरवा;
आरे लुगरी पहिरि सुअरि चरावहु रे की ॥ ५ ॥
काढ़हु राजा बेटी सोनवा से रूपवा[15];
आरे काँसावा पीतरवे दिन काटहु रे की।
जाहु हम जनितो ए चोरिला, जाति तोरे दूसवा[16];
बाबा के नगरिया में फँसिया बिअहतों[17] रे की ॥ ६ ॥
जूठ मोर खइलू ए रजलो, कोरा[18] पइसि सूतलू[19];
आरे अब को[20] तू जतिया बिचारेलु रे की ॥ ७ ॥

१. किसी पुरुष का नाम। २. कुत्ता। ३. भूंकता है। ४. आवाज देता है। ५. स्त्री का नाम। ६. कटोरा। ७. मतवाला बना दूंगी। ८. सत्तू। ९. आश्रय। १०. शौकीन युवक। ११. छोड़ दूंगी। १२. फटी पुरानी साड़ी। १३. काठ का जोटा बर्तन। १४. सुअर। १५. चाँदी। १६. एक नीच, अछूत जाति। १७. दिल वाली। १८. क्रोड, गोदी। १९. सोयी। २०. क्या।

कोई स्त्री कहती है कि ऐ चोरिला ! दूसरे नगर में तुम वंशी बजाते फिरते हो, परन्तु तुम मेरे नगर में अपनी वंशी क्यों नहीं बजाते ? चोरिला ने उत्तर दिया—ऐ रजलो ! तुम्हारे नगर में कुत्ता भूँकता रहता है और पहरेदार पहरा देते हुए जोरों से चिल्लाते रहते हैं ॥१॥

रजलो ने कहा—ऐ चोरिला ! मैं कुत्ते को कटोरे में खाने के लिये दूध भात दूँगी और पहरेवालों को शराब पिलाकर मतवाला बना दूँगी। चोरिला ने कहा—तुम्हारे पास कटोरा में खाने के लिए दूध भात है, परन्तु मुझे तो सत्तू का ही आश्रय है। (अतः मैं तुम्हारे यहाँ नहीं आ सकता) ।।२॥

रजलो ने कहा—ऐ प्रिय ! मैं अपना दूध भात तुम्हारे लिए छोड़ देने के लिए तैयार हूँ, परन्तु तुम्हारे समान छैला युवक मैं नहीं छोड़ सकती हूँ। चोरिला ने कहा—तुम्हारे पास दक्षिण का कपड़ा पहनने के लिए है, परन्तु मुझे फटे पुराने कपड़े की ही आशा है ॥३॥

चोरिला ने फिर कहा—तुम्हारे पास तो लोटा और थाली है ; परन्तु मेरे पास काठ का ही बर्तन है। रजलो ने कहा—मैं अपना लोटा और थाली तुम पर निछावर कर दूँगी, परन्तु तुम्हारे समान छैला को नहीं छोड़ सकती ॥४॥

विवाह करके जब रजलो चोरिला के घर जाने लगी, तब उसने रास्ते में चोरिला की माता को सुअर चराते हुए देखा। तब चोरिला की माता ने रजलो से कहा—ऐ बड़े घर की लड़की ! अब दक्षिण की साड़ी खोल लो और पुरानी लुगरी पहनकर सुअर को चराओ॥५॥

ऐ राजा की लड़की ! सोना तथा चाँदी के गहनों को अब निकाल दो और पीतल तथा काँसे के गहनों को पहनकर दिन काटो।—इस पर क्रुद्ध होकर रजलो ने चोरिला से कहा कि यदि मैं जानती कि तुम्हारी जाति दुसाध है, तो अपने पिता के नगर में मैं तुम्हें फाँसी पर लटकवा देती ॥६॥

तब चोरिला ने कहा—ऐ रजलो ! तुमने मेरा जूठा खाया है और मेरी ोदी में बैठकर सोयी हो। अब तुम मेरी जाति पर क्या विचार कर रही हो ॥७॥

(१३)

प्रसंग—जेठ के द्वारा छोटे भाई की पत्नी पर कुदृष्टिपात। स्त्री का पति से जेठ को मार डालने की प्रार्थना।

पातर जिरवा[१] पातरि करिहइया,[२]
ठुमुकि ठुमुकि आँगना बहरली हो जी ॥ १ ॥
आँगाना बहारि दुअरा घूरवा[३] लगवलीं,
छूँछ[४] घइलवा हम देखनीं हो जी ॥ २ ॥

१. किसी स्त्री का नाम। २. कमर। ३. कूड़ा करकट। ४. खाली, रिक्त।

घइला उठाइ जिरवा चलली पनिघटवा,
उनुकर भसुरवा[1] बाट रोकेला हो जी ॥ ३ ॥
छोड़ु छोड़ु भसुरा रे हमारी डगरिया,
ओसियन[2] भीजें लामी केसिया हो जी ॥ ४ ॥
केसिया त भीजें देहु हमरी भवहिया[3],
अपनी चदरिया तनुवा[4] तनाइबि हो जी ॥ ५ ॥
आगि लागु भसुरा रे तोहरी चदरिया,
हमरा से करु ना मजकवा[5] हो जी ॥ ६ ॥
घइला उठाइ जिरवा आँगाना पटकली,
गेडुरी[6] के फेंकली सामी अगवा हो जी ॥ ७ ॥
आगि लागहु प्रभु तोहरी जिनिगिया,
भसुरा त बटिया मोर रोकेला हो जी ॥ ८ ॥
होखे द विहान फह[7] फाटे द ए धनिया,
धनुही चढ़ाई भइया मारबि हो जी ॥ ९ ॥

जिरवा नामक स्त्री अत्यन्त सुन्दर है तथा उसकी कमर अत्यन्त पतली है। वह धीरे-धीरे आँगन में झाड़ू लगाती है ॥१॥

अपने आँगन को बुहारकर द्वार पर उसने कूड़ा-करकट का ढेर लगा दिया तथा घर में जल से रहित घड़े को देखा ॥२॥

वह जल के घड़े को उठाकर पानी भरने के लिए पनघट पर चली गयी। वहाँ उसका जेठ छेड़खानी करने के लिए उसके रास्ते को रोकने लगा ॥३॥

इस पर वह कहती है ! ऐ जेठ जी ! तुम मेरे रास्ते को छोड़ दो। प्रातःकाल में ओस पड़ने से मेरे लम्बे बाल भीगे जा रहे हैं ॥४॥

इस पर जेठ ने उत्तर दिया—ऐ बहू ! तुम अपने बालों को ओस से भीगने दो। मैं अपनी चादर (तम्बू) तानकर तुम्हें ठंढक से बचाऊँगा ॥५॥

बहू ने मुँह-तोड़ जवाब दिया—ऐ जेठजी ! तुम्हारी चादर में आग लग जाय। तुम मुझसे मजाक मत करो ॥६॥

जिरवा पनघट से लौटकर घर आई। उसने क्रोध के कारण घड़े को आँगन में पटक दिया और गेड़ुरी को अपने पति के सामने फेंक दिया ॥७॥

वह क्रोधावेग में कहने लगी—ऐ पति ! तुम्हारी जिन्दगी में आग लग जाय, अर्थात् तुम्हारा जीना व्यर्थ है, क्योंकि तुम्हारे जीते हुए ही जेठ व्यभिचार करने के लिए मेरा रास्ता रोक रहा है ॥८॥

१. पति का बड़ा भाई। २. ओस से। ३. छोटे भाई की स्त्री। ४. शामियाना। ५. दिल्लगी। ६. घड़े को रखने के लिए मिट्टी की बनी गोलाकार वस्तु। ७. उषा।

इस पर पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री ! प्रातःकाल होने दो तथा उषा को निकलने दो। मैं धनुष चढ़ाकर उस को मार डालूँगा ॥९॥

देवर तथा भावज का मजाक तो साधारण है; परन्तु भसुर (जेठ) और भावह (छोटे भाई की वहू) में प्रेम-वार्त्ता अनोखी बात है, फिर भी असंभव नहीं, क्योंकि ऐसी घटनाएँ आजकल अधिक संख्या में मिलती हैं।

(१४)

प्रसङ्ग—कृष्ण का कूबरी के साथ फँसने पर राधिका का दुःख ; परन्तु उनके लौट आने पर प्रसन्नता प्रकट करना।

ए राम आइ गइले कूबरी के चिठिया,
त साम भइले पाहुन ए राम ॥ १ ॥
ए राम साठी[1] कुटि भातवा के रिन्हली,[2]
त ओसर मुँगिया[3] के दलिया हो राम ॥ २ ॥
ए राम जेवहीं ना पवले मोर साम जी,
त बन के सिधरले हो राम ॥ ३ ॥
ए राम एक लात[4] धइले चउकठवा,[5]
त लात पलंग पर हो राम ॥ ४ ॥
ए राम लपकि धरले मोर बहियाँ,
त लगले मनावे[6] हो राम ॥ ५ ॥
ए राम छोड़ु-छोड़ु साम मोर बहियाँ,
त हम अपराधिन हो राम ॥ ६ ॥
ए राम अब रउरा जाइबि ओहि मधुबनवा,
त हम हतबि[7] आपन जिउवा हो राम ॥ ७ ॥
ए राम कथि के करबि हम कर रे कगजवा,
त कथि के करबि मसिहनिया हो राम ॥ ८ ॥
ए राम आँचर फारि करबि कर रे कगजवा,
त नयन कजरवा मसिहनिया हो राम ॥ ९ ॥
ए राम मोर पिछुअरवा रे कायथ[8] छोकड़वा,
त हालि[9] देनि लिखु अब चिठिया हो राम ॥१०॥

१. एक प्रकार का चावल। २. पकाया। ३. मूँग। ४. पैर। ५. चौखट। ६. प्रसन्न करना। ७. हत्या करूँगी। ८. कायस्थ। ९. जल्दी से।

ए राम चिठिया के बाँचि साम मन मुसुकइले,
त कत धनि लिखेली बियोगवा[1] हो राम ॥ ११ ॥
ए राम घरी राति गइली पहर राति गइली;
त झलके ले साम के पगरिया हो राम ॥ १२ ॥
ए राम पगरी के देखि धनि बड़ हुलसइलीं,
त मनावे लगली आपन भगिया हो राम ॥ १३ ॥

राधिकाजी कहती हैं कि कूबरी की चिट्ठी चली आई है, अब कृष्णजी मेरे लिए अतिथि बन जायेंगे (क्योंकि वे कूबरी के पास चले जायेंगे और उनका दर्शन दुर्लभ हो जायगा) ॥१॥

मैंने भोजन के लिए साठी चावल का भात बनाया और उस पर मूँग की दाल बनायी ॥२॥

कृष्ण अभी भोजन भी नहीं कर पाये थे कि कूबरी की चिट्ठी आ जाने से मधुबन जाने की तैयारी करने लगे ॥३ ॥

जाने के लिए उन्होंने द्वार की चौखट पर एक पैर रखा था, परन्तु (मुझे रुष्ट जानकर) दूसरा पैर लौटकर मेरे पलंग पर रक्खा। उन्होंने लपककर मेरी बाँह पकड़ ली और मुझे प्रसन्न करने लगे ॥४–५॥

मैंने कहा—ऐ कृष्ण! मेरी बाँह को छोड़ दो! मैं बड़ी अपराधिनी हूँ; तभी तो तुम मुझे छोड़कर जा रहे हो ॥६॥

यदि तुम मुझे छोड़कर मधुबन को चले जाओगे, तो मैं (तुम्हारे वियोग में) अपने प्राणों को नष्ट कर दूँगी ॥७॥

मैं सन्देश भेजने के लिए किस वस्तु का कागज बनाऊँगी और किसकी स्याही करूँगी ?॥८॥

राधा स्वतः उत्तर देती हुई कहती है कि मैं अपना आँचर फाड़कर कागज बनाऊँगी और आँखों के काजल को स्याही करूँगी ॥९॥

अपने घर के पीछे रहने वाले कायस्थ के लड़के से उसने कहा—ऐ लड़के! तुम शीघ्र चिट्ठी लिखो ॥१०॥

उस लड़के ने पत्र लिखा। जब वह पत्र कृष्ण के पास पहुँचा, तब चिट्ठी को पढ़कर कृष्ण मन में मुसकाने लगे कि स्त्री ने अपने कितने दुःखों को लिखा है ॥११॥

स्त्री के दुःखों को पढ़कर कृष्ण घर लौट पड़े। एक घड़ी रात बीती, एक पहर रात बीती। इतने में आते हुए कृष्ण की पगड़ी झलकने लगी ॥१२॥

स्त्री कृष्ण की पगड़ी को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और (पति के कूबरी को छोड़कर लौट आने के कारण) अपने भाग्य की प्रशंसा करने लगी ॥१३॥

---

१. बिरह, दुःख।

(१५)

प्रसंग—परदेस जाते हुए पति से उसके वियोग में होनेवाले कष्टों का वर्णन पत्नी के द्वारा।

कावाना मासे ए कागवा खोंतवा[1] लगवले[2] रे ना।
कवना मासे मोर पियवा बिदेसवा गइले रे ना ॥ १ ॥

कातिक मासे ए कागवा खोंतवा लगवले रे ना ।
अगहन मासे मोर पियवा परदेसवा गइले रे ना ॥ २ ॥

जाहु तुहु पियवा बिदेसवा जइब रे ना ।
आपन चढ़ली[3] जवनिया कइसे राखबि रे ना ॥ ३ ॥

झुकि के चलिह ए धनिया, नइ के चलिह रे ना ।
जइसे बाँसवा नवेला तइसे नइह रे ना ॥ ४ ॥

जइसे धनुही[4] नवेला तइसन नइह रे ना ।
जइसे नथिया[5] नवेला तइसे नइह रे ना ॥ ५ ॥

जाहु तुहु पियवा बिदेसवा जइब रे ना ।
आपन मुँहवा के रूमलिया खुँटिया[6] धरिहा[7] रे ना ॥ ६ ॥

कोई प्रोषित्पतिका स्त्री कहती है कि ऐ कौए ! तुमने किस महीने में अपना खोंता (घोंसला) लगाया था और किस मास में मेरा पति विदेश गया ॥१॥

वह फिर आप ही आप कहती है कि कातिक के महीने में काग ने घोंसला बनाया और अगहन मास में मेरा पति परदेस गया ॥२॥

स्त्री कहती है—ऐ पति ! यदि तुम परदेस जाओगे, तो मैं अपनी चढ़ी हुई जवानी कैसे सुरक्षित रक्खूँगी ॥३॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ स्त्री ! तुम झुककर चलना और जैसे बाँस झुक जाता है, वैसे ही झुक जाना ॥४॥

जिस प्रकार धनुष तथा नाक में पहनने की नथिया झुकी रहती है, उसी प्रकार झुकी रह कर चलना (जिससे कोई तुम्हारे स्तनों को न देख ले) ॥५॥

ऐ पति ! यदि तुम परदेस जाना, तो अपने मुँह पोछने का रूमाल स्मृति के लिए खूँटी पर रख देना ॥६॥

१. घोंसला। २. लगाया। ३. बढ़ी हुई। ४. धनुष ५. नाक का गहना। ६ खूंटी। ७. धर दो।

(१६)

प्रसंग—विमाता का सौतेले पुत्र के साथ अत्याचार। पिता का पुत्र के न्याय-पक्ष को ग्रहण करना तथा स्त्री को जमीन में गाड़ देने का निश्चय।

खेलइत रहलों में फूल रे गेडुअवा[१]।
उछड़ि गिरेला धवरहर[२] रे की ॥ १ ॥
ओहु रे गेडुअवा मोर मयभा उठवली।
बबुआ ठेहुवना[३] धइ ठुनुकेला रे की ॥ २ ॥
देहु ना मयभा[४] रे फूल रे गेडुअवा।
लागलि खेलिया मोर मयभा छेंकेले रे की ॥ ३ ॥
चलहु बबुआ रे मोर सुख सेजिया।
तब हम देबो फूल गेडुआ रे की ॥ ४ ॥
कइसे में चलबो मयभा तोहरी सुख सेजिया।
आरे देसदेस चहिया[५] मयभा बाजी रे की ॥ ५ ॥
आताना बचन मयभा सुनही न पवली।
गोड़ तानि सुते गाजा ओबरि[६] रे की ॥ ६ ॥
पासवा खेलत तुहु राजवा बढ़इता।
आरे रउरी धनि[७] गरभे बेआकुल रे की ॥ ७ ॥
पासवा खेलत राजवा बेल रे बबुर तर।
धपसि पइसेले गाजा ओबरि रे की ॥ ८ ॥
भुंइं से उठवलनि[८] जाँघ बइठवले।
कवन-कवन दुःख ताहारा अवहेला[९] रे की ॥ ९ ॥
हमरो रे दुःखवा जे रामजी बूझिहैं।
आरे बबुआ करेजवा मोर ओखधि[१०] रे की ॥१०॥
आवहु बबुआ हो जाँघ चढ़ि बइठ।
कावाना कारनवे मयभा सेज गइल रे की ॥ ११ ॥
खेलइत रहलों में फूल रे गेडुअवा।
गेडुआ गिरेला गाजा ओबरि रे की ॥ १२ ॥
ओही गेडुआ लेबे गइलों रे की ॥ १३ ॥

१. गेंद। २. घर। ३. घुटना। ४. विमाता। ५. चाहने वाले (कामुक)। ६. अन्धेरा घर। ७. स्त्री। ८. उठाया। ९. मालूम होना। १०. औषध दवा।

बोलावहु बबुआ रे गाँव केरा[1] नोनिया[2] ।

मयभा जोगे खदिया[3] खोनावहु रे की ॥ १४ ॥

आरे खदिया खोनाई[4] मयभा भठिआइबि[5] रे की ॥ १५ ॥

कोई बालक कहता है कि मैं फूल के ेंद से खेल खेल रहा था। वह गेंद उछल कर जल में गिर पड़ी ॥१॥

उस गेंद को मेरी मयभा (विमाता) ने उठा लिया और मैं उनका घुटना पकड़कर ठुनककर रोने लगा ॥२॥

मैंने कहा—ऐ विमाता ! मेरी गेंद को दे दो। तुमने मेरे लगे हुए खेल को रोक दिया है ॥३॥

विमाता ने कहा—बच्चा ! सुख देनेवाली मेरी सेज पर चलो, तो मैं फूल की गेंद तुम्हें दे दूँगी ॥४॥

बालक ने कहा—ऐ विमाता ! मैं तुम्हारे सेज पर कैसे चलूँ, क्योंकि देश-देश के चाहनेवाले (कामुक) लोग तुम्हारे पास आते हैं ॥५॥

इतना वचन सुनते ही उस मयभा ने सिर से पैर तक चद्दर से ढक लिया और अँधेरे घर में सो गयी ॥६॥

दासी ने जाकर उसके पति से कहा कि जुआ खेलनेवाले ऐ राजा, तुम्हारी स्त्री गर्भ से व्याकुल है ॥७॥

बिल्व वृक्ष के नीचे जुआ खेलनेवाला वह पति शीघ्र अपनी स्त्री के अँधेरे घर में घुस गया ॥८॥

उसने स्त्री को जमीन से उठाकर अपनी जंघा पर बैठाया और पूछने लगा कि तुम्हें कौन-सा दुःख है ॥९॥

स्त्री ने कहा—मेरे दुःख को तो केवल भगवान ही समझ सकता है। इस लड़के का कलेजा काटकर लाना ही दुःख की दवा है ॥१०॥

पिता ने बालक से कहा—ऐ बच्चा ! आओ, मेरी जंघा पर चढ़कर बैठो। यह बतलाओ कि तुम किस कारण से अपनी विमाता के सेज पर (सोने) गये थे ॥११॥

बालक ने कहा—मैं फूल के गेंद से खेल रहा था। वह ेंद इस अँधेरे घर में आकर गिर गयी ॥१२॥

उसी गेंद को लेने के लिए मैं इस घर में आया था ॥१३॥

पिता ने कहा—ऐ बबुआ ! गाँव के नोनिया को बुला लाओ और विमाता के लिए गड्ढा खोदवा दो ॥१४॥

गड्ढे को खोदकर के उसी में अपनी इस विमाता को गाड़ दो ॥५॥

१. का। २. बनानेवाला। ३. गड्ढा। ४. खोदकर। ५. गाड़ दूँगा।

(१७)

प्रसंग—पुत्र तथा पति के अभाव में किसी स्त्री की वेदना का वर्णन।

राम बगिया में पाँच पेड़,[1] आमवा;
पचीस गो महुअवा[2] बाटे हो राम।
राम तबहूँ ना बगिया गमक[3] देले;
एकली बेइलिया[4] बिनु हो राम ॥ १ ॥
राम पाँच पात खइलों में पानवा;
पचीस गो सोपरिया खइलों हो राम।
राम तबहूँ ना मुँह भइले लाल;
त एकली[5] खजरिया[6] बिनु हो राम ॥ २ ॥
राम सेर भरि सोनवाँ पहिरलों;
पसेरी[7] भरि चनिया[8] हो राम।
राम तबहूँ ना देहिया सोहावनि;
एकली सेनुरवा बिनु हो राम ॥ ३ ॥
राम सासु घरे पाँच गो देवरवा;
पचीस गो भसुरवा बाटे[9] हो राम।
राम तबहूँ ना ससुरा सोहावन;
एकलों कन्हैया[10] बिन हो राम ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे बाग में पाँच आम के तथा पचीस महुए के वृक्ष हैं, परन्तु तो भी बिना एक बेला की लता के बिना बाग में सुगन्ध नहीं मिलती ॥१॥

मैंने पाँच बीड़ा पान तथा पचीस सुपारी खाईं, परन्तु एक कत्था के बिना मेरा मुँह लाल नहीं हुआ ॥२॥

मैंने सेर भर सोने का गहना तथा एक पसेरी (छः सेर) चाँदी का बना हुआ गहना पहना; परन्तु एक सिन्दूर के बिना मेरी देह सुहावनी नहीं मालूम पड़ती ॥३॥

मेरी सास के घर में पाँच देवर हैं तथा पचीस भसुर (पति का जेठा भाई) हैं, परन्तु तो भी एक पुत्र के बिना मुझे ससुराल अच्छी नहीं लगती ॥४॥

---

१. वृक्ष। २. वृक्ष विशेष। ३. गन्ध। ४. बेला। ५. अकेले। ६. खैर, कत्था। ७. पाँच सेर। ८. चाँदी। ९. है। १०. पुत्र।

(१८)

प्रसंग—किसी स्त्री का पति परदेस जा रहा है। स्त्री उसे जाने के लिए मना कर रही है तथा उसके रूप का वर्णन करती है।

गहिरी नदिया अगम[१] बहे राम पनिया।
पिया चलेले परदेसवा; बिहरेला राम छतिया ॥ १ ॥
जाहु हम जनिती ए लोभिया; जइबे रे बिदेसवा।
पिया के पयेंतवा[२] ए लोभिया; आंचरा छिपइतीं ॥ २ ॥
दह[३] रोवे चकवा चकइया।
बिछोहवा कइले राम बलमू ॥ ३ ॥
मुँह तोरे हवे ए लोभिया; सुरुज के जोतिया[४]।
आँख तोरे हवे ए लोभिया; आमावा के फरिया[५] ॥ ४ ॥
नाक तोर हवे ए लोभिया; सुगवा के ठोरवा।
भहुँ[६] तोर हवे ए लोभिया; चढ़ल कमनिया[७] ॥ ५ ॥
ओठ तोर हवे ए लोभिया; कतरल[८] पानवा।
अवरु तोर हवे ए लोभिया; कड़ि कड़ि मोछिया[९] ॥ ६ ॥
बांहि तोर हवे ए लोभिया; सोबरन सोंटवा[१०]।
पेट तोर हवे ए लोभिया; पुरइन[११] पतवा ॥ ७ ॥
पीठि तोर हवे ए लोभिया; धोबिया के पाटवा[१२]।
गोड़[१३] तोर हवे ए लोभिया; केरवा[१४] के घुम्हवा[१५] ॥ ८ ॥

कोई स्त्री कह रही है कि नदी गहरी है और इसमें अथाह (अगाध) जल बह रहा है। ऐसी नदी को पारकर मेरा पति परदेस जाने को तैयार है। अतः मेरा हृदय (भावी दुर्घटना की आशंका से) विदीर्ण हो रहा है ॥१॥

यदि मैं जानती कि मेरा स्त्रीरूप-लोभी पति परदेस जायेगा, तो मैं अपने प्रियतम के प्रस्थान को अपने आँचर में छिपा लेती (जिससे उसका जाना रुक जाता) ॥२॥

(पति के परदेस चले जाने पर वह स्त्री कहती है) तालाब में चकवा और चकवी उसके वियोग के कारण रो रहे हैं ॥२॥

वह स्त्री अपने पति के रूप का वर्णन करती हुई कहती है कि ऐ लोभी! तुम्हारा मुँह

१. अथाह। २. प्रस्थान। ३. तालाब। ४. ज्योति। ५. टुकड़ा। ६. भौं। ७. कमान, धनुष। ८. काटा हुआ। ९. मूँछ। १०. छड़ी। ११. पुरैन। १२. लकड़ी का वह मोटा तथा चौड़ा तख्ता, जिसपर धोबी कपड़ों को पटकता तथा निचोड़ता है। १३. पैर। १४. केला। १५. खम्भा।

सूर्य की ज्योति के समान प्रकाशमान है और तुम्हारी आँखें आम के पतले टुकड़े के समान सुन्दर हैं ॥४॥

ऐ लोभी ! तुम्हारी नाक सुग्गे के ठोर (नाक) के समान सुडौल तथा नोकीली है और तेरी भौं चढ़ी हुई कमान (धनुष) के समान टेढ़ी है ॥५॥

ऐ लोभी ! तुम्हारा होठ तराशे हुए पान के समान पतला है और तुम्हारी मूँछें बहुत कड़ी हैं ॥६॥

ऐ लोभी ! तुम्हारी बाहें सोने की छड़ी के समान मोटी तथा सुडौल हैं और तुम्हारा पेट पुरैन के पत्ते के समान चिकना है ॥७॥

ऐ लोभी ! तुम्हारी पीठ धोबी के पाट के समान मोटी तथा चौड़ी है और तुम्हारे पैर केले के खम्भे के समान चिकने और सुडौल हैं ॥८॥

(१९)

प्रसंग—कामुक पति के प्रति किसी स्त्री की उक्ति ।

घरि राति गइली पहर राति गइली ।
रजवा बेटौना[1] केवड़िया खोलेला हू रे जी ॥ १ ॥
दुर[2] तुहु कुकुरा दुर रे बिलरिया[3] ।
दुर रे सहर सभ लोगवा हू रे जी ॥ २ ॥
नाहिं हम कुकुरा नाहिं रे बिलरिया ।
नाहिं रे सहर सभ लोगवा ।
हमहूँ त राजा के कुँअरवा हू रे जी ॥ ३ ॥
दिया नाहिं तेलवा बोरसी[4] नाहिं आगिया ।
नाहिं पनहेरिया[5] घरवा पनवा हू रे जी ॥ ४ ॥
दिया बाड़े तेलवा; बोरसी बाड़ि अगिया ।
आरे हमरा रूमलिया बाड़े पानवा हू रे जी ॥ ५ ॥
अतिनाँ रइनिया[6] कहवाँ बितल जी ।
सोनरा दोंकनिया पासावा खेलीले हू रे जी ॥ ६ ॥
इहे किरिय वे[7] प्राभु हम ना पतिआइबि[8] ।
तुलसी चउरवा[9] छुइ आवहु रे जी ।
बाभाना जनेउवा छुइ आवहु रे जी ॥ ७ ॥
बाभाना जनेउवा छुअले हम मरि जाइबि ।
सिर के सेनुरवा सापाना होइहें रे जी ॥ ८ ॥

१. लड़का। २. दूर रहो, भग जाओ। ३. बिल्ली। ४. मिट्टी की अँगीठी। ५. पान बेचने वाला। ६. रात। ७. शपथ। ८. विश्वास करूँगी। ९. चौतरा।

तुलसी चउरवा छुअले हम मरि जाइबि ।
आँखि के काजारवा दुरलभ होइहें रे जी ॥ ९ ॥

सिर के सेनुर प्राभु हम परतेजबों[1] ।
सवती बिरहिया नाहिं हम सहबि हू रे जी ॥ १० ॥

कँटवा जे सालेला घरि रे पहरिया[2] ।
सवती सालेले[3] सारी रतिया हू रे जी ॥ ११ ॥

कोई स्त्री कहती है कि एक घड़ी रात चली गयी, एक पहर रात बीत गयी, तब राजा का लड़का (मेरा पति) घर आने के लिए केवाड़ खोलता है ॥१॥

स्त्री ने यह समझकर कि कोई दूसरा आदमी होगा, कहा—कुत्ते, तुम दूर भग जाओ, बिल्ली दूर चली जा। यदि शहर का कोई आदमी हो, तो चला जाय ॥२॥

पति ने उत्तर दिया—न तो मैं कुत्ता हूँ और न बिल्ली हूँ और न शहर का आदमी ही हूँ। मैं तो राजा का कुँवर (लड़का) हूँ ॥३॥

स्त्री ने कहा—न तो दीपक में तेल है और न बोरसी (अँगीठी) में आग ही है। पनहेरी (पान बेचनेवाला) के घर में पान भी नहीं है (जिससे मैं तुम्हारा सत्कार कर सकूँ) ॥४॥

पति ने उत्तर दिया—दीपक में तेल है, बोरसी में आग है और मेरे रूमाल में पान भी है ॥५॥

स्त्री ने पूछा—इतनी रात तुमने कहाँ बितायी? पति ने उत्तर दिया—मैं सोनार की दूकान पर जुआ खेल रहा था ॥६॥

स्त्री ने कहा—ऐ पति! मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकती। तुम तुलसी जी का चबूतरा छूकर तथा ब्राह्मण का जनेऊ छूकर शपथ खाओ (तभी विश्वास करूँगी) ॥७॥

पति ने उत्तर दिया—ब्राह्मण का जनेऊ छूकर शपथ खाने से मैं मर जाऊँगा और तुम्हारे सिर का सिन्दूर स्वप्न-दुर्लभ हो जायेगा ॥८॥

तुलसीजी का चबूतरा छूकर शपथ खाने से मैं मर जाऊँगा और तुम्हारी आँखों का काजल दुर्लभ हो जायेगा ॥९॥

इस पर उस स्त्री ने उत्तर दिया—मैं अपने सिर के सिन्दूर को छोड़ने (नष्ट करने) के लिए तैयार हूँ, परन्तु सपत्नी की दुःखद सत्ता को नहीं सह सकती ॥१०॥

शरीर में चुभा हुआ काँटा तो केवल घड़ी-दो घड़ी ही कष्ट देता है; परन्तु सपत्नी तो सारी रात कष्ट देती रहती है (क्योंकि पति उसी के प्रेमपाश में फँसा पड़ा रहता है) ॥११॥

१. छोड़ूँगी। २. प्रहर। ३. कष्ट देती है।

झूमर

(१)

प्रसङ्ग—किसी मनचली स्त्री का देवर से विशेष प्रेम करना।

बलमुआ[1] के गारी जइसे चलेले कटारी;[2]
देवरा के गारी जइसे प्रेम पियारी[3]—टेक

देवरा कहेला भउजी जेवना बना द;
बलमुआ कहेला बात राख मोर प्यारी ॥ १ ॥

देवरा कहेला भउजी पनिया पिया द;
बलमुआ कहेला मन राख मोर प्यारी ॥ २ ॥
बलमुआ के गारी०

देवरा कहेला भउजी बिरवा लगा द;
बलमुआ कहेला बात राख मोर प्यारी ॥ ३ ॥
बलमुआ के गारी०

देवरा कहेला भउजी सेजिया डसा[4] द;
बलमुआ कहेला मन राख मोर प्यारी ॥ ४ ॥

देवर से विशेष प्रेम करनेवाली कोई मनचली स्त्री कह रही है कि पति की गाली मुझे कटारी के समान घायल करती है और देवर की गाली बड़ी ही प्यारी लगती है। देवर कहता है कि ऐ भावज ! मेरे लिए भोजन बना दो ; परन्तु पति कहता है कि मेरी बात (विलास करने की) रक्खो। ॥१॥

देवर कहता है कि ऐ भावज ! मुझे पानी पिला दो ; परन्तु पति कहता है कि मेरी बात को रक्खो ॥२॥

देवर कहता है कि ऐ भावज ! मेरे लिए पान का बीड़ा लगा कर दो ; परन्तु पति कामेच्छा की पूर्ति करने के लिए कहता है ॥३॥

१. बालम, पति। २. कटारी, छुरी। ३. प्यारी। ४. बिछा दो।

देवर कहता है कि ऐ भावज! मेरे लिए सेज बिछा दो; परन्तु पति कहता है कि ऐ प्यारी, मेरे मन को रखो अर्थात् मेरी इच्छा के अनुसार काम करो ॥४॥

(२)

प्रसङ्ग—कोई स्त्री अपने पति से मजाक करती है तथा उसे नीचा स्थान देती है।

चलन चलु ननदी; लागबि तोर पइयाँ[1]—टेक

का खाले ननदी, का खाले ननदोइया।
का खाईं हम बेचारी का खाले सइयाँ ॥ १ ॥ चलन चलु०

पान खाले ननदी, कसइली[2] ननदोइया।
हम बेचारी बीरा[3] चाभी; चूना चाटे सइयाँ ॥ २ ॥ चलन चलु०

का खाले ननदी, का खाले ननदोइया।
का खाईं हम बेचारी; का खाले सइयाँ ॥ ३ ॥ चलन चलु०

पुड़ी खाले ननदी, जिलेबी[4] ननदोइया।
हम बेचारी हलुआ खाईं दोना[5] चाटे सइयाँ ॥ ४ ॥ चलन चलु०

कथि सोवे ननदी, कथि पर ननदोइया।
काहाँ सूती हम बेचारी, काहाँ सोवे सइयाँ ॥ ५ ॥ चलन चलु०

खाटी सोवे ननदी; खटोला ननदोइया।
हम बेचारी सेज सोइ; भुइयाँ लोटे सइयाँ ॥ ६ ॥ चलन चलु०

कथि[6] चढ़े ननदी, कथि पर ननदोइया।
कथि चढ़ी हम बेचारी; कथि पर चढ़े सइयाँ ॥ ७ ॥ चलन चलु०

एक्का चढ़े ननदी; साइकिल ननदोइया।
हम बेचारी मोटर चढ़ी, पैदल चली सइयाँ ॥ ८ ॥ चलन चलु०

कोई स्त्री कहती है कि मेरी ननद क्या खाती है, मेरा ननदोई (ननद का पति) क्या खाता है। मैं बिचारी क्या खाती हूँ और मेरा पति क्या खाता है ॥१॥

वह स्वतः उत्तर देती है—ननद पान तथा ननदोई सुपारी खाता है। मैं पान की सीटी चबाती हूँ और मेरा पति केवल चूना चाटता है ॥२॥

मेरी ननद, ननदोई, पति तथा मैं क्या खाती हूँ ॥३॥

१. पैर। २. सुपारी। ३. बीड़ा। ४. जलेबी (एक मिठाई)। ५. पत्ता। ६. किस वस्तु पर।

ननद पूड़ी खाती है, ननदोई जलेबी खाता है। मैं हलुआ खाती हूँ और पति दोना (पत्ता) चाटता है॥४॥

ननद किस चीज पर सोती है; ननदोई कहाँ सोता है; मैं विचारी कहाँ सोती हूँ और मेरा पति कहाँ सोता है॥५॥

ननद खाट पर सोती है; ननदोई खटोला पर सोता है; मैं सेज पर सोती हूँ और मेरा पति जमीन पर सोता है॥६॥

ननद किस पर चढ़ती है; ननदोई किस पर चढ़ता है; मैं विचारी तथा मेरा पति किस पर चढ़ते हैं॥७॥

ननद इक्का पर चढ़ती है; ननदोई साइकिल पर चढ़ता है; मैं मोटर पर चढ़ती हूँ और मेरा पति पैदल चलता है॥८॥

इस गीत में पत्नी पति से अपनी श्रेष्ठता जताती हुई उससे मजाक करती है और इसीलिए पति को नीचा स्थान तथा बुरा भोजन देती है।

(३)

प्रसङ्ग—पत्नी के पैरों पर पति का गिरना; परन्तु उसके मजाक के कारण पत्नी का उससे रुष्ट होना।

देखो यार[1] पइयाँ परेले हरि अपने। टेक

सोने की थारी में जेवना परोसलीं;
देख यार बोली[2] करेले हरि अपने॥ १॥

बोली[2] कारन हम हरि जी से रूसलीं[3];
देख यार पइयाँ परेले हरि अपने॥ २॥

पनिया भरन गइलीं अवरू मिलन गइलीं;
देख यार बोली करेले हरि अपने॥ ३॥

बिरवा लगवलीं अवरू खूब चभलीं[4];
देख यार बोली करेले हरि अपने॥ ४॥

सेजिया पर सुते गइलीं सुखवा के लूटे गइलीं;
देख यार बोली करेले हरि[5] अपने॥ ५॥

बोली कारन हम हरिजी से रूसलीं;
देख यार पइयाँ[6] परेले हरि अपने॥ ६॥

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी! देखो मेरा पति मेरे पैरों पर स्वयं गिर

---

१. मित्र, सखी। २. मजाक। ३. रुष्ट। ४. खाया। ५. पति ६. पैर।

रहा है। मैंने उसके लिए सोने की थाली में भोजन परोसा था; परन्तु वह मुझसे मज़ाक करता है ॥१॥

इसी मज़ाक के कारण मैं अपने पति से रुष्ट हो गयी थी। फिर भी वह मुझसे मज़ाक करता है ॥२॥

मैं पानी भरने के लिए कुएँ पर गयी। वहाँ भी वह मुझसे मज़ाक करता है ॥३॥

मैंने पान का बीड़ा लगा कर खूब खाया और सेज पर सो कर खूब मज़ा उड़ाया ॥४-५॥

पति के मजाक के कारण ही मैं उससे रुष्ट हुई थी, फिर भी वह मज़ाक करने से बाज़ नहीं आता ॥६॥

(४)

प्रसङ्ग—किसी कुलटा स्त्री का वर्णन।

परदेसिया बालम से यारी लागल परदेसिया।—टेक

जानो जेवेंली पूड़ी कचउड़ी[1];
जानो के जेवना में बरफी भरी परदेसिया ॥ १ ॥ परदेसिया बालम०

जानो पियेली भर भर के मधुवा;
जानो के गेडुआ में अतर[2] भरी परदेसिया ॥ २ ॥ परदेसिया बालम०

जानो चामेली मगहिया[3] पानवा;
जानो के बीड़ा में जरदा भरी परदेसिया ॥ ३ ॥ परदेसिया बालम०

जानो सूतेली कोठा अटरिया;
जानो के पलंग में झालर लगी परदेसिया ॥ ४ ॥ परदेसिया बालम०

जानो घूमेली सहर बजरिया;
जानो के कारन कटारी[4] चली परदेसिया ॥ ५ ॥

परदेसिया बालम से यारी लागल परदेसिया ॥

कोई स्त्री कहती है कि परदेसी बालम से मैंने प्रेम किया है। जानो (पति की रक्षिता स्त्री) पूड़ी और कचौड़ी खाती है और उसके भोजन में मिठाई रक्खी है ॥१॥

जानो मधु (शहद) पीती है और उसके पीने के पानी में इत्र पड़ा हुआ है ॥२॥

जानो मगहिया पान खाती है और उसके पान में ज़रदा पड़ा हुआ है ॥३॥

जानो अटारी पर सोती है और उसके पलंग में झालर लगी हुई है ॥४॥

१. कचौड़ी। २. इत्र। ३. मगध देश का। ४. तीक्ष्ण हथियार, जो मारने के काम में आता है।

जानो शहर में तथा बाज़ार में घूमती फिरती है। इसका साथ करने के लिए लोगों में कटारी चल जाती है।।५।।

(५)

प्रसङ्ग—किसी विलासिनी स्त्री तथा कामी पति का वर्णन।

कइसन[1] नाजो कइसन रसिया;[2]
कइसन पलंग कइसन तकिया ।। १ ।।
गोर बाड़ी नाजो साँवर रसिया;
लाल पलंग गुलगुल[3] तकिया ।। २ ।।
रूस[4] गइली नाजो रूस गइले रसिया;
रोवेला पलंग सुसुके तकिया ।। ३ ।।
मान गइली नाजो मान गइले रसिया;
हँसे पलँग विहँसे[5] तकिया ।। ४ ।।

कोई स्त्री पूछती है कि नाजो कैसी है और उसका प्रेमी कैसा है ?।।१।।

दूसरी स्त्री उत्तर देती है—नाजो गौर वर्ण की है और उसका प्रेमी साँवला है। लाल पलंग पर, जिस पर मुलायम तकिया रक्खा हुआ है, वे दोनों सोये हैं।।२।।

(परन्तु किसी कारण से) नाजो रुष्ट हो गयी और उसका प्रेमी भी रुष्ट हो गया। अब पलंग रो रहा है और तकियी सिसक सिसक कर रोता है अर्थात् पलंग की कान्ति नष्ट हो गयी।।३।।

नाजो भी प्रसन्न हो गयी और उसका प्रेमी भी प्रसन्न हो गया। इसलिए पलंग हँसने लगा और तकिया मुसकराने लगी अर्थात् दोनों के संगम से पलंग की शोभा बढ़ गयी।।४।।

(६)

प्रसङ्ग—उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के गाँव हलदी के राजा का वर्णन।

बोझि बोझि माँगे चिलमि चार गांजा ।
आरे पनिया पियेला हरदिया के राजा ।। टेक ।।
सोने के थारी में जेंवना परोसलों;
जेंवना जेंवेला हरदिया के राजा ।। १ ।।
।। बोझि बोझि० ।।

१. कैसे। २. प्रेमी। ३. मुलायम। ४. रुष्ट। ५. मुसकाना।

सासु हरमजादी ससुर हरमजादा;
आरे सेकर[1] जमलका[2] सइयाँ साहजादा ॥ २ ॥
सोने के गडुआ गंगाजल पानी;
आरे पनिया पियेला हरदिया[3] के राजा ॥ ३ ॥
॥ बोझि बोझि० ॥
पाँच पाँच पानवा के बिरवा लगवलों;
आरे बिरवा ना चाभे हरदिया के राजा ॥ ४ ॥
सासु हरमजादी ससुर हरमजादा;
आरे सेकर जमलका सइयाँ साहजादा ॥ ५ ॥
॥ बोझि बोझि० ॥
आरे फूल हजारी के सेजिया डसवलों;
आरे सेजिया ना सोवे हरदिया के राजा ॥ ६ ॥
॥ बोझि बोझि० ॥
सासु हरमजादी ससुर हरमजादा;
आरे सेकर जमलका सइयाँ साहजादा ॥ ७ ॥

हलदी का राजा पानी पीता है और गाँजे की चार चिलम भरवा कर माँगता है। मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा था; परन्तु हलदी के राजा ने भोजन नहीं किया ॥१॥

मेरी सास हरामजादी (दुष्टा) है और ससुर हरामजादा (दुष्ट) है। परन्तु उनसे उत्पन्न मेरा पति शाहजादा (कुँअर) है॥२॥

मैंने सुराही में गंगा जल रक्खा और पान का बीड़ा खाने को दिया। परन्तु राजा ने न जल पिया और न पान खाया॥३—४—५—॥

मैंने हजारों फूलों को लेकर सेज को सजाया; परन्तु राजा उस पर नहीं सोया॥६॥

मेरी सास दुष्टा तथा ससुर दुष्ट है; परन्तु उनसे उत्पन्न पुत्र (मेरा पति) कुँअर है॥७॥

(७)

प्रसङ्ग—घर में हुक्का तथा तमाकू न लाने के कारण पत्नी का पति के साथ "अस्पृश्यता" का व्यवहार है।

बँगाला भीतर जनि आव हो राजा—टेक
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
फरके से जेवना जेवइबों हो राजा ॥ १ ॥ बँगाला०

१. उसका। २. जन्मा हुआ। (पुत्र) ३. बलिया जिले का एक गाँव।

ना घरे नारांचा ना घरे तमाकू;
बांगाला भीतर जनि आव हो राजा ॥ २ ॥
सोने के गेड़ुवा गंगाजल पानी;
आरे फरके से पनिया पिआइबि हो राजा ॥ ३ ॥ बांगाला०
पाँच-पाँच पानावा के बिरवा लगवलों;
आरे फरके से बिरवा चभाइबि हो राजा ॥ ४ ॥ बांगाला०
फूल हजारी के सेजिया डसवलीं;
आरे फरके से सेजिया सोआइबि हो राजा ॥ ५ ॥ बांगाला०

कोई स्त्री क्रुद्ध होकर अपने पति से कहती है कि ऐ पति! तुम मेरे बँगले के भीतर मत आओ। मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा है; परन्तु मैं तुमको अलग से ही भोजन कराऊँगी ॥१॥

न तो घर में हुक्का है और न तमाकू ही है (क्योंकि तुम खरीद कर लाये ही नहीं) अतः तुम मेरे घर के भीतर मत आओ ॥२॥

सोने की सुराही में मैंने तुम्हारे पीने के लिये गंगा जल भर रक्खा है; परन्तु मैं तुमको अलग से ही पानी पिलाऊँगी ॥३॥

पाँच-पाँच पान का मैंने बीड़ा लगाया; परन्तु मैं अलग से ही तुमको पान चबवाऊँगी ॥४॥

मैंने हजारों फूलों से अपनी सेज को सजाया है; परन्तु तुमको अपने साथ न सुलाकर अलग ही सुलाऊँगी ॥५॥

इस गीत में पत्नी का पति के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार खटकने वाला है। छोटे से अपराध के लिए पति का इतना 'बायकाट' औचित्य की सीमा को पार करता जान पड़ता है।

(८)

प्रसङ्ग—किसी अत्यन्त कामुक तथा व्यभिचारी पति का उसकी स्त्री के द्वारा वर्णन।

हमारा बलमु जी के बोली[1] प्यारी चाहीं—टेक
हमरा बलमु जी के चार किसिम[2] के जेवना चाहीं।
पूड़ी, कचौड़ी, जलेबी जरा जियादे चाहीं ॥ १ ॥ हमरा०
हमरा बलमु जी के चार किसिम के बीरा चाहीं।
लवँग, लाची, जारावा; जरा जियादे[3] चाहीं ॥ २ ॥ हमरा०
हमरा बलमु जी के चार किसिम के सेजिया चाहीं।
तोसक, तकिया, मुसहरी जरा जियादे चाहीं ॥ ३ ॥ हमरा०
हमरा बलमु जी के चार किसिम के रंडी[4] चाहीं[5]।
छोटी, अवरु मोटी अवरु पतली जरा जियादे चाहीं ॥ ४ ॥ हमरा०

१. वचन। २. किस्म, प्रकार। ३. ज्यादा। ४. वेश्या। ५. चाहिए।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे पति के लिए मीठी-मीठी बोली चाहिए अर्थात् वह मीठी बोली सुनना पसन्द करता है। उसके लिए चार प्रकार का भोजन चाहिए ; परन्तु पूड़ी, कचौड़ी और जलेबी ज़रा अधिक चाहिए ॥१॥

हमारे पति के लिए चार प्रकार का पान चाहिए और लौंग, इलायची तथा जरदा ज़रा अधिक चाहिए ॥२॥

हमारे पति के चार प्रकार का पलंग चाहिए। तोशक, तकिया तथा मसहरी ज़रा अधिक चाहिए ॥४॥

हमारे पति को लिए चार प्रकार की वेश्याएँ चाहिए। उनमें छोटी, पतली तथा मोटी वेश्या उसको अधिक पसन्द है ॥४॥

पुरुषों की कामुकता कहाँ तक बढ़ सकती है, इसका वर्णन कठिन है। कभी-कभी वह औचित्य की सीमा को पार कर बहुत आगे बढ़ जाती है। इस विषय में स्त्री की उपर्युक्त उक्ति ही प्रामाणिक सार्टीफिकेट है।

(९)

प्रसङ्ग—किसी विनम्र पति की पत्नी के द्वारा प्रशंसा।

काहां पइबो ए राम बलमुआ गोड़ लागाना[1] रे। टेक
काहां पइबों[2] काकाना;[3] काहां पइबों सारी रे।
कहां पइबों ए राम; बलमुआ गोड़ लागाना रे ॥ १ ॥
आरे पटना पाइबि काकाना, बनारस पाइबि सारी रे।
आरे सेजिया पाइबि ए राम; बलमुआ गोड़ लागाना रे ॥ २ ॥
आरे टूटि जइहें काकाना, फाटि जइहें सारी रे।
आरे रूसि[4] जइहे ए रामा; बलमुआ गोड़ लागाना रे ॥ ३ ॥
आरे जोड़ देबि काकाना; सी लेबि सारी रे।
आरे मनाइ[5] लेबि ए राम; बलमुआ गोड़ लागाना रे ॥ ४ ॥

कोई पत्नी कहती है कि मैं अपने पति के समान (मेरे) पैरों पर गिरने वाला अर्थात् अत्यन्त विनम्र पति और कहाँ पाऊँगी। कहाँ हाथ का ककण पाऊँगी, कहाँ साड़ी पाऊँगी। मुझे ऐसा पति अन्यत्र कहाँ मिलेगा ॥१॥

वह स्वतः उत्तर देती है—मैं पटना में कँकना पाऊँगी और बनारस में साड़ी पाऊँगी और पलंग के ऊपर पैर पर गिरने वाले पति को पाऊँगी ॥२॥

मेरा कँकना टूट जायेगा, साड़ी फट जायेगी और पैरों पर गिरने वाला पति मुझसे रुष्ट हो जायेगा ॥३॥

१. पैरों पर गिरने वाला। २. पाऊँगी। ३. कंकण। ४. रुष्ट। ५. प्रसन्नकर लेना।

वह स्वतः उत्तर देती हुई कहती है—मैं टूटे हुए कँकने को जोड़ लूँगी ; फटी हुई साड़ी को सी लूँगी और पैर पर गिरने वाले अपने विनम्र तथा रुष्ट पति को प्रसन्न कर लूँगी ।।४।।

(१०)

प्रसङ्ग—कृष्ण के वियोग में राधा की मनोव्यथा का वर्णन ।

मधुबनवा[१] से मोर हरी अइहें कि ना । टेक—

गोकुला नगरिया के लोग सब व्याकुल;
आपन सुरतिया[२] देखलइहें कि ना ।। १ ।। मधुबनवा०

तड़पी-तड़पि मोर निदियों ना लागे;
छूटल पिरितिया लगइहें कि ना ।। २ ।। मधुबनवा०

छलिया[५] छल कइके काहे के तजलें;
कुबरी सवतिया[६] ले अइहें कि ना ।। ३ ।। मधुबनवा०

पिया-पिया कहत भइलीं हम पगलीं;[७]
ओखधिया[८] अब लेके उ अइहें[९] कि ना[१०] ।। ४ ।। मधुबनवा०

मधुबनवा से मोर हरी अइहें कि ना ।

कृष्ण के वियोग से पीड़ित राधाजी कह रही हैं कि वृन्दावन से मेरे पति (कृष्ण) आयेंगे या नहीं ? गोकुल नगरी के सब लोग उनके वियोग से व्याकुल हैं। अब वे अपनी सुन्दर मूर्ति दिखलायेंगे या नहीं ।।१।।

राधाजी कहती हैं—उनके वियोग के कष्ट से तड़पते हुए मुझे रात में निद्रा नहीं आती। वे अब छूटी हुई प्रीति को लगायेंगे या नहीं अर्थात् मझसे पुनः प्रेम करेंगे या नहीं ।।२।।

ऐ छलिया कृष्ण ! तुमने छल करके मुझे क्यों छोड़ दिया। अब तुम मेरी सौत कबूरी को लेकर आओगे या नहीं ।।३।।

'पिया' 'पिया' कहते हुए मैं पागल हो गयी हूँ। इस पागलपन की दवा लेकर अब तुम आओगे या नहीं ।।४।।

(११)

प्रसङ्ग—किसी गोपी का कृष्ण-दर्शन के लिए तरसना तथा बागों में उन्हें खोजना।

बजाइ मन हरले ए साँवलिया । टेक—
मनमोहन मधुर सुर मुरली;

१. वृन्दावन। २. सूरत। ३. नींद। ४. प्रीति, प्रेम। ५. छल करने वाला। ६. सौत। ७. पागल। ८. औषधि, दवा। आयेगा। १०. नहीं।

बजाइ मन हरले ए सांवलिया ॥ १ ॥
खोजत-खोजत थकलीं[1] बगिया में;
कवन बन गइले ए सांवलिया ॥ २ ॥
नन्द जी के लरिका[2] जसोदा के पुतरी[3];
कठिन[4] तोर बोलिया ए सांवलिया ॥ ३ ॥
जब ले मोहन जी के रूपवा[5] ना देखबि;
तरसेला[6] मोर जियरा ए सांवलिया ॥ ४ ॥
बजाइ मन हरले ए सांवलिया।

कोई गोपी कहती है कि कृष्ण ने मुरली बजाकर हमारे मन को हर लिया है। ऐ मन को मोहने वाले कृष्ण ! तुमने मधुर मुरली बजाकर हमारा मन चुरा लिया है ॥१॥

मैं तुम्हें बागों में खोजते-खोजते थक गई ऐ कृष्ण ! तुम किस बन में चले गये ॥२॥

तुम नन्दजी के लड़के हो और यशोदा की आँखों की पुतली हो। परन्तु ऐ कृष्ण ! तुम्हारी बोली बड़ी कठिन है ॥३॥

ऐ कृष्ण ! जब तक मैं तुम्हारी साँवली सूरत को नहीं देखूँगी तब तक तुम्हारे दर्शन के लिए मेरा हृदय तरसता रहेगा ॥४॥

इस गीत में कृष्ण के प्रति गोपी का प्रेम उमड़ा पड़ता है। गोपी का हृदय कृष्ण के वियोग में कितना तड़पता है, इसे तो भुक्त भोगी ही जान सकते हैं। कृष्ण को यशोदा की पुतली कहना कितना मार्मिक है। वास्तव में पुत्र माता के लिए आंखों की पुतली से भी प्यारा होता है।

(१२)

प्रसङ्ग—किसी विवाहिता लड़की के गौने का समाचार आने पर उसकी चिन्ता का वर्णन।

आइ गइले ना मोरा गबना के पतिया—टेक।
खेलइत[7] रहलीं हम सुपुली[8] मउइनियां,[9]
आइ गइले ना मोरा गवना के पतिया[10] ॥ १ ॥
दिनवा धरावे[11] अइले नउवा[12] बभानवा;
लिआवन अइहें ना मोर आपन साजनवा[13] ॥ २ ॥
पतिया रे बाँचत फाटेला मोर छतिया,
छाई लेले मनवा बीचे रे उदसिया ॥ ३ ॥

१. थक गयी। २. लड़का। ३. आँखों की पुतली। ४. कठोर। ५. सौन्दर्य। ६. तरसता है, लालायित रहता है ॥ ७. खेलती हुई। ८. छोटी डाली। ९. क्रीड़ा का साधन। १०. चिट्ठी। ११. निश्चित करना। १२. नाई और ब्राह्मण। १३. पति।

हम ना जननीं ससुरारि के रहनियाँ[8],
रहबि कइसे उहाँ सोचिलें दिन रतिया ।।४।।

मगिहें मोहन जी जब आपन बायनवां[9],
देइबि[10] कइसे इहे सोचिलें दिन रतिया ।।५।।

आइ गइले मोरा गवना के पतिया।

कोई विवाहित लड़की कह रही है कि जब मैं मायके में सुपुली और मउनी से खेल खेल रही थी, उसी समय मेरे ने गौने की चिट्ठी चली आयी।।१।।

मेरे गौने का दिन निश्चित करने के लिए ब्राह्मण और नाई आये और मुझे ससुराल लिवा चलने के लिए मेरा पति आया।।२।।

गौना की चिट्ठी पढ़ते ही मेरी छाती फटने लगी और मेरे मन में उदासी आ गयी (क्योंकि माँ-बाप को छोड़कर अब ससुराल जाना पड़ेगा) ।।३।।

मैं ससुराल की रहन-सहन को बिल्कुल नहीं जानती और दिन-रात यही सोचती हूँ कि वहाँ जाकर मैं कैसे रहूँगी।।४।।

जब पति भोग रूप प्रसाद माँगेगा, तब मैं उसे कैसे दूंगी। यही बात दिन-रात सोचती रहती हूँ।।५।।

इस गीत में रहस्यवाद की झलक मिलती है।

(१३)

प्रसङ्ग—किसी ग्वालिन का मथुरा आना। रास्ते में कृष्ण के द्वारा छेड़छाड़ करने पर यशोदा से उलाहना देना। घर लौटने पर ननद का चौर्य-रति-गोपन का सन्देह।।

सासु के चोरी[11] बेचन चललीं दहिया;
ए हो राम अइली[12] मथुरा जी के गलिया ।। १ ।।

आंगाना में ठाढ़ ग्वालिन करेली[13] अरजिया[14];
मन हमार नाहीं; कान्ह कइले बलजोरिया[15] ।। २ ।।

टूटि गइले चोली बन्द, फाटि गइले सरिया,
ननद पूछे काहाँबा से अइलू तुम गोरिया ।। ३ ।।

अइहन भइया कहबि[16] सभ[17] बतिया;
उनका के हम फुसिलाइबि[18] सारी रतिया ।। ४ ।।

८. रहन सहन। ९. प्रसाद। १०. दूंगा। ११. छिपकर, बिना कहे। १२. आयी। १३. करती है। १४. प्रार्थना। १५. बलात्कार। १६. कहूँगी। १७. सब। १८. लालच दिखाकर बहका देना।

कोई ग्वालिन अपनी सास की चोरी से अर्थात् उससे बिना कहे ही मथुरा की गली में दही बेचने के लिए चली आई ॥१॥

रास्ते में कृष्ण ने उससे कुछ छेड़छाड़ की; अतः वह उलाहना देने के लिए यशोदा के आँगन में खड़ी हो गई और प्रार्थना करने लगी कि ऐ यशोदा ! मेरी इच्छा नहीं थी; परन्तु कृष्ण ने मुझसे बलात् छेड़छाड़ की है॥२॥

जब ग्वालिन लौट कर घर गयी तो उसकी चोली के बन्द टूटे हुए थे और उसकी साड़ी फटी हुई थी। ननद ने उससे पूछा कि ऐ ोरी ! तुम कहाँ से आई हो (जिससे तुम्हारी यह दशा हुई है) ॥३॥

ग्वालिन ने कहा—ऐ ननद ! जब तुम्हारा भाई (मेरा पति) आयेगा, तब मैं उससे सारी बातें कहूँगी और मैं उन्हें सारी रात फुसलाती रहूँगी ॥४॥

(१४)

प्रसङ्ग—श्रीकृष्ण के कालिया दह में कूदने की घटना का वर्णन।

बंसी के बजवैया[1] कन्हैया जमुना में कूदि गइले हो। टेक—
कथि[2] के डण्टा,[3] कथि के गेना;
खेलन जमुना तीर चलि गइले हो ॥ १ ॥
रूपे के डण्टा सोने के गेना;
खेलन जमुना तीर चलि गइले हो ॥ २ ॥
ओहि जमुना के करिया[4] पनिया;
से हो ना देखि डेरहले[5] हो ॥ ३ ॥
बंसी के बजवैया कन्हैया;
जमुना में कूदि गइले हो ॥ ४ ॥

कोई ोपी अपनी सखी से कहती है कि बंशी के बजाने वाले कृष्ण यमुना में कूद पड़े। सखी पूछती है—किस चीज का डण्डा है और किस वस्तु की गेंद है ॥१॥

गोपी कहती है—चाँदी का डण्डा है और सोने की गेंद है। खेलते हुए वह गेंद जमुना के किनारे चली गई ॥२॥

उस यमुना का पानी काला है। लेकिन उसे देखकर कृष्ण तनिक भी नहीं डरे ॥३॥

बंशी का बजाने वाला कृष्ण जमुना में गेंद निकालने के लिए कूद पड़ा ॥४॥

इस गीत में कृष्ण के कालिया-दह में कूद पड़ने की घटना का वर्णन है, जो अत्यन्त सुन्दर है।

१. बजाने वाला। २. किस वस्तु का। ३. डण्डा। ४. काला। ५. डर गया।

(१५)

प्रसङ्ग—किसी कुलटा का देवर से अनुचित-प्रेम।

अइसन खटाईदार[1] निबुआ[2] रे गमके[3] मोरे आँगना । टेक—
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
अइसन रसीला देवरा रे जेवें मोरे आँगना ॥ १ ॥
झंझर गडुआ गंगाजल पानी;
अइसन रसीला देवरा रे पियेला मोर आँगना ॥ २ ॥
अइसन खटाई०
लवँग अवरु[4] लाची के बिरवा लगवलों;
अइसन रसीला[5] देवरा रे चामेला मोर आँगना ॥ ३ ॥
अइसन खटाई०
कलिया चुनि चुनि सेजवा बिछवलीं;
अइसन रँगीला देवरा रे सोवेला मोर आँगाना ॥ ४ ॥
अइसन खटाईदार निबुआ रे गमके मोरे आँगना ।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे आँगन में खटाईदार नीबू गन्ध दे रहा है। सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा था। मेरा रसीला (रसिक) देवर मेरे आँगन में भोजन करता है॥१॥

मैंने सुराही में गंगा जल रक्खा था। उसे मेरा रसिक देवर मेरे आँगन में पीता है॥२॥

लवँग और लाची को लगाकर मैंने पान का बीड़ा तैयार किया था। रसीला देवर मेरे आँगन में उसे चबाता है॥३॥

मैंने फूलों को चुन-चुनकर सेज बिछाई थी। मेरा रसिया देवर मेरे आँगन में सोकर मजा लेता है॥४॥

(१६)

प्रसङ्ग—गौना कराने के लिए पति का ससुराल जाना और स्त्री को दोपहरी में साथ ले आना।

परदेसी हो भेंटत चोंटत भइले साँझ । टेक—
होत भिनुसार[6] पियवा गवना रे करवले;
परदेसी हो भेंटत चोंटत भइले साँझ ॥ १ ॥
ठीक दुपहरिया[7] सइयाँ गवना रे करवले;
परदेसी हो भूभुरि जरेला गोड़वा मोर ॥ २ ॥
आधिहि रात पियवा रूसना[8] रे पसरले;
परदेसी हो गोड़वा[9] लेपरब अब मोर ॥ ३ ॥ परदेसी हो०

१. खट्टा। २. नीबू। ३. सुगन्ध करता है। ४. और। ५. रसिक। ६. प्रातःकाल। ७. दोपहर। ८. रुष्ट होना। ९. पैर।

किसी स्त्री का पति गौना कराने के लिए उसके घर आया है। स्त्री कहती है कि घर वालों से भेंट-मुलाकात करते ही साँझ हो गयी। सबेरा होते ही पति गवना कराकर मुझे घर ले जायेगा ॥१॥

पुनः वह स्त्री कहती है—पति ने ठीक दोपहरी के समय गौना कराया। अब पैदल चलते समय भूभुर से मेरा पैर जल रहा है ॥२॥

(गौना कराकर घर लाने पर पति स्त्री के साथ सोया ; परन्तु) आधी रात को वह स्त्री से रुष्ट हो गया। इस पर स्त्री कहती है कि ऐ परदेसी ! (पति) तुम मेरे पैरों पर गिरोगे। (क्यों व्यर्थ रुष्ट हो रहे हो) ॥३॥

(१७)

प्रसङ्ग—पति-पत्नी के मौज-मजे का वर्णन।

पटना सहरिया[१] से सोना मँगवले;
देख यार नथिया गढ़ावे हरि अपने ॥ १ ॥
नथिया पहिरि हम सुतलीं ओसारावा;[२]
देख यार चोरी करेला हरि अपने ॥ २ ॥
चोर चोर कहिके हम हरि के पकड़लीं;
देख यार पइयाँ[३] परेले हरि अपने ॥ ३ ॥
कासी सहरिया से साटन[४] मँगवले;
देख यार चोलिया सिआवे हरि अपने ॥ ४ ॥
चोलिया पहिरि हम सुतली[५] ओसारावा;
देख यार रसवा[६] लेले हरि अपने ॥ ५ ॥
चोर चोर कहिके हम हरिके पकड़लीं;
देख यार पइयाँ परेले[७] हरि अपने ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे पति ने पटना शहर से सोना मँगवाया और वह मेरे लिए नथिया बनवा रहा है ॥१॥

मैं उस नथिया को पहनकर बरामदे में सो गयी और पति (मज़ाक में) रात को उसे चुराने लगा ॥२॥

मैंने चोर-चोर हल्ला करके पति को पकड़ लिया। तब पति पकड़े जाने पर मेरे पैरों पर गिरने लगा ॥३॥

पति ने काशी से साटन कपड़ा मँगा कर मेरे लिए चोली सिलवायी ॥४॥

उस चोली को पहनकर मैं आँगन में सो गयी और पति रात में रस लेने लगा ॥५॥

१. शहर। २. बरामदा। ३. पैर। ४. बहुमूल्य सुन्दर कपड़ा। ५. सो गयी। ६. आनन्द, मज़ा। ७. गिरता है।

चोर-चोर कहकर मैंने पति को पकड़ लिया, तब पति मेरे पैरों पर आप ही आप गिरने लगा ॥६॥

(१८)

प्रसङ्ग—सुन्दर गहनों को पहन कर भावज के द्वारा देवर के दिल को मोहित कर उसे तरसाना।

आरे में मोर पिया नथिया गढ़ावे;
पटना कोढ़वा[1] जोरावे रे पिया राति के राति ॥ १ ॥
राति में पहिरिलीं रे दिन दिखलवलीं;
देवरा के दिल ललचवलीं[2] रे पिया राति के राति ॥ २ ॥
आरे में मोर पिया काकाना गढ़ावे;
पटना में कोढ़वा जोरावे[3] रे पिया राति के राति ॥ ३ ॥
राति में पहिरलीं रे दिन दिखलवलीं;
देवरा के दिल ललचवलीं रे पिया राति के राति ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि आरा शहर में मेरे पति ने नथिया बनवायी और रात ही रात वह पटना में उसके कोढ़ा (जोड़ के भाग) को बनवाता है ॥१॥

मैंने उस नथिया को रात में पहना और दिन में उसे दिखलाकर अपने देवर के मन को ललचाया ॥२॥

आरा शहर में मेरे पति ने कँगना बनवाया और पटना में उसके कोढ़े को जोड़वाया ॥३॥

मैंने उसे रात में पहना और दिन में उसे दिखलाकर अपने देवर के हृदय को खूब ललचाया ॥४॥

(१९)

प्रसङ्ग—पति के द्वारा पत्नी का अत्यधिक आदर।

रतिया में मोर राजा रे; चीनिया[4] बेसाहे;[5]
दिनवा लड़ुइया[6] बँधावे से मोर राजा रे ॥ १ ॥
रचि एक हमरो के चुर चार खिआवे;[7]
दूरी से मारे नजरिया से मोर राजा रे ॥ २ ॥
रतिया में मोर राजा रे; साटन बेसाहे;
दिनवा सिआवे चोलिया से मोर राजा रे ॥ ३ ॥
रचि एक चोलिया उ हमरा के पेन्हावे;
दूरी से मारे नजरिया से मोर राजा रे ॥ ४ ॥

१. गहने का वह भाग जहाँ दो टुकड़ों का जोड़ होता है। २. ललचाया। ३. जोड़वाया (बनाया) ४. चीनी। ५. खरीदता है। ६. लड्डू। ७. खिलाता है।

कोई स्त्री कहती है कि मेरा पति रात में चीनी खरीदता है और दिन में उसके लड्डू बनवाता है॥१॥

उसका बचा-खुचा भाग मुझे भी खाने को देता है। वह दूर ही से मुझे नजरों से मारता है॥२॥

रात में मेरा पति साटन कपड़ा खरीदता है और दिन में उसकी चोली सिलाता है॥३॥

वह मुझे चोली पहिनाता है और दूर ही से मुझे नजरों से मारता है॥४॥

इस गीत में पति का स्नेह सराहनीय है। वह अपनी स्त्री का जितना आदर करता है उतना साधारणतया दुर्लभ है॥

(२०)

प्रसङ्ग—सास के सामने पत्नी का पति के ऊपर अपना प्रभुत्व स्थापन।

ओरिये तर हो, ओरिये तर;
पिया ठुनुके[1] हमरा ओरिये तर ॥ टेक ॥

एक थपरा मरलीं, दोसर थपरा मरलीं;
पिया ठुनुके हमार ॥ १ ॥ ओरिये तर०।

घर में से निकलेली माता जसोदा;
के मारल मोर लरिका बुलार ॥ २ ॥ ओरिये तर०।

मारे के मरलों सासु आपन भतार;
ओहू में कुछु लागल बा तोहार ॥ ३ ॥ ओरिये तर०।

छीपा बाजे सासु बेटा तोहार;
बाजा बाजे सइयाँ भइले हमार ॥ ४ ॥ ओरिये तर०।

तुहू बिअइलु सासु टाटी लगाइ;
हम लिहलीं पाँचो बजाना बजाइ ॥ ५ ॥ ओरिये तर०।

कोई स्त्री—जिसका पति अभी बिल्कुल बच्चा है—कह रही है कि मेरा पति घर की ओरी तले खड़ा हो ठुनकता है—धीरे-धीरे आवाज करता हुआ रोता है॥१॥

मैंने उसे एक थप्पड़ मारा, दूसरा थप्पड़ भी मारा, तब वह रोने लगा। उसका रोना सुनकर उसकी माता यशोदा निकली और पूछने लगी कि मेरे बच्चे को किसने मारा है॥२॥

स्त्री ने उत्तर दिया कि ऐ सास! मैंने अपने (दूसरे को नहीं) पति को मारा है। इसमें तुम्हारा क्या लगा है? (तुम्हारा क्या स्वार्थ है)॥३॥

१. धीरे-धीरे रोना

ऐ सास! जब जन्म के समय थाली बजी उस समय लड़का तुम्हारा था, परन्तु विवाह में जब बाजा बजा, उस समय से मेरा पति हो गया (अतः इसमें तुम्हारा हक नहीं है। मैं इसे जो चाहूँ कर सकती हूँ) ॥४॥

ऐ सास! तुमने पर्दे की आड़ में इसे पैदा किया; परन्तु मैंने तो बाजा बजाकर सब के सामने इसे पति बनाया है॥५॥

(२१)

प्रसङ्ग—राम का सीता के यहाँ सजधज कर विवाह करने के लिए जाना।

कहवाँहि[1] राम जी के जन्म भइल हरि झूमरी।
अब काहावाँ बाजेला बधाव,[2] खेलबि हरि झूमरी ॥ १ ॥
गोखुला ही राम जी के जनम भइल हरि झूमरी।
अब मथुरा में बाजेला बधाव; खेलबि हरि झूमरी ॥ २ ॥
सीता जे चिठि[3] लिखि भेजेली हरि झूमरी।
अब उमड़ि ना आईं सिरि राम खेलबि हरि झूमरी ॥ ३ ॥
राम जे चिठि लिखि भेजेले हरि झूमरी।
अब सीता सुन्दरि करसु[4] सिंगार खेलबि हरि झूमरी ॥ ४ ॥
केकरा ही हाथे लागल बूकावा[5] हरि झूमरी।
केकरा ही हाथे अबीर[6] खेलबि हरि झूमरी ॥ ५ ॥
सीता के हाथे लागे बूकवा हरि झूमरी।
अब राम के हाथे अबीर खेलबि हरि झूमरी ॥ ६ ॥
उड़त आवेला बूकवा हरि झूमरी।
अब चमकत आवेला अबीर खेलबि हरि झूमरी ॥ ७ ॥

कोई स्त्री कहती है रामजी का जन्म कहाँ हुआ और कहाँ आनन्द का बाजा बज रहा है॥२॥

गोकुल में रामजी का जन्म हुआ और मथुरा में बधावा बज रहा है॥२॥

विवाह के समय सीताजी पत्र लिखकर भेजती हैं और कहती हैं कि ऐ श्रीराम! आप सजकर आइए॥३॥

रामजी भी चिट्ठी लिखकर भेजते हैं कि ऐ सीता! तुम श्रृंगार करो। मैं अवश्य आऊँगा ॥४॥

किसके हाथ में बुकवा (उबटन) लगा है और किसके हाथ में अबीर लगा है॥५॥

सीता के हाथ में उबटन लगा है और राम के हाथ में अबीर लगा है॥६॥

१. कहाँ। २. बाजा। ३. पत्र। ४. करो। ५. उबटन ६. गुलाल

बुकवा उड़ता हुआ आ रहा है और अबीर चमकता हुआ आ रहा अर्थात् राम विवाह करने के लिये शान से आ रहे हैं। मैं झूमर गाऊँगी या खेलूँगी ॥७॥

(२२)

प्रसङ्ग—किसी देश-प्रेमिका स्त्री का महात्मा गांधी की गिरफ्तारी पर अपने पति को जेल जाने का आदेश।

गाँधी के पास में मोतीलाल नेहरू;
अब गाँधी के कटल[1] परवाना[2] जेहलवा में जा बलमू ॥ १ ॥
गाँधी के पास-पास मालवी[3] सुहात बाड़े;
अब गाँधी के कटल परवाना जेहलवा[4] में जा बलमू ॥ २ ॥
गाँधी के आस पास बाड़े[5] सियार दास;
अब गाँधी के कटल परवाना जेहलवा में जा बलमू ॥ ३ ॥

कोई देश-प्रेमिका युवती अपने पति से कहती है कि आन्दोलन में गाँधी के आस-पास मोतीलाल नेहरू हैं अर्थात् वे उनके साथ काम करते हैं। अब गान्धीजी के नाम गिरफ्तारी का वारण्ट निकल गया है; अतएव पति! अब तुम भी जेल जाओ ॥१॥

गाँधी के पास मालवीयजी तथा देशबन्धु चितरञ्जनदास (सी० आर० दास) हैं तथा वे लोग उनके साथ देश की सेवा करते हैं। अब गान्धीजी के नाम गिरफ्तारी का वारण्ट निकल गया है। अतः ऐ पति! अब तुम भी जेल चले जाओ ॥२—३॥

(२३)

प्रसङ्ग—साड़ी तथा हार खरीदने के लिए पत्नी की पति से प्रार्थना।

जब रे दरजिया[6] दुआर पर आइल;
अब रचि एक मरजी होइ रे बलमू ॥ १ ॥ चोलिया लेबि रे।
जब रे बाजाजवा दुअरवा[7] पर आइल;
अब रचि एक मरजी[8] होइ रे बलमू ॥ २ ॥ चुनरी लेबि रे।
चोलिया लेबि रे, चुनरी लेबि रे;
पातरि मोर करिहइयाँ[9], लहँगवा भुइँ लोटे रे ॥ ३ ॥
जब रे सोनारावा दुअरवा पर आइल;
रचि एक मरजी होइ रे बलमू ॥ ४ ॥ तिलरी[10] लेइ दे रे।

१. कट गया—निकल गया—है। २. वारण्ट। ३. पं० मदनमोहन मालवीय। ४. जेल। ५. है। ६. दरजी। ७. बजाज। ८. दया। ९. कमर। १०. गले का हार।

स्त्री अपने पति से कहती है कि दरजी अब द्वार पर आया हुआ है। तुम कृपा करके मेरे लिए चोली खरीद दो॥१॥

जब बजाज द्वार पर आए तब कृपा करके एक साड़ी मेरे लिए खरीद दो ॥२॥

ऐ पति ! मैं चोली लूँगी तथा चूनरी (साड़ी) लूँगी। मेरी क़मर पतली है। अतः मेरा लहँगा जमीन पर लोट रहा है॥३॥

जब सुनार द्वार पर आए तो कृपाकर ऐ पति ! मुझे एक हार ले दो ॥४॥

(२४)

प्रसङ्ग—पति के बन में चले जाने से पत्नी की व्याकुलता ; परन्तु उसकी वंशी की आवाज पहचानकर सान्त्वना धारण करना।

निहुरल[१] निहुरल आँगाना बहरलो[२];
हो दरदिया[३] उठे ना ॥ १ ॥
आरे मोरे कामर[४] में दरदिया;
हो हरदिया पिसलों ना ॥ २ ॥
मचिया बइठली रउरा सासु हो बढ़इतिनि;[५]
हो कवन रे बिधिये ॥ ३ ॥
यदुबंसी[६] गइले बनवा;
हो कवन रे बिधिये ॥ ४ ॥
सुपुली[७] खेलत तुहु ननद हो बढ़इतिनि;
हो केकर रे बंसिया ॥ ५ ॥
आरे बाजेले जमुना तिरवा[८];
हो केकर रे बंसिया ॥ ६ ॥
उठहु भउजी रे करहु रसोइया;
हो भइया के बंसिया ॥ ७ ॥
आरे बाजेले जमुना तिरवा;
हो भइया के बंसिया ॥ ८ ॥
भड़सर[९] पइसलि[१०] तुहु गोतिनी[११] बढ़इतिनि;
हो केकर रे बंसिया ॥ ९ ॥
आरे बाजेला जमुना तिरवा;
हो केकर रे बंसिया ॥१०॥

१. झुकी हुई। २. बुहार दिया, झाड़ लगा दी। ३. दर्द। ४. कमर। ५. श्रेष्ठ। ६. कृष्ण। ७. छोटी दौरी। ८. किनारा। ९. घर का भीतरी भाग। १०. घुसी हुई। ११. दायादिन।

उठहु बहुआ[1] रे करहु रसोइया;
हो बबुआ के बंसिया ॥ ११ ॥
आरे बाजेला जमुना तिरवा;
हो बबुआ के बंसिया ॥ १२ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मैंने झुक करके ही सारे आँगन में झाड़ू लगायी ; इसलिए मेरी कमर में दर्द होने लगा ॥१॥

मेरी कमर में दर्द है ; अतः उस पर लगाने के लिए मैंने हलदी पीसी है ॥२॥

स्त्री कहती है—मचिया पर बैठने वाली ऐ श्रेष्ठ सास ! मेरा पति (कृष्ण) बन में किस प्रकार अथवा किस कारण चला गया है ॥३—४॥

सुपुली से खेलने वाली ऐ श्रेष्ठ ननद ! किसकी वंशी जमुना के किनारे बज रही है ॥५-६॥

ननद ने इस पर उत्तर दिया—ऐ भावज ! उठो और रसोई बनाओ। मेरे भाई की वंशी जमुना के किनारे बज रही है ॥७-८॥

घर के अन्दर घुसने वाली ऐ मेरी श्रेष्ठ दायादिन ! किसकी वंशी जमुना के किनारे बज रही है ॥९--१०॥

इस पर दायादिन ने उत्तर दिया—ऐ बहू! उठो और रसोई बनाओ। यह मेरे बबुआ की वंशी जमुना के किनारे बज रही है ॥११—१२॥

इस गीत में पति के वियोग में स्त्री अत्यन्त व्याकुल है। यमुना के किनारे उसकी बजाई वंशी को सुनकर, उसकी आवाज़ पहचानकर उसे सान्त्वना मिलती है और तभी वह अपना शोक छोड़ घर के कामों में लगती है। धन्य हैं ऐसी साध्वी स्त्रियाँ ॥

(२५)

प्रसङ्ग—ताड़ी पीने से उत्पन्न नशे के कारण किसी स्त्री का अन्न-जल ग्रहण न करना।

आरे बोतल भर ताड़ी[2] हम ना पियबि;
ताड़ी लागल बा करेजवा[3] हम ना जियबि ॥ टेक—
झझर गडुअवा गंगाजल पानी;
आरे पनिया हम ना पियबि[4] ॥ १ ॥ ताड़ी लागल बा०
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
आरे जेवना हम ना जेवबि ॥ २ ॥ ताड़ी लागल बा०
पाँच-पाँच पानवा के बिरवा लगवलीं;
आरे बिरवा हम ना चाभबि ॥ ३ ॥ ताड़ी लागल बा०
फूलवा चुनि-चुनि सेजिया डसावल;
आरे सेजिया हम ना सूतबि[5] ॥ ४ ॥ ताड़ी लागल बा०

१. बधू, नयी स्त्री। २. ताड़ से उत्पन्न एक मादक द्रव पदार्थ। ३. कलेजा, हृदय। ४. पिऊँगी। ५. सोऊँगी।

कोई स्त्री कहती है कि ताड़ी का नसा मेरे हृदय में हो गया है ; अतः मैं बोतल भरकर अब ताड़ी नहीं पिऊँगी। सुराही में गंगाजल रक्खा हुआ है ; परन्तु मैं उसे भी नहीं पिऊँगी, क्योंकि मैं नशे में चूर हूँ ॥१॥

सोने की थाली में भोजन परोसा गया है। परन्तु मैं उसे नहीं खाऊँगी ॥२॥

पाँच-पाँच पान का बीड़ा मैंने लगाया है परन्तु मैं उसे नहीं चबाऊँगी ॥३॥

फूलों की चुन चुन कर मैंने सेज बिछायी है ; परन्तु मैं उस पर नहीं सोऊँगी, क्योंकि ताड़ी पीने के कारण उसके नशे से मेरा हृदय बेचैन है ॥४॥

(२६)

प्रसङ्ग—गंगा में स्नान करती हुई किसी स्त्री की झुलनी का गिरना तथा मछली के द्वारा उसे ले जाना।

ठाढ़ गोरी गंगा हिलोरे, झुलनिया ले गई मछलिया ना ॥ १ ॥
गोड़ तोर लागिलें भइया मलहवा, सागर में डालु महजालवा ना ॥ २ ॥
एक ओरि लागेले घुँघुची सेवारवा, एक ओरि राघव[१] मछलिया ना ॥ ३ ॥
ठाढ़ गोरी गंगा हिलोरे[२], झुलनिया, ले गई मछलिया ना ॥ ४ ॥

कोई स्त्री लहराती गंगा में खड़ी होकर स्नान कर रही थी। इतने में उसकी झूलनी गिर गयी और उसे मछली लेकर चली गयी ॥१॥

वह स्त्री कहती है—ऐ मल्लाह ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। तुम गंगा में महा (बड़ा) जाल लगाओ ॥२॥

मल्लाह ने जाल लगाया। एक ओर उस जाल में घोंघा और सेवार आया और दूसरी ओर राघव मछली आयी ॥३॥

गोरी जब तक स्नान कर रही थी, तभी उसकी झुलनी मछली लेकर चली गयी ॥४॥

(२७)

प्रसङ्ग—किसी स्वाभिमानिनी तथा मनस्विनी स्त्री की उक्ति।

खाइके जहर मरि जइबो, मोरहऊ[३] के बोली[४] ना सहबों ॥ १ ॥ टेक—
जो हम कोहनाइबि[५] बने चलि जइबो;
ओहिं[६] जे[७] जोगिनि बनि जइबो ॥ २ ॥ मोरहऊ के बोली०
जो हम कोहनाइबि बांगाला[८] चलि जइबो ॥ ३ ॥ मोरहऊ के बोली०

१. एक प्रकार की मछली। २. लहराना। ३. दुष्ट पति। ४. वचन। ५. क्रुद्ध हूँगी। ६. वहीं। ७. पर। ८. बंगाल।

कोई मनस्विनी स्त्री कहती है कि मैं ज़हर खाकर मर जाऊँगी; परन्तु दुष्ट पति की बोली नहीं सह सकती ॥१॥

जब मैं क्रोधित हूँगी, तब बन में चली जाऊँगी और वहीं पर जोगिन बन जाऊँगी ॥२॥

जब मैं क्रोधित हूँगी तब बंगाल प्रान्त को चली जाऊँगी और वहीं पर बंगालिन बन जाऊँगी ॥३॥

(२८)

प्रसङ्ग—सीता और राम के फाग खेलने का वर्णन।

रसिया[1] डालि गइलि हो; हमरा आँखिन में लाल अबीर ॥ टेक—
केथि[2] के उज्जर[3] रंग बनत बा; केथि के उड़त अबीर ॥ १ ॥ रसिया०
केकरा इ हाथे कनक पिचुकारी; केकरा इ हाथे अबीर ॥ २ ॥ रसिया०
राम के हाथे कनक पिचुकारी; सीता के हाथे अबीर ॥ ३ ॥ रसिया०
गंगा इ जल के रंग बनत बा; बालू के उड़त अबीर[4] ॥ ४ ॥
रसिया डालि गइल हो; हमरा आंखिन में लाल अबीर ॥ ५ ॥

कोई प्रेमिका कह रही है कि मेरा प्रेमी मेरी आँखों में गुलाल डाल गया। किस वस्तु का सफेद रंग बनता है और किस वस्तु का गुलाल उड़ रहा है ॥१॥

किसके हाथ में सोने की पिचकारी है और किसके हाथ में अबीर है ॥२॥

राम के हाथ में सोने की पिचकारी है और सीता के हाथ में गुलाल है ॥३॥

गंगा जल का रंग बन रहा है अर्थात् रंग के स्थान पर गंगा जल का प्रयोग हो रहा है और बालू का गुलाल उड़ रहा है ॥४॥

वह प्रेमी मेरी आँखों में गुलाल डाल गया ॥५॥

सीता और राम का यह फाग खेलना कितना रसमय और आनन्द दायक है। युगल जोड़ी की यह लीला ही भक्तों का सर्वस्व है ॥

(२९)

प्रसङ्ग—पत्नी के द्वारा पति की सुन्दर बाहों की सुकुमारता का वर्णन।

मोरे हरिजी के लामी[5]-लामी बहियाँ;
धेनुहिया[6] नइ - नइ जाय ॥ टेक—
नइ-नइ जाय हो, नइ - नइ जाय;
मोरे हरि जी के लामी-लामी बहियाँ;

१. प्रेमी। २. किस वस्तु का। ३. उज्जवल, सफेद। ४. गुलाल। ५. लम्बी। ६. धनुष।

धेनुहिया नइ - नइ जाय ॥ १ ॥
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
जेवना ना जेवें कि नइ-नइ जाय ॥ २ ॥
मोरे हरि जी०
झझरे गडुअवे गंगा जल पानी;
पनिया ना पीये कि झुकि झुकि जाय ॥ ३ ॥
मोरे हरि जी०
चुनि-चुनि कलिया में सेजिया डसवलीं;
सेजिया ना सोवे कि चुभि-चुभि जाय ॥ ४ ॥
मोरे हरि जी०
पनवा के खिलि-खिलि बिरवा लगवलीं;
बिरवा ना चाभे कि गड़ि गड़ि जाय ॥ ५ ॥
मोरे हरि जी के लामी लामी बहियाँ;
धेनुहिया नइ - नइ जाय ॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे पति की बाहें बड़ी लम्बी-लम्बी तथा कोमल हैं; अतः वे धनुष की तरह झुक जाती हैं ॥१॥

मैंने सोने के थाल में भोजन पति के लिए परोसा था; परन्तु उसने भोजन नहीं किया, क्योंकि उसकी बाहें झुक-झुक जाती हैं ॥२॥

सुराही में मैंने गंगा जल रक्खा; परन्तु उसने नहीं पिया. क्योंकि उसकी बाहें गिलास उठाते ही झुक जाती हैं ॥३॥

मैंने फूलों को चुन-चुनकर सेज पर बिछायी; परन्तु वह उस पर नहीं सोता, क्योंकि कोमल होने के कारण उसके शरीर में फूल चुभ जाते हैं ॥४॥

मैंने पान का बीड़ा प्रेम से लगाया ; परन्तु उसने उसे नहीं खाया, क्योंकि वह उसे चुभ जाता है ॥५॥

पति की सुकुमारता का बड़ा सुन्दर वर्णन इस गीत में किया गया है।

(३०)

प्रसङ्ग—पति के वियोग में रोने से किसी स्त्री की आंखों का लाल होना। परदेश से आने पर स्त्री की यह दशा देख पति का अन्न-जल त्याग देना।

धनि[1] रोइ रोइ अँखियाँ लाली भरी ॥ टेक—
आरे लाली भरी हो गुलाली[2] भरी;

१. स्त्री। २. गुलाल के समान लाल।

धनि रोइ रोइ अँखियाँ लाली[1] भरी ॥ १ ॥
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
जेवना ना जेवें कि लाली भरी ॥ २ ॥
धनि रोइ०
झझरे गडुअवे गंगाजल पानी;
पनिया ना पीये गुलाली भरी ॥ ३ ॥
धनि रोइ०
चुनि-चुनि कलिया सेजिया डसवली;
सेजिया ना सोवे कि लाली भरी ॥ ४ ॥
धनि रोइ०
लँवग खिलि-खिलि बिरवा लगवलीं;
बिरवा ना चाभे कि लाली भरी ॥ ५ ॥
आरे लाली भरी हो गुलाली भरी,
धनि रोइ-रोइ अँखियाँ लाली भरी ॥ ६ ॥

स्त्री की आँखें रोते-रोते लाल हैं। उसकी आँख में गुलाल के समान लालिमा दिखाई पड़ती है, जो लगातार ने से उत्पन्न हुई है ॥१॥

मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा था; परन्तु पति मेरी लाल-लाल आँखों को देखकर दुःख से भोजन नहीं करता है ॥२॥

सुराही में उसके लिए गंगाजल रखा है; परन्तु वह नहीं पीता ॥३॥

फूलों को चुन-चुन कर मैंने सेज बिछायी ; परन्तु वह सेज पर नहीं सोता ॥४॥

प्रत्येक पान में लौंग लगाकर मैंने बीड़ा तैयार किया है; परन्तु वह पान को नहीं खाता है॥५॥

स्त्री ने पति के वियोग में रो-रो कर गुलाल के समान अपनी आँखों को लाल कर लिया है॥६॥

इस गीत में पत्नी की विकलता तथा पति की सहानुभूति दर्शनीय है।

(३१)

प्रसङ्ग—ब्रज में राधा और कृष्ण का विहार-वर्णन।

ब्रज कइले बिहार, राधा किसुन जी दूनो जना[2] ॥ टेक—
दूनो जना हो दूनो जना;
ब्रज कइले बिहार;
राधा किसुन जी दूनो जना ॥ १ ॥
केनिया[3] से आवेली जमुना हो;
केनिया से आवेले धार ॥ २ ॥ ब्रज कइले०

१. लालिमा। २. आदमी। ३. कहाँ से।

काँहावा भगवती मन्दिर हो;
ब्रज होखे बिहार[1] ॥ ३ ॥ राधा किसुन जी०
आरे पुरुब से आवेली जमुना हो;
पच्छिम से आवेले धार ॥ ४ ॥ ब्रज कइले०
नीचे भगवती मन्दिर हो;
ब्रज होखे[2] बिहार ॥ ५ ॥ राधा किसुन जी०

राधा और कृष्ण दोनों ने मिलकर ब्रज में खूब बिहार किया ॥१॥
किधर से यमुनाजी आती हैं और किधर से उनकी धारा आती है ॥२॥
वहाँ भगवतीजी का मन्दिर है, जहाँ ब्रज में सदा बिहार (आनन्द) होता है ॥३॥
पूर्व से यमुनाजी आती हैं और पश्चिम से धारा आती है ॥४॥
नीचे भगवती का मन्दिर है, जहाँ ब्रज में सदा बिहार होता है ॥५॥

(३२)

प्रसङ्ग—ससुराल में आयी हुई किसी सुन्दर बारात का स्त्री के द्वारा वर्णन।

काताना नीक लागे दुआरे के जलसा[3] ॥ टेक—
आरे ससुरू आँगनावा बाड़ा नीक[4] लागे ।
आरे हथिया चमकत आइलि दुआरावा ॥ १ ॥ काताना नीक०
आरे भसुरू आँगनावा बाड़ा नीक लागे ।
आरे घोड़वा टपकत आइल[5] दुआरावा ॥ २ ॥ काताना नीक०
आरे देवर आँगनावा बाड़ा नीक लागे ।
आरे साइकिल झलकत आइल दुआरावा ॥ ३ ॥ काताना नीक०
आरे सँइया आँगनावा बाड़ा नीक लागे ।
आरे मोटर हरखत आइल[6] दुआरावा ॥ ४ ॥ काताना नीक०

द्वार पर का जलसा कितना अच्छा लगता है। जब हाथियाँ चमकती हुई विवाह में आती हैं तो ससुर का आंगन बड़ा अच्छा लगता है ॥१॥

जब घोड़ा अपनी टाप से टपटप करता हुआ आता है, तब जेठ का आँगन बड़ा अच्छा लगता है ॥२॥

जब झलकती हुई नयी साइकिल आती है, तब देवर का आँगन बड़ा अच्छा लगता है ॥३॥

जब मोटर पों-पों की आवाज करती हुई बारात में आती है, तब पति का आंगन भी बड़ा सुन्दर लगता है ॥४॥

१. आनन्द। २. होता है। ३. उत्सव। ४. अच्छा। ५. आया। ६. प्रसन्न होता हुआ।

भोजपुरी बारातों में हाथियों तथा घोड़ों का बड़ा जमघट होता है। आज कल नये फैशन की बारातों में साइकिल और मोटर भी जाने लगी है। ऐसी ही बारात का ऊपर के गीत में वर्णन है।

(३३)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री के द्वारा सास, ननद तथा पति के द्वारा प्रदत्त वस्तुओं का वर्णन।

के देला घइला[1], केइ देला डोरी[2]।
केइ जे देला गिलसिया[3]; अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ १ ॥

सासु देलि घइला, ननदिया देले डोरी।
सइयाँ जे देले गिलसिया; अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ २ ॥

फूटि जइहें घइला, टूटि जइहें डोरी।
खूब माजा देले गिलसिया; अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ ३ ॥

सासु देले लहँगा, ननदी देले ओढ़नी[4]।
सइयाँ जी देले रूमलिया; अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ ४ ॥

फाटि जइहें लहँगा; फाटि जइहें ओढ़नी।
खूब माजा देले रूमलिया; अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ ५ ॥

सासु देले नथिया, ननदी देले झूलनी।
पियवा जे देला अँगुठिया, अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ ६ ॥

टूटि जइहें नथिया, फूटि जइहें झूलनी।
खूब माजा देले अँगुठिया, अभी हम पानी के जाइबि जी ॥ ७ ॥

कौन घड़ा देता है, कौन डोरी देता है, कौन गिलास देता है। मैं पानी भरने के लिए जाऊँगी ॥१॥

सास घड़ा, ननद डोरी तथा पति गिलास देता है॥२॥

घड़ा फूट जायेगा और रस्सी टूट जायेगी; परन्तु गिलास खूब मजा देता है॥३॥

सास लहँगा, ननद ओढ़ने की चादर तथा पति रुमाल देता है॥४॥

लहँगा फट जायेगा, ओढ़नी (चादर) भी फट जायेगी; परन्तु रुमाल खूब मजा देता है॥५॥

सास नथिया, ननद नाक की झुलनी और पति अँगूठी देता है॥६॥

नथिया टूट जायेगी, झुलनी फूट जायेगी, पति के द्वारा दी गयी अँगूठी खूब मजा देगी॥७॥

१. घड़ा। २. रस्सी। ३. गिलास। ४. चादर।

(३४)

प्रसङ्ग—पति के कुएँ पर स्त्री का पानी भरना। जल भरने में अनुभूत कष्ट का पति से निवेदन।

पातर[1] तोरी कुइयाँ ए बालम; रेसम लागलि डोर।
ठाढ़[2] पनिया हम भरीलें ए बालम; मनवा ना लागे मोर ॥ १ ॥
निहुरी[3] के पनिया भरीलें ए बालम; गोड़वा थाहाराइ[4]।
एक फुलवा फूले ए बालम; देहिया रे घाहाराइ[5] ॥ २ ॥
नीमन फूलवा तुरलीं ए बालम; मुठियो ना आमाइ।
बिराहा[6] के मातल धनिया; कोरवो[7] ना सामाइ[8] ॥ ३ ॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ पति! तुम्हारा कुँआ बड़ा पतला है और उसमें रेशम की डोरी लगी हुई है। मैं खड़ी होकर पानी भरती हूँ। परन्तु रेशम की डोर होने पर भी मेरा मन खींचने में नहीं लगता॥१॥

ऐ पति! मैं झुककर उस कुएँ से पानी भरती हूँ, फिर भी मेरा पैर थर्राने लगता है। ऐ पति! केवल एक फूल के तोड़ने के श्रम से ही मेरी देह श्रान्त हो जाती है॥२॥

ऐ पति! मैंने एक सुन्दर फूल तोड़ा; परन्तु बड़े होने के कारण वह मेरी मुट्ठी में नहीं आता। इस पर पति कहता है—वियोग के कारण मतवाली स्त्री आज गोदी में नहीं आती॥३॥

(३५)

प्रसङ्ग—बालक पति के मिलने पर किसी स्त्री का उसे डाँटना तथा उसकी नादानी पर क्रुद्ध होना।

चलली नहाईं[9] रामा जमुना के तीरवा;
बनवारी हो, काक्राना हेराइल[10] माझाधार[11] ॥ १ ॥
आरे सासु मोरे मारे रामा, बाँस के कोइनिया[12],
बनवारी हो, सइयाँ मारे बेंतवन के मार ॥ २ ॥
सबका के देल सिव अन, धन, सोनवाँ;
बनवारी हो, हमरा के लरिका भतार ॥ ३ ॥
लरिका भतार लेके सूतलीं ओसरवा;
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कापार[13] ॥ ४ ॥

१. पतली। २. खड़ी ३. झुक कर। ४. दुःख प्राप्त करना। ५. थकावट मालूम करना। ६. वियोग। ७. क्रोड़, गोदी। ८. आती है, घुसती है। ९. नहाने के लिए। १०. भूल गया। ११. मध्य धारा। १२. बाँस की पतली छड़ी। १३. सिर।

एक डाँट डँटली दोसर डाँट डँटली;
बनवारी हो, रोवे लगलनि लरिका नादान ॥ ५ ॥

चुप होख चुप होख ननदी के भइया;
बनवारी हो, मकई[1] में बोलला हुड़ार[2] ॥ ६ ॥

चललीं बजरिया रामा सब केहू पूछेला;
बनवारी हो, के[3] लगिहन[4] ई[5] जे तोहार ॥ ७ ॥

ससुर के बेटा लगिहें, ननदी के भइया;
बनवारी हो ई त लगिहे सइयाँ हमार ॥ ८ ॥

कोई स्त्री कहती है कि मैं जमुना के तीर पर नहाने के लिए गयी; परन्तु मध्यधारा में मेरा कँगना खो गया ॥१॥

इसके लिए मेरी सास बाँस की पतली छड़ी से मारती है और पति बेतों से पीटता है ॥२॥

वह स्त्री कहती है—ऐ शिव ! तुम सब को अन्न, धन और सोना देते हो; परन्तु तुमने मुझे लड़का (छोटा) पति दे दिया ॥३॥

उस छोटे बालक पति के साथ मैं बरामदे में सो गयी; परन्तु उसकी नादानी पर मेरा शरीर एड़ी से सिर तक जलने लगा अर्थात् मैं अत्यन्त क्रुद्ध हो गयी ॥४॥

मैंने उसको एक बार डाँटा, फिर उसे दूसरी बार ज़ोरों से डांटा। इस पर नादान बालक पति रोने लगा ॥५॥

पति को रोता देखकर मैंने उससे कहा—ऐ ननद के भाई ! तुम चुप हो जाओ; रोओ मत। नहीं तो मक्के के खेत में बोलता हुआ भेड़िया तुम्हें पकड़ लेगा ॥६॥

स्त्री कहती है—जब मैं बाजार पति के साथ जाने लगी; तब रास्ते के सब लोग पूछने लगे कि यह तुम्हारा कौन लगता है, अर्थात् रिश्ते में कौन है ॥७॥

स्त्री ने उत्तर दिया—यह मेरे ससुर का लड़का है, मेरी ननद का भाई है और संबंध में मेरा पति लगता है ॥८॥

नोट—उपर्युक्त आशय का निम्नांकित गीत भी देहातों में प्रचलित है। दोनों का भावार्थ एक ही है; परन्तु शब्दावली में कुछ अन्तर है। पूर्व गीत में नादान पति पर क्रोध दिखलाया गया है, तो इसमें उस पर अधिकार की स्थापना की गयी है।

(३५)

बनवारी हो लोटवा में डोरिओ ना सामाई। टेक०—

सबका के दिहलू[6] सासु लाले लाले बेटवा[7];
बनवारी हो, हमरा के लरिका भतार ॥ १ ॥

---

१. मक्का, जनेरा। २. भेड़िया। ३. कौन। ४. लगेगा। ५. यह। ६. दिया। ७. पुत्र।

लरिका भतार लेके सूतलीं ओसारवा;
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कापार ॥ २ ॥
एक थपरा[1] मरलीं दोसर थपरा मरलीं;
बनवारी हो रोवे लागल लरिका भतार ॥ ३ ॥
घर में से निकलेली सासु बढ़इतिनि[2];
बनवारी हो, के मारल लरिका हमार ॥ ४ ॥
मारे के त मरलीं सासु आपन भतार;
बनवारी हो, ओहू[3] में कुछु लागल बा तोहार ॥ ५ ॥
छिपवा बाजे त सासु बबुआ हो तोहार;
बनवारी हो, ढोल बाजे सइयाँ हमार ॥ ६ ॥
तुहु बिअइलू[4] सासु टटिया[5] लागाई;
बनवारी हो हम लिहली ढोलकी[6] बाजाई ॥ ७ ॥

अर्थ अत्यन्त स्पष्ट है।

(३६)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री के वस्त्र अत्यन्त स्वच्छ होने से दाग़ लगने के डर से उसका पान न खाना. तथा सेज पर न सोना।

दाग लागी रे कि चोप[7] लागी;
हमरा धप[8]-धप चुनरिया में दाग लागी । टेक०—
आरे पनिया ना पीये कि चोप लागी;
साहबानी[9] चुनरिया में दाग लागी ॥ १ ॥
सोने के थारी में जेवना परोसलों;
हमरा धप-धप चुनरिया में दाग लागी ॥ २ ॥
पाँच पाँच पानवा के बिरवा लगवलीं;
आरे बिरवा ना चाभे कि चोप लागी ॥ ३ ॥
कलिया चुनि-चुनि सेजिया डसवलीं; [हमरा धप०]
सेजिया ना सोवे कि दाग लागी ॥ ४ ॥
दाग लागे रे कि चोप लागी;
हमरा धप-धप चुनरिया में दाग लागी ॥ ५ ॥

१. थप्पड़। २. श्रेष्ठ। ३. उसमें भी। ४. पैदा किया। ५. टट्टी, परदा। ६. ढोल, बाजा। ७. आम के डंठल का रस जो उसके तोड़ने पर गिरने लगता है। ८. अत्यन्त स्वच्छ। ९. साफ़।

कोई स्त्री कहती है कि मेरी अत्यन्त स्वच्छ साड़ी में दाग़ अथवा चेप लग जायेगा। मैं पानी भी नहीं पीती हूँ कि कहीं मेरी स्वच्छ साड़ी में दाग़ न लग जाय ॥१॥

मैंने सोने की थाली में भोजन परोसा और पाँच-पाँच पान का बीड़ा लगाया। परन्तु मैं इसलिए नहीं चबाती कि मेरी साड़ी में दाग़ लग जायेगा ॥२—३॥

मैंने फूलों को चुन-चुनकर सेज पर बिछाया परन्तु सेज पर इसलिए नहीं सोती कि मेरी चूनरी में फूलों का दाग़ कहीं न लग जाय ॥४॥

मेरी अत्यन्त स्वच्छ चादर में कहीं दाग़ अथवा चेप न लग जाय ॥५॥

इस गीत में रहस्यवाद की एक बाँकी झाँकी हमें देखने को मिलती है। इसके विशेष विवरण के लिए टिप्पणी देखिए।

(३७)

प्रसङ्ग—चूड़ी पहनाते समय मनिहार के द्वारा किसी स्त्री का हाथ मरोरना। स्त्री का पति से घटना का वर्णन। कायर पति का उसे दण्ड न देने का बहाना।

जात जमुनवा के भरि फिलि[१] पनिया;
आवत जमुनवा अथाह[२] सुन रे गोरिया ॥ १ ॥

ताहि तर[३] उतरेला भइया चुरिहरवा;
तोरा डालवा[४] काइ रे बिकाई ॥ २ ॥ सुनु रे गोरिया।

एक ओर बेचिलें दावाना[५] मरुववा;
एक ओर सुरति[६] तोहार ॥ ३ ॥ सुनु रे गोरिया।

दावाना मरुअवा मोरा मनही न भावे;
हरिअर[७] चुरिया पहिराव ॥ ४ ॥ सुनु रे गोरिया।

जतने चुरिहरवा चुरिया पहिरवलेसि;[८]
ओतने मिरोरे[९] बहियाँ मोर ॥ ५ ॥ सुनु रे गोरिया।

भल[१०] कइले भल कइले भइया चुरिहरवा;
करिहे विदेसिया से जवाब ॥ ६ ॥ सुनु रे गोरिया।

घरी राति गइली, पहर राति गइली;
सवरों का बुनो आँख लोर[११] ॥ ७ ॥ सुनु रे गोरिया।

१. घुटना। २. अगाध। ३. नीचे, घाट पर। ४. बाँस की बड़ी छबड़ी। ५. वस्तु विशेष। ६. सौन्दर्य। ७. हरी-हरी। ८. पहराया। ९. धीरे-धीरे ऐंठना। १०. अच्छा। ११. आँसू।

हम तोहि पूछिले ससुर जी के धियवा;
काहें तोहरा चुनों आँखि लोर ।। ८ ।। सुन रे गोरिया।
जतने चुरिहरवा चुरिया पहिरवलसि;
ओतने मिरोरे बहियाँ मोर ।। ९ ।। सुन रे गोरिया।
अगते[1] तू कहतू साँवरि धेनुका[2] चलइतीं;
सुतला[3] पर कवन[4] उपाय ।।१०।। सुन रे गोरिया।

कोई स्त्री कहती है कि जाते समय जमुना में केवल घुटना भर जल था; परन्तु आते समय जमुना में अथाह जल हो गया ।।१।।

उसी जमुना के किनारे मनिहार पार उतर कर आया। स्त्री पूछती है कि तुम्हारी डलिया में क्या बिक रहा है ।।२।।

उस मनिहार ने उत्तर दिया—एक ओर तो मैं दावाना मरुववा बेचता हूँ और दूसरी ओर तुम्हारे सौन्दर्य को बेचता हूँ ।।३।।

स्त्री ने उत्तर दिया—दावाना मरुववा मुझे अच्छा नहीं लगता। तुम मुझे हरी-हरी चूड़ियाँ पहिनाओ ।।४।।

मनिहार उसे जितनी चूड़ियाँ पहनाता था, वह उतना ही उसकी बाँह मरोरता था ।।५।।

स्त्री ने कहा—ऐ मनिहार! तुमने जो कुछ किया वह अच्छा किया। जब मेरा पति विदेश से लौटकर आयेगा तब तुम उससे जवाब सवाल करना ।।६।।

पति परदेश से लौटा और स्त्री के साथ सोया। एक घड़ी रात बीती; एक पहर रात बीती तब अपनी सुन्दरी की दोनों आँखों में आँसुओं को देखकर पति ने उससे पूछा कि ऐ मेरे ससुर की लड़की! तुम्हारी आँखों में आँसू क्यों झलक रहे हैं ।।७–८।।

स्त्री ने उत्तर दिया—मनिहार जितनी ही मुझे चूड़ियाँ पहनाता था उतना वह मेरे हाथ को मरोरता था ।।९।।

पति ने उत्तर दिया—ऐ साँवली स्त्री, यदि तुम पहले कहती तो मैं धनुष चलाकर मार डालता; परन्तु अब सो जाने पर कौन उपाय करूँ ।।१०।।

इस गीत से पति की कायरता तथा नपुंसकता स्पष्ट प्रकट होती है। उसने सोने का बहाना कर मनिहार से बदला लेने के विचार को सदा के लिये छोड़ दिया। इससे उसकी मनस्विता में बट्टा लगता है। वह अपने 'पति' के धर्म से च्युत हो गया है।

(३८)

प्रसंग—पति के द्वारा दी गई भावज की झुलनी का ननद के द्वारा चुराना। पति का झुलनी के बारे में पूछने पर पत्नी की ननद की शिकायत।

१. पहले। २. धनुष। ३. सो जाने पर। ४. कौन।

पियवा जे चलेले पुरुबी बनिजिया;[1] झुलनी दे गइले गहाँई ।
कथि के सिन्होरवा[2] रे कथि के पेहनवा;[3] झुलनी धरबि रे चराई ।। १ ।।
सोने के सिन्होरवा रे रूपे के पेहनवा; झुलनी धरबि रे चुराई ।
आगि आने[4] गइली रे छोटकी ननदिया; झुलनी ले गइले चुराई ।। २ ।।
बारहो बरसि पर लवटल बनिजरवा; झुलनी माँगेला समुझाई ।
ससुर जी के बिटिया रे रउरी बहिनियाँ; झुलनी ले गइले चुराई ।। ३ ।।
आगि आने गइले रे छोटकी ननदिया; झुलनी ले गइले चुराई ।। ४ ।।

कोई स्त्री कहती है कि जब मेरा पति पूर्व देश (बंगाल) में व्यापार करने के लिए जाने लगा, तब उसने नाक की झुलनी बनवाकर मुझे दी। किस वस्तु का बना सिन्धोरा होगा तथा किसका पेहान (बन्द करने का ऊपरी भाग) होगा, जिसमें मैं अपनी झूलनी को चुराकर रखूँगी ।।१।।

वह स्वतः कहती है—सोने के सिन्धोरे में चाँदी के पेहान से ढककर मैं उसे रखूँगी। जब मैं आग किसी दूसरे के घर से लाने के लिए गई तब छोटी ननद ने उस झुलनी को चुरा लिया ।।२।।

बारह वर्ष पर लौटकर जब मेरा पति घर आया, तब वह झुलनी माँगने लगा। तब मैंने उत्तर दिया मेरे ससुर की लड़की तथा तुम्हारी बहिन ने मेरी झुलनी को चुरा लिया है ।।३।।

जब मैं दूसरे के घर से आग लाने के लिये गयी तभी ननद ने मेरी झुलनी को चुरा लिया ।।४।।

इस गीत में भाई से भावज द्वारा ननद की शिकायत कितनी मार्मिक तथा मीठी है ।।

(३९)

प्रसंग—कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी हुई राधा का कृष्ण के न आने पर पश्चात्ताप करना।

मोहन[5] ना अइले रे। टेक—
बारह बजि गइल, सोलह बजि गइल;
अब बीत गइल सारी रात ।। १ ।।
मोहन ना अइले रे ।
सोने के थारी में जेवना परोसलों; जेवना ना जेवे रे ।
अब बारह बजे के करार[6]; मोहन ना अइले रे ।। २ ।।
झझरे गडुअवा गंगाजल पानी; सइयाँ ना पीये रे ।
अब बीति गइल सारी रात, मोहन ना अइले रे ।। ३ ।।
लँवग खिलि-खिलि बिरवा लगवलीं, बिरवा न चाभे रे ।
अब बीति गइल सारी रात; मोहन ना अइल रे ।। ४ ।।

१. वाणिज्य, व्यापार। २. सिन्दूर रखने के लिए काठ का बना गोल पात्र। ३. ढक्कन जो सिन्धोरे को बन्द करने के लिये लगाया जाता है। ४. लाने के लिये। ५. कृष्ण, पति। ६. वादा।

राधाजी कहती हैं कि बारह तथा सोलह बज गये, सारी रात भी बीत चली; परन्तु कृष्ण जी अभी लौटकर नहीं आये ॥१॥

सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा था। कृष्ण ने बारह बजे आने का वादा किया; परन्तु वे अभी तक नहीं आये और भोजन नहीं किया ॥२॥

सुराही में मैंने गंगाजल रक्खा था। अब सारी रात बीत गयी; परन्तु मोहन नहीं लौटे। अतः उन्होंने जल भी नहीं पिया है ॥३॥

मैंने प्रत्येक पान के बीड़ा में लौंग लगाई। अब सारी रात बीत गयी; परन्तु कृष्ण नहीं आये। अतः उन्होंने पान नहीं खाया ॥४॥

(४०)

प्रसंग—परदेस से लौटे पति की स्त्री से विलास करने की इच्छा। पत्नी के द्वारा वि ोध।

मोरा पिछुआरवा बरोही[१] के फेड़वा[२];
कागावा टरि[३] रे टरि जाइ रे ॥ १ ॥ हमरो नइहरवा०।
बोलहु कागावा सुलछन[४] बोलिया;
जाहु पियवा आवसु आजु रे ॥ २ ॥ हमरो नइहरवा०।
कागावा के बोलिया बिचारहीं ना पवलीं;
पियवा बरोही तर ठाढ़ रे ॥ ३ ॥ हमरो नइहरवा०।
जेवहि बइठेले सार[५] बहनोइया[६];
पियवा जे झाँकेला चुहानि[७] रे ॥ ४ ॥ हमरो नइहरवा०।
का तुहु पियवा रे झाँकेल[८] चुहनिया;
बिनु रे गवन रितु[९] नाहिं रे ॥ ५ ॥ हमरो नइहरवा०।

कोई प्रोषित्पतिका स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे बरगद का वृक्ष है। उस पर कौआ बैठकर टाँय-टाँय की आवाज करता है ॥१॥

स्त्री कौए से कहती है—ऐ कौए ! तुम शुभ मंगलमय बोली बोलो, जिससे मेरा प्रियतम आज घर चला आए ॥२॥

स्त्री अभी कौवे की बोली पर पूर्ण रूप से विचार भी न कर पायी थी कि पति वट वृक्ष के नीचे आकर खड़ा हो गया ॥३॥

साला और बहनोई (पति और पत्नी का भाई) दोनों भोजन करने के लिए एक साथ बैठे। इतने में पति रसोई घर का भीतरी भाग झाँककर देखने लगा ॥४॥

१. बरगद वृक्ष। २. पेड़। ३. टर्र टर्र करना। ४. सुलक्षण। ५. शाला। ६. बहन का पति। ७. रसोई घर का भीतरी भाग। ८. देखते हो। ९. समय, काल।

इस पर स्त्री ने कहा—ऐ पति ! तुम चुहान झाँककर क्या देख रहे हो ? बिना गौना कराये विलास का समय नहीं आ सकता। अतः यदि तुम उपभोग करना चाहते हो, तो मेरा गौना शीघ्र कराओ ॥५॥

(४१)

प्रसंग—किसी गोपी की कृष्ण से अपना आँचर छोड़ने की प्रार्थना; परन्तु कृष्ण का न छोड़ने का बहाना करना।

ए बनवारी[1] अँचरवा छोड़ि द । टेक—

इहवाँ[2] ना छोड़बि छोड़बि सड़क पर;
जहवाँ बेचेला बयपारी ॥ १ ॥ अँचरवा छोड़ि द०।
इहवाँ ना छोड़बि छोड़बि टीसन[3] पर;
जहवाँ चलेले रेलगाड़ी ॥ २ ॥ अँचरवा छोड़ि द०।
ए बनवारी अँचरवा छोड़ि द;
ए बनवारी अँचरवा छोड़ि द ॥ ३ ॥ अँचरवा छोड़ि द०।
इहवाँ ना छोड़बि छोड़बि सड़क पर;
जहवाँ चलेले मोटर गाड़ी ॥ ४ ॥ अँचरवा छोड़ि द०।
इहवाँ ना छोड़बि छोड़बि पलँग पर;
जहवाँ होखेला[4] मजेदारी[5] ॥ ५ ॥ अँचरवा छोड़ि द०।
ए बनवारी अँचरवा छोड़ि द ।

कोई गोपी कृष्णजी से कहती है कि ऐ बनवारी ! तुम आँचर को छोड़ दो। इस पर कृष्णजी उत्तर देते हैं—मैं तुम्हारा आँचर यहाँ नहीं छोड़कर सड़क पर छोड़ूँगा, जहाँ व्यापारी अपना सामान बेचता है ॥१॥

मैं यहाँ आँचर नहीं छोड़ूँगा बल्कि स्टेशन पर छोड़ूँगा, जहाँ पर रेलगाड़ी चलती है ॥२॥

गोपी फिर कहती है—ऐ बनवारी ! तुम मेरे आँचर को छोड़ दो ॥३॥

कृष्ण फिर कहते हैं—मैं यहाँ पर आँचर न छोड़कर सड़क पर छोड़ूँगा जहाँ पर मोटरगाड़ी चलती है ॥४॥

मैं यहाँ पर तुम्हारे आँचर को न छोड़कर पलंग पर छोड़ूँगा, जहाँ पर अत्यधिक आनन्द होगा—खूब मजा आयेगा ॥५॥

१. कृष्ण या पति। २. यहाँ। ३. स्टेशन। ४. होता है। ५. आनन्द।

(४२)

प्रसंग—किसी स्त्री की—जिसका पति बड़ा है—शिव की पूजा कर छोटा पति प्राप्त करने की लालसा। सखी का उसे समझाना।

ए साँवर गोरिया, फुलवा लोढ़े हम जईतीं[1]। टेक—

बाबा मोरे रहिते, फुलवा लगइते;
फुलवा लोढ़े हम जइतीं ॥ १ ॥ ए साँवर०।

फुलवा लोढ़ि लोढ़ि भरलीं चँगेलिया[2];
ओहि बउरहवा[3] पर चढ़इतीं ॥ २ ॥ ए साँवर०।

फुलवा चढ़यले भोला भइले परसनवा[4];
कवन बरवा[5] हम मँगितीं ॥ ३ ॥ ए साँवर०।

फुलवा चढ़वले भोला देले बरदनवा;
छोटका बलमुआ हम पइतीं ॥ ४ ॥ ए साँवर०।

सखी समुझावेली पथल[6] करु छतिया;
आपन बलमुआ हम सेइती[7] ॥ ५ ॥ ए साँवर०।

कोई स्त्री अपनी सखी से कह रही कि ऐ सुन्दरी गौरवर्ण वाली सखी। यदि मेरे पिताजी होते, तो वे बाग में फूल लगाते और उसे चुनने के लिए मैं जाती ॥१॥

फूलों को चुन-चुनकर मैं अपनी चंगुली में भरती और उन्हें 'बउरहा' (पागल, मस्त) शिवजी पर चढ़ाने के लिए ले जाती ॥२॥

फूल के चढ़ाने से भोला (शिव) प्रसन्न होते और मैं उनसे वर माँगती ॥३॥

फूल के चढ़ाने से प्रसन्न होकर शिवजी मुझे वर देते और फलस्वरूप छोटा पति (बालम) वरदान में माँगती और प्राप्त करती ॥४॥

इस पर सखी समझाती हुई कह रही है कि तुम अपना हृदय पत्थर के समान कड़ा बना लो और यही वर शिव से माँगो कि मैं अपने प्रथम बड़े पति की ही सेवा करती रहूँ ॥५॥

(४३)

प्रसंग—किसी पतिगर्विता स्त्री की उक्ति।

मोरा अँगनइया[8] में फूल के बहार बा[9]। टेक—

बेला भी फूले चमेली भी फूले;
सब फूल-बनवा में राजा गुलाब बा ॥ १ ॥ मोरा अँगनइया०।

१. जाती। २. बाँस की छोटी दौरी। ३. पागल। ४. प्रसन्न। ५. वर ६. पत्थर। ७. सेवा करती। ८. आँगन। ९. है।

तबला भी बाजे, सरंगी भी बाजे;
सब बाजन में नामी[1] सितार बा ॥ २ ॥ मोरा अँगनइया० ।

जूही भी फूले चंपा भी फूले;
सब फूलन में राजा गुलाब बा ॥ ३ ॥ मोरा अँगनइया० ।

डिपटी भी बइठे कलट्टर भी बइठे;
सबसे सुन्नर[2] सँइया हमार बा ॥ ४ ॥

मोरा अँगनइया में फूल के बहार बा ।

कोई स्त्री कहती है मेरे आँगन में फूलों की बहार है। यहाँ बेला भी खिलता है, चमेली भी खिलती है और फूलों के बन में गुलाब सब का राजा है॥१॥

मेरे आंगन में तबला भी बजता है, सारंगी भी बजती है; परन्तु सब बाजों में सितार नामी (प्रसिद्ध) है॥२॥

यहाँ जूही भी फूलती है, चंपा भी फूलता है। सब फूलों में गुलाब श्रेष्ठ है॥३॥

मेरे आँगन में डिप्टी भी बैठते हैं, कलक्टर भी बैठते हैं; परन्तु सबसे सुन्दर हमारा पति है॥४॥

पतिगर्विता स्त्री का यह कितना सुन्दर उदाहरण है।

(४४)

प्रसंग—हाजीपुर के मेले में किसी स्त्री की झुलनी का खो जाना और इसके लिए सास और पति का उसे पीटना।

हाजीपुर के हाट[3] में हेराइल[4] हो;
मोरा सोने के झुलनिया ॥ १ ॥ टेक—

सासु मोर मारे ननदि गरिआवे[5];
सइयाँ मारे बाँस के कोइनिया[6] हो ॥ २ ॥ मोरा सोने के० ।

सासु मोर खोजे ननदि खोजवावे;
पिया ढूंढ़े नाक के निसनिया[7] हो ॥ ३ ॥ मोरा सोने के० ।

सासु मोर रोवे ननदि आँसू पोंछे;
सइयाँ भइले आजु के बिसनियाँ[8] हो ॥ ४ ॥

हाजीपुर के हाट में हेराइल हो;
मोरा सोना के झुलनिया[9] ॥ ५ ॥

१. प्रसिद्ध। २. सुन्दर। ३. बाजार। ४. खो गयी। ५. गाली देती है। ६. बांस की पतली छड़ी। ७. निशान। ८. रुष्ट। ९. झुलनी (नाक का एक गहना)।

कोई स्त्री कहती है कि हाजीपुर के बाजार (मेला) में मेरी सोने की झुलनी खो गयी ॥१॥

इस अपराध के कारण सास मुझे मारती है, ननद गाली देती है और पति बाँस की पतली छड़ी से मुझे पीटता है ॥२॥

सास मेरी झुलनी खोजती है, ननद खोजवाती है और पति मेरे नाक की निशानी (झुलनी) को ढूँढ़ता है ॥३॥

झुलनी खो जाने के दुःख से मेरी सास रोती है, ननद आँसू पोंछती है और पति मुझसे रुष्ट हो गया है ॥४॥

हाजीपुर मेले में मेरे नाक की झुलनी जो सोने की थी—खो गयी ॥५॥

(४५)

प्रसंग—तालाब में किसी स्त्री की झुलनी खो जाने पर मल्लाह द्वारा जाल लगाकर उसे निकालना।

भुलाइ गइले ना—टेक

मूड़[1] मीसे[2] गइली हम आमा के सँगवा;
भुलाइ गइले ना; मोर तीन पात[3] झुलनियाँ ॥ १ ॥
भुलाइ गइले ना०।

कोठवा पर पूछेला लहुरा[4] देवरवा काहे रे बिनुना;
तोर मुँहवा सुखइले[5] काहे रे बिनु ना ॥ २ ॥
तोर मुँहवा सुख०।

पान बिनु बबुआ हो मुँहवा सुखइले;
झुलनिया बिनु ना, तजबो आपन परानवा[6] ॥ ३ ॥
झुलनिया बिनु ना०।

मोरा पिछुअरवा मलहवा बेटउवा;[7]
खोजि रे देहुना, मोर नइहर के झुलनिया ॥ ४ ॥
खोजि रे देहुना।

एक जाल लवलसि[8] दोसर जाल लवलसि;
तीसर जालवा ना, आइल मोर झुलनिया ॥ ५ ॥
तीसर जालवा ना।

१. सिर। २. मलकर साफ़ करना। ३. तीन पत्तीवाली। ४. छोटा। ५. सूख गया। ६. प्राण। ७. बेटा, लड़का। ८. लगाया।

कोई स्त्री कहती है कि मैं अपनी माता के साथ सिर के बालों को साफ करने के लिए तालाब के किनारे गयी थी; परन्तु मेरी झुलनी वहाँ भूल गयी ॥१॥

कोठे पर छोटा देवर मुझसे पूछने लगा कि किस वस्तु के बिना तुम्हारा मुँह सूख गया है ॥२॥

भावज ने उत्तर दिया—ऐ बच्चा! पान के बिना मेरा मुँह सूख गया है। झुलनी के न मिलने पर उसके बिना मैं अपने प्राणों को छोड़ दूँगी ॥३॥

मेरे घर के पीछे रहनेवाले ऐ मल्लाह के लड़के, मेरे मायके की झुलनी को तुम खोज दो ॥४॥

उसने एक जाल लगाया, दूसरी बार भी लगाया; परन्तु व्यर्थ गया। लेकिन जब उसने तीसरी बार जाल लगाया, तब मेरी नाक की झुलनी चली आई (मिल गई) ॥५॥

(४६)

प्रसंग—कृष्ण के वियोग से दुःखी किसी गोपी का विरह वर्णन।

कब होइहें दरसनवा[1] हो; मोरा सामसुनर[2] के। टेक—
सपना में देखलीं भवनवा हो; अपना सामसुनर के ॥ १ ॥

कुबजा से नेहिया[3] लगवले हो; हमरा के छोड़ि के।
ना जानी कवने करनवा[4] हो; हमरा के तेजि के ॥ २ ॥

आधिराति बोलेला पपिहरा[5] हो; जियरा में बेधि के।
नयना से झरेला नीरवा हो; सुमिरि सामसुनर के ॥ ३ ॥

लिखियो न भेजेला सनेसवा[6] हो; आपन सामसुनर के।
गुनि-गुनि[7] जागेला मदनवा[8] हो; आपन सामसुनर के ॥ ४ ॥

कब होइहें दरसनवा हो; मोरा सामसुनर के ॥ ५ ॥

कोई गोपी पूछती है कि पति से मेरा दर्शन कब होगा अर्थात् कृष्ण से कब मिलूँगी। स्वप्न में मैंने अपने पति का भवन (मथुरा) देखा ॥१॥

न मालूम किस कारण कृष्ण ने हमको छोड कुबजा से नेह लगा लिया है॥२॥

१. दर्शन। २. कृष्ण। ३. स्नेह, प्रेम। ४. कारण। ५. पपीहा। ६. सन्देश। ७. स्मरण कर। ८. कामदेव।

आधी रात में जब पपीहा 'पी कहाँ, पी कहाँ' बोलता है, तब कृष्ण के वियोग से मेरा हृदय फटने लगता है और उनका स्मरण कर आखों से आँसुओं की झड़ी लग जाती है ॥ ३ ॥

कृष्ण अपना कुशल-समाचार लिखकर भी नहीं भेजते। उनका स्मरण कर मेरे हृदय में मदन (कामदेव) जाग उठता है ॥ ४ ॥

श्याम का दर्शन कब होगा ॥ ५ ॥

(४७)

प्रसंग — किसी गोपी का मथुरा में दही बेचने के लिए जाना। कृष्ण का उसके साथ उत्पात करना।

झारि[1] लेली केसिया, सँवारि लेली मंगिया से टीकि[2] लेली ना ।
ओहि सुन्नर सेनुरवा से; टीकि लेली ना ॥ १ ॥

कजरा जे कइली मटुकि सिर धइली, चलत भइली ना ।
दही बेंचे मथुरा नगरिया; चलत भइली ना ॥ २ ॥

एक गली गइली, दोसर गली गइली, तीसर गली ना ।
मिलले मोहन जी रसिकवा; तीसर गली ना ॥ ३ ॥

दही मोर खइले मटुकि सिर फोरले, बहाइ देले ना ।
मोर दही के मथनिया, बहाइ देले ना ॥ ४ ॥

ओरहन[3] देबे गइली जसोदा आंगनवा; तोहार बेटवा ना ।
जसोदा करेला उतपतवा[4] तोहार[5] बेटवा ना ॥ ५ ॥

कोई कामिनी गोपी कह रही है कि मैंने बालों को झारकर, अपनी माँग को सँवार कर उसे सुन्दर सिन्दूर से भर लिया ॥१॥

मैंने आँखों में काजल लगाया, मटके को सिर पर रख लिया और दही बेचने के लिए मथुरा नगरी को चल पड़ी ॥२॥

मैं एक गली में गयी, दूसरी गली में गयी; परन्तु तीसरी गली में प्रेमी, रसिक कृष्णजी मिल गये ॥३॥

१. बालों को साफ करना। २. माँग भरना। ३. उलाहना। ४. उत्पात। ५. तुम्हारा।

उन्होंने मेरे दही को खा लिया, दही के मटके को फोड़ दिया और मेरी मथानी को जमुना में बहा दिया ॥४॥

गोपी यशोदा के पास उनके आँगन में उलाहना देने के लिए गयी और कहने लगी कि ऐ यशोदा! तुम्हारा लड़का बड़ा उत्पात करता है ॥५॥

(४८)

प्रसंग — जमुना में जल भरने के लिए गयी हुई किसी ग्वालिन के साथ कृष्ण की क्रीड़ा।

जल कइसे भरीं जमुना जी बाड़ी[1] गहरी। टेक—

खाड़ा[2] भरीलें त साम निरेखेले;
निहुरी[3] भरीलें भिजेली[4] चूनरी ॥ १ ॥
जल कइसे भरी।

गढ़ परबतवा[5] से आइलि गोआलिन;
बालक गोद, सिर पर गगरी ॥ २ ॥
जल कइसे भरी।

धीरे धीरे घर चलु पनिया गिरत बाटे;
गोदवा के लरिका रोवेला डहरी ॥ ३ ॥
जल कइसे भरी।

छोड़ु छोड़ु साम जी मोर आँचारवा;
घर जाये दे जनि करु रगरी[6] ॥ ४ ॥
जल कइसे भरी जमुना जी बाड़ी गहरी।

कोई गोपी कहती है कि जमुना गहरी हैं; अतः मैं जल कैसे भरूँ। यदि खड़ी-खड़ी जल भरती हूँ, तो कृष्ण देखते हैं और यदि झुककर भरती हूँ, तो मेरी चुनरी भीगने लगती है ॥१॥

कोई ग्वालिन बहुत दूर से पानी भरने के लिए गोद में बालक तथा सिर पर घड़ा लेकर आयी ॥२॥

कृष्णजी उससे कहने लगे —ऐ ग्वालिन! धीरे-धीरे मेरे घर चलो, क्योंकि घड़े का पानी गिर रहा है और तुम्हारी गोदी का बालक रास्ते में रो रहा है ॥३॥

१. है। २. खड़ा। ३. झुककर। ४. भीगती है। ५. पर्वत, दूर स्थान। ६. झगड़ा।

(कृष्ण ने इतना कहकर उसका आँचर पकड़ लिया) इस पर वह ग्वालिन कहती है— ऐ कृष्ण! मेरा आँचर तुम छोड़ दो। मुझे अपने घर जाने दो। व्यर्थ में मुझसे झगड़ा मत करो।।४।।

(४९)

प्रसंग — स्त्री के मायके चले जाने पर किसी पति का उसके वियोग में फूट-फूट कर रोना।

गोरिया चलेले नइहरवा, बलमु अँचरा धइ[1] के रोवे। टेक—

बाग में रोवे बगइचा में रोवे;
गूलरि[2] के पेड़[3] तर सुसुकि मारि रोवे ।। १ ।। गोरिया चलेले०।

दुअरा पर रोवे, दलनिया[4] में रोवे;
चउकी पर मुड़िया[5] पटकि के रोवे ।। २ ।। गोरिया चलेले०।

सेज पर रोवे, पलंग पर रोवे;
खटिया के पाटी पकड़ि के रोवे ।। ३ ।।

गोरिया चलेले नइहरवा बलमु अँचरा धइ के रोवे ।। ४ ।।

कोई स्त्री अपने मायके जा रही है और उसका प्रेमी पति उसके आँचर को पकड़ कर रो रहा है। वह बाग में, बगीचे में, तथा गूलर के पेड़ के नीचे सुसुक-सुसुक कर रोता है ।।१।।

वह पत्नी-वियोग से दुःखी पति द्वार पर, दालान (बड़ा हाल) में तथा चौकी (लकड़ी के तख्ते) पर अपने सिर को पटक-पटक कर रोता है।।२।।

स्त्री का स्मरण कर वह सेज तथा पलंग पर रोता है और खाट की पाटी को पकड़कर रोता है।।३।।

सुन्दरी स्त्री के मायके जाते समय उसका पति उसका आँचर पकड़ कर रो रहा है ।।४।।

स्त्री के वियोग में पति का ऐसा कारुणिक विलाप बहुत कम पाया जाता है। स्त्रियाँ तो पति के वियोग में प्रायः रोती हैं; परन्तु कठोर हृदय पुरुष बहुत कम रोते हैं। इस गीत में पति की विह्वलता उसके सच्चे तथा अटूट प्रेम को सूचित करती है।।

१. पकड़कर। २. गूलर। ३. वृक्ष। ४. दालान (पुरुषों के बैठने का बड़ा कमरा या हाल)। ५. सिर।

(५०)

प्रसंग — सौतों के साथ पति का अपनी प्रधान स्त्री के द्वारा प्रदत्त आदर सत्कार का ग्रहण।

आहो राजा गलिया में बाड़ा बहार बा । टेक—

अगल बगल सवतिनियनि[1] के जेंवना ।
आहो राजा बिचवा में थाली तोहार[2] बा ॥ १ ॥ आहो राजा० ।

अगल बगल सवतिनियनि के गेंड़आ ।
आहो राजा बिचवा में बोतल सराब बा ॥ २ ॥ आहो राजा० ।

अगल बगल सवतिनियनि के बिरवा ।
आहो राजा बिचवा में लाची[3] तोहार बा[4] ॥ ३ ॥ आहो राजा० ।

अगल बगल सवतिनियनि के सेजिया ।
आहो राजा बिचवा में तकिया तोहार बा ॥ ४ ॥

आहो राजा[5] गलिया में बाड़ा बहार बा ॥ ५ ॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ राजा ! मेरी गली में बड़ा आनन्द है। आस-पास में तुम्हारी सौतों के लिए भोजन परोसा गया है और बीच में तुम्हारी थाली रखी गई है ॥१॥

अगल-बगल सौतों को पानी पीने के लिए रखा है और बीच में तुम्हारे लिए शराब की बोतल पीने के लिए रक्खी है ॥२॥

आस-पास सौतों के लिए पान के बीड़े है और बीच में तुम्हारे लिए इलायची रक्खी है ॥३॥

अगल-बगल सौतों के सोने के लिए जगह है और बीच में तुम्हारे सोने के लिए तकिया रक्खा है ॥४॥

ऐ राजा ! गली में बड़ा आनन्द है ॥५॥

सौतिया-डाह प्रसिद्ध है। परन्तु इस गीत में इसका नितान्त अभाव पाया जाता है। स्त्री की सहिष्णुता आदर्श रूप में यहाँ चित्रित की गयी है। सौतों में इतना उत्कट प्रेम अन्यत्र दुर्लभ है।

१. सौत। २. तुम्हारा। ३. इलायची। ४. है। ५. पति।

कजली

(१)

प्रसंग—देश-सेवा के लिए किसी स्त्री का जोगिन बन जाना।

जो पिया बनिहें रामा देसवा लागि[1] जोगिया।
हमहू बनि जइबों तब जोगिनिया ए हरी ॥ १ ॥
देसवा के निदिया रामा सोइबो अरु जगइबो[2]।
देहिया में रमइबों भल भभुतिया[3] ए हरी ॥ २ ॥
जहवाँ जहवाँ जइहे रामा हमरो रावल जोगिया।
सथवा सथवा डोलबि भरले झोरिया ए हरी ॥ ३ ॥
भूखिया पिअसिया[4] रामा तनिको ना लगिहें।
बजर बनाइबि आपन देहिया ए हरी ॥ ४ ॥
घरवा घरवा जाइ रामा करबि उपदेसवा।
सुफल बनाइबि हम जिनिगिया[5] ए हरी ॥ ५ ॥

कोई देशभक्ति-परायणा स्त्री कह रही है कि यदि मेरा पति देश की सेवा करने के लिए जोगी बन जायेगा, तो मैं भी जोगिन बन जाऊँगी ॥१॥

देश को सेवा की चिन्ता लिए ही मैं सोऊँगी और जागूँगी और अपनी देह में भस्म रमाऊँगी ॥२॥

जहाँ-जहाँ मेरा पति जायेगा, वहाँ-वहाँ मैं झोला को भरकर साथ-साथ जाऊँगी ॥३॥

देश की सेवा में मुझे भूख, प्यास तनिक भी नहीं लगेगी और मैं अपने को वज्र के समान कठोर बना लूंगी ॥४॥

मैं घर-घर जाकर के देशभक्ति का उपदेश करूँगी और इस प्रकार अपने जीवन को सफल बनाऊँगी ॥५॥

(२)

प्रसंग—देश-प्रेम में डूबी हुई स्त्री का चरखा चलाने के उत्साह का वर्णन।

१. लिए। २. जागूंगी। ३. विभूति (भस्म)। ४. प्यास। ५. जिन्दगी, जीवन।

सावन भदउआ बरिसतिया[1] के दिनवा रामा ।
बैठि के चरखवा घरवा कातबि ए हरी ॥ १ ॥
अपने त कतबों अवरु सखिया से कतइबों ।
गांधी के हुकुमवा हम मानबि ए हरी ॥ २ ॥
खोलि देबि घरवा में चरखा इसकुलवा[2]।
सब के हम चरखा सिखाइबि ए हरी ॥ ३ ॥
अपने नगरिया हम त करबि सुरजवा[3] ।
देसवा में अलख[4] जगाइबि ए हरी ॥ ४ ॥

कोई स्त्री कहती है कि सावन और भादों—ये वर्षा ऋतु के दिन हैं । मैं बैठकर के चरखा चलाऊँगी ॥१॥

मैं स्वयं चरखा कातूँगी और अपनी सखियों से कतवाऊँगी। मैं महात्मा गांधी की आज्ञा को मानूँगी ॥२॥

मैं अपने घर में चरखा कातने की पाठशाला खोल दूँगी और सबको चरखा चलाना सिखलाऊँगी ॥३॥

मैं अपने नगर में स्वराज की स्थापना करूँगी और देश भर में अलख जगाऊँगी अर्थात् जोगिन का रूप धारण कर चरखा-मन्त्र का प्रचार करूँगी ॥४॥

(३)

प्रसंग—पूतना के द्वारा कृष्ण की हत्या का प्रयत्न; परन्तु कृष्ण का सुरक्षित बच जाना तथा उसे मारकर यमपुरी पहुँचाना।

कहवन्हि[5] किसुन जी के भइले जनमवा रामा ।
काँहावा बाजत बा बधैया ए हरी ॥ १ ॥
मथुरा में किसुन जी के भइले जनमवा रामा ।
गोकुला में बाजत बधैया ए हरी ॥ २ ॥
कंस महलिया से निकले रानी पूतना ।
चलि भइली नन्द के महलिया ए हरी ॥ ३ ॥
बालाका उठाई रामा छतिया[6] लगवली ।
दुनो छतिया जहर लगवली ए हरी ॥ ४ ॥
नन्द महलिया से निकलेली जसोदा रानी ।
बड़ भाग निकले मोर कन्हैया ए हरी ॥ ५ ॥
सोनवा से चनिया[7] रामा दिहली दछिनवा[8] ।
पूतना के भेजली देस दछिन[9] ए हरी ॥ ६ ॥

---

१. बरसात। २. स्कूल। ३. स्वराज्य। ४. गोरखपन्थी साधुओं का 'अलख निरंजन' मन्त्र का उच्चारण। ५. कहाँ। ६. स्तन से। ७. चाँदी। ८. दक्षिणा। ९. दक्षिण देश।

कृष्णजी का जन्म कहाँ हुआ है और कहाँ पर आनन्द का बधावा बज रहा है ॥१॥

मथुरा में श्री कृष्णजी का जन्म हुआ है और गोकुल में (नन्द के घर) आनन्द का बाजा बज रहा है ॥२॥

कंस के महल से राक्षसी पूतना निकलकर नन्द के महल में पहुँच गयी ॥३॥

बालक श्रीकृष्ण को उठाकर उसने अपनी छाती से (स्तन पीने के लिए) लगा लिया। उसके दोनों स्तनों में विष लगा हुआ था ॥४॥

नन्द के महल से यशोदा रानी निकलीं और कहने लगीं कि मेरा कन्हैया बड़ा भाग्यशाली है, क्योंकि विषपान करने पर भी यह जीवित बच गया ॥५॥

इस उत्सव में उन्होंने सोना और चाँदी ब्राह्मणों को दक्षिणा रूप में दिया और कृष्ण ने पूतना को दक्षिण देश (यमपुरी) को पहुँचा दिया।

(४)

प्रसंग—सावन में कजली खेलने जाने के लिए भावज की उक्ति ननद के प्रति।

कइसे खेले जाइबि हम सावन में कजरिया;
अब बदरिया[1] घेरि अइले ननदी। टेक—

तू त चलल्ू अकेली, तोरा संग न सहेली;
गुण्डा घेरि लीहें तोहि के डगारिया[2] ॥ १ ॥
बदरिया घेरि अइले ननदी।

कतना जना खइहें गोली, कतना जइहें फँसिया;[3] डोरी
कताना जना पीसहें, जेलखाना में चकरिया[4] ॥ २ ॥
बदरिया घेरि अइले ननदी।

भावज अपनी ननद से कह रही है कि ऐ ननद! अब बादल घिर आये, मैं सावन के महीने में कजली खेलने के लिए कैसे जाऊँ ॥२॥

ननद कहती है कि ऐं भावज! तुम अकेली कजली खेलने जा रही हो, तुम्हारे संग में कोई सखी नहीं है। रास्ते में तुम्हें कहीं गुण्डे न घेर लें ॥२॥

इस पर भावज उत्तर देती है—यदि कोई दुष्टता करेगा, तो फलतः कितने मनुष्य गोली खायेंगे, कितने को फाँसी पर चढ़ना पड़ेगा और कितने जेलखाने में जाकर चक्की पीसेंगे ॥३॥

(५)

प्रसंग—पत्नी के द्वारा पति की विविध सेवाओं का वर्णन।

१ बादल। २. मार्ग, रास्ता। ३. फाँसी। ४. चक्की।

आरे बाबा बहेला पुरवैया,[1] अब पिया मोरे सोवे ए हरी । टेक

सोने के थारी में जेवन[2] परोसलों;
सइयाँ जेवेले आधिराति, देवर बड़ा भोरे ए हरी ॥ १ ॥

चाँदी के लोटा में पानी परोसलों;
सइयाँ पियेले आधिराति, देवर बाड़ा भोरे ए हरी ॥ २ ॥

चुनि-चुनि कलिया सेजिया दसवली;
सइयाँ सूतेले[3] आधिराति, देवर बाड़ा भोरे ए हरी ॥ ३ ॥

लँवग खिलि-खिलि बिरवा लगवलीं;
सइयाँ चाभेले आधिराति, देवर बाड़ा भोरे ए हरी ॥ ४ ॥

आरे बाबा बहेला पुरवैया[4]; अब पिया मोरे सोवे ए हरी ॥

कोई स्त्री कहती है कि पुरवैया हवा बह रही है और मेरा पति सुख से सो रहा है। सोने की थाली में मैंने भोजन परोसा है। मेरा पति तो आधी रात को खाता है ; परन्तु देवर साँझ को ही खाता है ॥१॥

चाँदी के लोटे में मैंने पीने का पानी दिया है। मेरा पति आधी रात को पीता है, परन्तु देवर बहुत जल्दी ही पी लेता है ॥२॥

मैंने फूलों को चुन-चुनकर सेज बिछायी है। मेरा पति आधीरात को ; परन्तु देवर बहुत ही जल्दी सो जाता है ॥३॥

लौंग लगाकर मैंने पान का बीड़ा तैयार किया है। पति आधी रात को खाता है ; परन्तु देवर पान को बहुत पहले ही खा लेता है ॥४॥

(६)

प्रसंग—सावन में राधा-कृष्ण के झूला-झूलने का वर्णन।

झूलना झूले राधा प्यारी; संग में कृष्ण मुरारी ना । टेक

कथिके[5] पालाना कथि के डोरी; कथि के गद्दिया[6] ना ॥ १ ॥
झूलना झूले०

सोने के पालाना, रेसम के डोरी; चनन के गद्दिया ना ॥ २ ॥
झूलना झूले०

एक ओर झूले राधिका प्यारी; एक ओर कृष्ण मुरारी ना ॥ ३ ॥
झूलना झूले०

१. वायु, हवा। २. भोजन। ३. सोता है। ४. पूरब की हवा। ५. किस चीज का। ६. वृक्ष।

राधाजी कृष्ण के साथ झूला झूल रही हैं। किस वस्तु का पालना है, किसकी डोरी है और किस वृक्ष की डाल में झूला बँधा हुआ है ॥१॥

सोने का झूला है, रेशम की डोरी है और चन्दन के वृक्ष में झूला बँधा है ॥२॥

झूले के एक ओर राधाजी झूल रही हैं और दूसरी ओर कृष्ण मुरारी झूलते हुए आनन्द ले रहे हैं ॥३॥

नोट—हिन्दी के कवि ने राधाकृष्ण के झूलने का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है।

(७)

प्रसंग—पति के विदेश जाते समय पति-पत्नी का मीठा परिहास ।

रुनझुन खोल ना केवड़िया; हम विदेसवा जइबो ना । टेक—

जो मोरे सइयाँ तुहु जइब विदेसवा; तू विदेसवा जइबो ना ।
हमरा भइया के बोलाद[1]; हम नइहरवा जइबो ना ॥ १ ॥

रुनझुन खोल०

जो मोरे धनिया[2] तुहु जइबू नइहरवा; नइहरवा जइहू ना ।
जाताना[3] लागल बा रूपैया; ओतना देइ के जइहू ना ॥ २ ॥

रुनझुन खोल०

जो मोरे सइयाँ तुहु लेब अब रूपैया; तू रूपैया लेब ना ।
जइसन बाबा घरवा रहनीं; ओइसन[4] करके दीह ना ॥ ३ ॥

रुनझुन खोल०

पति अपनी स्त्री से कह रहा है कि तुम दरवाजे को खोलो मैं आज विदेश जाऊँगा। स्त्री कहती है कि ऐ पति ! यदि तुम विदेश को जाओगे, तो मेरे भाई को बुला दो। मैं अपने मायके जाऊँगी ॥१॥

पति ने कहा—ऐ स्त्री ! यदि तुम मायके जाओगी, तो तुम्हारे विवाह में जितना हजार रुपया मेरा लगा है उतना दे दो, तब जाओ ॥२॥

स्त्री ने उत्तर दिया—ऐ पति! यदि तुम अपना रुपया लेना चाहते हो, तो मेरा जैसा शरीर पिता के घर में था, वैसा ही कर दो। भावार्थ यह है कि तुम्हारे भोग के कारण मेरा शरीर क्षीण हो गया है ॥३॥

पति-पत्नी का यह परिहास कितना मीठा तथा हृदयस्पर्शी है। यह सहृदयों के हृदय में गुदगुदी पैदा किये बिना नहीं रह सकता।

१. बुला दो। २. स्त्री। ३. जितना। ४. वैसा ही।

(८)

प्रसंग—सावन में वर्षा का वर्णन।

बरिसे लागल भगवनवा; बरखा[1] खूबे होला ना। टेक—
रात में बरिसे दिनहू में बरिसे; बरिसे लगले ना ॥ १ ॥
बरिसे लागल०
बादल गरजे, बिजुरी[2] चमके; दम-दम दमके ना ॥ २ ॥
बरिसे लागल भगवनवा; बरखा खूबे होला ना।

भगवान वर्षा करने लगे। वर्षा मूसलाधार होने लगी। दिन-रात वर्षा का ताँता ही नहीं टूटता ॥१॥

बादल गरजते हैं, बिजली चमक रही है, तथा दमदम दमकती है। भगवान मूसलाधार वर्षा कर रहे हैं ॥२॥

(९)

प्रसंग—मृत्यु के बाद शरीर की दशा।

सुगना[3] निकल गइल पिंजड़ा से; खाली पड़ल रहल तसबीर। टेक
केहु रोवे, केहु मलि मलि धोवे; केहु पहिनावे चीर ॥ १ ॥
सुगना०।
चारि जना मिलि खाट उठवले[4]; ले गइले गंगा तीर ॥ २ ॥
सुगना०।
फूकि[5] फाँकि के कोइला कइले; कोमल भइल सरीर ॥ ३ ॥
सुगना०।

जीव रूपी सुग्गा शरीर रूपी पिंजड़े से निकल गया। अब केवल शरीर का चित्र पड़ा रह गया है। कोई रोता है, कोई इस शरीर को जलाने के पहले मलमल कर धोता है तथा कोई वस्त्र पहनाता है ॥१॥

चार मनुष्यों ने मिलकर अर्थी निकाली और गंगा तीर ले गये ॥२॥

कोमल शरीर को जलाकर लोगों ने राख कर दिया ॥३॥

(१०)

प्रसंग—बन को जाते समय सीता का सास तथा अयोध्या को छोड़ने का दुःख।

१. वर्षा। २. बिजली। ३. सुग्गा (जीव)। ४. उठाया। ५. जलाकर।

धीरे चल हम हारी[1] ए रघुबर। टेक—

एक त छुटेला मोर नाक के नथियवा[2];
दोसर छुटेले महतारी[3] ए रघुबर ॥ १ ॥ धीरे चल०

एक त छुटेला मोर गरे के हसुलिया;
दोसर छुटेला झीन सारी[4] ए रघुबर ॥ २ ॥ धीरे चल०।

एक त छुटेला नगर अजोध्या;
दोसर छुटेला महतारी ए रघुबर ।।३ ॥ धीरे चल०।

एक त छुटेला मोर गोड़ के गोड़हरा[5];
दोसर छुटेला झीनसारी ए रघुबर ॥ ४ ॥ धीरे चल०।

राम के साथ बन को जाती हुई सीताजी कहती हैं कि ऐ रामचन्द्र! तुम जरा धीरे चलो, मैं रास्ता चलने से श्रान्त हो गयी हूँ। एक तो मेरे नाक की नथिया छूट गयी है, दूसरी माता कौशल्या छूट गयी हैं ॥१॥

मेरे गले की हसुली और पतली साड़ी भी अयोध्या में छूट गई है ॥२॥

बन जाते समय अयोध्या नगरी तथा माता कौशल्या को छोड़ना पड़ा ॥३॥

एक तो मेरे पैर का कड़ा छूट गया और दूसरी पतली साड़ी भी छूट गयी ॥४॥

---

१. हार गयी, श्रान्त। २. नथिया। ३. माता। ४. पतली साड़ी। ५. पैर का एक आभूषण (कड़ा)।

बार.मासा

(१)

प्रसंग—किसी विरहिणी स्त्री की उक्ति अपनी सखी के प्रति ।

चढ़ले माँस असाढ़ बादर, घन घमण्ड दल साजि के ।
हमें विरहिनी तेजि के; पिया रहले कहीं छाइ के ।। १ ।।
सावन मास सोहावन, हे सखि, सावन पिआ मन भावहीं ।
कवन[1] बिरहिनि जादू कइलसि; कन्त घर आवत नहीं ।। २ ।।
भादों में एक सेज बनत बा, अवरु[2] सेज बनाइ के ।
औ पपिहरा, मोर बोले; सेज घनेरे[3] सालती[4] ।। ३ ।।
कुआर आइल पिआ न अइले; हम मरीं विख[5] खाइ के ।
रोइ के जल धोइ डालबि; सीस माँग बिसारि के ।। ४ ।।
कातिक में एक पाति लिखत बानीं; रकत[6] आँसु बहाइ के ।
जा तू कागा देस पिआ के; दुःख कहु समुझाइ के ।। ५ ।।
अगहन में एक सेज सूनी; हम अकेली ताकती ।
जेकर पिआ परदेस छवले[7]; रहे सखि केहि भाँति से ।। ६ ।।
पूस में एक पाला परि गइल; बिरह आइ सतावहीं ।
तब जाड़ छूटिहें, हे सखि! जब कन्त अंग लगावहीं ।। ७ ।।
माघ में एक आम बौरे[8] हम मरी बउराइ[9] के ।
साम बिना एक बेली फूले; कवन सेजिया जाइ के ।। ८ ।।
फागुन में एक रंग बनत बा; और रंग बनाइ के ।
साम बिना एक हम ना ऊड़ी[10]; जइसन उड़त रंग अबीर के ।। ९ ।।
चैत चन्दन सरद सीतल; अगिनि सीतल भाय के ।
ले चलीं हम डाल सेइल[10] होके ढूण्ढें जाइ के ।।१०।।
बैसाख में हमरा घाम[11] लागे; हम मरीं अकुलाइ के ।
अब घाम लागत, हे सखी! तब हाल कहीं काहाँ जाइ के ।।११।।
जेठ त जेठ[12] मास आइल पूरल[13] बारहमासा आइ के ।
अब*हू ले ना पिआ अइले; दुःख कहीं समुझाइ के ।।१२।।

१. कौन। २. और। ३. अधिक। ४. कष्ट देती। ५. विष। ६. रक्त (खून)। ७. गया है। ८. मंजरी का लगना। ९. पागल होना। १०. हार, गले की माला। (सेली) ११. धूप। १२. जेष्ठ (बड़ा लम्बा)। १३. पूर्ण हो गया।

आषाढ़ का महीना आ गया और बादल अपना दल सजाकर उमड़ आये हैं। ऐसी अवस्था में मुझ विरहिणी को छोड़कर पति कहीं दूसरी जगह विराजमान है॥१॥

ऐ सखि! सावन का महीना बड़ा सुहावना लगता है और पति मन को प्रसन्न करता है। किस स्त्री ने जादू कर इसे मोहित कर लिया है, जिससे पति घर नहीं आता॥२॥

भादों मास में मैं सेज सजाती हूँ। पपीहा दुःखद बोली बोलता है। पति के बिना सेज देख हृदय में पीड़ा होती है॥३॥

क्वार का महीना आ गया; परन्तु प्रियतम अभी तक नहीं आया। मैं अब विष खाकर मर जाऊँगी और रो-रोकर जल से अपने सिन्दूर को धोकर माँग को बिगाड़ लूँगी॥४॥

कार्तिक मास में मैं खून के आँसुओं की स्याही बनाकर पत्र लिखती हूँ। ऐ कौए! तुम पति के देश जाओ और मेरे दुःख को समझाकर कहो॥५॥

अगहन मास में मेरी सेज सूनी है और मैं अकेली बैठी ई पति की प्रतीक्षा कर रही हूँ। ऐ सखी! तुम्हीं बतलाओ, जिसका पति परदेस चला जाय, भला वह स्त्री सुखपूर्वक कैसे रह सकती है॥६॥

पौष मास में पाला (ओस शीत) गिरता है। पति का वियोग बहुत ही कष्ट दे रहा है। ऐ सखि! मेरा जाड़ा (शीत, ठंढ) तभी छूटेगा, जब पति परदेस से लौटकर मुझे अंग से लगाएगा।

माघ मास में आम के वृक्ष में मंजरी लगने लगी। मैं विरह से पागल होकर मरी जा रही हूँ। आज पति के बिना मेरी सेज पर जाकर कौन मेरे हृदय रूपी फूल को विकसित करेगा॥७-८॥

स्त्री अपनी सखी से कहती है कि वैसाख के महीने में मुझे धूप लग रही है और मैं व्याकुल होकर मर रही हूँ। ऐ सखी! जब मुझे प्रचण्ड धूप लगती है, तब अपने दुःख को कहाँ जाकर कहूँ (क्योंकि पति तो परदेस को चला गया है)॥९-१०-११॥

सब महीनों में जेठ अर्थात् अन्तिम जेठ का महीना अब चला आया है। अब बारहों महीने पूर्ण (समाप्त) हो गये। परन्तु अब तक भी पति परदेस से लौटकर नहीं आया। तुम मेरे पति के पास जाकर मेरा दुःख उसे समझा करके कहो॥१२॥

(२)

प्रसंग—किसी गोपी की उक्ति कृष्ण के प्रति।

पहिल मास जब कातिक लाग;
हमरा के छाड़ि पिआ भइले बनिजार[1]।
नाँचत अहीर चरावत गाइ;
पिया बिनु कातिक मोहि न सोहाइ॥१॥

१. बनजारा। (व्यापारी)।

कातिक उतरत अगहन लाग;
सभ सखियन मिलि गवन[1] के जात ।
पान फूल रस त्यागन कीन्ह;
बिछुरत कन्त दइव दुःख दीन्ह ॥ २ ॥
पूस मास घन परत टुसार[2];
काँपत अंग जोबन थहरात[3] ।
काँपत गेडुआ[4] काँपत सेज;
बिनु सइयाँ काँपत गोरी के करेज ॥ ३ ॥
माघ मास सिव बरत[5] ताहार;
मैं बरती पाँचो अतवार ।
धोइ नहाइ के दिहलीं असीस;
जिअहु कन्त तू लाख बरीस ॥ ४ ॥
फागुन मास बहे फगुनी बयारि;
पेड़ के पत्ता सभे झरि जाइ ।
झरि गइले पात ठाढ़ा रहले रूख;
काताना कन्त सहावत दूख ॥ ५ ॥
चैत मास बन फूलत बा टेसू;
गोरिया पठावत बा पिया के सनेसू ।
हमरो सनेसवा कहहु तुम जाइ;
बिरह अगिन मोसे सहलो ना जाइ ॥ ६ ॥
बैसाख मास रितु मंगल चार;
आनत गवन, बियाहत[6] बार[7] ।
छावत मण्डल,[8] गावत गीति;
बिनु पिया लागत मोंहि बिपरीति[9] ॥ ७ ॥
जेठ मास बर चरचा होइ;
बर पूजन निकसे सभ कोइ ।
सोनवा के टिकुली, कजरवा के रेख;
हम का पूजी, हमार पिया परदेस ॥ ८ ॥
असाई मास असाढ़ीं[10] आई;
काटत नर घर छावे सब कोई ।

१. गौना। २. पाला। ३. काँपना। ४. लोटा का पानी। ५. व्रत। ६. ब्याह करते हैं। ७. बाला। (लड़की) ८. मँड़वा। ९. प्रतिकूल। १०. एक प्रकार की घास।

चिरै[1] चुरंगुन[1] खोंता[2] लाई;
हमरो पिया विदेसवा में छाई ।। ९ ।।
सावन मास जला[3] जलि नीर;
छाड़ि धनि कुसुम[4] पहिरहीं चीर ।
झूलत हिंडोलवा गार्वाहि गीत;
बिनु पिया लागत मोंहि बिपरीत ।। १० ।।
भादों मास बहे गगन गंभीर;
भरि आइल नदिया, उमड़ि आइल नीर ।
लवका[5] लवके[6] होखे उजियार;
गोरिया जाने पिया अइले हमार ।। ११ ।।
कुआर मास बन बोलेला मोर;
उठु-उठु गोरिया पिया अइले तोर ।
अब तोर पूजेला मनवा के आस;[7]
सूरदास गावे बारहमास ।। १२ ।।

कोई स्त्री कहती है कि कातिक का पहला महीना अब लग गया है। इसी समय पति मुझे छोड़कर व्यापार करने के लिए परदेस चला गया। अहीर अपनी गायों को चराते हुए नाचते हैं; परन्तु पति के बिना मुझे कातिक का महीना अच्छा नहीं लगता ।।१।।

कातिक के उतरते (समाप्त होते) ही अगहन का महीना चला आया। अब सब सखियाँ गौना कराकर अपनी ससुराल जा रही हैं। पति के वियोग में मैंने पान, फूल तथा रस (शराब का पीना) छोड़ दिया है। पति के बिछुड़ते ही ब्रह्मा ने मुझे बड़ा दुःख दिया ।।२।।

पूस के महीने में पाला बड़े जोरों से पड़ता है। जाड़े के मारे सब अंग काँपने लगते हैं और स्तन थहराते (काँपते हैं)। लोटे का पानी हिल रहा है, मानों जाड़े से वह भी काँप रहा हो। सेज कम्पित हो रही है और पति के बिना मुझ सुन्दरी का हृदय चलायमान हो रहा है ।।३।।

स्त्री कहती है कि ऐ शिव। माघ के महीने में तुम्हारा व्रत होता है। मैंने पाँच रविवार व्रत किया है तथा स्नानादि भी नियमित रूप से किया है। अब तुम यही आशीर्वाद दो कि मेरा पति लाखों वर्ष तक जीता रहे ।।४।।

फागुन के महीने में फगुनी बयार (हवा) बहती है और पेड़ों के सभी पत्ते झड़ जाते हैं। पेड़ का पत्ता गिर गया और वृक्ष पत्र-हीन खड़ा है। ऐ पति! तुम कितना दुःख अब मुझे सहा रहे हो ।।५।।

१. चिड़िया, पक्षी। २. घोसला। ३. जल से लबालब। ४. कुसुम्भी वा लाल रंग की साड़ी। ५. बिजली। ६. प्रकाशित होना, चमकना। ७. आशा।

चैत के महीने में टेसू (पलाश) के फूल फूलते हैं। इसी समय पत्नी पति के पास सन्देश भिजवा रही है। वह अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी! तुम मेरे सन्देश को उनसे जाकर कहो। अब विरह की अग्नि (दु:ख) मुझसे सही नहीं जाती है अर्थात् अत्यन्त कृश हो जाने के कारण विरह का दु:ख सहने में अब मैं असमर्थ हूँ ॥६॥

बैसाख के महीने में मंगलाचार के कार्य हो रहे हैं। स्त्रियाँ गीत गाती हैं; मण्डप (मँडवा) तैयार किया है और पति गौना कराकर स्त्रियों को अपने घर ले जा रहे हैं। परन्तु, पति के बिना यह सब मंगल (आनन्द) मुझे विपरीत (दु:खदायी) मालूम हो रहा है ॥७॥

जेठ के महीने में वर की चर्चा होती है अर्थात् अमुक गाँव में अमुक लड़का विवाह करने के योग्य है—ऐसी बातें लोग करते हैं और वह मिलने पर उसकी पूजा करने के लिए अर्थात् तिलक चढ़ाने के लिए सब लोग जाते हैं। विवाह हो जाने पर स्त्रियाँ अपने ललाट में सोने की टिकुली (बिन्दी) और आँखों में काजल की रेखा लगाती हैं। परन्तु मैं क्या शृंगार करूँ. मेरा पति तो परदेस में है ॥८॥

आषाढ़ के महीने में असाढ़ी नामक घास लगी हुई है। मनुष्य उसे काट कर उससे अपना घर छवाते हैं। चुरमुन नामक पक्षी उसे चीरकर अपना खोंता (घोसला) बनाता है। ऐसे समय में मेरा पति परदेस में स्थित है ॥९॥

सावन के महीने में जल लबालब भरा हुआ है। स्त्रियाँ कुसुम्भी रंग का कपड़ा छोड़कर चीर (अनेक रंग से युक्त) कपड़ा पहन रही हैं। झूले पर झूलती हैं और गीत गाती हैं। परन्तु पति के बिना मुझे सब उल्टा (दु:खदायी) मालूम हो रहा है ॥१०॥

भादों के महीने में आकाश जोरों से बरस रहा है अर्थात् आकाश से मूसलाधार वृष्टि हो रही है। नदियाँ भर गई हैं और उनमें जल उमड़ आया है। बिजली चमक रही है और उससे प्रकाश हो रहा है। प्रकाश होने से स्त्री समझती है कि मेरा पति आ रहा है ॥११॥

क्वार के महीने में बन में मोर बोल रहा है। सखी कहती है—ऐ गोरी! उठो, तुम्हारा पति आ गया है। अब तुम्हारे मन की आशा पूरी हो जायगी ॥१२॥

(३)

प्रसंग—कृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके द्वारा भेजे गये उद्धव के प्रति विरहिणी गोपी की उक्ति।

प्रथम मास असाढ़ हे सखि; साम अबहुँ न आवहीं।
गोखुला[1] उजारि ऊधो; जाके मधुपुर[2] छावहीं ॥१॥

सावन सगुन सोहावन हे सखि!; देखि के मन लोभहीं।
घर-घर सखि सभ झूले हिंडोला; पिया से करत कलोलहीं[3] ॥२॥

१. गोकुल। २. मथुरा। ३. क्रीड़ा।

भादो रैनि भयावनि हे सखि! देखि के जियरा डरी।
चहुँ ओर चमकत बिजुली ऊधो; मेघ गरजत घन भारी ॥ ३ ॥
आसिन मास अनदेस[1] ऊधो; कवन बात धिरिजा धरीं।
हम मरीं बिख खाइ ऊधो, जो मोहन नहिं आवहीं ॥ ४ ॥
कातिक मास पुनीत ऊधो; सखिन सम कौतुक करे।
हरि दुआरे पूजि के; ललित[2] हो फूलि आवहीं ॥ ५ ॥
अगहन में सखि जाड़ लागत बा; जो पिया रहिते साथही।
दुःख सुख राम साथे गवँइतो; दिया बरितों अकासहीं ॥ ६ ॥
पूस में सखि! परेला फुहेरा[3]; धूंध[4] काल न सूझहीं।
अस पुरुख असि नारि नाहीं; और सो मन लावहीं ॥ ७ ॥
माघ में घन भाग उनकर; जे पिया के साथ हीं।
अंग में अंग मिलाइ ऊधो; बाँहि धरी सिरहानहीं ॥ ८ ॥
फागुन में सखि खेलन होरी; रंगन भींजत सरीरहीं।
खेलत होरी राम करत बोली; पिया बिनु लहरे[5] करेजहीं[6] ॥ ९ ॥
चैत में चित चार[7] ऊधो; ऊधो भाग से पिया पावहीं।
अपना करम के बात ऊधो; दोस काहु न लावहीं ॥१०॥
बैसाख में बहुत उछाह[8] ऊधो; नारी मंगल गावहीं।
घर घर सखि सभ मंगल गावें; हरखि झूमरि पारहीं ॥११॥
जेठ में प्रभु भइ गइले भेंट; पूजल बारह मास हीं।
पूजल बारह मास ऊधो; पूजल मनवा के आसहीं ॥१२॥

कोई गोपी अपनी सखी से कह रही है कि ऐं सखी! आषाढ़ का पहला महीना चला आया; परन्तु कृष्ण अभी तक लौट कर नहीं आये। अपने वियोग से गोकुल को उजाड़कर अब वे मथुरा में विराजमान हैं॥१॥

ऐं सखी! सावन का महीना बड़ा सुहावना तथा मंगलमय है। इसे देखकर मन लुब्ध हो जाता है। इस समय सखियाँ अपने घर में झूला झूलती हैं अपने पति से क्रीड़ा करती हैं॥२॥

ऐ सखी! भादों मास की रात्रि बड़ी भयावनी होती है। इसे देख हृदय डर जाता है। चारों ओर बिजली चमकती है और बादल बड़े जोरों से गरजते हैं॥३॥

विरहिणी गोपी फिर उद्धव को सम्बोधित करती हुई कहती है कि ऐ ऊधो! क्वार के महीने में बड़ी आशंका बनी हुई है। मैं किस बात का अवलम्बन कर धैर्य को धारण करूँ। यदि कृष्ण इस महीने में घर नहीं आयेंगे, तो मैं विष खाकर मर जाऊँगी॥४॥

१. आशंका, डर। २. प्रसन्न। ३. पाला या कुहरा। ४. कुहरा पड़ते समय। ५. कष्ट पाना। ६. कलेजा, हृदय। ७. व्यग्र चंचल। ८. उत्सव।

ऐ ऊधो ! कातिक का महीना अत्यन्त पवित्र है। सब सखियाँ इस समय कौतुक करती हैं। वे सब मन्दिरों में पूजा करके प्रसन्न होकर अपने घर लौटती हैं।।५।।

ऐ सखी! अगहन मास में बहुत जाड़ा लगता है। यदि पति इस समय साथ रहता, तो मैं दुःख तथा सुख (जाड़े का कष्ट और विलास का सुख) उसके साथ ही व्यतीत करती और आकाश में दीपक जलाती अर्थात् अत्यन्त प्रसन्नता को प्रकट करती।।६।।

ऐ सखी ! पूस के महीने में पाला पड़ता है और कुहरे पड़ते समय काल (समय) का ज्ञान नहीं होता (क्योंकि सूर्य कुहरा के कारण दिखाई नहीं पड़ता) इस समय ऐसा कोई पुरुष अथवा स्त्री न होगी, जो दूसरी स्त्री अथवा पुरुष से मन लगाये अर्थात् सब पुरुष अपनी ही स्त्रियों से क्रीड़ाएँ करते हैं। ।।७।।

माघ में उन स्त्रियों का भाग्य धन्य है, जो अपने प्रिय (प्रियतम पति) के साथ अंग में अंग मिलाकर तथा अपनी बाँह को उसके सिर के नीचे रखकर सोती हैं। (भावार्थ यह है कि कृष्ण घर पर नहीं हैं; अतः मैं अभागिनी हूँ) ।।८।।

फागुन में सब सखियाँ होली खेलती हैं और रंग से शरीर भींग जाता है। वे मुझसे होली खेलती हैं और मजाक भी करती हैं। परन्तु पति के बिना मेरा हृदय अत्यन्त कष्ट को प्राप्त कर रहा है।।९।।

ऐ ऊधो ! चैत के महीने में चित्त चंचल रहता है और भाग्य ही से पति प्राप्त होता है अपने ही कर्मों का दोष लगाना व्यर्थ है।।१०।।

ऐ ऊधो ! बैसाख में बड़ा आनन्द होता है और स्त्रियाँ मंगलगीत गाती हैं। सब सखियाँ घर-घर में मंगल गाती हैं और प्रसन्न होकर झूमर गाती हैं।।११।।

गोपी कहती है कि ज्येष्ठ के महीने में कृष्ण जी घर आये और उनसे भेंट हुई। ऐ ऊधो ! अब बारहों महीने समाप्त हो गए और साथ ही मेरे मनकी आशा (प्रियतम के घर लौटने की आशा) भी पूरी हो गयी।।१२।।

(४)

प्रसङ्ग—किसी विरहिणी नायिका की उक्ति अपनी सखी के प्रति।

सावनवा मोरा लेखे[1] बैरी भइल—टेक

भादो भवन सोहावन न लागे; आसिन[2] मोहि ना सुहाई ।
कातिक कन्त विदेस गइल हो; समुझि समुझि पछिताई ।। १ ।।
अगहन, आइल ना, कहि गइल ऊधो; पूस बितल भरिमास ।
माघ मास जोबन के मातल; कइसे धरबि जिऊ[3] आस ।। २ ।।
फागुन फरकेला[4] नैन हमार; चैत मास सुनि पाईं ।
पियवा जे अइहन एहि बैसाखे; फुलवन[5] सेजिया बिछाईं ।। ३ ।।

१. लिए। २. आश्विन। ३. हृदय। ४. फड़कता है। ५. फूलों से।

जेठ मास बेआकुल जइसे राधे; नाहिं बाड़े साम हमार ।
तुलसीदास बिनु तोहारा दरस के; कइसे खेंपबि[1] हम मास असाढ़ ॥ ४ ॥
सावनवा मोरा लेखे बैरी भइल।

कोई स्त्री कहती है कि सावन का महीना मेरे लिए बैरी हो गया है; अर्थात् अत्यन्त कष्ट देता है। भादों में घर अच्छा नहीं लगता ; क्वार का महीना मुझे सुन्दर नहीं मालूम होता। कातिक मास में पति परदेस को चला गया। अब समझ-समझ कर पछता रही हूँ ॥१॥

अगहन के महीने में आने के लिए पति कह गया था; परन्तु नहीं आया। पूरा का पूरा महीना भी बीत गया। माघ के महीने में मैं यौवन से मस्त हूँ ; अतः अपने हृदय में पति के आने की आशा को कैसे धारण करूँ ॥२॥

फागुन के महीने में मेरी आँख फड़क रही है। यदि चैत के महीने में मैं यह सुन पाऊँ कि इसी अगले बैसाख मास में मेरा पति आने वाला है, तो उसके स्वागत के लिये मैं फूलों से सेज को ढक दूँ ॥३॥

ऐ सखी ! पति के विना जेठ के महीने में मैं वैसी ही व्याकुल हूँ, जैसे राधा। ऐ पति ! तुम्हारे दर्शन के बिना मैं आषाढ़ मास को कैसे बिताऊँगी ? अर्थात् यदि तुम्हारा दर्शन न होगा, तो इस मास में मेरा जीता बचना कठिन है ॥४॥

(५)

प्रसङ्ग—विरहिणी नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

जेहि दिन छाड़ि गइले बेनी माधो;
तेहि दिन आगी लागल तन में । टेक
चढ़ले असाढ़ गगन घन गरजे;
बिजुली चमकेले तेहि बन में ।
चिहुकि-चिहुकि चाकिरित[2] हो के चितओं;
बैठि के सोच करो मन में ॥ १ ॥
सावन साम कइले छल हमरा से;
पिरीति[3] कइले जाके कुबरी से ।
अरे नन्दलाल परान कइसे राखीं;
धिक[4] जीवन हमरा एहि तन से ॥ २ ॥
भादो अगम पन्थ नाहिं सूझेला ;
बेंगवा[5] बोले ला आंगन में ।

१. बिताऊँगी। २. आश्चर्यान्वित। ३. प्रीति। ४. धिक्कार। ५. मेढक।

अरे कोइल होके बने बने फिरीलें;
ताल सुखाइल ब्रिन्दावन में ॥ ३ ॥
कुआर कुसल नाहिं पावों साम के;
पातीं नाहिं आइल मधुबन से ।
सूर साम मोहि आनि मिला द;
नाहिं त परान[१] तेजबि[२] घन में ॥ ४ ॥
जेहि दिन छाड़ि गइले बेनी माधो;
तेहि दिन आगी लागल तन में । टेक

कोई प्रोषितपतिका स्त्री कहती है कि पति जिस दिन से मुझे छोड़ कर परदेस चला गया, उसी दिन से मेरे शरीर में विरह की अग्नि लगी हुई है।

अब अषाढ़ का महीना चढ़ गया, आकाश में बादल गरजते हैं और उन्हीं बादलों के बीच बिजली चमक रही है। मैं चिहुँककर तथा आश्चर्यान्वित होकर चारों ओर देख रही हूँ और बैठकर मन में सोचा करती हूँ (कि पति अब भी परदेस से नहीं आया) ॥१॥

वह विरहिणी कहती है कि सावन महीने में पति ने मुझ से छल किया अर्थात् मुझे छोड़ कर चला गया और उसने (कुवरी किसी कुलटा स्त्री) से प्रेम कर लिया है। ऐ नन्दलाल ! (कृष्ण या पति) ! मैं अब अपने प्राणों को कैसे धारण करूँ। अब इस शरीर से मेरे लिए जीना धिक्कार है ॥२॥

भादों का महीना अगम्य है, अर्थात् इस मास में कहीं जाना अत्यन्त कठिन है। अधिक अंधेरे के कारण रास्ता नहीं सूझता। आँगन में मेढक बोल रहे हैं। मैं कृष्ण (पति) के वियोग में कोयल बनकर बन-बन घूमती रही और मेरे विरहाग्नि के कारण वृन्दावन के सब तालाब सूखे पड़ गये ॥३॥

क्वार के महीने में कृष्ण (पति) का कुछ कुशल-समाचार नहीं मिला और न मथुरा से कोई चिट्ठी ही आयी। स्त्री कहती है कि कोई पति को लाकर मुझसे मिला दे; नहीं तो मैं एक ही क्षण में अपने प्राणों को छोड़ दूंगी ॥४॥

जिस दिन से पति मुझे छोड़कर परदेस चला गया, उसी समय से मेरे शरीर में आग लग गयी है ॥

(६)

प्रसङ्ग—प्रवत्स्यतपतिका* स्त्री की प्रार्थना अपने पति से तथा पति की अनुचित धमकी।

१. प्राण। २. छोड़ दूंगी।

* जिस स्त्री का पति परदेश जाने वाला है ।

असों के सावन सइयाँ घरे रहु;
घरे रहु ननदी के भाई।—टेक।

साँप छोड़ेला आपन केचुलि, गंगा छोड़ेली अरारि[1]।
तूहूँ सइयाँ तेजेल आपन घरवा, धनिया अनारि[2]॥ १॥

घोड़वा के देबो घोड़सारिया, हथिया के देबो हथिसार[3]।
तूहूँ प्रभु देबों अटरिया, रहबो नैना हजूर[4]॥ २॥

घोड़वा के देबहु महेलवा, हथिया के लवंग कपूर।
तोहरा के देबि घीव खीचड़, कर जोरि रहबो हजूर॥ ३॥

नयना तोर बूड़ो महाधारावा; बरदी[5] ले जासु चोर।
तोहरा के मारे बटवरवा; होइबो में चौकवा[6] के राड़॥ ४॥

नइया मोर लागिहें सुरुज घाट; बदरी उतरेले पार।
धनिया के बेचबो मोगल[7] हाथवा, दोसर करबो विआह॥ ५॥

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ऐ ननद के भाई (मेरे पति) तुम इस साल घर पर ही रहो। साँप अपनी केचुल तथा गंगा अपना किनारा छोड़ रही है। ऐ पति! मूर्खा स्त्री को घर में रखकर तुम उसे छोड़ रहे हो।॥१॥

मैं तुम्हारे घोड़े को घुड़सार में तथा हाथी को हथिसार में रक्खूँगी। तुमको अटारी पर रक्खूँगी और तुम्हारी आँखों के सामने सदा उपस्थित रहूँगी॥२॥

घोड़े को महेला तथा हाथी को लौंग और कपूर खाने को दूँगी। तुम्हें घी और खिचड़ी खाने को दूँगी और तुम्हारे सामने सदा उपस्थित रहूँगी॥३॥

परन्तु यदि तुम हठ कर परदेस जाओगे, तो मध्यधारा में तुम्हारी नाव डूब जाय, तुम्हारे बैलों को चोर चुरा ले जायँ और तुमको बटमार मार डालें। मैं राँड़ रहूँगी॥४॥

पति ने उत्तर दिया—मेरी नाव सूरज घाट लगेगी और बैल भी पार उतर जायेंगे। ऐ स्त्री! मैं तुमको किसी मुगल के हाथ बेंच डालूँगा और अपना दूसरा विवाह कर लूँगा॥५॥

(७)

प्रसङ्ग—लंका पर आक्रमण करते समय लक्ष्मणजी को शक्ति लगना, मूर्च्छित हो जाना, राम का विलाप, हनुमान का संजीवनी का लाना तथा लक्ष्मण का जीवित हो उठना।

१. किनारा। २. अनाड़ी। मूर्ख। ३. घुड़साला। ४. सामने, उपस्थित। ५. बैल। ६. विवाह के समय का चौका। ७. मुगल।

माघ मास रितु आइल बसन्त;
कहति मँदोवरि सुनु पिया कन्त ।
दे डालु जानकी राम अवध फिरि जाइ;
नाहीं त निसिचर बंस नसाइ ॥ १ ॥
फागुन फऊदम[1] कइले तैयार;
लंका घेरेले चारु दुआर ।
जइसे फागुन उड़त अबीर;
तइसे घेरेले राम लखन दुई बीर ॥ २ ॥
चैत मास बन फुलेला गंभीर;
कहत राम सुनु हनुवन्त बीर ।
कि जाइ रैनि में लाव संजीवन[2] मूर;
नाहीं त लछुमन तजिहें सरीर ॥ ३ ॥
बैसाख मास तन तप दिन राती;
बिना रे लखन हमार फऊद[3] उदासी ।
आधि राति गइल कपि नाहिं अइले;
हमहू मरबि हलाहल खइले ॥ ४ ॥
जेठहिं लछुमन भइले तैयार;
लंका घेरेले चारु दुआर ।
खड़बड़ भूमि निसाचर जूथ[4];
अइले कपि दल सैन बरूथ[5] ॥ ५ ॥
असाढ़ मास घन गरजेला घोर;
मेघनाद करेला रन में जोर ।
मारेले लछुमन बाँहि उड़ि लागेला अकास;
जाइ गिरेला सुलोचना[6] के पास ॥ ६ ॥
सावन समर भयावन भइले;
राम के बाण रावन में गइले ।
कुम्भकरन रावन अस बीर;
कि जाइ गिरहिं सागर के तीर ॥ ७ ॥

१. फौज। २. संजीवनी। ३. फौज। ४. युद्ध करना। ५. सेना । ६. मेघनाद की स्त्री।

भादो हाँक देत हनुमान[1];
गरजत तड़पत भइल बिहान[2]।
जइसे रैनि में गरजत घोड़;
तइसे कइले लंका पर चोट ॥८॥
कुआर में बोलेली मँदोदरि रानी;
जुझेले कन्त सैन सभ हानी।
चलली राम पद असतुति[3] कइले;
रीझी के राम सभ कुछ दिहले ॥९॥
कातिक जामवन्त सभ आई;
सभ देवतन के सीस नवाई।
चलली जानकी माथ नवाई;
देवता साथ चलले जानकी माई ॥१०॥
अगहन आगर[4] जानकी अइली;
फौदन बहुत साथ में लिहली।
जीतले लंका नगारा बजाई;
तबहीं त राम अवधपुर जाई ॥११॥
पूसहिं पूजेला बारह मास;
अवधपुरी अइले तुलसीदास।
आइले राम मिटि गइले सभ सोग[5];
हरखित भइले नगर के लोग ॥१२॥

मन्दोदरी रावण से कहती है कि ऐ पति! माघ के महीने में बसन्त ऋतु आ गयी। तुम जानकी को दे दो, जिससे रामचन्द्र अयोध्या को लौट जायें। नहीं तो लंका के ऊपर आक्रमण करने पर राक्षसों का वंश नष्ट हो जायगा ॥१॥

रामचन्द्र ने फागुन के महीने में लंका पर आक्रमण करने के लिए अपनी फौज को तैयार किया और चढ़ाई कर लंका के चारों दरवाजों को घेर लिया। फौज के चलने से इतनी धूल उड़ी कि मानों फागुन में अबीर (गुलाल) उड़ रहा हो ॥२॥

लक्ष्मणजी को शक्ति लग गई तब रामचन्द्रजी हनुमानजी से कहते हैं कि ऐ बीर हनुमान! चैत के महीने में बन में फूल खिले हैं। तुम रात में जाकर संजीवनी बूटी ले आओ, नहीं तो लक्ष्मण सबेरा होते ही अपने प्राणों को छोड़ देंगे ॥३॥

१. हनुमान। २. सबेरा। ३. स्तुति। ४. घर। ५. शोक।

रामचन्द्रजी कहते हैं कि वैसाख के महीने में रात और दिन, शरीर में गर्मी मालूम हो रही है। लक्ष्मण के बिना हमारी फौज आज उदासीन है। आधी रात बीत गई ; परंतु कपि हनुमान नहीं आये। मैं भी लक्ष्मण के वियोग में विष खाकर मर जाऊँगा ।।४।।

हनुमानजी संजीवनी बूटी लाये और उसके प्रयोग से लक्ष्मणजी स्वस्थ हो गये। जेठ के महीने में लक्ष्मण जी लड़ने के लिए फिर तैयार हो गये और उन्होंने लंका के चारों दरवाजों को घेर लिया। लंका की भूमि ऊबड़-खाबड़ थी ; राक्षस युद्ध कर रहे थे । उसी समय बानरी सेना लड़ने के लिए आयी ।।५।।

असाढ़ के महीने में बादल जोरों से गरजते हैं और मेघनाद लड़ाई में अपना जोर (शक्ति) दिखलाता है। लक्ष्मण ने उसे ऐसा बाण मारा कि उसकी बाँह टूट कर आकाश में उड़ गयी और वह सुलोचना (मेघनाद की स्त्री) के पास जाकर गिर पड़ी ।।६।।

सावन में भयंकर लड़ाई होने लगी और रामचन्द्र का बाण रावण के शरीर में घुस गया। कुम्भकर्ण और रावण के समान वीर पुरुष भी राम का बाण लगने से समुद्र के किनारे जाकर गिर पड़े ।।७।।

भादों में हनुमान ने लड़ाई के लिए राक्षसों को ललकारा और उनके गरजते तथा तड़पते ही सबेरा हो गया। जिस प्रकार रात्रि में बादल जोरों से गरजते हैं, उसी प्रकार हनुमान ने लंका पर आक्रमण कर दिया ।।८।।

क्वार के महीने में रानी मन्दोदरी कहती हैं कि लड़ाई में मेरा पति मर गया और सारी सेना नष्ट हो गई। वह राम के चरणों की स्तुति करते हुए आयी और राम ने प्रसन्न होकर सब कुछ दे दिया ।।९।।

कातिक के महीने में सब देवताओं को प्रणाम कर जामवन्त ने लंका पर चढ़ाई कर सीता को बचाया। जानकी प्रणाम कर लंका से चलीं और सब देवता जानकी के साथ चलने लगे ।।१०।।

अगहन में सीता ने बहुत सी सेना साथ में लेकर घर के लिए प्रस्थान कर दिया। रामचन्द्र ने डंका बजाकर लंका को जीत लिया और तब वे अयोध्या के लिए चले ।।११।।

पूस में बारह महीने समाप्त हो गये और रामचन्द्रजी अयोध्यापुरी को चले आये। राम के आने से सब शोक मिट गया और नगर के लोग प्रसन्न हो गये ।।१२।।

इस बारहमासे में तुलसीदासजी का नाम आया है ; परन्तु यह उनका बनाया हुआ नहीं है। किसी स्थानीय कवि ने संभवतः इसे महत्व प्रदान करने के लिए महाकवि तुलसीदास का नाम जोड़ दिया है ।।

(८)

प्रसङ्ग—कौशल्या कैकेई को शाप देती हुई अपने बनवासी पुत्र के दुःखों को सोचती हुई शोक प्रकट कर रही हैं।

चैत अयोध्या जनमेले राम;
चन्दन से कोसिला लिपवलीं धाम ।
गड मोतियन से चौक पुरवलीं;[1]
सोना के कलस[2] अवरु धरवलीं ॥ १ ॥
बैसाख मास रितु बीख[3] समान;
तलफत[4] धरती अवरु असमान ।
जइसे जल बिना तलफेले मीन;
उहे गति मोर कैकई कीन ॥ २ ॥
जेठ मास लूक[5] लागेला अंग;
राम लखन अवरु संग ।
राम चरन पद कमल समान;
तलफेला धरती अवरु असमान ॥ ४ ॥
असाढ़ मास गरजेला चहुँ ओर;
बोलेला पपीह कुँहकेला[6] मोर ।
बिलखेली[7] कोसिला अवधपुर धाम;
भीजत होइहें लखन सिय राम ॥ ४ ॥
सावन में सर[8] सायर[9] नीर;
भीजत होइहें सिया रघुबीर ।
भूमि गोजरिया[10] फिरेला भुअंग;[11]
राम लखन अवरु सीता संग ॥ ५ ॥
भादो मास बूंन बरिसेला अपार;
घरवा के छावेला सकल संसार ।
बड़-बड़ बूंन जे बरिसेला नीर;
भींजत होइहे सिया रघुबीर ॥ ६ ॥
कुआर मास, सखि, धरम के राज;
निति उठि धरम करेला संसार ।
एहि अवसर पर रहिते जे राम;
बाभन जेवाँइ[12] दिहिते कुछु दान ॥ ७ ॥
आइल, रे सखि, कातिक मास;
हमरा पर लागल बिरह के फाँस ।[13]

१. चौका लगाना। २. घड़ा। ३. विष ४. गर्म हो जाना। ५. लू। ६. आवाज़ करना। ७. रोती है। ८. तालाब। ९. नदी। १०. गोजर। ११. सर्प। १२. भोजन कराना। १३. फन्दा।

घर-घर दियवा बारेलि[1] नारि,
हमरि अयोध्या भइलि अँधियारि ॥ ८ ॥
अगहन कुंअरी[2] करत सिंगार,
कपड़ा सिलावेली सोना के तार ।
पाठ पितामर पुलक[3] समान,
कनक सीस बैंजयन्ती के माल ॥ ९ ॥
पूस मांस, सखि परत टुसार,
रैनि भइलि जइसे खाँड़[4] के धार ।
कुस आसन कइसे सोइहें राम,
बन कइसे करिहें बिसराम[5] ॥ १० ॥
आइल हो सखि! माघ बसन्त,
कइसे जियबि हम बिना भगवन्त ।
राम चरन मन लागल मोर,
बैठि भरत जी हिलावेले चौर[6] ॥ ११ ॥
आइल, हो सखि, फगुआ उमंग,
चोआ चन्दन छिरकेला अंग ।
बैठि भरतजी घोरेले अबीर,
केकरा पर[7] छिरकी बिना रघुबीर ॥ १२ ॥
जे एहि गावे बारह मासा,
से पाले बैकुण्ठे बासा ।
गावेले तुलसी अवधपुर धाम,
बन में से अइले लछमन राम ॥ १३ ॥

चैत मास में राम ने अयोध्या में जन्म ग्रहण किया और पुत्र जन्म के उत्सव में कौशल्या ने चन्दन के लेप से अपने घर को लिपवाया। उसने गजमुक्ता से चौक पूर दिया और सोने के कलश को रखवाया ॥१॥

बैसाख में ऋतु विष के समान दुःखदायी हो जाता है धरती और आसमान गरमी के मारे तपने लगते हैं। कौशल्याजी कहती हैं कि जिस प्रकार जल के बिना मछली छटपटाती रहती है, उसी प्रकार मेरी दशा कैकेयी ने कर दी है, अर्थात् राम के वियोग में मैं भी मछली के समान अत्यन्त व्याकुल हूँ ॥२॥

कौशल्या कहती हैं—राम और लक्ष्मण बन में संग जाते होंगे। जेठ के महीने में लू

१. जलाती हैं। २. सुन्दरी। ३. अच्छा। ४. खड्ग-तलवार। ५. विश्राम (आराम)। ६. चँवर। ७. किस पर।

अंगों में बड़े जोरों से लगती है। जिस प्रकार राम का चरण इस तप्त धूल में कष्ट पाता है, उसी प्रकार धरती और आसमान ग्रीष्म के ताप से जल रहे हैं॥३॥

असाढ़ के महीने में बादल चारों ओर से गरजते हैं ; इस समय पपीहा 'पी', 'पी' की रट लगाता है और मोर बोलता है। अयोध्या नगरी में कौशल्या यह सोचकर रो रही है कि आज बन में राम और लक्ष्मण भींगते होंगे॥४॥

सावन में तालाब और नदियों में जल भर गया है। सीता और रामचन्द्र बन में भींगते होंगे। राम सीता और लक्ष्मण के साथ बन में घूमते हैं और वर्षा के कारण जमीन पर गोजर और साँप घूम रहे हैं॥५॥

भादों के महीने में अत्यधिक वर्षा होती है। अतः सब लोग अपने घ ों को छवाते हैं। पानी बड़ी-बड़ी बूँदों में जमीन पर गिर रहा है, अतः सीता और राम जंगल में भींगते होंगे॥६॥

क्वार के महीने में धर्म का राज है। संसार के लोग प्रातःकाल उठ कर धर्म करते हैं। इस अवसर पर यदि रामचन्द्र घर पर होते, तो मैं ब्राह्मणों को भोजन कराकर कुछ दान देती॥७॥

कौशल्या अपनी किसी सखी से कहती हैं कि ऐ सखी ! कातिक का महीना अब भला आया। अब बिरह का फन्दा मुझ पर लगा गया है अर्थात् राम के विरह से मैं कष्ट पा रही हूँ। सब स्त्रियाँ आज घर पर दीपक जला रही हैं ; परन्तु मेरी अयोध्या में राम के बिना अँधेरा छाया हुआ है॥८॥

अगहन में कोई सुन्दरी अपना शृंगार करती है और सोने के पतले सूत से अपने कपड़े को सिलाती है। वह पीताम्बर पहने हुए है, उसके सिर में सोने के गहने हैं और गले में बैजयन्ती-माला है॥९॥

ऐ सखि ! पूस मास में पाला पड़ता है और रात्रि तलवार की धार के समान दुःखदायी हो गयी है। कुश के आसन पर राम कैसे सोयेंगे और बन में वे विश्राम (आराम) कैसे करेंगे ? ॥१०॥

ऐ सखि ! माघ में बसन्त ऋतु चली आयी। मैं (भगवान्) रामचन्द्र के बिना कैसे जीऊँगी ? राम के चरणों में मेरा मन लग गया है और भरत जी बैठकर चँवर हिला रहे हैं॥११॥

ऐ सखि ! हृदय में उमंग पैदा करने वाला फागुन का महीना चला आया। सब लोग अपनी देह पर चन्दन तथा सुगन्धित द्रव्य छिड़क रहे हैं। भरत जी गुलाल को पानी में घोल रहे हैं; परन्तु रामचन्द्र के अभाव में मैं किस पर उसे छिड़कूँ॥१२॥

जो मनुष्य इस बारहमासे को गाता है, वह बैकुण्ठ (स्वर्ग) में बास करता है। अयोध्या में तुलसीदासजी इसे गाते हैं। अन्त में राम और लक्ष्मण बन से लौट आये और कौशल्या का दुःख मिट गया॥१३॥

इस गीत में तुलसीदासजी का नाम केवल इसे महत्त्व प्रदान करने के लिए ही आया है। इसके रचयिता महाकवि तुलसीदास नहीं हैं। ,यह किसी भोजपुरी कवि का बनाया हुआ है।

(९)

प्रसङ्ग—गोकुल को छोड़कर मथुरा गये हुए कृष्ण के द्वारा भेजे गये उद्धव के प्रति विरहिणी गोपिका की उक्ति।

प्रथम मास असाढ़ ए सखि! बूंद से झड़ि लागहीं।
साम[1] अइसन निठुर ए सखि; मास असाढ़ ना आवहीं ॥ १ ॥

सावन रिमझिमि देव[2] बरिसेले, बूंद से झड़ि लागहीं।
चारु[3] चक्र चाकरित[4] मोर बोलेला, बेग सबद सुनावहीं ॥ २ ॥

भादौ मारै भयावने ए सखि, दूसरे अंधरिया रातिन हो।
सेज छाड़ि हरि हमरा के गइले, इहे ह दुःखवा के बात हो ॥ ३ ॥

कुआर लालन, कुआर लालन, कहाँ गइले नन्दलाल हो।
किया राम घूमेले कदली के बनवा, किया कुबरी के साथ हो ॥ ४ ॥

कातिक कन्त विदेस ए सखि! जोगिनी तैयार हो।
दुःख सुखवा हरि संग गवँइतो, दियवा[5] बरितों[6] अकास हो ॥ ५ ॥

अगहन में सखि रैनि अगम भइल, नाहीं त होला विहान हो।
सेज छाड़ि हरि हमरा के गइले, इहे दुःखवा के बात हो ॥ ६ ॥

पूस में सखि ओस परत बा; ओसे भीजेला लामी केस हो।
सीर सेंदुर नयन काजर, उहो तोहरा साथ हो ॥ ७ ॥

माघ में सखि ठार[7] परला, जइसे जीव के जंजाल हो।
बारि समय परदेस बालम, जियबि कवन हवाल[8] हो ॥ ८ ॥

फागुन में सखि; फाग होला, होता रंग अबीर हो।
खेलत होली, करत ठिठोली,[9] विहरेला[10] हमरे करेज हो ॥ ९ ॥

चैत में सखि! जीव चंचल, कोइलि बोले आम डारी हो।
कोइलि सबद सुनि निनियौ[11] ना आवेले, झंखत[12] होला विहान हो ॥१०॥

वैसाख में सखि बंगला छवाइबि, काटबि बतीस दुआरि हो।
ओहि में हरि सूतल रहिहें, हम धनि बेनिया[13] डोलाई हो ॥११॥

जेठ में सखि भेंट भइले, पूजेला मन के आस हो।
"सिव नारायन" रोज गावेले, गावेले बारहमास हो ॥१२॥

१. श्याम (कृष्ण)। २. इन्द्र। ३. चारों ओर। ४. आश्चर्य युक्त। ५. दीप। ६. जलाना। ७. ठंडक। ८. हाल। ९. मजाक। १०. फट जाता है। ११. नींद। १२. कष्ट प्राप्त होना। १३. पंखा।

कोई बिरहिणी गोपी कहती है कि ऐ सखी ! आषाढ़ का प्रथम मास आ गया। अब बूँदों की झड़ी लगी हुई है। कृष्ण ऐसा निठुर (निर्दयी) है कि इस मास में भी घर लौट कर नहीं आया ॥१॥

सावन मास में इन्द्र रिमझिम रिमझिम वर्षा करता है और बूँदों की झड़ी लगी रहती है। मोर चारों ओर आश्चर्य युक्त होकर बोल रहा है और मेढक 'टर्र' 'टर्र' की आवाज़ सुना रहे हैं ॥२॥

ऐ सखी ! भादों की रात्रि यों ही भयावनी होती है, तिस पर अंधेरा पख (पक्ष) है। कृष्ण सेज पर छोड़कर चले गये, यही मेरे दुःख का असली कारण है ॥३॥

क्वार के मास में नन्दलाल (कृष्ण) कहाँ चले गये। क्या वे केले के बन में घूम रहे हैं अथवा कूबरी के साथ आनन्द-क्रीड़ा में निमग्न हैं ॥४॥

ऐ सखी ! कातिक के कन्त (कृष्ण या पति) परदेश में हैं। मैं उसके साथ जोगिनी बनने के लिए तैयार हूँ। मैं कृष्ण के साथ ही दुःख और सुख को भोगती और आकाश में दीपक जलाती हूँ ॥५॥

ऐ सखी ! अगहन में रात्रि अगम्य हो गई है अर्थात् व्यतीत नहीं होती; अतः प्रातःकाल नहीं होता। कृष्ण मेरी सेज को छोड़ कर चला गया है। यही मेरे लिऐ दुःख की बात है, अर्थात् दुःख का कारण है ॥६॥

ऐ सखी ! पूस में ओस (कुहरा) पड़ता है और उससे मेरे लम्बे बाल भींग जाते हैं। ऐ कृष्ण ! मेरे सिर का सिन्दूर और आँखों का काजल वह भी तुम्हारे ही साथ है अर्थात तुम्हारे वियोग में मैंने सिन्दूर करना और आँखों में काजल लगाना छोड़ दिया है ॥७॥

ऐ सखी ! माघ में पाला पड़ता है, अर्थात् अत्यधिक शीत मालूम होती है और यह जीव का जंजाल मालूम होता है—शरीर को बहुत कष्ट दे रहा है—मेरी छोटी आयु में ही पति परदेस चला गया है, मैं कैसे जीवित रहूँगी तथा मेरी क्या दशा होगी ॥८॥

ऐ सखी ! फागुन के महीने में फाग (होली) होता है और लोग गुलाल तथा रंगों से होली खेलते हैं। सखियाँ होली खेलते समय मुझसे मजाक करती हैं; परन्तु उनके इन मजाकों से मेरा हृदय विदीर्ण हो जाता है (पति के वियोग में होली खेलना मुझे अच्छा नहीं लगता) ॥९॥

ऐ सखी ! चैत में चित्त चंचल हो जाता है। कोयल आम की डाली पर बोलने लगती है। उसके शब्द को सुनकर नींद भी नहीं आती और अफसोस करते हुए ही सबेरा हो जाता ॥१०॥

ऐ सखी ! बैसाख के महीने में मैं अपने बँगले को छवाऊँगी और उसमें बत्तीस दरवाजे बनवाऊँगी॥ उसी सुन्दर हवादार बँगले में मेरा पति सोता रहेगा और मैं पंखा झलूँगी ॥११॥

(इतने में उस स्त्री का पति परदेस से लौटकर चला आया। तब वह कहती है) ऐ सखी ! जेठ मास में पति से भेंट हो गयी।—पति समागम हुआ—और हृदय की सारी आशाएं पूर्ण हो गयीं। शिवनारायण नित्य इस बारहमासे को गाते हैं ॥१२॥

(१०)

प्रसङ्ग—विरहिणी स्त्री की उक्ति परदेसी पति के प्रति ।

सावन ए सखिरे ! बूंद परेला, पिया चलेले परदेस जी ।
आरे पिया पिया कहि रटेले कामिनि; पिया बिनु कुछु ना सुहाई जी ।। १ ।।
कथि[1] के करबि कोरे कागजवा; कथि करबि मसि हान[2] जी ।
केकरा बदबि[3] पढ़ल पंडित, एगो त चिठि लिखि भेजबि जी ।। २ ।।
आँचर फरि करबि कोरे कागजवा; नयन काजर मसि हान जी ।
लछन देवर पढ़ल पण्डित, एको तो चिठि लिखि भेजबि जी ।। ३ ।।
बाट बटोहिया तुहु मोरे भइया, हमरो सनेस ले-ले जाहु जी ।
हमरो सनेसवा हरिजी से कहिह, मन्दिल[4] चुवेला हमार जी ।। ४ ।।
ताहारा बलमु जी के चिन्हलो ना जानल, कइसे कहबि समुझाई जी ।
हमरा हरिजी के कड़ी-कड़ी गोछिया;[5] भवराँ नियर[6] दुनो आँखि जी ।। ५ ।।
ऊँचे ही घोड़वा चढ़ेले सिर साहब; उहे हवे कन्त हमार जी ।
घोड़वा चढ़ल रउरा राजा बेटनवा[7] रउरी धनि लिखेली वियोग जी ।। ६ ।।
पाति बाँचत रउरा घरे जाई; मन्दिल चुवेला तोहार जी ।
चिठिया जे बँचले मने मुसकइले; कत धनि लिखेली वियोग जी ।। ७ ।।
सासु ससुर सब घर ही में बाड़े; मन्दिल लेसु न छवाई जी ।
बाट बटोहिया तुहु मोर सखा, हमरो सनेस ले-ले जाहु जी ।। ८ ।।
हमरो सनेस ओहि धनि जी से कहिह; चरखा काति कुल राखि जी ।
आगि लगइबो तोरा चरखा पिउनिया[8] में, बजर परे तोरा कुल जी ।। ९ ।।
जब लग रहलीं हम लड़िका गदेलवा,[9] तब लग रखनी तोर कुल जी ।
अब हम भइनी राम तरुन वयसवा,[10] अब ना राखबि तोर कुल जी ।।१०।।
आताना बचन बलमु सुनही ना पावेले, घोड़ा पर भइले असवार जी ।
अब मोर हाकिम छुटिया तू दे द, अब हम जाइबि घरवा आजु जी ।।११।।
देहु हाकिम[11] हमरी तलबिया,[12] मन्दिल छाइबि हम आजु जी ।
तलब पाई के बालम जी चलले, पिया से मिले घरवा आई जी ।।१२।।

१. किस वस्तु। २. मसी, स्याही, ३. मानना, कहना। ४. घर। ५. मूँछ। ६. समान। ७. लड़का। ८. कातने के लिये तैयार रूई। ९. नादान। १०. आयु। ११. स्वामी। १२. तनख्वाह।

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी! सावन मास में बूँदें पड़ती हैं और इसी समय पति परदेश जा रहा है। मैं 'पिया' 'पिया' कहकर रट रही हूँ। पति के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता॥१॥

मैं किस चीज की स्याही बनाऊँगी तथा किसका कागज बनाऊँगी। किस पढ़े हुए पण्डित को मैं चिट्ठी लिखने के लिए कहूँगी॥२॥

वह स्वतः उत्तर देती है—मैं आँचर फाड़ कर कागज बनाऊँगी और आँखों के काजल की स्याही बनाउँगी। मेरा लक्ष्मण देवर पढ़ा हुआ पण्डित है, उसी से लिखवाकर एक चिट्ठी मैं अपने पति के पास भेजूँगी॥३॥

वह किसी बटोही से कहती है—रास्ते में जाने वाले ऐ मेरे बटोही भाई! तुम मेरे एक सन्देश को लेते जाओ। तुम मेरा यह सन्देश मेरे पति से कह देना कि तुम्हारी स्त्री का घर वर्षा से चू रहा है॥४॥

बटोही ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारे पति को न तो जानता हूँ और न पहचानता ही हूँ। अतः तुम्हारे सन्देश को मैं उनसे कैसे कहूँगा? इस पर स्त्री कहती है—मेरे पति की मूँछे कड़ी-कड़ी हैं और भौंरे के समान काली काली उसकी आँखें हैं॥५॥

मेरा पति ऊँचे घोड़े पर चढ़ता है। अतः जो पुरुष ऐसा मिले, उसे ही मेरा पति समझना। बटोही ने उस स्त्री के पति को खोज निकाला और उससे कहा—घोड़े पर चढ़े हुए ऐ राजा के लड़के! तुम्हारी स्त्री ने अपना वियोग लिखकर तुम्हारे पास भेजा है॥६॥

चिट्ठी को पढ़ते ही तुम अपने घर चले जाओ, क्योंकि तुम्हारा घर वर्षा के कारण चू रहा है। पति ने जब स्त्री के पत्र को पढ़ा, तब वह मन में मुसकाने लगा और कहने लगा कि स्त्री ने अपना दुःख कितना अधिक लिखा है॥७॥

सास, ससुर सब घर पर ही हैं। उनसे वह अपना घर क्यों नहीं छवा लेती—मरम्मत करवा लेती?॥८॥

उस पति ने बटोही से कहा—ऐ बटोही! तुम मेरे साले लगते हो; अतः मेरे सन्देश को लेते जाओ और मेरा यह सन्देश मेरी स्त्री से कहना कि वह चर्खा चलाकर मेरे कुल की लाज और प्रतिष्ठा को रक्खे। बटोही ने जाकर स्त्री से यह सन्देश कहा। इस पर वह क्रोधित होकर कहती है कि मैं तुम्हारे चरखा और रूई में आग लगा दूँगी तथा तुम्हारे कुल में बज्रपात हो जाय—तुम्हारा कुल नष्ट हो जाय॥९॥

जब तक मैं नादान लड़की थी, तब तक मैंने तुम्हारे कुल की लाज रक्खी; परन्तु अब मैं वयस्क तरुणी (युवती) हो गयी हूँ। अब मैं तुम्हारे कुल की इज्जत को नहीं रखने की॥१०॥

स्त्री के इस वचन को पति ने अभी पूर्णरूप से सुना भी नहीं था कि वह घोड़े पर सवार हो गया और अपने हाकिम (मालिक) से कहने लगा कि आप मुझे छुट्टी दे दीजिए। मैं आज ही अपने घर जाऊँगा॥११॥

ऐ स्वामी! तुम मेरा मासिक वेतन दे दो। मैं घर जाकर अपने घर को छवाऊँगा।

मालिक के द्वारा वेतन दे देने पर वह पति घर के लिए चल पड़ा और घर आकर अपनी स्त्री से प्रसन्नतापूर्वक मिला ॥१२॥

(११)

प्रसङ्ग—विरहिणी स्त्री की उक्ति सखी के प्रति ।

असाढ़ मास महीना ए सखि! इंगुरनि मंगिया भरवलों ।
हमरो ललन परदेस बाड़े; इंगुरनि मंगिया भरवलों ॥ १ ॥

सावन मास सुहावन ए सखि! पहिरिली आगरा के छींट ।
इहे[1] छींट मोरे भेजेला बलमुआ;[2] जिअसु लाख बरीस ॥ २ ॥

भादों मास भयावन ए सखि! घन बहुत घहराई ।
केकरा सरनवा[3] जाइ के बइठीं; जीव मोर बहुत डेराई ॥ ३ ॥

कुआर मास खराब ए सखि! बिजुरी तड़पत बाई ।
केकरा सरनवा जाइ के बइठीं, जीव मोर बहुत डेराई ॥ ४ ॥

कातिक में सखि कतिकी[4] लागे; सभ सखि गंगा नहाई ।
हमरो ललन परदेस ए सखि; केकरा संगे गंगवा नहाई ॥ ५ ॥

अगहन मास अगम ए सखि! धान में फूटेला बालि ।
एक बालि सुगवा ले आइत; दिहिती लाख असीस ॥ ६ ॥

पूस मास अति फूस ए सखि; जउवा में फूटला बालि ।
एक बालि सुगवा ले आइत; दिहितीं लाख असीस ॥ ७ ॥

माघ से दिन बाघ[5] है ए सखि; जाड़ पड़ला तुसार ।
नव मन रुइया भरवलीं रजैया में, हरि बिनु जाड़ ना जाय ॥ ८ ॥

फागुन में सखि! फाग मचेला; सभ सखि खेलेली फाग ।
राधे के हाथ में बा पिचुअरिया;[6] राधे मनवा में पछिताय ॥ ९ ॥

चैत में कइत[7] होला ए सखि; बन में फूलेला टेसू ।[8]
सभ सखि रंगेली रुबलिया; राधे मनवा में पछिताय ॥ १० ॥

बैसाख में कुछु आस ए सखि; काटबि छिमछिम[9] बाँस ।
झीनी झीनी बेनिया डोलाइबि; रहबि हम हरिजी का पास ॥ ११ ॥

जेठ में सखि भेट भइल; ऊँच बंगला छवाइ के ।
हरिजी के साथ सेजिया डसवलीं, दियवा घर में जलाइ के ॥ १२ ॥

१. यहीं। २. पति। ३. शरण। ४. जाड़ा। ५. बड़ा। ६. पिचकारी। ७. फल विशेष। ८. पलाश। ९. धीरे-धीरे।

कोई विरहिणी अपनी सखी से कह रही है कि ऐ सखी ! असाढ़ मास में मैंने सिन्दूर से अपनी माँग को भराया अर्थात् माँग में सिन्दूर लगाया ; परन्तु मेरा पति अब परदेस चला गया है॥१॥

ऐ सखी ! सावन का महीना बड़ा सुहावना लगता है। मैंने आगरे की छींट पहनी है। इस छींट को मेरे पति ने भेजा है। वह लाखों वर्ष तक जीता रहे॥२॥

ऐ सखी ! भादों का महीना बड़ा भयावना मालूम पड़ता है। इस समय बादल बड़े ज़ोरों से गरजते हैं। मैं किसकी शरण में जाकर बैठूं; मेरा हृदय बहुत ही डर रहा है॥३॥

ऐ सखी ! क्वार का महीना बड़ा खराब है। इस मास में बिजली बहुत तड़पती है। मैं किसकी शरण में जाकर बैठूं; मेरा हृदय बहुत ही डर रहा है॥४॥

ऐ सखी ! कातिक में जाड़ा लगने लगता है ; परन्तु सब सखियाँ गंगा-स्नान कर रही हैं। मेरा पति परदेस में है ; अतः मैं किसके साथ गंगा नहाऊँ ?॥५॥

ऐ सखी ! अगहन का महीना अगम्य है—अत्यन्त कष्ट देने वाला है। इस समय धान में बालियाँ फूटती हैं। यदि सुग्गा मेरे पास एक भी बाली को लाता, तो मैं उसे लाखों आशीर्वाद देती॥६॥

ऐ सखी ! पूस का महीना बड़ा छोटा होता है। इस समय जौ में बालियाँ फूटती हैं। यदि सुग्गा जौ की एक बाली भी मेरे पास लाता, तो मैं उसे लाखों आशीर्वाद देती॥७॥

ऐ सखी ! माघ के महीने से दिन बड़ा होने लगता है और अत्यधिक शीत पड़ने लगती है। मैंने अपनी रजाई में नौ मन रुई भरवायी; परन्तु पति के बिना जाड़ा नहीं जाता॥८॥

ऐ सखी ! फागुन के महीने में फाग मचता है—होली खेली जाती है। सब सखियाँ फाग खेलती हैं। राधा के हाथ में पिचकारी है ; परन्तु राधा अपने मन में पछता रही है (पति के वियोग में वह होली कैसे खेले) इसलिए वह अपने हृदय में शोक कर रही हैं॥९॥

ऐ सखी! चैत में कँइत फलता है और पलाश बन में फूलता है। सब सखियाँ पलाश के रंग में अपने रूमाल को रंग रही हैं; परन्तु मैं अपने मन में पछता रही हूँ॥१०॥

ऐ सखी ! बैसाख में पति के आने की कुछ आशा है। मैं धीरे-धीरे बाँस को काटूँगी और उसका पतला पंखा बनाकर, अपने पति के पास बैठ धीरे धीरे उसे हवा करूँगी —पंखा झलूंगी॥११॥

ऐ सखी ! जेठ मास में पति से भेंट हुई। तब ऊँचा बंगला छवा कर तथा घर में दीपक जलाकर मैंने सेज बिछाई और पति के साथ आनन्द-भोग किया॥१२॥

(१२)

प्रसंग—लक्ष्मण को शक्ति लगना, हनुमान का संजीवनी बूटी लाना, लक्ष्मण को होश आने तथा सीता की प्राप्ति का वर्णन।

चइत मास घर छूटे रघुपति के, बन में विपति परी।
काला नदिया पार उतर गइले तपसी भेस धरी ॥ १ ॥

घाम, लूक[1] बइसाख में लागत, देह से नीर चली।
सीता हरन भइल, पितामरन भइल विपति में विपति परी ॥ २ ॥

जेठ बान लागल लछुमन के, मुरछित भुइयाँ[2] परी।
बैदा सुखेन बतउले सजीवन, तब लछुमन उबरी[3] ॥ ३ ॥

राम सुमिरि हनुमानजी गइले, धवला गिरि कइले पयान।
तब तक चढ़ले मास असाढ़ा साम घटा घिर आन ॥ ३ ॥

सावन मास सुहावन सजनी, सजीवन सूझि ना परी।
बादर गरजे बिजुरी चमके, महाबीर जी क्रोध भरी ॥ ५ ॥

भादो रैन भयावन सजनी, तनिको ना सूझ परी।
चहुँ अँधियारी दिसा नाहीं सूझे, राम सुमिर के बीर चली ॥ ६ ॥

कुआर हाल बेहाल लछुमन के, गोद में लेके विलखाई।
बानर भालू के कवन ठिकाना, फल पर गइले लुभाई ॥ ७ ॥

मास कातिक में आसा लागल, सजीवन अइहें तत्काल।
राम रमेसर[4] पूजेले पूजेली बिरहिन बात ॥ ८ ॥

अगहन मास अति गहन बाटि, जानत सकल संसार।
ओहि समय लवटि अइले बीर जी, अपना सिरवा पर लेके पहार ॥ ९ ॥

पूस मास जठारि[5] पड़त बा, जस कुठार के घाई[6]।
पीसि के बूटी दिहले लछमन के, उठेले बीर अंगिड़ाई ॥१०॥

माघ मास में लागेला पंचमी, सखी लोग करेला सिंगार।
आपन बदनिया निहारेले रामजी, सीता बिना भइले उदास ॥११॥

फागुन में रंग होली मचेला, उड़ेला गुलाल अबीर।
रावन मारि के सीता उबारे,[7] पार उतर गइले राम जी बीर ॥१२॥

चैत के महीने में रामचन्द्रजी का घर छूट गया अर्थात् वे अयोध्या से बनवास के लिए चले और बन में आते ही उन पर बिपत्ति पड़ी। वे काली नदी (?) के पार उतर गये और तपस्वी का वेश उन्होंने धारण कर लिया ॥१॥

१. लू। २. भूमि पर। ३. जीवित होंगे। ४. रामेश्वरजी। ५. पाला। ६. घाव। ७. बचाने के लिए।

बैसाख मास में उनके शरीर में धूप और लू लग गयी और देह से पसीना बहने लगा। इसी समय सीता का हरण हुआ, पिता (दशरथ) का मरण हुआ और विपत्ति के ऊपर विपत्ति पड़ती गयी ॥२॥

जेठ के महीने में लक्ष्मणजी को वाण (शक्ति) लगा और वे मूच्छित होकर जमीन पर गिर पड़े। सुषेण वैद्य ने संजीवनी बूटी नामक दवा लक्ष्मण के लिए बतलायी और कहा कि बूटी लाने पर ही उनके जीवन की रक्षा हो सकती है ॥३॥

राम का स्मरण कर हनुमान ने धवलागिरि के लिए प्रयाण किया। तब तक असाढ़ का महीना चढ़ गया और काली-काली घटाएँ घिर आयीं ॥४॥

ऐ सखी ! सावन का महीना बड़ा सुहावना है। अँधेरा होने के कारण संजीवनी बूटी दिखाई नहीं पड़ती। बादल गरजते हैं तथा बिजली तड़पती है ; अतः हनुमानजी क्रोधित हो गये ॥५॥

ऐ सखी ! भादों की रात्रि बड़ी भयावनी मालूम पड़ती है और कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। चारों तरफ अंधेरा है ; अतः दिशा दिखलायी नहीं पड़ती। राम का स्मरण कर हनुमानजी चल पड़े ॥६॥

क्वार के महीने में लक्ष्मण की बुरी दशा हो गयी—उनका हाल बेहाल हो गया। रामचन्द्र उन्हें गोद में लेकर रोने लगे। उनके सैनिक बानर तथा भालुओं का क्या ठिकाना, वे फलों को देखकर लुब्ध हो गये और खाने लगे ॥७॥

कातिक मास में आशा लगी हुई थी कि संजीवनी बूटी शीघ्र ही आ जायगी। राम ने इसके लिए रामेश्वर (शिवजी) की पूजा की ॥८॥

अगहन का महीना बड़ा गहन (दुःखदायी) है। इस बात को सारा संसार जानता है। इसी समय हनुमानजी अपने सिर पर पहाड़ लेकर लौट कर आ गये ॥९॥

पूस के महीने में पाला पड़ता है। यह उतना ही कष्टदायक है, जितना कुठार के द्वारा किया गया घाव। हनुमान ने उस बूटी को पीसकर लक्ष्मण को पिलाया। उसे पीते ही लक्ष्मण-जी होश में आ गये और अँगड़ाई लेकर उठे ॥१०॥

माघ के महीने में बसंत पंचमी होती है और उस समय सब सखियाँ शृंगार करती हैं। राम सीता के बिना उदास हैं और अपने दुर्बल शरीर को देख रहे हैं ॥११॥

फागुन के महीने में होली खेली जाती है और गुलाल खूब उड़ाया जाता है। राम ने रावण का वधकर सीता को उसके पंजे से बचाया और सीता को साथ लेकर समुद्र पार किया और घर को लौट आये ॥१२॥

(१३)

प्रसंग—विरहिणी नायिका के हृदय में विभिन्न मासों में उठती हुई विभिन्न वेदनाओं का वर्णन।

चढ़ेला असाढ़ भरे नदिया से नारे,[१] सइयाँ न अइले हमार ।
सुनु ए गोइयाँ ॥ १ ॥

चढ़ेला सावन दुनो फरके[२] नयन,
चोलिया के फाटे बन[३] सुनु ए गोइयाँ ॥ २ ॥

चढ़ेला भादो पिया गइले कवने ओर,
सुगा खबरि ले अइले सुनु ए गोइयाँ ॥ ३ ॥

चढ़ेला कुआर घरे देवरा कुंआर,
डाले भुजवा में हाथ सुनु ए गोइयाँ ॥ ४ ॥

चढ़ेला कातिक आँगाना में घिरे सीत,
झूला[४] गइलेहा भींजि सुनु ए गोइयाँ ॥ ५ ॥

चढ़ेला अगहन, खुलि गइले हा लगन,
पिया ले चले गवन[५] सुनु ए गोइयाँ ॥ ६ ॥

चढ़ेला पूस झुलवा त लेला मूस,[६]
पिया गइलेहा रूस[७] सुनु ए गोइयाँ ॥ ७ ॥

चढ़ेला माघ आंगाना में बोले काग,
डेढ़िया में लागल आग, फुफुती[८] के जागल भाग,
सुनु ए गोइयाँ ॥ ८ ॥

चढ़ेला फागुन, जोबना के भइले गुन,[९]
पिया आइब कवना जुन,[१०] सुनु ए गोइयाँ ॥ ९ ॥

चढ़ेला चइत बने फूलेले कंइत,[११]
चइता के आवे रीति सुनु ए गोइयाँ ॥१०॥

चढ़ेला बइसाख पिया कहिया ले आस,
जेठ आवेला पास सुनु ए गोइयाँ ॥११॥

चढ़ेला जेठ, सुरुया[१२] के जाला बेंट,[१३]
फूलि गइले हा पेट,[१४] सुनु ए गोइयाँ ॥१२॥

१. नाला। २. फड़कते हैं। ३. बन्द। ४. चोली। ५. गौना। ६. चूहा या चुरा लेना। ७. रूठ जाना। ८. स्त्रियों की साड़ी का अग्रभाग जो आगे खोंसा जाता है। ९. गुण वृद्धि। १०. समय। ११. फल विशेष। १२. घास छीलने का हथियार। १३. खुरपा के पीछे लगा हुआ काठ का भाग। १४. गर्भाधान होना।

एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि असाढ़ का महीना आ गया। नदी और नाले भर गये ; परन्तु मेरा पति अभी तक नहीं आया ॥१॥

सावन का महीना चढ़ गया। मेरी दोनों आँखें फड़क रही हैं, स्तनों की पीनता (मोटाई) के कारण मेरी चोली के बन्द टूटे जा रहे हैं॥२॥

भादों चढ़ गया। न मालूम पति किस ओर चला गया। ऐ सखी! सुनो, सुग्गा मेरे पति की कुछ खबर लेकर आया है॥३॥

क्वार का महीना चढ़ गया। घर में देवर कुँवार (अविवाहित) है। ऐ सखी! वह कामुक देवर मेरे पीन स्तनों को स्पर्श करने के लिए मेरी चोली में हाथ डालता है॥४॥

कातिक महीना चढ़ गया ; अब आँगन में शीत (ओस) गिर रही है। ऐ सखी! उस ओस से मेरी चोली भींज गयी है।॥५॥

अगहन का महीना आ गया। अब लगन-विवाह तथा गौने का समय खुल गया, अर्थात् मंगल कार्य होने लगे। ऐ सखी! मेरा पति गौना कर अब मुझे ले जायेगा॥६॥

पूस का महीना चढ़ गया। चूहा मेरी चोली को लेकर अपने बिल में घुस गया अथवा किसी ने उस को चुरा लिया ; अतः ऐ सखी! मेरा पति मुझसे रुष्ट हो गया है॥७॥

माघ का महीना आ गया। अब कौआ मेरे आँगन में बोल रहा है। मेरे आँचर में आग लग गयी। अतः मेरी फुफती का भाग्य जग गया अर्थात् इस पुराने कपड़े के जल जाने पर पति मुझे नयी साड़ी पहनायेगा॥८॥

फागुन का महीना आ गया ; अतः मेरे स्तनों में वृद्धि हो गयी। ऐ सखी! अब मेरा पति किस समय आयेगा? (मेरी जवानी बीतती चली जा रही है)॥९॥

चैत का महीना आ गया। बन में कइँत (एक प्रकार का फल) फूलने लगा। ऐ सखी! अब चैता गाने का समय आ गया है॥१०॥

वैसाख का महीना चढ़ गया। ऐ सखि! पति के आने की कब तक आशा करूँ? जेठ का महीना भी अब समीप चला आया॥११॥

जब जेठ का महीना आया, तब पति परदेस से लौटा और मेरे साथ आनन्द-भोग करने लगा। ऐ सखी! सुनो, इसके फलस्वरूप मुझे गर्भ रह गया॥१२॥

(१४)

प्रसंग—विरहिणी नायिका का मासों के अनुसार अपने विरह के कष्टों का वर्णन।

कवन करी उपाय रे सखिया, साम भइले कुबरी बस जाई।
असाढ़ मास में मोर बोलत बाहे,[1] सावन में बहु पुरवाई[2] ॥ १ ॥

१. बोलता है। २. पुरवैया।

भादो अगम पन्थ न सुझेला, भरि गइले ताल तलाई ।
कुआर मास तन तपित[1] घाम से, कातिक चहुँदिसि दियरी[2] बराई ।। २ ।।

अगहन मास में गरहन[3] लागे, केकरा ते कहीं दुखदाई ।
पूस में ओस परत बा सजनी, माघ पिया बिनु जाड़ न जाई ।। ३ ।।

फागुन फाग खेलबि केकरा से, पिया परदेस में छाई ।
चइत में मदन सतावेला सजनी, बइसाख में घाम[4] सहलो ना जाई ।। ४ ।।

जेठ में लूक लागेला ए रामा, चीर के भार ना सहाई ।
कवन करीं पाय रे सखियाँ, साम भइले कुबरी बस जाई ।। ५ ।।

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी ! मैं कौन-सा उपाय करूँ, मेरा पति किसी कुबरी—कुलटा—स्त्री के बस में हो गया है। असाढ़ के महीने में मोर बोलता है और सावन में पुरवैया हवा बहती है ।।१।।

भादों में जल के कारण रास्ता नहीं दिखाई पड़ता और सब ताल-तलैया भर गये हैं। क्वार में कड़ी धूप के कारण शरीर व्याकुल हो जाता है और कातिक में चारों दिशाओं में दीपक जलाये जाते हैं ।।२।।

अगहन के महीने में बड़ा दुःख मालूम होता है ; परन्तु यह दुःख किससे जाकर कहूँ। ऐ सखी ! पूस में ओस पड़ रही है और माघ में बिना पति के साथ सोये जाड़ा नहीं जा सकता है ।।३।।

ऐ सखी ! मेरा पति परदेस में है ; अतः फागुन में मैं होली किससे खेलूँगी ! ऐ सखी ! चैत में कामदेव सताता है अर्थात् रमण की इच्छा होती है। वैसाख में धूप सही नहीं जा सकती ।।३।।

ऐ सखी। जे में जोरों की लू लगती है। उस समय कपड़े की साड़ी का भार भी नहीं सहा जाता। ऐ सखी। मैं कौन सा उपाय करूँ ? मेरा पति किसी कुलटा स्त्री के बस में हो गया है— उसके प्रेमपाश में फँस गया है ।।५।।

(१५)

प्रसंग—किसी विरहिणी स्त्री की उक्ति सखी के प्रति विभिन्न मासों में पति के बिना अनुभूत दुःखों का वर्णन।

प्रथम मास असाढ़ ए सखि, घेरि अइले जलधार हो ।
हमहू बिरहिन दुःख में बूड़ी,[5] केहूना करे उपकार हो ।। १ ।।

१. व्याकुल। २. दीप। ३. दुःख। ४. धूप-गर्मी। ५. डूबना।

सावन ए सखी देव बरिसे, गरज के डरवावहीं ।
चहुँ ओर पपिहा, मोर बोले, बेंग[1] सबद सुनावहीं ॥ २ ॥

भादो गगन गभीर ए सखी! घेरि अइले जलधार हो ।
बालम मोर विदेस गइले, केकरा सरन में जाइ हो ॥ ३ ॥

कुवार ए सखी? आस[2] लागे, जोहीं[3] पिया के बाट हो ।
लोभी कन्त विदेस गइले, भोरे भइले भिनुसार[4] हो ॥ ४ ॥

कातिक कन्त विदेस ए सखी; पिया जे रहिते साथ में ।
दुःख सुख सब संगे कटितों, दिया बरितों अकास में ॥ ५ ॥

अगहन ए सखी! बेइल फूले, अवरू फूलेला धान हो ।
चकवा चकई केलि करेला, सरवर मंझधार हो ॥ ६ ॥

पूस ए सखी ! सीत लागे, भीजेला लामी केस हो ।
सीर सेनुर नैन काजल; जीव के जंजाल[5] हो ॥ ७ ॥

माघ कामिन छोड़ दामिन, पिया गइले मोतिहार[6] हो ।
कलिया चुनि के सेज डसवलीं, पिया बिनु लागत जाड़[7] हो ॥ ८ ॥

फ़ागुन ए सखी! खेलत होली, छिरिकि छिरिकि अबीर हो ।
खेलत होली बोलत तोली, दगधे सकल सरीर हो ॥ ९ ॥

चैत ए सखी! टेसू फूले, फूले फूल गुलाब हो ।
छोड़ें मन के लाज ए सखी! चल पिय के मनावे हो ॥१०॥

बैसाख ए सखी! उमख[8] लागे, चन्दन लेपत सरीर हो ।
सइयाँ के कुछु दोस नाहीं, दोस करम[9] हमार हो ॥११॥

जेठ ए सखी! भेट भइल, पूजल मन के आस हो ।
"सिव नारायन" सुजस गावे, पूजल बारह मास हो ॥१२॥

कोई विरहणी अपनी सखी से कहती है कि ऐ सखी! यह असाढ़ का पहला महीना है। बादल घिर आये हैं। मैं बिरहिणी दुःख रूपी जल में डूब रही हूँ; परन्तु मेरा उपकार करने वाला कोई नहीं है॥१॥

ऐ सखी! सावन में इन्द्र वर्षा करते हैं और बादल गरज कर मुझे डराते हैं। चारों ओर पपीहा और मोर बोल रहे हैं तथा मेंढक अपना टर्र-टर्र शब्द सुना रहा है॥२॥

१. मेंढक। २. आशा। ३. खोजना। ४. प्रातःकाल। ५. झंझट। ६. मोतीहारी (एक शहर)। ७. जाड़ा (शीत)। ८. गर्मी (उष्मा) ९. भाग्य।

ऐ सखी ! भादों में आकाश गम्भीर दिखलाई पड़ता है। बादल घिर आये हैं। इसी कुसमय में मेरा पति परदेस चला गया है। अब मैं किसकी शरण में जाऊँ ॥३॥

ऐ सखी ! क्वार मास में पति के आने की आशा लगी हुई है। मैं उसकी बाट जोहती हूँ, अर्थात् उनके आने की प्रतीक्षा करती हूँ। लोभी (रूप लोभी) प्रियतम परदेस चला गया है। उसकी प्रतीक्षा में ही सारी रात बीत जाती है और सबेरा हो जाता है ॥४॥

ऐ सखी ! इस कातिक के महीने में पति परदेस गया है। यदि मेरे साथ वह रहता, तो मैं उसके साथ सब दुःख तथा सुखों को भोगती और आकाश में दीपक जलाती ॥५॥

ऐ सखी ! अगहन में बेले का फूल फूलता है और धान में बाली लगती है। चकवा और चकई तालाब की मध्य धारा में क्रीड़ा कर रहे हैं ॥६॥

ऐ सखी ! पौष मास में शीत (ठंक) लगती है और मेरे लम्बे बाल भींग जाते हैं। पति के वियोग में सिर में सिन्दूर तथा आँखों में काजल लगाना प्राणों को दुःख देने वाला है—जीव का जंजाल है ॥७॥

माघ के महीने में बिजली के समान चमकने वाली अर्थात् सुन्दरी अपनी स्त्री को छोड़ कर मेरा पति मोतीहारी (बिहार प्रान्त का एक शहर) चला गया है। मैंने फूलों को चुन-चुन कर सेज बिछायी है ; परन्तु मैं सोने में असमर्थ हूँ, क्योंकि पति के बिना मुझे जाड़ा लगता है ॥८॥

ऐ सखी ! फागुन में सब सखियाँ गुलाल उड़ा कर-छिड़क कर होली खेलती हैं। होली खेलते समय सखियाँ मुझ से मजाक करती हैं, जिसे सुनकर मेरा सारा शरीर जला जाता है अर्थात् वियोग के कारण अत्यन्त दुःखी तथा चिन्तित हूँ ॥९॥

ऐ सखी ! चैत में टेसू (पलाश) के तथा गुलाब के फूल फूलते हैं। इस पर दूसरी सखी कहती है कि तुम अपने मन की लाज छोड़ दो और पति को परदेश से मनाकर लाने के लिए चलो ॥१०॥

ऐ सखी ! बैसाख के महीने में बड़ी गर्मी लगती है। उसकी शान्ति के लिए मैं शरीर भर में चन्दन लेप रही हूँ। इसमें पति का कुछ भी दोष नहीं है। दोष तो केवल मेरे कर्मों का है ॥११॥

इतने में पति परदेस से चला आया, उससे भेंट हुई तथा मेरे मन की आशाएँ सब पूरी हो गयीं। 'सिव नारायण' इस बारह मासे को गाते हुए कहते हैं कि अब बारहों महीने समाप्त हो गये ॥१२॥

होली

(१)

प्रसङ्ग—शिव का पार्वती के साथ होली खेलना।

आजु सदासिव खेलत होरी—टेक।
जटा जूट में गंग बिराजे, अंग में भसम रमोरी ॥ १ ॥

बाहन बैल, ललाट चन्द्रमा, मिरिग छाला अवरू छोरी।
तीनि आँखि सुन्दर चमकेला, सरप गले लिपटो री ॥ २ ॥
आजु सदासिव०

अद्भुत रूप उमा देखि दवरी, संग में सखियाँ करोरी।
हंसत, लजत मुसुकात चन्द्रमा, सबै सिद्धि इक ठौरी ॥ ३ ॥
आजु सदासिव०

लेइ गुलाल शम्भु पर छिरके, रंग में उनका के बोरी।
भइल लाल सब देह शम्भु के, गोरी संकर करेलै ठिरोरी ॥ ४ ॥
आजु सदासिव खेलत होरी।

आज शिव पार्वती के साथ होली खेलते हैं। उनकी जटा में गंगाजी विराजमान हैं और शरीर में भस्म लगी हुई है॥१॥

उनकी सवारी बैल है, ललाट में चन्द्रमा हैं तथा वे मृगछाला और झोली को लिए हुए हैं। उनके गले में सर्प लिपटा हुआ है और तीन आँखें सुन्दर रीति से चमक रही हैं॥२॥

शिव के इस अद्भुत रूप को देखकर पार्वती अपनी करोड़ों सखियों को साथ लेकर शिव के पास दौड़ी—शीघ्रता से आयीं। पार्वती का चन्द्रमा के समान मुख शिव की इस अपूर्वता को देखकर हँसता था, मुसकाता था तथा लज्जित होता था। सब सिद्धियाँ एक ही स्थान पर एकत्रित हो गयी थीं॥३॥

पार्वती ने शिव के ऊपर गुलाल छिड़का और उनको अबीर के रंग में डुबो दिया। इस प्रकार शिव का शरीर लाल लाल हो गया। इसके बाद शिव और पार्वती आपस में विनोद—मजाक करने लगे॥४॥

(२)

प्रसङ्ग—कृष्ण के द्वारा गोपियों का चीर हरण; गोपियों का चीर खोजना तथा कृष्ण को कदम्ब की डाल पर बैठे देखना।

सावरो के चरित्र सुनो री। टेक—
घर घर से निकलेंली बृज बनिता;
ले गागर सिर कोरी[1] ॥ १ ॥
मज्जन[2] लागि[3] धसेली[4] जमुना में,
केहू सांवरि केहू गोरी ॥ २ ॥
करत जल में झकझोरी[5]।
ओही समय बृज नन्द साम जी,
जमुना के तट पहुँचो री ॥ ३ ॥
लेइ के चीर कदम चढ़ि बइठेले;
मन में आनन्द भयो री ॥ ४ ॥
देख अइसन होत बा होरी।
बुडुकी मारि ग्वालिन सम निकलीं
जमुना के तट पहुँचो री ॥ ५ ॥
जमुना के तट पर पट नाहिं देखलीं,
सब से कहत सुनोरी ॥ ६ ॥
कदम पर कौन चढ़ी री।
सभ ग्वालिन पट ढूंढन निकलीं;
केहू एक देखि परो री ॥ ७ ॥
ओमें[6] एक सखी ब्रज बनिता,
सब से कहत सुनो री ॥ ८ ॥
किसुन[7] जी चीर हरो री।

ब्रज की स्त्रियाँ अपने सिर पर नयी गागर लेकर घर में से निकलीं और जमुना में स्नान करने के लिए चली गयीं। उनमें कोई श्याम वर्ण की थी और कोई गोरी थी ॥ १—२ ॥

उसी समय नन्दजी के लड़के कृष्णजी जमुना के किनारे पहुँच गये। उन्होंने उन स्त्रियों का कपड़ा ले लिया और पेड़ पर चढ़ गये। उनके मन में अत्यन्त आनन्द हुआ ॥ ३—४ ॥

१. कोरा, नया। २. मज्जन, स्नान। ३. लिए। ४. गयी। ५. किसी के शरीर को पकड़ कर जोरों से हिलाना। ६. उसमें से। ७. कृष्ण।

गोपियाँ जमुना के जल में डुबकी मार कर, जब निकल कर किनारे पर आयीं, तब देखा कि जमुना के किनारे उनके कपड़े नहीं हैं ; अतः यह बात वे सबसे कहने-सुनने लगीं ।।५—६।।

सब गोपियाँ अपने कपड़े ढूँढ़ने लगीं। उनमें से किसी ने कृष्णजी को देख लिया और वह सब से कहने लगीं कि कृष्ण ने ही हम लोगों के कपड़े चुराए हैं ।।७—८।।

(३)

प्रसङ्ग—रामचन्द्र के वीर कार्यों का वर्णन।

ए राम से खेरबि होरी।—टेक

आरे जेकरा कर सर धनुख बिराजेला,
साम गउर दुनो जोरी ।
बालक रूप अनूप बनल बा,
सोभा सिन्धु खरो री ।। १ ।।
ए राम से०
बगसर जाइ मुनिन मख रखले,
जनकपुर में धेनुहा तोरी ।
सब भूपन के मान मरदि के,
उत बियाहे जनक के किसोरी ।। २ ।।
एक राम स०
बन में जाई मलाह के तरले,
नैन जयन्त के फोरी ।
त्रास हरेले सुर, नर, ए मुनिन के,
कपि दल सैन बटोरी ।। ३ ।।
ए राम से०
लंका के राज विभीखन दिहले,
रावन के सिर फोरी ।
देवतन के जेलखाना छोड़वले,
लवटेले अवध बहोरी ।। ४ ।।
ए राम से खेलबि होरी ।

कोई भक्त कहता है कि मैं राम से ही होली खेलूंगा, जिनके हाथ में शर और धनुष है, जिनकी श्याम और गौर (राम, लक्ष्मण) जोड़ी हैं, जो शोभा के समुद्र हैं तथा जिन्होंने बालक के अनूप रूप को प्राप्त किया है ।।१।।

जिन्होंने बक्सर में मुनियों के यज्ञ की रक्षा की, जनकपुर में धनुष तोड़ा और सब राजाओं के मान का मर्दन कर जनक की लड़की से विवाह किया ।।२।।

जिन्होंने बन में मल्लाह गुह को तार दिया, जयन्त की आँख को फोड़ा और बानरी सेना इकट्ठी कर रावण को मार कर देवता, मनुष्य तथा मुनियों के डर को दूर भगा दिया ॥३॥

जिन्होंने रावण का सिर फोड़ कर (मार कर) लंका का राज्य विभीषण को दे दिया और देवताओं को रावण के जेलखाने से छुड़ाया। अन्त में वे अयोध्या को लौट आये ॥४॥

(४)

प्रसङ्ग—राम से बैर न करने के लिए मन्दोदरी की रावण से प्रार्थना। प्रार्थना न सुनने पर राम के द्वारा रावण का सर्वनाश।

रघुबरजी से बैर करो ना। टेक

सत योजन मरजाद सिन्धु के;
ना केहू लाँघि सके ना।
ताहि बाँधि उतरे ले रघुनन्दन;
बानर सैन केहू जीति सके ना ॥ १ ॥
रघुबरजी से।

बीच सभा में कठिन प्रन अंगद
कपि के पांव अड़ो ना।
दे दे ताल बीर सभ हरले;
टारे पैर टरे ना ॥ २ ॥
रघुबरजी से०।

सोने के लंका जराइ देले बाटे;
तुम प्रिय भागि सको ना।
हाइ हाइ सब घर में मचल बा;
अब केहू जिअत बचो ना ॥ ३ ॥
रघुबरजी से०।

हम अबला नित तोरा से कहत बानि;
निसिचर केहू उबरे ना।
तुलसीदास मुरदा भइले रावन;
करम गति केहू के टारे टरे ना ॥ ४ ॥
रघुबरजी से०।

मन्दोदरी रावण से कहती है कि रामचन्द्र से बैर मत करो। समुद्र सौ योजन (आठ सौ मील) चौड़ा है, उसे कोई पार नहीं कर सकता; परन्तु रामचन्द्र पुल बाँध कर चले आये। उनकी बानरी सेना को कोई जीत नहीं सकता ॥१॥

रावण की सभा के बीच में अंगद ने अपने पैर को जमा कर प्रतिज्ञा की। सब बीर ताल देकर पैर हटाने में हार गये। अंगद के पैर को वे नहीं हटा सके ॥२॥

ऐ रावण ! हनुमान सोने की लंका को जला रहा है। तुम भग नहीं सकते। आग लगने से सब घर में हाहाकार मचा है। अब कोई जीता नहीं बच सकता ॥३॥

मैं बलहीन हूँ, तुमसे सन्धि के लिए नित्य ही प्रार्थना करती हूँ। अब कोई राक्षस जीवित नहीं बच सकता। राम ने रावण को मारा और वह मर गया। कर्म की गति को कोई टाल नहीं सकता ॥४॥

(५)

प्रसङ्ग—पति के परदेस चले जाने पर स्त्री का होली न खेलना।

बन बोलेला मोर हरि हो;
का संगे होरी खेलों री। टेक—

आम के डाढ़ि[1] कोइलिया; बन बोलेला मोर।
का संगे होरी खेलों री; एक राधे दूजे नन्द किसोर ॥ १ ॥
का संगे होरी० ।

आवन आवन सइयाँ कहि गइले; अरुझेले[2] कव नी ओर।
का संगे होंरी खेलों री; एक राधे दूजे नन्द किशोर ॥ २ ॥

बन बोलेला मोर हरि हो;
का[3] संगे होरी खेलों री ॥

कोई स्त्री कहती है कि बन में मोर बोल रहा है। इस समय पति परदेस में है; अतः मैं किसके साथ होली खेलूँ ॥

आम की शाखा पर कोयल बोल रही है और बन में मोर बोलता है। राधा और कृष्ण आपस में होली खेलते हैं; परन्तु (पति के अभाव में) मैं किससे होली खेलूँ ॥१॥

मेरा पति परदेस से शीघ्र ही आने के लिए कह गया था; परन्तु न मालूम वह किस ओर फँस गया ? मैं किसके साथ होली खेलूँ ॥२॥

बन में मोर बोलता है; परन्तु मैं किसके साथ होली खेलूँ।

इस गीत में होली खेलने के लिए स्त्री की व्याकुलता अत्यधिक मात्रा में दिखाई पड़ रही है। जब प्रकृति में चारों ओर आनन्द ही आनन्द छाया रहता है। ऐसे बसन्त में पति का परदेश रहना बड़ा ही खलता है। इसी वेदना की सूचना इस गीत में मिलती है।

१. शाखा। २. उलझना, फँस जाना। ३. किसके साथ।

(६)

प्रसङ्ग—राम और सीता के होली खेलने का वर्णन।

होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी। टेक—

केकरा[1] हाथ कनक पिचकारी;
केकरा हाथ अबीर[2] ॥ १ ॥
राम के हाथ कनक पिचकारी;
सीता के हाथ अबीर ॥ २ ॥
होरी खेले रघुबीरा अवध में होरी।

रामचन्द्रजी अवध में होली खेलते हैं। किसके हाथ में सोने की पिचकारी है और किसके हाथ में अबीर है ॥१॥

राम के हाथ में सोने की पिचकारी है और सीता के हाथ में अबीर है ॥२॥

रामचन्द्रजी अयोध्या में होली खेलते हैं।

(७)

प्रसङ्ग—कृष्ण को स्त्री का रूप बना कर गोपियों का उनके साथ होली खेलना।

बृज में हरि होरी मचाई। टेक—

इतते[3] आवत नवल राधिका, उतते[4] कुंवर कन्हाई।
हिलि मिलि फाग परसपर खेलत, सोभा बरनी न जाई ॥ १ ॥
घरे घरे बजत बधाई।

बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, डफ, मंजीरा[5] सहनाई।
उड़त गुलाल कुमकुमा[6] केसर, रहत सकल बृज छाई ॥ २ ॥
मनो मेघवा झरि लाई।

राधे जी सैन दियो सखियन को, झुण्ड झुण्ड होई धाई।
लपटि झपटि गई साम सुनर को; कर धरि पकड़ मँगाई ॥ ३ ॥
लाला जी को नारि बनाई।

छीन लियो मुख मुरली पीताम्बर; सिर से चुनरी ओढ़ाई।
बेंदी भाल; नयन बिच काजल, नकबेसर[7] पहनाई ॥ ४ ॥
साम जी को नाच नचाई।

१. किसके। २. गुलाल। ३. इधर से। ४. उधर से। ५. एक प्रकार का बाजा। ६. कुंकुम। ७. नाक का गहना, नथुनी।

का सुसुकत[1] मुख मोरि मोरि के; काह भई चतुराई ।
काह भयो तोरे बाबा नन्द जी, काहावाँ जसोमति माई ।। ५ ।।
लाल जी को ले ना छोड़ाई ।

होरी खेले बिना जाय ना दैहों, करिहों कोटि उपाई ।
लीहों चुकाई कसर[2] सब दिन के; तू ब्रज चोर चुराई ।। ६ ।।
बहुत दधि माखन खाई ।

ब्रज में कृष्ण ने अच्छी होली मचा रक्खी है। इधर से नयी राधिकाजी आ रही हैं और उधर से कृष्णजी चले आ रहे हैं। दोनों आपस में हिलमिल कर फाग खेलते हैं। उनकी शोभा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।।१।।

कंठ ताल, मृदङ्ग, झाँझ, डफ, मजीरा और शहनाई बज रही है। वहाँ गुलाल, कुंकुम और केसर उड़ रहा है और सारे ब्रजमण्डल में छा जाता है ।।२।।

राधा ने सखियों को संकेत दिया और वे झुण्ड बना कर चली आयीं। उन्होंने कृष्ण को पकड़ लिया और उन्हें स्त्री बनाने लगीं ।।३।।

उनके मुख से मुरली तथा शरीर से पीताम्बर छीन लिया, उन्हें सिर पर चूनरी ओढ़ायी। उनके ललाट में बिन्दी, आँखों में काजल और नाक में बेसर पहना दिया और कृष्ण को नचाने लगीं ।।४।।

इन बातों से परेशान होकर श्रीकृष्ण रोने लगे। तब ताना मारती हुई वे कहती हैं कि ऐ कृष्ण ! अपने मुख को मोड़ कर तुम क्यों रोते हो ? तुम्हारी चतुरता अब कहाँ चली गयी ? तुम्हारे पिता नन्द और माता यशोदा अब क्या हो गई हैं (क्यों नहीं आकर वे लोग तुम्हारी सहायता करते) ।।५।।

गोपियाँ कहती हैं कि ऐ कृष्ण ! तुम करोड़ों उपाय क्यों न करो, हम लोग होली खेले बिना तुमको नहीं जाने देंगी। हम लोग सब दिन का बदला आज ही चुका लेंगी, क्योंकि तुम कपड़े चुराने वाले ब्रज के चतुर हो तथा तुमने हम लोगों का बहुत दधि और मक्खन खाया है ।।६।।

(८)

प्रसङ्ग—लंका में जाकर हनुमान का सीता को मुद्रिका देना तथा सारे शहर को जला डालना।

पवन तनय आजु होरी मचाई। टेक—
बारिधि लाँघि गयो लंका में; तरू पर जाई छिपाई ।
व्याकुल देखि सिया को जबही, मुद्रिका दीन्हि गिराई ।। १ ।।
सिया हिय हरस उठाई ।

१. धीरे-धीरे रोना। २. बदला, कमी।

मुद्रिका देखि सिया अति भरमी[1], मन मँह तरक[2] बढ़ाई ।
सुमिरन कीन्ह, प्रकट तब भयऊ; सिया सन आसिस पाई ।। २ ।।
धसो तब उपवन जाई ।

उपवन जाई के पेड़[3] उखारो; रावण पकड़ि मँगाई ।
पोंछि बान्धि, पट तेल चुवायो, पावक दीन्ह लगाई ।। ३ ।।
चढ़ो कपि गढ़ पर जाई ।

कूदि फांदि के पुर सब जारो, दसमुख हिय अकुलाई ।
लागल आगि जरल[4] पुर सगरो; बिलपत लोग लुगाई[5] ।। ४ ।।
हाय ! हाय ! लंक जराई ।

पवन के पुत्र हनुमान जी ने आज होली मचा दी है। समुद्र को लाँघ कर वे लंका में पहुँच गये और वहाँ वृक्ष के ऊपर जाकर छिप गये। जब उन्होंने सीताजी को व्याकुल देखा, तब राम द्वारा प्रदत्त अँगूठी को गिरा दिया और सीताजी ने प्रसन्नता-पूर्वक उसे उठा लिया ।।१।।

राम नाम से अंकित अँगूठी को देख कर सीताजी अत्यन्त सन्देह में पड़ गयीं और तर्क कर सोचने लगीं। जब सीता ने स्मरण किया, तब उनके आशीर्वाद को प्राप्त कर हनुमानजी प्रकट हुए और रावण के बगीचे में चले गये ।।२।।

वहाँ पर उन्होंने वृक्षों को उखाड़ना शुरू किया। इस समाचार को सुन कर रावण ने उन्हें पकड़ कर मँगवाया। उनकी पूँछ में कपड़ा बाँध कर, तेल लगा कर उसमें आग लगाने की आज्ञा दे दी ।।३।।

पूँछ में आग लग जाने पर हनुमानजी ऊँचे महलों के ऊपर चढ़ गये ; कूद फाँद करके सारे नगर को जला डाला। आग लगने से सारा शहर जल कर खाक हो गया और सब लोग विलाप करने लगे। यह दशा देखकर रावण अपने मन में बहुत व्याकुल हुआ ।।४।।

(९)

प्रसङ्ग—हनुमान का लक्ष्मण को जिलाने के लिए संजीवनी बूटी लाना, भरत का रास्ते में उन्हें रोकना। दोनों में संवाद।

अंजनी सुत मेरो मन भाई। टेक
लाल लँगूर की का छबि बरनौं; तेल फुलेल लगाई ।
एक हाथे बज्र, दूसर धवलागिरि, पहुँचे अजोधा में जाई ।। १ ।।
भरत उठि चाप चलाई ।

१. सशंकित हुई। २. तर्क, विचार। ३. वृक्ष। ४. जल गया। ५. सब पुरुष-स्त्री।

लागत बान गिरो धरनी में; राम राम गोहराई ।
अतना सबद परो हरि कानन; नंगे पैर उठि धाई ॥ २ ॥
मानों कोई सन्तन आई ।

केकर पुत्र, काहि तोर नामा; केहि कारज तुम आई ।
केहि नृप के तुम करत चाकरी; काई लेन तुम आई ॥ ३ ॥
सन्त मोंसे कहो समुझाई ।

अंजनीपुत्र, नाम हनुमाना; लंका से हम आई ।
राम नृपति के करत चाकरी, लछुमन सक्ति सताई ॥ ४ ॥
सजीवन लेन में आई ।

ए हनुमान बाण चढ़ि बैठो, बाण विमान बनाई ।
सजीवन कूटि लखन को दीजै; लखन उठे हरसाई ॥ ५ ॥
मानो कोई सन्त जिलाई ।

अंजनी के पुत्र हनुमान मेरे मन को बहुत अच्छे लगते हैं। लाल-बन्दर (हनुमान) की शोभा का मैं क्या वर्णन करूँ? उनके एक हाथ में बज्र के समान कठोर गदा है और दूसरे हाथ में धवलागिरि पर्वत है, जिसे लेकर वे अयोध्या में आये। भरत ने सशंकित होकर उन पर बाण चलाया। बाण के लगते ही वे पृथ्वी में गिर पड़े और राम राम चिल्लाने लगे। इतना शब्द जब भरत के कान में पड़ा, तब वह नंगे पैर वहाँ पर चले आये ॥ १—२॥

भरत ने हनुमान से पूछा—तुम्हारा नाम क्या है? तुम किसके लड़के हो? किस कार्य के लिए तुम आये हो? तुम किस राजा की नौकरी करते हो और क्या लेने के लिए आये हो, यह समझा कर कहो। हनुमान ने कहा—मेरा नाम हनुमान है, मैं अञ्जनी का पुत्र हूँ। मैं लंका से आ रहा हूँ। राजा रामचन्द्र की नौकरी करता हूँ। लक्ष्मण को शक्ति लगी है अतः संजीवनी बूटी लाने के लिए आया हूँ ॥ ३—४॥

तब भरत ने कहा—ऐ हनुमान! तुम मेरे बाण पर बैठ जाओ। मैं इसे विमान बना तुम्हें लंका पहुँचा दूंगा। संजीवनी को कूटकर लक्ष्मण को दो, जिससे वह प्रसन्नता पूर्वक होश में आकर उठ बैठें, जैसे किसी महात्मा ने ही उन्हें जिला दिया हो ॥ ५॥

(१०)

प्रसङ्ग—रामचन्द्र का स्वरूप कथन तथा उनके विभिन्न पराक्रम के कार्यों का वर्णन।

प्रण एहि मेरो रघुबर जी से खेलबि होरी । टेक—
जाके सिर पर मुकुट बिराजे; साँवर, गोर दुनो जोरी ।
भाल विशाल, तिलक बिच सोभे, सोभा सिन्धु खरोरी ॥ १ ॥
प्रण एहि मेरो० ।

जाके करसर धनुष बिराजे फिरत अवध के खोरी।
बालक रूप अनूप बनल बा; ओढ़त पीत[1] पटोरी ॥ २ ॥
प्रण एही मोरो० ।
बगसर जाई मुनिन मन राखो; जनकपुर में धनुहा तोरी।
सब भूपन के गर्व नष्ट करि; ब्याहे जनक किशोरी ॥ ३ ॥
प्रण एही मेरो० ।
बन में जाई केवट को तारो; नैन जयन्ता के फोरी।
मारो बालि सुग्रीव अरिय[2] हो; कपि दल सैन बटोरी ॥ ४ ॥
प्रण एहिं मेरो० ।
लंका जारि विभीषण तारो; रावण के सिर फोरी।
सब सतरू[3] के गरब नष्ट करि; आयो अवध बहोरी[4] ॥ ५ ॥
प्रण एही मेरो रघुबर जी से खेलबि होरी।

कोई भक्त कहता है कि मेरा यह प्रण है कि मैं रामचन्द्र जी ही से होली खेलूंगा। जिनके सिर पर मुकुट बिराजमान है साथ में गौर वर्ण लक्ष्मण हैं, विशाल ललाट पर सुन्दर तिलक विराजमान है और वे शोभा के समुद्र के समान दिखाई पड़ रहे हैं ॥१॥

जिनके हाथ में धनुष और बाण विराजमान है। वे अवध की गलियों में घूमते फिरते हैं। जिनका बालक रूप पीताम्बर ओढ़ने के कारण अत्यन्त सुन्दर दिखाई पड़ता है ॥२॥

बक्सर में जाकर जिन्होंने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की; जनकपुर में धनुष को तोड़ा और सब राजाओं के अभिमान को नष्ट कर जनक किशोरी—जानकी—से विवाह किया ॥३॥

जंगल में जाकर जिन्होंने मल्लाह गुह को भवसागर से पार कर दिया; सीता को चोंच से मारने के कारण जयन्त की एक आँख को फोड़ डाला और बानरी सेना एकत्रित कर सुग्रीव के शत्रु बालि को मार डाला ॥४॥

जिन्होंने लंका को जलाकर भक्त विभीषण की रक्षा की; सब शत्रुओं के गर्व को नष्ट कर, रावण के सिर को फोड़ दिया और सकुशल अयोध्या को लौट आये। ऐसे ही राम से होली खेलने का मेरा प्रण है ॥५॥

(११)

प्रसङ्ग—शिवजी का पार्वती की सखियों के साथ होली खेलना।

आजु सदाशिव होरी मचाई। टेक—
हाथ त्रिशूल, ललाट चन्द्रमा, गले नाग लपटाई।
बिस के प्याल पिये शिवशंकर; डिम डिम डमरू बजाई ॥ १ ॥
भूतन के नाच नचाई।

१. पती, पीला। २. शत्रु। ३. शत्रु। ४. पुनः फिर।

राजा हिमाचल के आँगन में, सभ सखि होरी मचाई ।
कोऊ रंग पिचकारिन मारति; कोऊ अबीर लै धाई ॥ २ ॥
भोला के मुख में लगाई ।

हंसि बोले महादेव दिगम्बर; यह रंग मोहि न भाई ।
भाँग, धतूर, सफेद संखिया, गोला अफीम घोराई ॥ ३ ॥
ओहि सदासिव लेति चढ़ाई ।

जातना[1] सखी होरी खेलन आई; सभ[2] को भंग पिलाई ।
'विश्वनाथ' अलमस्त फिरें, सभ! भंग के रंग चढ़ाई ॥ ४ ॥
सभन के मति बौराई[3] ।

आज शिवजी होली खेल रहे हैं। उनके हाथ में त्रिशूल है, ललाट में चन्द्रमा है, गले में सर्प लिपटे पड़े हैं। शंकर ने डिम डिम शब्द करते हुए डमरू को बजा कर विष का प्याला (हलाहल) पी लिया ॥१॥

राजा हिमालय के आँगन में पार्वती की सब सखियाँ होली मचा रही हैं। कोई पिचकारी लेकर रंग छोड़ती हैं और कोई गुलाल को लेकर, दौड़ कर शिव के गाल में लगा देती है ॥२॥

तब दिगम्बर (नंगा रहने वाले) शिवजी हँस करके कहते हैं कि यह गुलाल का रंग मुझे अच्छा नहीं लगता। मुझे भाँग, धतूरा, संखिया, और अफीम यही अच्छा लगता है और मैं यही खाता हूँ ॥३॥

जितनी पार्वती की सखियाँ शिव से होली खेलने के लिए आयी थीं, सब को शिव ने भंग पिला दिया। 'विश्वनाथ' कहते हैं कि भंग के रंग में मस्त होकर सब पागल होकर इधर-उधर घूमने लगीं ॥४॥

(१२)

प्रसङ्ग—राधा और कृष्ण के होली खेलने का वर्णन। सखियों के द्वारा कृष्ण को स्त्री बनाना।

राधावर खेलत होरी। टेक--

नन्दगांव[4] के ग्वाल सखा हैं;
बरसाने[5] की गोरी ।
खेलत फाग परसपर[6] हिलि मिलि;
सुख, रंग में रस भोरी[7] ॥ १ ॥
घरे घरे फाग भनो री ।

१. जितना। २. सब। ३. पागल हो गयी। ४. ब्रज का एक गाँव ५. राधा का जन्म स्थान। ६. परस्पर, आपस में। ७. मग्न।

राधा सान[1] दियो सखियन के;
जुथ्थ[2] जुथ्थ उठि दौरी ।
लपटि झपटि धरि साम सुनर के;
बरबस पकड़ि भिगौरी[3] ॥ २ ॥
मची ब्रज में अब होरी ।

छीन लियो बनमाल मुरलिया;
पीताम्बर लियो छोरी ।
भामिनि भेख बनाई कहतु हैं;
नन्दराय की छोरी[4] ॥ ३ ॥
भली छबि आज बनो री ।

दे दे ताल नचावत गावत;
अपनी अपनी ओरी[5] ।
वा दिन की सुधि भूलि गयो;
जमुना तीर चीर हरो री ॥ ४ ॥
आजु मोर दाव[6] परो री ।

कृष्ण रंग फगुआ मन भावे,
लियो न प्रीति निहोरी ।
भवो अधीन वृखभानु[7] सुता के;
'सूर' करे बिनती कर जोरी ॥ ५ ॥
साम जी खूब छको[8] री ।

राधा और कृष्ण होली खेल रहे हैं। नन्दगाँव के ग्वालों के सखा मित्र कृष्णजी एक ओर हैं और दूसरी ओर बरसाना की गोरी राधा हैं। दोनों आनन्द के रंग में मस्त होकर आपस में होली खेल रहे हैं ॥१॥

श्रीकृष्ण के साथ होली खेलते समय राधा ने अपनी सखियों की ओर संकेत किया। राधा का संकेत पाकर झुण्ड रूप में उनकी सखियाँ चली आयीं। उन्होंने कृष्ण को लपक कर पकड़ लिया और बलात् उनको गुलाल के रंग में भिगो दिया ॥२॥

गोपियों ने श्रीकृष्ण की माला तथा मुरली (बंशी) को छीन लिया और श्रीकृष्ण का स्त्री रूप बना कर वे कहने लगीं कि यह नन्द जी की लड़की है (क्योंकि इसका रूप स्त्री के समान है) ॥३॥

१. संकेत। २. यूथ, समूह। ३. भिगो दिया। ४. लड़की। ५. तरफ। ६. अवसर, मौका। ७. राधा। ८. छक गये, धोखा खा गये।

गोपियाँ अपनी-अपनी ओर ताल देकर कृष्ण को नचाती और गवाती हैं और ताना मारती हुई उनसे कहती हैं कि क्या तुम उस दिन की सुधि भूल गये, जब तुमने जमुना के किनारे हम लोगों के कपड़ों को चुरा लिया था ॥४॥

कृष्ण को होली का रंग बहुत अच्छा लगता है। उन्होंने गोपियों के प्रेम को परख लिया। सूरदासजी हाथ जोड़ कर कहते हैं कि कृष्णजी वृषभानु की लड़की —राधा—के आधीन हो गये और इस प्रकार वे खूब ही छके ॥५॥

(१३)

प्रसङ्ग— लज्जा को छोड़ कर कृष्ण के साथ होली खेलने के लिए सखियों का राधा को उपदेश।

ए का हाल तिहारी, ए हो प्रिय प्रान पियारी। टेक—

फाग समय घूंघट खोलन को;
कन्त करे मनुहारी[1]।
तू इ सुनि सुनि जिय सकुचाति हो;
खंजन लोचन वारी ॥ १ ॥
बिचारहु छबि मतवारी।

सरद निसाकर सुन्दर मुख तव;
जाको अति उजियारी[2]।
तुम केहि भाँति छिपाई सकोगी;
झीनी चूनर वारी ॥ २ ॥
छिपावत बदन वृथारी।

सुन्दर गज-गति कामिनि भामिनि;[3]
कोमल राज दुलारी।
'विश्वनाथ' रंग खेलु परसपर;
छोड़ि संकोच बिचारी ॥ ३ ॥
तजु तजु अब लाज अनारी।

कृष्णजी राधिका से कहते हैं कि ऐ प्राण प्यारी! तुम्हारी क्या दशा है? फाग खेलने के समय लज्जा छोड़कर घूंघट खोलने के लिए पति तुम्हारी प्रार्थना कर रहा है ॥१॥

खञ्जन के समान लोचन वाली ऐ सुन्दरी स्त्री! तुम इस बात को सुनकर अपने हृदय में संकुचित होती हो। तुम्हारा मुख शरद्‌कालीन चन्द्रमा के समान अत्यन्त सुन्दर है, जिसका प्रकाश

१. प्रार्थना। २. उजाला। ३. स्त्री।

अत्यन्त अधिक है। तुम पतली साड़ी पहनती हो ; अतः तुम अपने प्रकाशमान मुखचन्द्र को कैसे छिपा सकोगी ? ॥१॥

ऐ सुन्दरी स्त्री ! तुम्हारी चाल हाथी की गति के समान मनोरम है। तुम कोमल राज-दुलारी हो। 'विश्वनाथ' कहते हैं कि अब संकोच को छोड़ कर कृष्ण के साथ मिलकर परस्पर रंग खेलो। भावार्थ यह है पति से होली खेलने में तनिक भी लज्जा मत करो॥३॥

(१४)

प्रसङ्ग—गोपियों के द्वारा कृष्ण को स्त्री रूप में अलंकृत करना ।

होरी खेलन मत जाहु लाल,
कोउ रंग डारि दै हैं ।
वृज की नारि सबै मदमाती;
तोहि के पकरि ले जै हैं ॥ १ ॥
लाल कोउ रंग डारि दै हैं ।
छीन लिहे पट, माल, मुरलिया;
सिर से चुनरी औढ़ै हैं ।
बेंदी भाल, नयन बिच काजर;
नक बेसर पहिनै हैं ॥ २ ॥
लाल कोउ रंग डारि दै हैं ।
माँग में सेनुर, कान में गहना;
बार में चोटी लगइ हैं ।
'विश्वनाथ' कर जोरि बिनय कहें;
तोहि के नाच नचै हैं ॥ ३ ॥
लाल कोउ रंग डारि दैहैं ।

यशोदाजी अपने पुत्र कृष्णजी से कहती हैं कि ऐ प्रिय पुत्र ! तुम होली खेलने के लिए मत जाओ। कोई गोपी तुम पर रंग डाल देगी। ब्रज की सभी स्त्रियाँ मद से मस्त हैं, वे तुम को पकड़ ले जायेंगी और गुलाल लगा देंगी॥१॥

वे तुम्हारे वस्त्र, माला और मुरली को छीन लेंगी, तुम को सिर से चूनरी ओढ़ा देंगी। तुम्हारे ललाट में बिन्दी, आँखों के बीच में काजल और नाक में बेसर (नथ) डाल देंगी॥२॥

वे तुम्हारे माँग में सिन्दूर, कानों में गहना और बालों में चोटी लगा कर तुम्हें स्त्री बना देंगी। 'विश्वनाथ' हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हुआ कहता है कि यशोदाजी कहती हैं कि ऐ कृष्ण ! गोपियाँ तुम्हें नाच नचा देंगी अर्थात् तुम्हें अत्यन्त ही परेशान करेंगी॥३॥

१. नाक का एक गहना, नथुनी।

(१५)

प्रसङ्ग—नैपाल के पशुपति नाथजी के मन्दिर का वर्णन।

आरे धन्य नगर नयपाल हो लाला,
धन्य नगर नयपाल[1] हो। टेक
आरे जाहावाँ विराजे[2] पसुपति बाबा;
धन्य नगर नयपाल हो ॥ १ ॥
आहो कथिये[3] छवइबो[4] में बाबा के मन्दिलवा;
आहो लाला, कथिये छवइबो नयपाल हो।
सोनवे छवइबो में बाबा के मन्दिलवा;
रूपवे[5] छयइबो नयपाल हो।

नैपाल देश धन्य है, जहाँ स्वयं बाबा पशुपतिनाथ (महादेव) विराजमान हैं ॥१॥

मैं किस चीज से बाबा पशुपति नाथ के मन्दिर को छवाऊँगा अर्थात् अलंकृत करूँगा और किस वस्तु से नैपाल को सुशोभित करूँगा। भक्त स्वयं उत्तर देता है—मैं सोने से बाबा के मन्दिर को अलंकृत करूँगा और चाँदी से नैपाल देश को सुसज्जित करूँगा ॥२॥

---

१. नैपाल। २. विराजमान हैं। ३. किस वस्तु से। ४. सुशोभित करूँगा। ५. चाँदी

डफ

(१)

प्रसङ्ग—किसी गोपी की कृष्ण को स्त्री बनाकर होली खेलने की मधुर धमकी।

मैं तो खेलूँगी कान्हा तोसे होरी बरजोरी। टेक

होरी बरजोरी[1] लाल; होरी बरजोरी।
मैं तो खेलूँगी कान्हा, तोसे होरी बरजोरी ॥१॥
हम घनश्याम बनबि मथुरा में;
तोहि के नवल व्रज बनिता बनाई।
मोर मुकुट, कुण्डल हम पहिनबि;
तोहि के लला बेनुली पहिनाई ॥२॥
मुरली मधुर लेबि हम अपना हाथवा;
चूड़ी पहिनाइबि कान्हा तोहरी कलाई।
'विश्वनाथ' धरि मुरली अधर पर;
लेबि विपिन कान्हा गारावा[2] लगाई ॥३॥

कोई गोपी कहती है कि ऐ कृष्ण ! मैं तुमसे बलात् होली खेलूँगी ॥१॥

मथुरा में मैं कृष्ण का रूप धारण कर लूँगी और तुम को ब्रज की बनिता—गोपी बनाऊँगी। मैं स्वयं मोरपंख का बना मुकुट और कुण्डल पहनूंगी और तुमको बिन्दी (टिकुली) पहनाऊँगी ॥२॥

मैं अपने हाथ में मधुर मुरली लूंगी और तुमको स्त्रियोचित चूड़ी पहनाऊँगी। 'विश्वनाथ' कहते हैं कि अपने होठों पर मुरली को रखकर तथा बजा कर मैं आपको वृन्दावन के कुञ्ज में गले लगाऊँगी ॥३॥

(२)

प्रसङ्ग—कृष्णजी का ग्वाल-बालों के साथ होली खेलना।

डफ बाजि रही वृन्दावन में। टेक
आओ सखी, चलो फाग खेलन को;

१. बलात्। २. गले।

गोकुल में डफ बाजि रही।
जमुना तट पर ग्वालिन के संग;
हरि रस रंग मचाई रही॥१॥

उत[1] तें ग्वाल बाल सब आये
इत[2] तें नवल किशोरी।
भरि उमंग सभ खेलत साम संग,
कुञ्जन बीच बिभोरी[3] ॥२॥

कोई गोपी कहती है कि वृन्दावन में डफ बज रहा है। ऐ सखी! अब होली खेलने के लिए चलो, आज गोकुल में भी डफ बज रही है! जमुना के किनारे ग्वालिनों के साथ कृष्णजी रासक्रीड़ा कर रहे हैं॥१॥

एक ओर से ग्वाल के पुत्र—श्रीकृष्ण आये और दूसरी ओर से नवल किशोरी राधिका जी आयीं। उमंग के साथ सब कृष्णजी के साथ होली खेलते हैं और कुञ्जों के बीच में आनन्द से मस्त हो जाते हैं॥२॥

राधा और कृष्ण का यह होली खेलना भक्तों के आनन्द का कारण है। युगल-मूर्ति की आनन्दमयी क्रीड़ा को देखकर कौन अभागा आनन्द सागर में गोते न लगाने लगेगा॥३॥

(३)

प्रसङ्ग—कृष्ण के द्वारा गोपियों का चीर हरण।

ले गइले चीरा मुरारी कदम्ब पर;
ले गइले चीरा मुरारी कदम्ब पर। टेक
लेकर चीर कदम्ब चढ़ि बैठे;
मैं जल माँहि उघारी।
अब की चीरा बकसु[4] मनमोहन;
जल में से होने द न्यारी[5] ॥१॥

तब तोर चीर देबि हम राधे;
जलवा से हो जा तू न्यारी।
पुरइन पात पहिनि सखि निकली,
कृष्ण बजावेले तारी[6] ॥२॥
कदम पर ले गइले चीर मुरारी।

१. उधर से। २. इधर से। ३. आनन्द में मग्न, विस्मृत। ४. छोड़ दो। ५. अलग। ६. ताली।

कोई गोपी कहती है कि कृष्णजी हम लोगों के कपड़े को लेकर कदम्ब पर चढ़ कर बैठ गये हैं और मैं जल में नंगी खड़ी हूँ। वह प्रार्थना करती हुई कृष्ण से कहती है कि ऐ कृष्ण! इस बार मेरे कपड़े दे दो और मुझे जल में से बाहर निकलने दो ॥१॥

कृष्णजी कहते हैं—ऐ राधे! मैं तभी तुम्हारे कपड़े को दूंगा, जब तुम जल में से बाहर निकल आओगी। यह सुनकर पुरैन का पत्ता पहन कर राधा जी जल में से निकली और कृष्ण ताली बजाकर उनकी हँसी उड़ाने लगे ॥२॥

कृष्ण के द्वारा गोपियों के चीरहरण की घटना का उल्लेख गीतों में अनेक बार हुआ है। यह कथा-प्रसंग इतना सरस, सुन्दर मीठा तथा शृंगारपूर्ण है। यह कथा गीतों में इसकी प्रचुरता का होना स्वाभाविक ही है। संस्कृत साहित्य में इस प्रसंग का उल्लेख असंख्य बार हुआ है। एक कवि ने तो कृष्ण को गोपियों के वस्त्र के चोर के रूप में उनका स्मरण भी किया है। यथा—

नूतनजलधररुचये; गोपवधूटीदुकूल-चौराय ।
तस्मै कृष्णाय नमः संसारमहीरुहस्यबीजाय ॥

चैता

(१)

प्रसङ्ग—किसी ग्वालिन का दही बेचने के लिए मथुरा जाना और कृष्णजी का उसके साथ छेड़-छाड़ करना।

आहो रामा छोटी मोटी ग्वालिन हुई पनिहारिन[1] हो रामा।
चली गइली; मथुरा नगरि दहि बेचन हो रामा ॥ १ ॥
चली भइली।

आ हो रामा एह[2] पार गंगा ओह[3] पार जमुना हो रामा।
बिचवा में; परि गइले रेतवा हो रामा ॥ २ ॥
बिचवा में।

आ हो रामा ताहि बीच कान्हर धइले अचरवा[4] हो रामा।
ताहि बीचे; आँचर धइ बेलमवले[5] हो रामा ॥ ३ ॥
ताहि बीचे।

आहो रामा छोडु छोडु कृस्नाजी हमरो अँचरवा हो रामा।
परि जइहे; दहि के छिटिकवा[6] हो रामा ॥ ४ ॥
परि जइहे।

आहो रामा तोरे लेखे[7] ग्वालिन दहि के छिटिकवा हो रामा।
हमरा लेखे; बरसेला अतर[8] गुलबवा हो रामा ॥ ५ ॥
हमरा लेखे।

कोई छोटी सी ग्वालिन, जो पानी भरने का काम करती थी, मथुरा में दही बेचने के लिए चल पड़ी ॥१॥

मार्ग में इस पार गंगा थी और उस पार जमुना बहती थी और दोनों के बीच में रेत पड़ गया था ॥२॥

उसी बीच में कृष्ण ने ग्वालिन का आँचर पकड़ लिया और उसे रोकने लगे ॥३॥

१. पानी भरने वाली। २. इस। ३. उस। ४. आँचर। (अञ्चल) ५. विलम्ब कर दिया। ६. छीट। (बूँद) ७. लिये। ८. इत्र।

ग्वालिन ने कहा—ऐ कृष्ण ! मेरे आँचर को तुम छोड़ दो, क्योंकि तुम्हारे शरीर पर दही का छींटा पड़ जायेगा ।।४।।

कृष्ण ने उत्तर दिया—ऐ ग्वालिन ! तुम्हारे लिए यह दही का छींटा है ; परन्तु मेरे लिए यह इत्र और गुलाब के समान सुगन्धित है, अतः मैं तुम्हारे आँचर को नहीं छोड़ूँगा । ।।५।।

(२)

प्रसङ्ग—पत्नी के साथ सोते हुए पति का पत्नी के कुवचन सुन कर जोगी बन घर से निकल पड़ना, पत्नी के द्वारा उसकी खोज। पत्नी की उक्ति सखी के प्रति—

आहो रामा सूतल[1] रहलीं पिया संगे सेजिया हो रामा ।
बाते बाते लागि गइले पियवा से रेरिया[2] हो रामा ।। १ ।।
बात बाते ।

आहो रामा मुहँवा से निकलेला बोलिया कुबोलिया[3] हो रामा ।
ताहि बोलिये; पियवा भइले बयरगिया[4] हो रामा ।। २ ।।
ताहि बोलिये ।

आहो रामा बाट चलत बटोहिया भइया हितवा हो रामा ।
एहि बाटे; देखुअ[5] भइया बयरगिया हो रामा ।। ३ ।।
एहि बाटे ।

आहो रामा देखली हम हाजीपुर के हटिया[6] हो रामा ।
हाथ लेले; तोतवा, मयनवा[7] हो रामा ।। ४ ।।
हाथ ले ले ।

कोई स्त्री अपनी सखी से कह रही है कि मैं अपने पिया के साथ सेज पर सो रही थी। बात ही बात में पति से झगड़ा हो गया ।।१।।

मेरे मुँह से बुरे वचन (गाली) निकल पड़े और उस बोली के कारण पति योगी बनकर घर से निकल पड़ा ।।२।।

अपने पति को खोजती हुई वह स्त्री रास्ते में चलते हुए बटोही से पूछती है कि ऐ मेरी भलाई चाहने वाले बटोही भइया ! इस रास्ते से जाते हुए किसी बैरागी (जोगी) को तुमने देखा है ।।३।।

बटोही ने उत्तर दिया—हाजीपुर के हाट (बाजार) में मैंने उसे हाथ में तोता और मैना लिये हुए देखा है ।।४।।

१. सोयी। २. झगड़ा। ३. दुर्वचन। ४. बैरागी, जोगी। ५. देखा है ? ६. हाट, मेला। ७. मैना।

इस गीत में उल्लिखित 'हाजीपुर का हाट' से तात्पर्य सोनपुर का सुप्रसिद्ध मेला है, जो 'हरिहरक्षेत्र का मेला' के नाम से प्रसिद्ध है।

(३)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री का पानी भरने के लिए नदी तीर जाना। उसी समय उसके देवर हंसराज का आना और घड़ा उठाते समय उसकी कुचेष्टा।

आहो रामा नदिया के तीरवा चनन गाँछि[1] बिरवा[2] हो रामा ।
ताहि चढ़ि; किसुन जी बंसिया बजवले हो रामा ॥ १ ॥
ताहि चढ़ि ।
आहो रामा बंसिया सबदवा[3] सुनेली गोपी, राधिका हो रामा ।
गोखुला[4] में; रहलो ना जाला हो रामा ॥ २ ॥
गोखुला में ।
आहो रामा मोर पिछुआरावा कोहार भइया हितवा हो रामा ।
रचि[5] एक; घरिला[6] गढ़ि देहु हो रामा ॥ ३ ॥
रचि एक ।
आहो रामा घरिला भरिय भरि आरारा[7] चढ़वली हो रामा ।
केहू नाहीं; घरिला अलगावे[8] हो रामा ॥ ४ ॥
केहू नाहीं ।
आहो रामा घोड़वा चढ़ल अइले हँसराज देवर हो रामा ।
इचि[9] एक; घरिला अलगाव[10] हो रामा ॥ ५ ॥
इचि एक ।
आहो रामा एक हाथ हँसराजा घरिला अलगवले हो रामा ।
दूजे हाथे; आँचर धइ बेलमयले[11] हो रामा ॥ ६ ॥
दूजे हाथे ।
आहो रामा छोड़ु छोड़ु हँसराज हमरो अँचरवा हो रामा ।
घरे बाड़ी; सासु दरुनिया[12] हो रामा ॥ ७ ॥
घरे बाड़ी ।

कोई स्त्री कहती है कि नदी के तीर पर चन्दन का वृक्ष है, उस पर चढ़कर कृष्णजी वंशी बजाते हैं ॥१॥

१. छोटा वृक्ष। २. पौदा। ३. शब्द। ४. गोकुल। ५. थोड़ा सा। ६. घड़ा। ७. किनारा। ८. उठाना। ९. थोड़ा सा। १०. उठाया। ११. देर (विलम्ब) कर देना। १२. दारुण, निर्दयी, कठोर।

उस बंशी के शब्द को राधिकाजी सुनकर बेचैन हो जाती है और (कृष्ण के बिना) गोकुल में रहना उनके लिए कठिन हो जाता है ॥२॥

कोई स्त्री कहती है कि ऐ मेरे घर के पीछे मेरी भलाई चाहने वाले कोंहार ! (कुम्भकार) मेरे लिए एक घड़ा तैयार कर दो ॥३॥

(उस घड़े को लेकर वह स्त्री नदी के किनारे पानी भरने के लिये गई) जब मैंने घड़े को भर कर किनारे पर चढ़ाया, तब कोई भी मेरे सिर पर उस घड़े को उठाने वाला नहीं था ॥४॥

इसी बीच घोड़े पर चढ़ा हुआ हंसराज देवर चला आया और मैंने उससे कहा कि जरा मेरा घड़ा उठा दो ॥५॥

एक हाथ से हंसराज घड़ा उठाने लगा और दूसरे हाथसे मेरे अंचल को पकड़ कर देर करने लगा ॥६॥

मैंने कहा—ऐ हंसराज ! मेरे आँचर को छोड़ दो। व्यर्थ विलम्ब मत करो। मेरे घर में सास बड़ी दुष्टा तथा निर्दयी है। (संभवत: इस विलम्ब से मेरे आचरण में सन्देह न करने लगे) ॥७॥

इस चैते में दुष्ट देवर की कुचेष्टा का सुन्दर चित्रण है।

(४)

प्रसङ्ग—आलसी तथा दीर्घसूत्री पति के देर तक सोने पर उसे जगाने के लिए भावज की ननद से प्रार्थना तथा उस बेहया पति का न जगना।

आहो रामा नदिया के तीरवा चनन गाँछि बिरवा हो रामा ।
ताहि तरे; कुँवर मोरे अलसइले[1] हो रामा ॥ १ ॥
ताहि तरे ।
आहो रामा बिल में से निकलेले काली नगिनिया हो[2] रामा ।
डँसि देले; कुँवर के कानी[3] अँगुरिया हो रामा ॥ २ ॥
डँसि देले ।
आहो रामा साँझे के[4] सूतल फूटेले[5] किरिनिया[6] हो रामा ।
तबो नाहीं; जागेले पियवा आभागवा हो रामा ॥ ३ ॥
तबो नाहीं ।
आहो रामा गोड़ तोर लागीले लहुरी ननदिया हो रामा ।
रचि एक; आपन भइया देहु ना जगाई हो रामा ॥ ४ ॥
रचि एक ।

१. आलस्य किया। २. सर्पिणी। ३. कनिष्ठिका। ४. सोया हुआ। ५. निकलना। ६. किरण।

आहो रामा कइसे के भउजी भइया के जगाईं हो रामा ।
मोर भइया; मातल निंदिया अलसइले हो रामा ॥ ५ ॥
मोर भइया ।
आहो रामा तोंरा लेखे ननदी भइया अलसइले हो रामा ।
मोरा लेखे; चानावा[1] छपित[2] भइले हो रामा ॥ ६ ॥
मोरा लेखे ।

कोई स्त्री कहती है कि नदी के किनारे चन्दन का वृक्ष है, उसके नीचे मेरा आलसी पति सो गया ॥१॥

उसी समय बिल में से एक काली नागिन (सर्प की मादा) निकली और उसने कुँवर (पति) की कनिष्ठिका अँगुली को काट लिया ॥२॥

मेरा पति शाम से ही सोया हुआ है। अब सूर्य की किरणें भी फूट चलीं, तब भी मेरा अभागा पति नहीं जगता है।

भावज कहती है कि ऐ छोटी ननद ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ, तुम ज़रा अपने भइया को जगा दो ॥४॥

तब ननद कहती है—ऐ भावज ! मैं अपने भाई को कैसे जगाऊँ ! मेरा भाई नींद से मतवाला होकर सो गया है ॥५॥

(संभवतः सर्पिणी के काटने से पति को मरा हुआ जानकर) भावज कहती है कि ऐ ननद ! तुम्हारे लिए यह आलस्य से सोया हुआ जान पड़ता है, परन्तु मेरे लिए तो चमकता हुआ, प्रकाशित चन्द्रमा अस्त हो गया है ॥६॥

देहातों में ननद और भावज में शाश्वत विरोध रहता है। उसकी कुछ झलक इस चैते में मिलती है। पत्नी का पति-प्रेम कितना अधिक है—इसकी व्यञ्जना 'चन्द्रमा के छपित' होने की उपमा से मिल रही है।

(५)

प्रसङ्ग—बन में चकवा, चकई तथा कोयल का बोलना। विरह में दुःखदायी होने के कारण किसी बिरह-बिधुरा नायिका का बहेलिया से इन्हें मरवाने का प्रयत्न।

आहो रामा कवना दहे बोलेले चकवा चकइया हो रामा ।
कवना दहे; बोलेले बिरही[3] कोईलिया हो रामा ॥ १ ॥
कवना दहे ।
आहो रामा बाबा दहे[4] बोलेले चकवा चकइया हो रामा ।
भइया दहे; बोलेले बिरही कोईलिया हो रामा ॥ २ ॥
भइया दहे ।

१. चन्द्रमा। २. अस्त। ३. बिरह में दुःखदायी। ४. अत्यन्त विस्तृत तालाब।

आहो रामा पाते पाते[1] बोलेले विरही कोईलिया हो रामा ।
डाढ़े[2] डाढ़े; घूमेले बाबा के बहेलिया हो रामा ॥ ३ ॥
डाढ़े डाढ़े ।
आहो रामा जब ले बहेलिया तुपुक[3] चढ़ावे हो रामा ।
उड़ि गइले; काली कोइलिया हो रामा ॥ ४ ॥
उड़ि गइले ।

कोई विरह-विधुरा नायिका चकवा तथा कोयल की दुःखदायी बोली को सुनकर स्वतः कह रही है कि किस तालाब में चकवा और चकवी बोलती है तथा किस तालाब के पास विरह में दुःखदायी कोयल बोलती है ॥१॥

पिता के तालाब के किनारे चकवा और चकवी बोलते हैं और भइया के तालाब के किनारे विरही कोयल बोलती है ॥२॥

विरही कोयल वृक्ष के प्रत्येक पत्ते पर चढ़ कर बोलती है, तथा उसे मारने के लिए हमारे पिता का बहेलिया प्रत्येक डाढ़ (शाखा) पर घूमता है ॥३॥

जब तक बहेलिया अपना तुपुक (शाल्मली वृक्ष का अत्यन्त छोटा फल जो तीर पर चढ़ा कर मारने के काम में आता है) चढ़ा रहा था, तब तक वह काली कोयल उड़ गई ॥४॥

कोयल की कूक विरह में दुःखदायी होती ; अतः कोयल को मार डालने की इच्छा विरह की तीव्रता को सूचित करती है।

(६)

प्रसङ्ग—राम-जन्म के उपलक्ष में माताओं तथा पिता दशरथ का दान देना।

आहो रामा पहिले सुमिरन आदि भवानी हो रामा ।
कण्ठे सुरवा; होख ना आजु सहइया हो रामा ॥ १ ॥
कण्ठे सुरवा ।
आहो रामा चैत अजोध्या राम जनमले हो रामा ।
घरे घरे; गाजेला आनन्द बधइया हो रामा ॥ २ ॥
घरे घरे ।
आहो रामा जिरवा[4] के बोरसी,[5] लवँगिया के पासङ[6] हो रामा ।
सोने छुरिया; आरे नारावा[7] काटाइबि हो रामा ॥ ३ ॥
सोने छुरिया ।

१. पत्ते पत्ते पर। २. प्रत्येक शाखा पर। ३. सेमल वृक्ष का छोटा फल जो तीर में लगाकर मारने के काम में आता है। ४. जीरा। ५. मिट्टी का गोल पात्र जिसमें आग रक्खी जाती है। ६. जलाने की लकड़ी। ७. नाल।

आहो रामा सोने के चउकिया[1] राम नहवाइबि हो रामा ।
सखी सभ; मंगल गावे हो रामा ॥ ४ ॥
सखी सभ ।

आहो रामा केहू[2] लुटावे अन,[3] धन, सोनवा हो रामा ।
केहू लुटावे; धेनु गइया हो रामा ॥ ५ ॥
केहू लुटावे ।

आहो रामा दशरथ लुटावेले अन, धन, सोनवा हो रामा ।
कौसिला लुटावे; धेनु[4] गइया हो रामा ॥ ६ ॥
कौसिला लुटावे ।

सर्व प्रथम मैं पार्वती की प्रार्थना करता हूँ, जो आज मेरे गले में सुन्दर स्वर देने में सहायता करें ॥१॥

अयोध्या में राम का जन्म चैत्र मास में हुआ और इसकी खुशी में घर-घर में आनन्द का बधावा बजने लगा ॥२॥

सूतिका गृह में बोरसी में ज़ीरा जलता था, लौंग का पासङ्ग था, और सोने की छुरी से राम का नार काटा गया ॥३॥

सोने की चौकी पर बैठाकर राम को स्नान कराया गया और सब सखियाँ मंगल गीत (सोहर) गाती थीं ॥४॥

राम-जन्म के उत्सव के समय कोई अन्न धन और सोना लुटाता था और कोई दूध देने वाली गाय दान देता था ॥५॥

दशरथजी अन्न, धन और सोना लुटाते थे और कौशल्याजी दुधार (दूध देनेवाली गाय) दान में देती थीं ॥६॥

इस चैते में देहाती सूतिका-गृह की कुछ प्रथाओं का उल्लेख है। बोरसी कच्ची मिट्टी के उस गोल पात्र को कहते हैं, जिसमें आग रक्खी जाती है। देहाती सूतिका गृह में, दरवाजे के पास बोरसी सदा इसलिए जला करती है, जिसमें कोई भूत, दूत या जम सूतिका-गृह के अन्दर न चला आए। इसमें बोरसी कण्डा या उपला (गोइंठा) सदा जलता रहता है, जिससे आग कभी नहीं बुझती। राम के सूतिका गृह की बोरसी में कण्डे की जगह जीरा जलता था, जिससे सुगन्धि चारों ओर फैलती रहे। पासँग उस लकड़ी का नाम है, जो सूतिका-गृह में सदा जला करती है और जिसमें सद्यः जात शिशु का नार जलाया जाता है। संभवतः गन्दगी को नष्ट करने और प्रेत-बाधा को दूर रखने के लिए यह जलाई जाती है। देहातों में जब बच्चा पैदा होता है, उसका नाल (नार) हसुआ से काटा जाता है, परन्तु राम का नाल सोने के चाकू से काटा गया था। पैदा होने पर बालक को थाली में नहलवाते हैं ; परन्तु राम को सोने की चौकी पर नहलवाया गया।

१. चौकी, तख्त। २. कोई। ३. अन्न। ४. दूध वाली गाय।

(७)

प्रसङ्ग—जनक के धनुष-यज्ञ में राम के द्वारा धनुष का उठाया जाना। सखी की उक्ति अन्य सखी के प्रति।

आहो रामा राजा जनक जी कठिन प्रन ठाने[1] हो रामा ।
देसे देसे; लिखि लिखि पतिया[2] पठावे[3] हो रामा ॥ १ ॥
देसे देसे० ।

आहो रामा देस रे बिदेसवा के भूप सभ अइले हो रामा ।
केहू[4] नाहीं; संकर चाप चढ़ावे हो रामा ॥ २ ॥
केहू नाहीं० ।

आहो रामा अजोधा नगरिया बसेले राजा दसरथ हो रामा ।
उनहूँ[5] के; राज कुँवर दोऊ भइया हो रामा ॥ ३ ॥
उनहूँ के० ।

आहो रामा एक हाथे रामचन्द्र धेनुहा[6] उठावे हो रामा ।
दूजे हाथे; कीट मुकुट[7] सरिहावे[8] हो रामा ॥ ४ ॥
दूजे हाथ ।

कोई सखी कहती है कि राजा जनक ने कठिन प्रण ठाना है, कि जो धनुष को तोड़ेगा उसी से अपनी लड़की जानकी का विवाह करूँगा और देश-देश के राजाओं को बुलाने के लिए वे चिट्ठी भेज रहे हैं॥१॥

जनक के निमन्त्रण को पाकर देश-विदेश के सब राजा चले आये हैं ; परन्तु शिवजी के धनुष को चढ़ाने में कोई भी समर्थ नहीं हो रहा है ॥२॥

अयोध्या नगर में राजा दशरथ रहते हैं। उनके दो राजकुमार राम और लक्ष्मण भी आये हैं॥३॥

रामचन्द्रजी एक हाथ से धनुष को उठा रहे हैं और दूसरे हाथ से अपने सिर की जटाओं को ठीक कर रहे हैं॥४॥

(८)

प्रसङ्ग—राधिका को जमुना पार करते समय कृष्ण का खेवा माँगना। राधा की उक्ति कृष्ण के प्रति।

१. करना। २. पत्री, चिट्ठी। ३. भेजना। ४. कोई। ५. उनके भी। ६. धनुष। ७. सुसज्जित करना। ८. ठीक करना।

आहो रामा कहली[1] राधिका रानी सुनु प्यारे कान्हा हो रामा।
तोहरा हमरा; होई गइली पिरितिया[2] हो रामा ॥१॥
मधुवन में ०।

आहो रामा जमुना किनरवा कन्हैया घटवरवा[3] हो रामा।
खेउवा[4] माँगे; बाला[5] जोबनवा हो रामा ॥२॥
खेउवा माँगे०।

राधिकाजी कहती हैं कि हे प्यारे कृष्ण! सुनो, तुमसे और हम से प्रेम हो गया है। (अतः तुम्हें हमसे कुछ नहीं लेना चाहिए) ॥१॥

परन्तु जमुना पार करते समय घटवार के रूप में कृष्णजी राधा से उनके यौवन को खेवा (पार उतारने की मज़दूरी) में माँग रहे हैं।

(९)

प्रसङ्ग—भूले हुए पति को खोजने के लिए किसी स्त्री का जोगिनी बनना। पति की प्राप्ति पर आनन्द-भोग करना।

आहो रामा भभूती[6] रमइबो जोगिनि होइ जइबो हो[7] रामा।
बाटे बाटे[8]; पियवा के करबो उदेसवा[9] हो रामा ॥१॥
बाटे बाटे०।

आहो रामा बाबा के सागरवा हीरामन पोखरवा[10] हो रामा।
ताही घाटे; सँवरि झारे[11] लामी[12] केसिया हो रामा ॥२॥
ताही घाटे०।

आहो रामा काहे[13] लागि जोगिनि भभूति रमवली हो रामा।
काहे लागि; सँवरि झार लामी केसिया हो रामा ॥३॥
काहे लागि०।

आहो रामा जोग लागि जोगिनि भभूति रमवली[14] हो रामा।
पिया लागि; सँवरि झारे लामी केसिया हो रामा ॥४॥
पिया लागि०।

१. कहती हैं। २. प्रेम। ३. मल्लाह। ४. नदी पार उतारने की मजदूरी। ५. छोटे, छोटे। ६. विभूति (भस्म)। ७. हो जाऊँगी। ८. प्रत्येक मार्ग में। ९. उद्देश्य, खोज। १०. पुष्कर, तालाब। ११. सँवारना। १२. लम्बा। १३. किस लिये। १४. लगाना।

आहो रामा छोटका बलमुआ बड़ा नीक[1] लागे हो रामा ।
आँचारा ओढ़ाई; सुताइबि भरि कोरवा[2] हो रामा ॥ ५ ॥
आचारा ओढ़ाई० ।

आहो रामा कारावा[3] फेरत कंगन घइया[4] लागे हो रामा ।
सुसुकि सुसुकि[5]; रोवे सिरहनवा[6] हो रामा ॥ ६ ॥
सुसुकि सुसुकि० ।

कोई स्त्री कहती है कि मैं भस्म को लगा कर जोगिन बन जाऊँगी और प्रत्येक मार्ग में अपने पति को खोजूंगी ॥१॥

अपने पिता के हीरामन नामक तालाब के ऊपर कोई सुन्दरी स्नान करती हुई अपने लम्बे बालों को सँवारती है ॥२॥

किस लिए जोगिन भस्म लगाती है और किस लिए सुन्दरी स्त्री अपने लम्बे बालों को सँवारती है ॥३॥

तपस्या के लिए जोगिन भस्म रमाती है और अपने प्रियतम के साथ आनन्द-भोग करने के लिए सुन्दरी स्त्री बाल सँवारती है ॥४॥

वह सुन्दरी स्त्री कहती है कि छोटा बालम (पति) मुझे बड़ा अच्छा लगता है। उसे मैं अपना आँचर ओढ़ा कर, गोदी में लेकर सोऊँगी ॥५॥

पति के साथ सोने के बाद जब मैं करवट ले रही थी, उस समय मेरे कंगन से मेरे पति को चोट लग गयी और वह पलंग के सिरहाने बैठ कर सिसक-सिसक कर धीरे-धीरे रोने लगा ॥६॥

इस चैते में बाल-विवाह की झलक दिखाई पड़ रही है। पत्नी के द्वारा गोदी में लेकर पति को सोना और कंगन की चोट से धीरे-धीरे पति का रोना निःसन्देह उसकी अल्पावस्था का सूचक है। सचमुच ऐसे "छोटे बलमुआ" की दशा पर किसे दया नहीं आयेगी और कौन उससे सहानुभूति न दिखलायेगा।

(१०)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री का पानी भरने जाना और वहाँ पर किसी कुँअर की कुचेष्टा।

आहो रामा काहावाँ के कांहरा गहेला[7] घरिलवा हो रामा ।
काहावाँ के; सुन्दरि हुई पनिहारिन हो रामा ॥ १ ॥
काहवाँ के।

१. अच्छा। २. गोदी। ३. करवट। ४. घाव, चोट। ५. धीरे-धीरे रोना। ६. शय्या का अगला भाग। ७. बनाना।

आहो रामा गोखुला के कोंहरा गहेंला घरिलवा हो रामा।
मथुरा के; सुन्दरि हुई पनिहारिन हो रामा ॥ २ ॥
मथुरा के।

आहो रामा घरिला भरिय भरि आरारा चढ़वली हो रामा।
केहू नाहीं; घरिला मोर अलगावे हो रामा ॥ ३ ॥
केहू नाहीं।

आहो रामा घूमत फिरत अइले राजा के कुँअरवा हो रामा।
एक हाथे; घरिला अलगावे हो रामा ॥ ४ ॥
एक हाथे।

आहो रामा एक हाथे घरिला अलगावे हो रामा।
दूजे हाथे; जोबन[1] धइ बेलमावे हो रामा ॥५॥
दूजे हाथे।

आहो रामा छोड़ु छोड़ु कुँवर जी हमरो जोबनवा हो रामा।
घरे बाड़ी; सासु, ननदि बइरिनिया[2] हो रामा ॥ ६ ॥
घरे बाड़ी।

कहाँ का कुम्हार (कुम्भकार) मिट्टी के घड़े को बनाता है और कहाँ की स्त्री पानी भरने के लिए जाती है ॥१॥

गोकुल का कुम्हार मिट्टी के घड़े को बनाता है और मथुरा की स्त्री पानी भरने के लिए जाती है ॥२॥

वह पनिहारिन कहती है कि मैंने घड़े को भर कर किनारे पर रक्खा; परन्तु कोई उसे मेरे सिर पर उ ाने को न मिला ॥३॥

शेष सरल है।

(११)

प्रसङ्ग—राम के जन्मोत्सव के उपलक्ष में माताओं तथा पिता के द्वारा पुरस्कार वितरण।

आहो रामा चढ़ले[3] चइतवा, राम जनमले हो रामा।
घरे घरे; बाजेला अनन[4] बधइया[5] हो रामा ॥ १ ॥
घरे घरे।

१. कुच। २. बैरिन, शत्रु। ३. चढ़ गया। ४. आनन्द। ५. बधावा।

आहो रामा केहु रे लुटावेला; अन[1], धन सोनवा हो रामा ।
आहो रामा केहु रे लुटावेला, सोने के मुँदरिया[2] हो रामा ॥ २ ॥
घरे घरे ।

आहो रामा केहु रे लुटावेला; रतन पदारथ हो रामा ।
आहो रामा दसरथ लुटावेले; अन, धन, सोनवा हो रामा ॥ ३ ॥
घरे घरे ।

आहो रामा कंकेई लुटावेले, सोने के मुँदरिया हो रामा ।
आहो रामा कौसिला लुटावेली; रतन पदारथ[3] हो रामा ॥ ४ ॥
घरे घरे ।

चैत का महीना आगया। राम का जन्म हो गया और इसके उपलक्ष में प्रत्येक घर में आनन्द का बधावा बज रहा है॥१॥

कोई अन्न, धन और सोना लुटा रहा है। कोई सोने की अँगूठी लुटा रहा है और कोई बहुमूल्य पदार्थ लुटा रहा है॥२॥

राजा दशरथ अन्न, धन और सोना लुटा रहे हैं, कैकेयी सोने की अगूंठी दान दे रही हैं तथा रानी कौशिल्या बहुमूल्य पदार्थ लुटा रही हैं॥३—४॥

राम के जन्मोत्सव के उछाह भरे अवसर का यह वर्णन कितना रमणीय तथा मनोरम है। 'सोहर' में इस प्रकार का वर्णन कई बार आया है।

(१२)

प्रसङ्ग—आलसी पति की दीर्घसूत्रता का वर्णन।

ए रामा चढ़ले चइतवा, जीव मोर चंचल हो रामा ।
घरे घरे; बाजेला अनन[4] बधइया हो रामा ॥ १ ॥ घरे घरे।

ए रामा मोरा पिछुअरवा, ठूँठि[5] पकड़िया हो रामा ।
ताहि चढ़ि; जोगी बँसिया बजावे हो रामा ॥ २ ॥ ताहि चढ़ि।

ए रामा ताहि तर सुतेला; ननदी के भइया हो रामा ।
ताहि तरे; बाजेला अनन बधइया हो रामा ॥ ३ ॥ घरे घरे।

ए रामा चूरा[6] फेंकि मरलीं, पइरि[7] फेंकि मरलीं हो रामा ।
तबहूँ ना; जागेला पियवा, अभागा हो रामा ॥ ४ ॥ तबहूँ ना।

---

१. अन्न। २. अँगूठी। ३. पदार्थ, बहुमूल्य वस्तु । ४. आनन्द। ५. सूखा। ६. चारपाई की टांग। ७. पैर का गहना, पैर का कड़ा।

कोई स्त्री कहती है कि चैत का महीना चढ़ गया है; अतः मेरा मन चंचल (चलायमान) हो उठा है। अब घर-घर आनन्द का बधावा बज रहा है ॥१॥

मेरे घर के पीछे ठूंठ (सूखा) पाकड़ का वृक्ष है। उस पर चढ़ कर जोगी बंशी बजाता है ॥२॥

उसी के नीचे मेरी ननद का भाई (पति) सोता है और पुत्र जन्म के कारण घर में बधावा बज रहा है ॥३॥

पत्नी कहती है कि पति को जगाने के लिए मैंने उसे चारपाई का पावा (चूरा) तथा पैर के छड़े से खींच कर मारा। तब भी मेरा अभागा (आलसी) पति नहीं जगा ॥४॥

(१३)

प्रसङ्ग—कृष्णजी का जमुना में क्रीड़ा करते समय छिप जाना। अतः गोपियों की चिन्ता। सखी की उक्ति सखी के प्रति।

आहो रामा मानिक[1] हमरो हेरइले हो रामा।
जमुना में, केहू नाहीं खोजेला हमरो पदारथ हो रामा ॥ १ ॥ जमुना में।
आहो रामा ओही रे जमुनवा के चिकनी मटियवा[2]।
चलत पाँव बिछिलइले[3] हो रामा ॥ २ ॥ जमुना में।
आहो रामा ओही रे जमुनवा के करिया[4] पनिया।
देखत मन घबरहले हो रामा ॥ ३ ॥ जमुना में।
आहो रामा तोरा लेखे ग्वालिन मानिक हेरइले।
मोरा लेखे चान छपितवा[5] हो रामा ॥ ४ ॥ मोरा लेखे।
आहो रामा दास बुलाकी चइत घांटो गावे हो रामा।
गाई गाई बिरहिन समझावे हो रामा ॥ ५ ॥

कोई गोपी कहती है कि मेरा कृष्ण रूपी माणिक्य जमुना में खो गया है। परन्तु मेरे बहुमूल्य रत्न का कोई भी नहीं खोज रहा है ॥१॥

उस जमुना की मिट्टी बहुत चिकनी है; अतः चलते हुए पाँव फिसल गया ॥२॥

उस जमुना का पानी अत्यन्त काला है। उसे देखते ही मन व्याकुल हो गया ॥३॥

राधिका जी ग्वालिन से कहती हैं कि तुम्हारे लिए तो कृष्ण का छिपना मणि का खो जाना है; परन्तु मेरे चन्द्रमा का अस्त हो जाना है। अर्थात् जिस प्रकार चन्द्रमा के अस्त होने से अंधेरी रात भयानक मालूम होती है, उसी प्रकार कृष्ण के छिप जाने से मेरा जीवन दुःखदायी हो गया है ॥४॥

१. माणिक्य। २. मिट्टी। ३. फिसल गया। ४. काला। ५. अस्त हो जाना।

बुलाकीदास चैत मास में 'घाटों' गाते हैं और गा-गा कर बिरहिनियों को सन्तोष देते हैं।

(१४)

प्रसङ्ग—कोयल की बोली सुनकर उसे मारने के लिए किसी स्त्री के द्वारा बहेलिया को आज्ञा देना।

आहो रामा सूतल में रहली पिया संग सजिया हो रामा।
बिरही कोइलिया; सबद सुनावे हो रामा ॥ १ ॥ बिरही कोइलिया।

आहो रामा गोड़[1] तोर लागेली बाबा के बहेलिया हो रामा।
बिरही कोइलिया; मारि ले आऊ हो रामा ॥ २ ॥ बिरही कोइलिया।

आहो रामा तब ले बहेलिया हनेला[2] निसनवा[3] हो रामा।
जब ले कोइलिया; सबद[4] सुनावे हो रामा ॥ ३ ॥ बिरही कोइलिया।

कोई स्त्री कह रही है कि मैं पति के साथ सेज पर सो रही थी। उसी समय विरही कोयल ने अपना शब्द सुनाया (जिससे पति जग गया) ॥१॥

ऐ मेरे पिता के बहेलिया! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। तुम उस विरही (पति के साथ शयन-सुख में वियोग उत्पन्न करने वाली) कोयल को मार डालो ॥२॥

जब कोयल अपना मीठा शब्द सुना रही थी, तभी बहेलिये ने अपना निशाना लगाया और कोयल को मार गिराया ॥३॥

(१५)

प्रसङ्ग—फूल चुनने के लिए गई किसी स्त्री के हाथ में काँटा का चुभना। पति के द्वारा काँटा निकालना। स्त्री की उक्ति सखी के प्रति।

रामा सासु हो ननदिया जनमवा के बैरी हो रामा।
आधी राति; कुसुम लोर्हन[5] माँहि भेजे हो रामा ॥ १ ॥ आधी राति।

रामा गोरी गोरी बहियाँ, पतरी अँगुरिया हो रामा।
कुसुम लोर्हत; कांट गड़ल[6] हो रामा ॥ २ ॥ कुसुम लोर्हत।

रामा केइ[7] मोरे काँटावा निकाले हो रामा।
केइ मोरे, हरेले बरदिया हो रामा ॥ ३ ॥ कोइ मोरे।

१. पैर। २ मारता है। ३. निशान, लक्ष्य। ४. शब्द। ५. चुनना। ६. चुभ गया। ७. कोई।

रामा बाबा मोरे कांटावा निकाले हो रामा ।
सइयाँ मोरे; हरेले[1] दरदिया हो रामा ॥ ४ ॥ सइयां मोरे।

रामा दासबुलाकी चइत घाटों गावे रामा ।
गाइ गाइ बिरहिन समुझावे हो रामा ॥ ५ ॥ गाइ गाइ।

कोई स्त्री अपनी सखी से कहती है कि सास और ननद मेरे जन्म की ही बैरिन हैं। अर्थात् मुझसे सर्वदा बैरभाव रखती हैं। इन्होंने आधी रात को मुझे फूल चुनने के लिए भेज दिया ॥१॥

मेरी गोरी-गोरी बाहें हैं और पतली अँगुलिया हैं। फूल चुनते ही मेरी अँगुली में काँटा चुभ गया ॥२॥

कौन मेरी अँगुली का काँटा निकालेगा और कौन मेरे कमर के दर्द को दूर करेगा ॥३॥

वह स्वयं उत्तर देती है—मेरा पति मेरी अँगुली का काँटा निकालेगा और मेरा पति मेरी कमर का दर्द दूर करेगा ॥४॥

बुलाकीदास चैत में घाटों गाते हैं और गा-गा कर विरहिणी स्त्रियों को समझाते हैं ॥५॥

(१६)

प्रसङ्ग—ननद के आचरण के संबंध में भावज की आशंका। भावज की उक्ति ननद के प्रति।

आहो रामा हम तोसे पूछेलीं, ननदी सुलोचनि हो रामा ।
तोहरो पिठिया; धूरिया[2] कइसे लागल हो रामा ॥ १ ॥
तोहरो पिठिया ।

आहो रामा बाबा के दुअरवा[3] गाचेला नेटुअवा[4] हो रामा ।
भितिया सटल,[5] धूरि लागल हो रामा ॥ २ ॥
भितिया सटल ।

भावज कह रही है कि ऐ मेरी सुलोचनि नामक ननद ! तुम्हारी पीठ में धूल कैसे लग गई ॥१॥

ननद उत्तर देती है कि मेरे पिता के द्वार पर नेटुआ (एक नाचने-गाने वाली जाति) नाच रहा था। मैं भीत में सटकर उस नाच को देख रही थी, इसी लिए मेरी पीठ में धूल लग गई है। ॥२॥

१. दूर करेगा। २. धूल। ३. द्वार पर। ४. नाचने वाली एक जाति
५. चिपक कर।

(१७)

प्रसङ्ग—सोये हुए पति को पत्नी के द्वारा पंखा झलना।

आहो रामा ऊँच ही मन्दिल[1] चढ़ि मोर सँइया सोवे हो रामा ।
हम धनि;[2] बेनिया[3] डोलाइबि[4] हो रामा ॥ १ ॥ हम धनि।

आहो रामा बेनिया डोलावत बहियां मुरुकली[5] हो रामा ।
टुटि गइले; गज मोतीहारवा हो रामा ॥ २ ॥ टुटि गइले।

कोई स्त्री कहती है कि ऊँचे महल में मेरा पति सोता है और मैं उसे पंखा झलूँगी ॥

पंखा झलते-झलते मेरे कोमल हाथ में मोच आगई और उस पंखे की हवा लगने से मेरी मोती की माला टूट गयी ॥२॥

इस चैते में स्त्री की कोमलता का कितना सुन्दर वर्णन है। पंखा झलने से हाथ का मुरुकना वस्तुतः स्त्री की परम सुकुमारता का सूचक है। पंखे की हवा लगते हार के टूटने की कल्पना नवीन है।

(१८)

प्रसङ्ग—जमुना के किनारे कृष्ण का बंशी बजाना और राधिका का विह्वल हो जाना।

रामा जमुना किनारावा कदमवा[6] के गछिया[7] हो रामा ।
ताहि चढ़ि ; किसुन जी बँसिया बजवले हो रामा ॥ १ ॥ ताहि चढ़ि।

रामा बंसी के सबदवा[8] सुनेली रानी राधिका हो रामा ।
गोखुला[9] में; रहलो ना जाला हो रामा ॥ २ ॥ गोखुला में।

रामा किया बंसी बाजेला नन्द दुअरवा ए रामा ।
किया बंसी; बाजेला जमुना किनारावा ए रामा ॥ ३ ॥ किया बंसी।

जमुना के किनारे कदम्ब का वृक्ष है, उस पर चढ़ कर कृष्णजी बंशी बजाते हैं ॥१॥

बंशी का शब्द राधिकाजी सुनती हैं और बेचैन हो जाती हैं। इसी बंशी की व्याकुलता के मारे गोकुल में रहना भी कठिन है ॥२॥

वे पूछती हैं कि क्या वह बंशी नन्द के द्वार पर बज रही है या जमुना के किनारे बज रही है ॥३॥

१. मकान। २. धन्या, स्त्री। ३. पंखा। ४. झलना। ५. मोच आ जाना। ६. कदम्ब। ७. गाँछ, वृक्ष। ८. शब्द। ९. गोकुल।

(१९)

प्रसङ्ग—चैत मास में देर तक सोने वाले पति को जगाने के लिए भावज की ननद से प्रार्थना। ननद के अस्वीकार करने पर पत्नी का पति को स्वयं जगाना।

रामा चइत के निंदिया बड़ी बइरिनिया[1] हो रामा।
सुतलो बलमुआ; नाहीं जागे हो रामा ॥ १ ॥
सुतलो बलमुआ।

रामा गोड़[2] तोर लागीलें लहुरी[3] ननदिया हो रामा।
रचि एक; भइया तू जगावहु हो रामा ॥ २ ॥
रचि एक।

रामा कइसे के भउजी भइया के जगाई ए रामा।
मोर भइया; निंदिया भइले मतवाला ए रामा ॥ ३ ॥
मोर भइया।

रामा भरि छीपा[4] चनन रगरेले[5] सोहागिन ए रामा।
छींटि छींटि; आपन पियवा जगावे ए रामा ॥ ४ ॥
छींटि छींटि।

भावज ननद से कहती है कि चैत मास की नींद बड़ी बैरिन होती है ; क्योंकि चैत की रात सुहावनी होने के कारण सोया हुआ पति सबेरे जल्दी नहीं जगता ॥१॥

ऐ छोटी ननद ! मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ। तुम अपने भाई को नींद से जगा दो ॥२॥

ननद उत्तर देती है—ऐ भावज ! मैं अपने भाई को कैसे जगाऊँ ? क्योंकि मेरा भैया नींद के मारे मतवाला हो रहा है ॥३॥

इस उत्तर से निराश होकर उस सौभाग्यवती स्त्री ने एक थाली भर कर चन्दन घिसा और वह उस चन्दन को छीट-छीट कर अपने पति को लगाने लगी ॥४॥

उपर्युक्त चैता में पत्नी का पति-प्रेम कितना कोमल तथा मनोरम है। पति को जगाने का ढंग कितना मार्मिक है।

(२०)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री का फूल चुनने के लिए जाना और माली के द्वारा उस फूल को बिखेर देना।

१. बैरिन। २. पैर। ३. छोटी। ४. थाली। ५. रगड़ना।

रामा चलु सखि चलु सखि मलिया के बगिया ए रामा ।
फूलवा लोंहिय[1] लोंहिय भरलों चेगलिया ए रामा ॥ १ ॥ बगिया में ।

रामा जब लों चंगेलिया[2] भरहीं ना पवले ए रामा ।
आइ गइले; मलिया छोकड़वा[3] ए रामा ॥ २ ॥ आइ गइले ।

रामा डालि मोर छिनले फूलवा के छीतरवले[4] ए रामा ।
लूटि लिहले; बाला जोबनवा ए रामा ॥ ३ ॥ लूटि लिहले ।

एक सखी दूसरी सखी से कहती है कि माली के बाग में फूल चुनने के लिए चलो। फूल चुन करके मैंने अपनी डालिया भर ली ॥१॥

परन्तु जब डलिया भर ही न पायी थी, तभी माली का लड़का आ गया ॥२॥

उसने मेरी डलिया छीन ली, फूल को तितर-बितर कर दिया और मेरे यौवन को लूट लिया ॥३॥

(२१)

सन्दर्भ—विरह-विधुरा स्त्री का काग से पति का समाचार पूछना तथा उसके द्वारा पति का दुराचार वर्णन।

ननदी का अँगना चननवा के गछिया हो रामा ।
ताही तर; कगवा[5] बोलेला सुलछन[6] हो रामा ॥ १ ॥ ताही तर० ।

बोके देबो[7] कगवा हो दूध भात खोरवा[8] हो रामा ।
तनी[9] एक, सइयां कुसल बतलाव हो रामा ॥ २ ॥ तनी एक ।

पिया पिया मति कह पिया के सोहागिन हो रामा ।
तोर पिया; लोभले[10] बारी[11] तमोलिन हो रामा ॥ ३ ॥ तोर पिया ।

कढ़ितो[12] में आपन कटरिया से मरितों जिअरवा[13] हो रामा ।
मोरा आगे; उढ़री[14] के कइल बखनवा[15] हो रामा ॥ ४ ॥ मोरा आगे ।

'दास बुलाकी' चइत घांटों गावें हो रामा ।
गाइ गाइ; कुन्व कुँवरि समुझावे हो रामा ॥ ५ ॥ गाइ गाइ० ।

१. चुनना। २. डाली, छबड़ी। ३. लड़का। ४. तितर-बितर कर देना। ५. कौआ। ६. सुलक्षण सुन्दर। ७. दूंगी। ८. कटोरा। ९. थोड़ा-सा। १०. लुब्ध हो गया है। ११. छोटी। १२. निकालूंगी। १३. हृदय। १४. नीचता। १५. बखान, प्रशंसा, वर्णन।

कोई स्त्री कहती है कि मेरी ननद के आँगन में चन्दन का वृक्ष है। उस पर बैठ कर कौआ सुन्दर बोली बोलता है ॥१॥

स्त्री कौए से कहती है कि ऐ कौवा मैं तुमको कटोरे में दूध और भात खाने को दूंगी। तुम मेरे पति का कुछ कुशल समाचार तो सुनाओ ॥२॥

कौआ कहता है—ऐ! सौभाग्यवती स्त्री! अब तुम पिया-पिया मत कहो (क्योंकि अब वह तुम्हारा प्रियतम नहीं है)। तुम्हारा पति तमोलिन के प्रेमपाश में फँस गया है ॥३॥

इस पर क्रोधित तथा दु:खी होकर स्त्री ने कहा कि मैं अपनी कटारी निकाल कर अपने हृदय में घुसेड़ लूंगी, परन्तु पति की इस नीचता का वर्णन सुनना नहीं चाहती ॥४॥

बुलाकीदास चैत में घाँटो गाते हैं और अपनी स्त्री कुन्द कुँवरि को गा-गा कर समझाते हैं ॥५॥

(२२)

प्रसङ्ग—वसन्त का आगमन। पति की स्त्री से आनन्द-संभोग के लिए प्रार्थना।

रामा अगाना बहरइत[1] लागि गइले घुरवा[2] हो रामा।
लागि गइले; आमावा के गँछिया हो रामा ॥ १ ॥ लागि गइले०

रामा केइ मोरे आमावा के गछिया लगावे हो रामा।
केइ मोरे; गँछिया परतिपाले[3] हो रामा ॥ २ ॥ केइ मारे०

रामा बाबा मोरे आम गाछि लावे हो रामा।
भइया मोरे, गँछिया परतिपाले हो रामा ॥ ३ ॥ भइया मोरे०

रामा कवना मासे आमवा मोजरइले[4] हो रामा।
कवना मासे; लागेला टिकोरवा[5] हो रामा ॥ ४ ॥ कवना मासे०

रामा माघ मासे आम मोजरइले हो रामा।
चइत मासे; लागेला टिकोरवा हो रामा ॥ ५ ॥ चइत मासे०

रामा जब आम लागेला सरिसई[6] हो रामा।
तब पियवा; करेला लरिकाई[7] हो रामा ॥ ६ ॥ तब पियवा०

तब जब आम लागेला टिकोरवा हो रामा।
रामा पियवा; करेला[8] निहोरवा[9] हो रामा ॥ ७ ॥ तब पियवा०

कोई स्त्री कहती है कि आँगन में झाड़ू देने से इकट्ठी धूल के कारण घूरा (कूड़ा, करकट का ढेर) लग गया। उसी में घूरे के ऊपर एक आम का पौदा उग आया ॥१॥

१. झाड़ू देते हुए। २. कूड़ा करकट का ढेर। ३. पालन पोषण करना। ४. मंजरी का लगना। ५. मंजरी पर टिकोरे। ६. मंजरी। ७. लड़कपन। ८. करता है। ९. प्रार्थना, बिनती।

कौन मेरे आम के वृक्ष को लगाएगा और कौन मेरे इस छोटे पौदे का पालन-पोषण करेगा ॥२॥

मेरे पिता मेरे इस आम को लगावेंगे और मेरा प्रिय भाई मेरी इस छोटे गाँछ का पालन-पोषण करेगा ॥३॥

किस मास में आम के वृक्ष में मञ्जरी लगेगी और किस मास में इसमें टिकोरा (छोटा-फल) लगेगा ॥४॥

माघ के महीने में आम के वृक्ष में मञ्जरी लगेगी और चैत के महीने में टिकोरा लगेगा ॥५॥

पत्नी कहती है कि जब आम में मञ्जरी लगने लगती है अर्थात् बसन्त का मतवाला महीना जब आता है, तब मेरा पति लड़कपन करने लगता है अर्थात् असमय में ही आनन्द-भोग की चेष्टा करता है ॥६॥

जब आम में टिकोरा लगता है अर्थात् जब चैत का चंचल महीना आता है, तब मेरा प्रियतम इस के लिए प्रार्थना करता है ॥७॥

इस चैते की मधुरिमा का वर्णन करना कठिन है। इसके प्रत्येक पद से सरसता चूई पड़ रही है। 'सरिसई' और 'लरिकई' की शब्द-माधुरी की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी ही थोड़ी है।

(२३)

प्रसङ्ग—प्रोषितपतिका स्त्री का दुःख वर्णन। स्त्री की उक्ति सखी के प्रति।

रामा बारहो बरिस के हमरो उमिरिया[१] हो रामा ।
तब पियवा, भागेला पुरुब बनिजिया[२] हो रामा ॥ १ ॥ तब पियवा

रामा गवना कराइ पिया घर बइठइले हो रामा ।
कइसे में, आँगाना बहारबि[३] हो रामा ॥ २ ॥ कइसे में

रामा आँगाना बहरइत[४] अइले परदेसिया हो रामा ।
कइसे के; जोबना[५] छिपाइबि हो रामा ॥ ३ ॥ कइसे के

रामा पिया परदेसिया, देवर घर लइका हो रामा ।
केकरा से; कहबि दिल के बतिया[६] हो रामा ॥ ४ ॥ केकरा से

कोई स्त्री कह रही है कि मेरी उम्र अभी केवल बारह वर्ष की है; परन्तु मेरा पति मुझे छोड़ कर पूर्व देश—बंगाल—में व्यापार करने के लिये भग गया है ॥१॥

१. उम्र, आयु। २. व्यापार। ३. झाड़ू दूँगी। ४. झाड़ू देते ही। ५. छाती ६. बात, रहस्य, पीड़ा।

उसने मेरा गौना कराके मुझे घर में बैठा दिया है। नयी बधू होने के कारण मैं अपने आँगन को बुहारूँगी ॥२॥

यदि आँगन बुहारते (झाड़ू देते) ही परदेशी पति चला आए, तो उससे अपनी छतियों (स्तन) को कैसे छिपाऊँगी ॥३॥

दुःखी होकर वह स्त्री फिर कहती है कि मेरा पति परदेस चला गया है; घर में रहने वाला देवर अभी बिल्कुल लड़का है; बिरह से उत्पन्न हृदय की मार्मिक बात (पीड़ा) को अब मैं किससे कहूँ ॥४॥

भोजपुरी प्रान्त के बहुत से युवक रुपया कमाने के लिए घर से भग कर कलकत्ता या रंगून चले जाते हैं और कई वर्षों तक घर नहीं लौटने। उनकी स्त्रियाँ वियोग से तड़पती रहती हैं। ऐसी ही स्त्री का सच्चा चित्रण इस चैता में है।

(२४)

प्रसङ्ग— शिवजी का 'पुरुब बनिजिया' को जाते समय पार्वती को जगाना। गणेश के गोदी में होने से पार्वती का न उठना।

रामा शिव बाबा चलले हा पुरूब बनिजिया हो रामा।
लादि लिहले, भंगिया,[1] धतूरवाअ[2] हो रामा ॥ १ ॥ लादि लिहले
रामा होत भिनुसारावा[3] सिवजी जगावे हो रामा।
उठ गउरा,[4] भंगिया रर्गारि के पिआव हो रामा ॥ २ ॥ उठ गउरा
रामा कइसे में उठी सिव महादेव हो रामा।
मोरा गोदी, गनेस बाड़े बालक हो रामा ॥ ३ ॥ मोरा गोदी
रामा गनपति बालक पलंग सुताव[5] हो रामा।
इचि एक;[6] भंगिया रगरि के पियाव हो रामा ॥ ४ ॥ इचि एक

शिव जी 'पूरुब बनिजिया' के लिए चल पड़े और भाँग तथा धतूर को अपने बैल पर लाद लिया ॥१॥

सबेरा होते ही शिवजी ने पार्वती को जगाया कि ऐ पार्वती! उठो और रगड़ कर मुझे भाँग पिलावो ॥२॥

पार्वती ने उत्तर दिया—ऐ शिव! मैं कैसे उठूं मेरी गोदी में बालक गणेश हैं ॥३॥

शिव ने कहा—बालक गणेश को पलँग पर सुला दो और थोड़ी-सी भाँग पीस करके मुझे पिला दो ॥४॥

(२५)

प्रसङ्ग—ध्यान में मग्न जोगी का किसी सुन्दरी स्त्री को देख कर समाधि-च्युत होना।

१. भाँग। २. धतूरा (एक प्रकार का विष)। ३. सबेरा। ४. गौरी, पार्वती। ५. सुला दो। ६. थोड़ा-सा।

रामा ओह पार[1] जोगिया धुनिया[2] रमावे हो रामा ।
एह पार,[3] साँवलि सुरुज मनावे[4] हो रामा ॥ १ ॥ एहपार
रामा जोग लागि[5] जोगिया धुनिया रमावे हो रामा ।
पिया लागि, साँवलि सुरुज मनावे हो रामा ॥ २ ॥ पियालागि
रामा जोगिया के टूटेला जोगवा हो रामा ।
साँवरों के, जूटेला जनम सनेहिया[6] हो रामा ॥ ३ ॥ सावरों के

किसी नदी के उस पार कोई जोगी धूनी रमाता है अर्थात ध्यान में मग्न रहता है और इस पार कोई स्त्री सूर्य को अर्घ्य देकर प्रार्थना करती है ॥१॥

योग की साधना के लिए जोगी धूनी रमाता है और प्रिय को प्रसन्न करने के लिए स्त्री सूर्य की प्रार्थना करती है ॥२॥

दोनों ने एक दूसरे को देखा--इस प्रकार योगी का ध्यान टूट गया और उस स्त्री का जन्म का स्नेह उस जोगी से जुट गया, जो वास्तव में उसका पति ही था ॥३॥

यह 'भोगी' रुष्ट होकर 'जोगी' बन गया था। स्त्री ने सूर्य की प्रार्थना की और उसे अपने पति को प्रसन्न करने में सफलता मिल गयी।

(२६)

प्रसङ्ग--पति को पंखा झलते समय बाल्यकाल की क्रीड़ाओं को स्मरण कर स्त्री का रोना तथा पति के द्वारा इसका कारण पूछना।

रामा ठूँठि[7] हो पकड़िया सीतल जुड़[8] छहियाँ हो रामा ।
ताहि तर; सुन्नरि पलंग डसावें[9] हो रामा ॥ १ ॥ ताहि तर।
रामा एक हाथे सुन्नरि पलंग डसावे हो रामा ।
दूजे हाथे, लाहारा[10] पटोरवा[11] लोरवा[12] पोंछे हो रामा ॥ २ ॥ दूजे हाथे।
रामा किया तोरे सुन्नरि! बाबा मन परले हो रामा ।
किया तोरे, भइया मन बसेला हो रामा ॥ ३ ॥ किया तोरे।
रामा नाहीं मोरे बाबा मनवा परले[13] हो रामा ।
नाहीं भइया, मन बसेले हो रामा ॥ ४ ॥ नाहीं भइया।
रामा मोरे मनवा परेली सखिया सहेलरि हो रामा ।
मिलि जुलि, खेलिया खेलेली झाका झूमरि[14] हो रामा ॥ ५ ॥ मिलि जुलि।

१. उस। २. धूनी रमाना। ३. ध्यान लगाना, मस्त होना। ४. इस। ५. लिए। ६. स्नेही। ७. पत्ताहीन, सूखा। ८. ठंढा। ९. बिछाना। १०. सुन्दर। ११. वस्त्र। १२. आँसू। १३. याद आ गया। १४. एक प्रकार का लड़कियों का खेल।

सूखे हुए पाकड़ वृक्ष की शीतल छाया के नीचे कोई स्त्री पलंग बिछाती है, जिससे पति आकर उस पर सोये ॥

एक हाथ से वह स्त्री पलंग बिछाती है और दूसरे हाथ से अपने आँचल से आँसुओं को पोंछती है ॥२॥

यह देखकर पति पूछता है कि ऐ स्त्री ! आज क्या तुम्हारा पिता याद आ गया है। अथवा तुम्हारा भाई हृदय में बस रहा है, जिसके कारण रो रही हो ॥३॥

स्त्री ने उत्तर दिया—न तो मेरा पिता ही याद आया है और न मेरा भाई ही हृदय में बस रहा है ॥४॥

आज मुझे अपनी प्रिय सखियाँ याद आ रही हैं, जिनके साथ मायके में मैं मिल जुल कर 'झाकाझूमर' खेला करती थी ॥५॥

(२७)

प्रसङ्ग—पति-पत्नी के आनन्द-भोग के समय कोयल का बोल उठना। पत्नी के द्वारा कोयल का उपालम्भ।

रामा सूतल[१] सइयाँ के जगवलू हो कोइलरि ।
तोरी मीठी बोलिया, लागेला हो रामा ॥ १ ॥ तोरी मीठी०
रामा अब ले तू बोलल कोइलरि साँझि[२] बिहनवा[३] ।
अब तू बोलेलू निसुरतिया[४] हो रामा ॥ २ ॥ तोरी मीठी०
रामा अब ले तू रहलू कोइलरि बन के कोइलिया ।
अब तू हु भइलू सवतिनिया[५] हो रामा ॥ ३ ॥ तोरी मीठि बोलिया०
रामा अगिया लगाइबि कोइलरि तो हरीही बोलिया ।
जरी[६] से कटाइबि घनि बगिया हो रामा ॥ ४ ॥ तोरी मीठि बोलिया०

कोई स्त्री कहती है कि ऐ कोयल ! तूने मेरे सोए हुए पति को जगा दिया। तेरी बोली बड़ी मीठी लगती है ॥१॥

ऐ कोयल ! अब तक तू सन्ध्या और सबेरे ही बोला करती थी; परन्तु अब तू निस्तब्ध रात्रि के समय भी बोला करती है ॥२॥

अब तक तू बन की कोयल थी ; परन्तु अब मेरी सपत्नी बन गयी है (क्योंकि सपत्नी के समान तू अपने मधुर शब्द सुना कर प्रिय के मन को मेरी ओर से उच्चाटित कर देती है) ॥३॥

ऐ कोयल ! मैं तेरी बोली में आग लगा दूंगी और घने बगीचे को जड़ मूल से कटवा कर नष्ट करा दूंगी ॥४॥

१. सोए हुए। २. सन्ध्या। ३. प्रातःकाल। ४. निस्तब्ध रात्रि। ५. सपत्नी, सौत। ६. जड।

कोयल को 'सपत्नी' कहना एक नवीन कल्पना है। 'सौतिया डाह' के कारण बाग को कटवाना स्वाभाविक ही है। 'न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी'।

(२८)

प्रसङ्ग—रुष्ट हुए पति को प्रसन्न करने के लिए भावज की ननद से प्रार्थना।

आहो रामा बाँस के चंगेलिया[1] हम बिनवाइबि हो रामा।
ननदी भउजिया, फूल लोढ़े[2] जाइबि हो रामा ॥ १ ॥
ननदी भउजिया।
आहो रामा फूलवा लोढ़ि लोढ़ि भरलीं चंगेलिया हो रामा।
ओहि फूल, कुसुमी[3] सरिया रँगाइबि हो रामा ॥ २ ॥
ओही फूले।
आहो रामा कुसुमी पहिरि हम सुतल अटरिया हो रामा।
मुँह हूँ ना, बोलेला ननदी के भइया हो रामा ॥ ३ ॥
मुँह हूँ ना।
आहो रामा गोड़[4] तोरा लागिले[5] लहुरी ननदिया हो रामा।
तनि[6] एक, तू त मनाव आपन भइया हो रामा ॥ ४ ॥
तनि एक।

भावज कहती है कि मैं बाँस की चँगेली बनवा कर तैयार कराऊँगी और ननद के साथ फूल चुनने के लिए बगीचे में जाऊँगी ॥१॥

फूल को चुन कर मैंने अपनी चँगेली भरली है। उन्हीं फूलों से कुसुम्भी रंग में मैं अपनी साड़ी को रँगवाऊँगी ॥२॥

उस कुसुम्भी साड़ी को पहन कर मैं पति के साथ अटारी पर सोयी; परन्तु ननद का भइया (पति) मुँह से भी नहीं बोला ॥३॥

भावज दुःखी होकर ननद से कहती है—ऐ छोटी ननद ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ तुम जरा अपने भाई (मेरे पति) को मनाओ अर्थात् प्रसन्न करो, जिससे वे मुझसे बोलने लगें ॥४॥

(२९)

प्रसङ्ग—किसी फैशनेबुल स्त्री की 'फरमाइश' के कारण पति के पश्चात्ताप का वर्णन। पत्नी की उक्ति पति के प्रति।

१. छोटी टोकरी। ३. चुनना। ३. कुसुम्भी रंग। ४. पैर। ५. पड़ना। ६. तनिक, थोड़ा।

आहो रामा मोर पिछुआरवा रे नीलवा[1] के पेड़वा[2], हो रामा।
नील में के; चुनरी रंगाद हो रामा ॥ १ ॥
नील में के।

आहो रामा चुनरी रंगवात में भइलीं गरमिया[3] हो रामा।
रसे[4] रसे; बेनियाँ[5] डोलवलीं हो रामा ॥ २ ॥
रसे रसे।

आहो रामा बेनिया डोलावत में मुरुकेला बहियाँ हो रामा।
पटना से बइदा[6] बोलाद बलमुआ हो रामा ॥ ३ ॥
पटना से।

आहो रामा बइदा त माँगेला साठि रुपैया हो रामा।
धीरे धीरे मोहर भजाँव[7] बलमुआ हो रामा ॥ ४ ॥
धीरे धीरे।

आहो रामा मोहर भंजावत में निकलेलि अंखिया हो रामा।
मोर मेहरिया[8]; भइल जीव के जंजालवा[9] हो रामा ॥ ५ ॥
मोर मेहरिया।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे नील का पौदा है। ऐ पति! उसी नील के रंग में मेरी चुनरी रँगवा दो ॥१॥

जब पति मेरी चुनरी को स्वयं रंग रहा था, उस समय उसे पसीना आने लगा; अतः मैंने धीरे-धीरे पंखा झलना शुरू कर दिया ॥२॥

पंखा झलते समय मेरी बाँह मुरुक गयी। ऐ पति! मेरे लिए पटना से वैद्य बुला दो ॥३॥

पति ने कहा—वैद्य तो साठ रुपया माँग रहा है। स्त्री ने उत्तर दिया—तुम धीरे-धीरे अपनी मुहरें भुनवाओ ॥४॥

तब वह कृपण पति कहता है—मुहर भुनाते समय मेरी आँखें निकली जा रही हैं, अर्थात् मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। मेरी स्त्री मेरे प्राणों के लिए संकट हो गयी है। इससे जान बचाना कठिन है।

(३०)

प्रसङ्ग—प्रोषितपतिका स्त्री का विरह-वर्णन। पत्नी की उक्ति पति के प्रति।

१. नील (Indigo)। २. पौदा। ३. पसीना। ४. धीरे-धीरे। ५. पंखा। ६. वैद्य। ७. भुनाना। ८. स्त्री। ९. संकट, विपत्ति।

रामा गवना कराइ सइयाँ घर बइठइले ।
अपने गइले उ परदेसवा हो रामा ।। १ ।। हमरा के छोड़िके ।

रामा सगरे[1] चइत[2] चितवत बीति गइले ।
नाहिं लिखले चिठिया[3] चपठिया हो रामा ।। २ ।। हमरा के छोड़िके ।

रामा जब रे चइत बीति गइले हो रामा ।
तब चिठिया त अइले हो रामा ।। ३ ।। हमरा के छोड़िके ।

रामा अब तुहु अइल[4] माजा[5] कुछुओ[6] ना पइब ।
बीति गइले सगरे चइतवा हो रामा ।। ४ ।। हमरा के छोड़िके :

रामा अइसन उमरिया[7] हमार माती में मिलवल ।
लोगवन के जीव तरसवल[8] हो रामा ।। ५ ।। हमरा के छोड़िके ।

कोई स्त्री—जिसका पति परदेश चला गया है—कहती है कि मेरे पति ने गवना करा कर मुझे घर में बैठा दिया और स्वयं परदेश चला गया ।।१।।

सारा चैत का महीना उसकी प्रतीक्षा में देखते ही बीत गया ; परन्तु उसने कोई चिट्ठी नहीं लिखी ।।२।।

परन्तु जब चैत का महीना बीत गया, तब चिट्ठी आई और बाद में पति भी आया ।।३।।

स्त्री कहती है कि ऐ पति ! चैत का महीना पूरा बिता कर तुम आये हो ; अतः अब तुम्हें कुछ भी आनन्द नहीं मिल सकता ।।४।।

तुमने मेरी ऐसी यौवन भरी आयु को (उपभोग न करने के कारण) मिट्टी में मिला दिया और मेरे हृदय को सदा तरसाते रहे ।।५।।

(३१)

प्रसङ्ग—किसी अल्पवयस्का विवाहिता स्त्री का गौने में ससुराल न जाना ।

आरे में[9] धनि[10] बारी[11] हो, गवने ना जाइबि रामा ।। १ ।।
में धनि बारी हो ।
आरे गवने में जाइबि, पर सेजिया न सोइबि रामा ।। २ ।।
में धनि बारी हो ।
आरे सेजिया पर सोइबि, पर सइयाँ से न बोलबि रामा ।। ३ ।।
में धनि बारी हो ।
गवने ना जाइबि रामा, में धनि बारी हो ।।

१. समस्त । २. चैत मास । ३. चिट्ठी, पत्र । ४. आये । ५. आनन्द । ६. कुछ भी । ७. आयु । ८. तरसाया । ९. मैं । १०. धन्या, स्त्री । ११. छोटी ।

कोई अल्पवयस्का स्त्री कहती है कि मेरी उम्र अभी बहुत कम है, मैं गौने में ससुराल नहीं जाऊँगी ।।१।।

यदि पति के साथ सेज पर सो भी गई, तो उनसे मुँह से नहीं बोलूँगी, क्योंकि मेरी उम्र बहुत थोड़ी है ।।३।।

(३२)

प्रसङ्ग—किसी दुराचारी तथा प्रवासी पति के आचरण से दुःखी होकर स्त्री का कथन। स्त्री की उक्ति पति के प्रति।

रामा संग ही के सखि सभ भइली लरकोरिया[1] हो रामा ।
हमरा कोखि,[2] अगिया लगवल हो रामा ।। १ ।। हमरा कोखि।
रामा बेरी हि बेरी[3] तोहि बरजत[4] रइलीं हो रामा ।
जनि जाहु; पुरुब बनिजिया हो रामा ।। २ ।। जनि जाहु।
रामा पुरुब देसवा में बसे बंगलिनिया हो रामा ।
हरि लीहें; तोर मन; सुरति[5] दिखाइ हो रामा ।। ३ ।। हरि लीहें।
रामा बारहो बरिस पर चिठियो ना भेजे हो रामा ।
कइसे काटबि; चइत दिन चंचल हो रामा ।। ४ ।। कइसे काटबि।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे साथ ही की सब सखियाँ पुत्रवती हो गयीं, किन्तु ऐ पति ! तुमने मेरी कोख में आग लगा दी, अर्थात् तुम्हारे सतत प्रवास के कारण मैं बन्ध्या बनी हुई हूँ ।।।१।।

मैं तुम्हें बार-बार मना करती थी कि तुम पूर्व देश में व्यापार करने के लिए मत जाओ ।।२।।

पूर्व देश (बंगाल, आसाम) में बँगालिनें रहती हैं। वे अपने सौंदर्य को दिखाकर तुम्हारे मन को मोहित कर लेंगी ।।३।।

मेरा पति बारह वर्ष पर भी मेरे पास चिट्ठी नहीं लिखता है। चैत मास के इन चंचल दिनों को मैं कैसे काटूँगी ।।४।।

सचमुच इस स्त्री की दशा बड़ी दयनीय है। ऐसी घटनाएँ प्रायः हुआ ही करती हैं। वर्णन स्वाभाविक है।

१. पुत्रवती। २. कुक्षि, कोख। ३. बार-बार। ४. मना करना। ५. सौन्दर्य, रूप।

सोहनी-के गीत

(१)

प्रसङ्ग — किसी प्रोषितपतिका स्त्री का वर्णन।

पातर कुअवाँ ननदो खिलेला पातालवा[1] हो पनिया कइसे भरबों।
हमरो छयलवा[2] विदेसवा हो, पनिया कइसे भरबों ॥ १ ॥
हमरो छयलवा के कमकर[3] यार हो, पनिया भरि देला।
हमरो छयलवा के सोनार यार हो, झुलनी[4] गढ़ि देला ॥ २ ॥
हमरो छयलवा के रँगरेजवा[5] यार हो; चूनरी-रँगि देला।
हमरो छयलवा के केवटा[6] यार हो, मछरी मारि देला ॥ ३ ॥
मछरी खात ननदो रहि गइले पेट हो, केकरा सिर ढारो।
हमरो छयलवा बिदेस हो, केकरा सिर ढारो[7] ॥ ४ ॥
ससुर मोर बुढ़वा, देवरा नादान[8] हो, केकरा सिर ढारो।
हमरो छयलवा विदेस हो, केकरा सिर ढारो ॥ ५ ॥
ससुर मोर बुढ़वा देवरा नादान हो, भसुरा[9] सिर ढारो।
हमरो छयलवा विदेस हो; भसुरा सिर ढारो ॥ ६ ॥

कोई प्रोषितपतिका स्त्री अपनी ननद से कह रही है कि कुएँ का पानी बड़ा ही गहरा है। मेरा पति परदेस गया है, मैं कैसे पानी भरूँगी ॥१॥

फिर वह स्वतः कहती है कि मेरे पति का मित्र एक कहार है, वही मुझे पानी भर कर देगा। मेरा पति का मित्र सुनार है, जो मुझे नथुनी बना कर देगा ॥२॥

मेरे पति का मित्र रँगरेज है, जो मेरी साड़ी को रंग कर देता है तथा मल्लाह मछली मार कर देता है ॥३॥

मछली खाने से मुझे गर्भ रह गया है। अब इसका दोष किसके सिर मढ़ूँ? मेरा पति तो विदेश चला गया है ॥४॥

मेरा ससुर बूढ़ा है तथा देवर लड़का है, पति विदेस गया है; अतः इसका दोष किसके सिर मढ़ूँ? ॥५॥

१. गहरा, नीचे। २. प्रियतम। ३. कहार। ४. नाक का गहना। ५. रँगरेज। ६. मल्लाह। ७. मढ़ना। ८. बच्चा ९. पति का बड़ा भाई।

मेरा ससुर बूढ़ा है, देवर लड़का है, पति परदेस में हैं; अतः इसका दोष जेठ के सिर पर मढ़ूँगी ॥६॥

(२)

प्रसङ्ग—पति के दूसरा विवाह कर लेने पर पहली स्त्री का सपत्नी के प्रति रोष।

आमावा महुइया[१] के लगली केवड़िया,[२]
लोहवा के लागल जंजीरिया[३] ए बालम।
खोलहु प्रभु रे वजर केवड़िया,
ओसिये[४] भिजेले लामी केसिया ए बालम ॥ १ ॥
कइसे हम खोलीं धनि बजर[५] केवड़िया,
मोरा गोदी सवती[६] सँवलिया[७] ए बालम।
खोलहु प्रभु रे वजर केवड़िया,
सवती के रूपवा दिखावहुँ ए बालम ॥ २ ॥
का तुहू देखबू धनि सवती के रूपवा,
चानावा सुरुजवा के जोतिया[८] ए बालम।
ओही भोजपुरवा से लोहवा मंगइबो;
लोहवा के टाँगावा गढ़इबो[९] ए बालम ॥ ३ ॥
ओही टांगावा पर सान[१०] चढ़इबो;
ओही से जंजीरिया कटइबो ए बालम।
एक हाथे धरबो में सामी के जुलुफिया;
एक हाथे सवती के झोंटवा[११] ए बालम ॥ ४ ॥
सवती के छतिया पर सड़क कुटइबों;
लाल आवेला लाल जाला ए बालम।
सवती के छतिया पर ओखरी[१२] धइरबों;
कुटबों कमरिया[१३] लाचाकाई[१४] ए बालम ॥ ५ ॥
सवती के छतिया पर जाँतावा इबोगइ;
पिसबो लाहँगवा[१५] फहराई ए बालम ॥ ६ ॥

पति सौत के साथ घर में सो रहा है। उस समय उसकी पहली स्त्री कहती है कि आम और महुआ के किवाड़ लगे हुए हैं और उसमें लोहे की जंजीर लगी हुई है। ऐ

१. महुआ। २. केवाड़। ३. जंजीर। ४. ओस। ५. वज्र, मजबूत। ६. सपत्नी। ७. बालक। ८. ज्योति। ९. बनाना। १०. शाण, तेज। ११. बाल। १२. ओखल। १३. कमर। १४. झुकाना। १५. लँहगा।

पति! इन वज्र के समान मजबूत किवाड़ों को खोलो। मेरे लम्बे केश ओस की बूँदों से भीग रहे हैं॥१॥

पति कहता है कि ऐ स्त्री! मैं किवाड़ कैसे खोलूं? मेरी गोदी में तुम्हारी सौत का लड़का खेल रहा है। स्त्री कहती है कि किवाड़ को खोलो तथा मेरी सौत के रूप को दिखलाओ॥२॥

पति उत्तर देता है कि तुम अपनी सौत की सुन्दरता को क्या देखोगी? उसकी ज्योति चन्द्रमा तथा सूर्य के समान है। तब स्त्री कहती है कि मैं भोजपुर से लोहा मँगवाऊँगी तथा उससे कुल्हाड़ा (लकड़ी चीरने का हथियार) बनवाऊँगी॥३॥

उस कुल्हाड़े को तेज कर के जंजीर को काट दूंगी। तब एक हाथ से तुम्हारे लम्बे बालों को तथा दूसरे हाथ से सौत के बिखरे हुए केशों को पकड़ कर खींचूंगी॥४॥

सौत की छाती पर मैं सड़क कुटवाऊँगी जिस पर लाखों आदमी चढ़ कर आयेंगे तथा जायेंगे। उसकी छाती पर मैं ओखल रक्खूंगी तथा कमर लचका कर जोरों से कूटूंगी॥५॥

सौत की छाती पर मैं चक्की बनाऊँगी तथा अपना लहँगा फहरा कर मैं अन्न पीसूंगी॥६॥

सौतिया डाह बड़ी बुरी चीज होती है। कवियों ने इसका बड़ा रोचक वर्णन किया है। परन्तु सौत के प्रति द्वेष का इतना सचित्र, स्वाभाविक, अनूठा तथा मनोरंजक वर्णन संभवतः अन्यत्र उपलब्ध नहीं। इस गीत में सौतिया डाह का बड़ा ही जीता-जागता चित्र खींचा गया है।

(३)

प्रसङ्ग—एक कामुक नायक का कदाचार वर्णन।

टुघुरलि[१] टुघुरलि मैना गइलीं पिछअरिया,[२]
नरसिंह धरेला दाहिनी बहियाँ नु हो जी॥१॥
छोड़ छोड़ नरसिंह मोरी दहिनी बहियाँ,
फूटी जइहें, अमर[३] अस[४] चुरिया नु हो जी॥२॥
चुरिया के बदला मैना चुरिया पहिरइबो,
चलि आव हमरी सेजरिया[५] नु हो जी॥३॥
निहुरलि[६] निहुरलि आंगाना बहरलीं,
भउजी निरेखे मोर सुरतिया नु हो जी॥४॥
एक मास बीतले दोसर मास बीतले,
होखे लागल मैना मुँह पीअर[७] नु हो जी॥५॥

---

१. धीरे-धीरे जाना। २. मकान का पृष्ठ भाग। ३. न टूटने वाली। ४. साहान। ५. शय्या, सेज। ६. झुकी हुई। ७. पीला।

हमरा ही बाबा के बहुत हरदिया,
हरदी पिसत मुँहवा पीअर नु हो जी ॥ ६ ॥

निहुरलि निहुरलि आगानां बहरलों,
भउजी निरेखे मोर सुरतिया नु हो जी ॥ ७ ॥

तीनि मास बितले चउथ मास बितले,
फूले लागल मैना के पेखा नु हो जी ॥ ८ ॥

हमारा ही बाबा के बहुत कुरूथिया,
कुरथी[1] सतुअवे[2] पेटवा फूलल[3] नु हो जी ॥ ९ ॥

मैना नामक कोई स्त्री धीरे-धीरे अपने मकान के पीछे गई। वहाँ नरसिंह नामक किसी कामुक ने उसका हाथ पकड़ लिया ॥१॥

स्त्री ने कहा——नरसिंह तुम मेरी दाहिनी बाँह को छोड़ दो, क्योंकि मेरी सुहाग की चूड़ी फूट जायेगी ॥२॥

नरसिंह ने कहा——चूड़ी के बदले मैं तुम्हें दूसरी चूड़ी पहना दूँगा। तुम मेरी सेज पर चली आओ ॥३॥

इतने में मैना को गर्भ रह गया। एक दिन जब वह झुक कर आँगन बुहार रही थी, तब उसकी भावज उसका मुख देखने लगी ॥४॥

एक महीना बीता, दूसरा महीना भी बीत चला। धीरे-धीरे मैना का मुँह पीला होने लगा ॥५॥

भावज के द्वारा इसका कारण पूछने पर मैना कहती है कि मेरे पिता के घर में हल्दी बहुत है। रोज-रोज हल्दी पीसने से मेरा मुख पीला हो गया है ॥६॥

फिर जब वह आँगन में झाड़ू दे रही थी, तब भावज उसका मुँह देखने लगी ॥७॥

धीरे-धीरे तीसरा महीना बीता, चौथा महीना भी बीतने लगा। तब मैना का पेट गर्भ के कारण बढ़ने लगा ।८॥

कारण पूछने पर मैना कहती है कि मेरे पिता के घर में कुलथी (एक मोटा अन्न) का सत्तू बहुत होता है। उसी को खाने से मेरा पेड फूल गया है ॥९॥

पूर्वी जिलों में सत्तू खाने की बड़ी प्रथा है। उसी की झलक इस गीत में दिखाई पड़ रही है।

(४)

प्रसङ्ग——बधू का मायके जाना तथा भावज का कटु व्यवहार।

१. एक प्रकार का कुअन्न। २. सतुआ। ३. फूलना।

ए रामा कवना बने फूलेले बेइलिया;[1] कवना[2] बनवा केसरि हो राम।
ए रामा बाबा बनवा फूलेला बेइलिया भइया बनवा केसरि हो राम।।१।।
ए रामा कथि[3] में रँगइबी रे चुनरिया, कथि में रंगइबो पगिया हो राम।
ए रामा बेइली[4] में रँगइबी रे चुनरिया, त कुसुमें पगियवा[5] हो राम।।२।।
ए रामा चुनरी पहिरि नइहर जइबो, बटिया[6] ननदोई[7] रोके हो राम।
ए रामा छोड़ु छोड़ बाट ननदोइया, हम नइहर जइबो हो राम।।३।।
ए रामा नइहर भइया के बिअहवा, नेग[8] कुछ पाइबि हो राम।।४।।
ए रामा बाबा मोरे दिहले भँइसिआ,[9] भइया धेनुगइया[10] हो राम।
ए रामा आमा मोरी दिहली चुनरिया; त भउजी बिरहिया[11] बोले हो राम।।५।।
ए रामा हकड़ति[12] आवेले भँइसिआ, चोकरति[13] आवे धनुगइया हो राम।
ए रामा उड़ति आवेले चुनरिया; भऊजी बिरहिया गिरहिया[14] हो राम।।६।।

किस बाग में बेला का फूल खिलता है तथा किस बाग में केसर का फूल लगता है। पिता के बगीचे में बेला तथा भाई के बगीचे में केसर के फूल फूलते हैं।।१।।

स्त्री कहती है कि किस रंग में अपनी साड़ी तथा चादर रँगवाऊँगी? उत्तर में वह स्वतः कहती है कि बेला के रंग में साड़ी तथा कुसुम्भी रंग में अपनी चादर रँगवाऊँगी।।२।।

जब वह साड़ी पहन कर अपने मायके जाती है, तब उसका ननदोई (ननद का पति) रास्ता रोकता है। तब उससे कहती है कि तुम मेरा रास्ता छोड़ दो। मैं अपने मायके जाऊँगी।।३।।

मेरे मायके में मेरे भाई का विवाह है। वहाँ मुझे उत्सव के उपलक्ष बहुत सी वस्तु उपहार में मिलेगी।।४।।

स्त्री कहती है—मेरे पिता ने उपहार में मुझे भैंस दी, भाई ने दूध देने वाली गाय दी, माता ने साड़ी दी; परन्तु भावज ने विरह (व्यङ्ग) से युक्त वचन कहे।।५।।

जब स्त्री ससुराल को जाने लगी, तब भैंस हुँकारती हुई आई, गाय रँभाती हुई आई, साड़ी हवा के कारण उड़ने लगी; परन्तु भावज के व्यङ्ग वचन गाँठ में बँधे हुए थे।।६।।

भावज तथा ननद के शाश्वत विरोध की झाँकी इस गीत में बड़ी सुन्दर मिलती है।

(५)

प्रसङ्ग—रेशमी नामक स्त्री के ऊपर एक राजा का मोहित होना।

१. बेला का फूल। २. किस। ३. किस वस्तु। ४. बेला का रंग। ५. चादर। ६. रास्ता। ७. ननद का पति। ८. उपहार। ९. भैंस। १०. दूध देने वाली गाय। ११. व्यङ्गवचन। १२, हुँकारना। १३. रंभाना। १४. गाँठ, गिरह।

आपाना ही माई बाप के रेसमी[1] दुलरुई;
    सेर भर लचिया[2] चबाई गोरिया रेसमी ॥१॥
उपरा ओढ़ेले रेसमी ललकी चुनरिया;[3]
    नीचवा ओढ़ेले बुटिवाल[4] गोरिया रेसमी ॥२॥
पहिरी ओढ़िय रेसमी चलली बजरिया;
    राजावा गिरेला मुरुझाई[5] ओरिया रेसमी ॥३॥
किया तोरे राजावा रे अइली जाड़ा जुड़िया[6];
    किया तोरे बथेला[7] कापार गोरिया रेसमी ॥४॥
नाहिं मोरे रेसमी रे अइली जाड़ा जुड़िया;
    नाहीं मोरे बथेला कापार गोरिया रेसमी ॥५॥
तोहरो सुरति देखि हम मुरुझइलीं;
    जिया[8] मोरे बड़ा हुलसाय गोरिया रेसमी ॥६॥
किया तोरे रेसमी रे साँचावा के ढारल;
    किया तोके गहेंला[9] सोनार गोरिया रेसमी ॥७॥
नाहीं हम राजावा रे सांचावा के ढारल;
    नाहि मोके गहेंला सोनार गोरिया रेसमी ॥८॥
माई रे बापवा मोर दिहले जनमवा ;
    सुरचि उरेहे[10] भगवान ओरिया रेसमी ॥९॥

रेशमी नामक स्त्री अपने माँ-बाप की बहुत प्यारी थी और वह प्रतिदिन सेर भर इलायची खाती थी ॥१॥

शरीर के ऊपर वह लाल रेशम की चादर ओढ़ती थी और नीचे बूँटीवाली साड़ी पहनती थी ॥२॥

एक दिन वह सुसज्जित होकर बाजार करने चली। रास्ते में किसी राजा की दृष्टि उस पर पड़ी और वह मूर्छित होकर गिर पड़ा ॥३॥

तब रेशमी ने उससे पूछा कि ऐ राजा ! क्या तुम्हें जूड़ी (जड़ैया) आ गई है अथवा तुम्हारा सिर चक्कर खा रहा है। जिससे तुम मूर्छित हो गये ॥४॥

राजा ने उत्तर दिया—न तो मुझे जाड़ा ही आया और न मेरा सिर ही चक्कर खा रहा है ॥५॥

तुम्हारे सौन्दर्य को देखकर मैं मूर्छित हो गया ; परन्तु ऐ सुन्दरी ! मेरा हृदय बड़ा प्रफुल्लित हो रहा है ॥६॥

१. नाम विशेष। २. इलायची। ३. चादर। ४. बूटेदार। ५. मूर्छित होना। ६. जूड़ी बुखार। ७. दुखना। ८. हृदय। ९. गढ़ना। १०. चित्रित करना।

राजा ने पूछा—ऐ रेशमी ! क्या तुम साँचे में ढाली गई हो अथवा तुमको किसी चतुर सुनार ने बनाया है ॥७॥

रेशमी ने उत्तर दिया—ऐ राजा ! मैं न तो साँचे में ढाली गयी हूँ और न मुझे किसी सुनार ने ही रचा है ॥८॥

मेरे पिता और माता ने मुझे पैदा किया है तथा भगवान् ने मेरे सौन्दर्य को बनाया है ॥९॥

सती, साध्वी रेशमी का चरित्र कितना महान् और पवित्र है। हमारी स्त्रियों को इससे शिक्षा लेनी चाहिए।

(६)

प्रसङ्ग—हाजीपुर के मेले में जाने के लिए स्त्री का पति से पैसा माँगना।

कावाना[1] मासे बाँसावा[2] हरियर भइले ए सजनी।
कावाना मासे हरि मोर विदेसे जइहें ए सजनी ॥१॥
सावन मासे बासावा हरियर भइले ए सजनी।
कातिक मासे हरि मोर विदेस जइहे ए सजनी ॥२॥
लागी गइल हाजीपुर बजरिया ए सजनी ॥३॥
गोड़[3] तोरे लागिले सइयाँ गोसइयाँ।
कीनी देहु ललकी टिकुलिया[4] ए सजनी ॥४॥
इसर कीरिये परमेसर कीरिये[5]।
एकहु पइसवा[6] पासवा[7] नइखे[8] ए सजनी ॥५॥
घरी राति गइलीं पहर राति गइलीं।
परि गइलीं टेंटवा[9] मे हाथावा ए सजनी ॥६॥
अगिया लगइबो ओहि सासु जी के कोखिया[10]।
झूठे झूठे पुतवा जनमवले बाड़ी ए सजनी ॥७॥
फूल फूले ओही आमाजी के कोखिया।
साँचे साँचे धियवा[11] जनमवले बाड़ी ए सजनी ॥८॥

कोई स्त्री कहती है कि किस मास में बाँस हरा होता है तथा किस मास में मेरा पति विदेश जायेगा ॥१॥

वह स्वतः उत्तर देती है—सावन मास में बाँस हरा होगा और कार्तिक मास में मेरा पति विदेस जायेगा ॥२॥

इसी बीच में हाजीपुर (सोनपुर) के मेले का समय आ गया ॥३॥

१. किस, कौन। २. बाँस। ३. पैर। ४. टिकुली। ५. शपथ। ६. पैसा। ७. पासमें। ८. नहीं है। ९. कमर। १०. कोख, पेट। ११. पुत्री।

स्त्री ने पति से प्रार्थना करते हुए कहा कि ऐ स्वामी ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। तुम मुझे लाल टिकुली खरीद दो॥४॥

इस पर झूठे पति ने उत्तर दिया—मैं परमेश्वर की शपथ खाता हूँ, मेरे पास एक भी पैसा नहीं है॥५॥

दोनों रात को साथ ही सोये। एक घड़ी रात बीती, दो घड़ी रात गयी। इतने में स्त्री का हाथ पति के कमर पर—जहाँ उसने रुपया चुरा कर रक्खा था—चला गया॥६॥

तब स्त्री क्रुद्ध होकर कहने लगी कि मैं अपनी सास के पेट में आग लगा दूँगी, जिसने ऐसे मिथ्यावादी पुत्र को पैदा किया॥७॥

मेरी माता के पेट में सुन्दर फूल खिले, जिन्होंने मुझ जैसी सच्ची पुत्री को पैदा किया॥८॥

हाजीपुर का बाजार आजकल सोनपुर (हरिहरक्षेत्र) के मेले के नाम से प्रसिद्ध है, जो बिहार प्रान्त के छपरा जिले में है।

(७)

प्रसङ्ग—किसी कामुक युवक का अनाचार वर्णन।

एहिजा[१] के बाबा के नइयाँ[२] ना जानिले;
सरन मनाइले तोहार ए बाबा॥१॥
ननदी भउजिया रे दुनौ समउरिया;[३]
मिलि जुलि पनिया के जाली हो बाबा॥२॥
घरिला[४] भरिय भरि आरारा[५] चढ़वलीं;
केहु ना घरिला आलगावे[६] हो बाबा॥३॥
घोड़वा चढ़ल अइले घरवा के बालम;
तानि ए घरिला अलगावहु हो बाबा॥४॥
एक हाथ बाबा हो घरिला उठवले;
एक हाथ धइले आँचरवा हो बाबा॥५॥
छोड़ छोड़ बालम हो हमरो आँचरवा;
रोवत बालक छोड़ि अइलीं हो बाबा॥६॥
सासु तोर घर हीं, ननद तोर घर हीं;
गोतिनि दूधवा पियइहें हो बाबा॥७॥
सासु मोर अन्हरी[७], ननद ससुरइतिनि,[८]
गोतिनि मोर महुरा[९] पियइहे[१०] हो बाबा॥८॥

१. यहाँ का। २. नाम। ३. समान उम्र की। ४. घड़ा। ५. किनारा। ६. उठाना। ७. अन्धी। ८. ससुराल जानेवाली। ९. विष। १०. पिलायेगी।

मैं अपने घर के लोगों का नाम भी नहीं जानती हूँ। हे भगवान् तुम्हारी शरण में हूँ ॥१॥

ननद और भावज दोनों समान आयु की थीं, वे मिल-जुल कर पानी भरने को गयीं ॥२॥

घड़ें को पानी से भर नदी के किनारे उन्होंने रख दिया; परन्तु कोई घड़े को उठाने वाला नहीं मिला ॥३॥

इतने में घोड़े पर चढ़ा हुआ उपपति चला आया। उससे घड़ा उठा देने की मैंने प्रार्थना की ॥४॥

एक हाथ से उसने घड़ा उठाया, और दूसरे हाथ से उसने मेरा आँचल पकड़ लिया ॥५॥

मैंने उससे आँचल को छोड़ देने की प्रार्थना की तथा यह कहा कि मेरा लड़का घर में रोता होगा ॥६॥

तब उस उपपति ने उत्तर दिया कि तुम्हारी सास और ननद घर में हैं ही। तुम्हारी दायादिन बच्चे को दूध पिला देगी ॥७॥

मैंने कहा कि मेरी सास अन्धी है, ननद ससुराल जाने वाली है और मेरी दायादिन मेरे बच्चे को विष देकर मार डालेगी। (अतः मुझे जाने दो) ॥८॥

(८)

प्रसङ्ग—विप्रयुक्ता स्त्री की उक्ति पति के प्रति।

दस पाँच नदिया रे बहे एक सोतिया।[१]
ताहाँ हमार पियवा नहाई मोर सखिया ॥१॥
जाहुँ हम जनिते रे लोभिया, जइबे विदेसवा।
घींचि[२] घींचि बिन्हतों रे लोभिया, रेसम के डोरिया ॥२॥
गोद पइसि[३] सोइतों रे लोभिया, सिरहाना धरितों बहियाँ ॥३॥
रेहम के बान्हवाँ[४] ए धनिया, टूटि फाटि जइहें।
वचन के बान्हवाँ ए धनिया; कबहू ना डोलिहें ॥४॥
जल में रोवेला चकवा चकई, बाहर रे हरिनियाँ-
घरवा रोवेले घरीनिया[५], बिछोहवा[६] कइले निरवामोहिया ॥५॥

दस पाँच नदियाँ एक ही स्रोत से बहती हैं। ऐ सखी! वहीं पर मेरा पति स्नान करने के लिए जाता है ॥१॥

एक दिन स्नान के व्याज से बाहर गया हुआ पति परदेस को चला गया, तब उसकी स्त्री कह रही है कि ऐ लोभी। यदि मैं जानती कि तुम परदेस चले जाओगे, तो मैं तुम्हें रेशम की डोर से खींच कर बाँधती ॥२॥

१. स्रोत। २. खींच-खींचकर। ३. प्रवेश करके। ४. बन्धन। ५. गृहिणी। ६. वियोग।

तुम्हारी गोद में बैठ कर सोती और अपनी बाँह को तुम्हारे सिरहाने धरती ॥३॥

तब पति उत्तर देता है ऐ स्त्री ! रेशम की गाँठ टूट जायेगी; परन्तु वचन का बन्धन नहीं टूट सकता अर्थात् लौटने का वादा करके मैं अवश्य आऊँगा ॥४॥

उसके (पति) वियोग में जल में चकवा और चकई रोते हैं, बाहर हरिणी रोती है और घर में उसकी गृहिणी रोती हुई कहती है कि तुमने विछोह किया है; अतः बड़े निर्दयी हो।

(९)

प्रसंग—पुत्र जन्म के अवसर पर देवर, भावज तथा भावज और ननद से वार्तालाप।

ए रामा पियवा बखाने[1] घरवा आपन;
जोड़ी जौंति आनि देले हो राम।
ए रामा जातावाँ गाड़ेले गाजा[2] ओबर;
बयरिया[3] ना लागेले हो राम ॥१॥
ए रामा पीसत पीसत गरमी भइले,
ओसारावा में ठाढ़ भइली हो राम।
ए रामा गोरुवा[4] से अइले लहुरा[5] देवर;
काहे भऊजी धूमिल बाड़ू हो राम ॥२॥
ए रामा तहरे भइया बोले बिरहिया;[6]
एक ही होरिलवा[7] बिनु हो राम।
ए रामा हथवा तिलिया चउरवा;
ए सुरुज मनावहु हो राम ॥३॥
ए रामा सुरुज मनावही ना पवलों;
होरिलवा अवतार लिहले हो राम।
ए रामा ओहटा[8] के ननदी बोलाव;
रगरी के पिसेहें पिपरिया हो राम ॥४॥
ए रामा नीगिचा[9] के ननदी चोरिनिया;
चोरइहें मधु पीपरि[10] हो राम।
ए राम रगरी रगरी पिपरी,
पीसिके कटोरा में उठवलसि हो राम ॥५॥
ए रामा काढ़ भऊजी नाक के मेसरिया[11]
पिअहु मधु पीपरि हो राम।

१. प्रशंसा। २. अन्धेरा घर। ३. बयारि, हवा। ४. चरवाही। ५. छोटा। ६. व्यङ्ग वचन। ७. पुत्र। ८. दूर। ९. नजदीक। १०. पीपल। ११. नथुनी।

ए रामा भइलो होरिलवा बलु तजबि;
मेसरिया नाहिं काढ़बि हो राम॥६॥
ए रामा नाक के मेसरिया काढ़ि लिहलीं;
फुफुतिया[1] में चोरबली हो राम।
ए राम उठु पिया करु उजियार[2];
मेसरिया मोर भुलाइल[3] हो राम॥७॥

स्त्री कहती है कि मेरा पति अपने घर का बड़ा वर्णन (प्रशंसा) करता है। उसने एक चक्की ला दी है। उस चक्की को उसने अन्धेरी कोठरी में गाड़ दिया है, जहाँ हवा भी नहीं जाती॥१॥

स्त्री कहती है कि चक्की पीसते-पीसते मुझे गर्मी मालूम होने लगी और मैं बरामदे में आकर खड़ी हो गई। इतने में चरवाही से छोटा देवर आया और मेरे उदास होने का कारण पूछने लगा॥२॥

भावज ने उत्तर दिया—तुम्हारा भाई पुत्र हीन होने के कारण मुझे ताना मारता है। तब देवर ने कहा—हाथ में तिल और चावल लेकर सूर्य की उपासना करो॥३॥

अभी स्त्री ने सूर्य की उपासना भी नहीं की थी कि उसे पुत्र रत्न पैदा हो गया। तब देवर ने कहा कि दूर से अपनी ननद को बुलाओ जो पीपल पीस कर तुम्हें देगी॥४॥

तब भावज ने कहा कि ननद चुराने वाली है वह मधु और पीपल चुरा लेगी। तब देवर ने स्वयं रगड़-रगड़ कर पीपल को पीस कर कटोरे में उठाया॥५॥

देवर ने कहा—भावज! तुम अपने नाक की नथुनी को निकाल दो और यह मधु तथा पीपल पीओ। भावज ने कहा—उत्पन्न हुए पुत्र को मैं छोड़ने को तैयार हूँ; परन्तु नथुनी को नहीं निकाल सकती॥६॥

इसके बाद भावज ने नाक की नथुनी को निकाल कर अपनी साड़ी में छिपा लिया और अपने पति से कहने लगी कि मेरी नथुनी खो गई है, तुम उठ कर खोजो॥७॥

(१०)

प्रसंग—पत्नी की उक्ति सपत्नीक पति के प्रति।

गंगवा जमुनवा के पीअरि[4] मटिया;[5]
बुई अइलवा[6] के चूल्हि हो बुई रंगी।
एक ओर दीन्हली खिरिया[7] बखिरिया;
एक ओर अँवटली[8] दूध हो बुई रंगी॥१॥

१. साड़ी का अगला भाग। २. प्रकाश। ३. भूल गया। ४. पीला। ५. मिट्टी। ६. दो आँच वाला चूल्हा। ७. खीर, तस्मै। ८. गर्म करना।

के मोर खइहें हो खिरिया बखिरिया;
कवना दुलरुआ[१] के दूध हो दुई रंगी।
ससुर भसुर खइहें खिरिया बखिरिया;
ओही कुल बोरना के दूध हो दुई रंगी ।।२।।

खिरिया रीन्हत[२] खात भइले अबेरिया;
कवना बहाने घर जाई हो दुई रंगी।
हाथवा लेहु संवरो बिनुवा[३] गोंइठवा[४],
अगिनी बहाने घर जाहु हो दुई रंगी ।।३।।

खोलहु प्रभु हो वजर[५] केवरिया;
ओसिये[६] भीजले लामी केस हो दुई रंगी।
कइसे में खोलीं धनि वजर केवरिया;
मोरा गोदी सवती[७] सँवरिया हो दुई रंगी ।।४।।

खोलहु प्रभु हो वजर केवरिया;
सवती के रूप देखलावहु हो दुई रंगी।
का तुहु देखबू धनि सवती के रूपवा;
चानावा सुरूजवा[८] के जोतिया हो दुई रंगी ।।५।।

तोरा लेखा बालम हो सुरूजवा के जोतिया;
हमा लेखे तारावा[९] के धूरि[१०] हो दुई रंगी ।।६।।

कोई स्त्री कह रही है कि गंगा और यमुना की पीली मिट्टी है तथा दो आँच वाला चूल्हा है। एक ओर मैं खीर पकाती हूँ और दूसरी ओर दूध गर्म करती हूँ ।।१।।

मेरी खीर को कौन खायेगा तथा दूध को कौन पियेगा। मेरा ससुर और जेठ खीर खायेगा तथा मेरे कुल को नष्ट करने वाला (पति) दूध पीयेगा ।।२।।

खीर को पकाते तथा खाते ही देर हो गई। अब किस बहाने से पति के घर में जाऊँगी। तब सास कहती है कि तुम अपने हाथ में उपली ले लो और आग लेने के बहाने से घर में चली जाओ ।।३।।

पत्नी गई और कहने लगी—ऐ पति ! इस दृढ़ किवाड़ को खोलो। ओस के कारण मेरे लम्बे बाल भींग गये हैं। पति ने उत्तर दिया मैं किवाड़ कैसे खोलूँ। मेरी गोद में सुन्दर सौत विराजमान है ।।४।।

१. लाड़ला, प्यारा। २. पकाना। ३. बीना हुआ, एकत्रित किया हुआ। ४. उपला, चिपरी। ५. वज्र, मजबूत। ६. ओस। ७. सपत्नी। ८. सूर्य ९. तलवा। १०. धूल।

तब स्त्री उत्तर देती है—तुम किवाड़ खोलो और मेरी सौत के रूप को दिखलाओ।

पति ने कहा—ऐ स्त्री ! तुम अपनी सपत्नी के रूप को क्या देखोगी ! इसका सौन्दर्य चन्द्रमा तथा सूर्य की ज्योति के समान है ॥५॥

पत्नी ने उत्तर दिया—तुम्हारे लिए इसकी सुन्दरता सूर्य की ज्योति के समान है ; परन्तु मेरे लिए वह पैर के तलवे की धूलि के समान है ॥६॥

इस गीत में बहु-विवाह की एक सुन्दर झाँकी मिलती है। देहातों में अनेक झगड़े केवल इसी सौतिया डाह के कारण होते रहते हैं। इस प्रथा का जितना शीघ्र नाश हो जाय, उतना ही अच्छा हो। केन्द्रीय सरकार ने कानून द्वारा बहुविवाह को अवैध घोषित कर दिया है।

(११)

प्रसंग—पत्नी की उक्ति पति के प्रति।

बोअलों में गेहुँआं उपजि गइले अँकरी[१];
डाँगारा[२] वठहल प्रभु झँखे[३] रावल मुनिया।
जनि प्रभु झँखहु जनि झँखि मरहु,
अँकरी बदलि गोहुँआं पीसबि रावल मुनिया ॥१॥
पीसत कूटत मोर धनि दुबरइली[४];
कहितू त चेरिया लेअइतीं रावल मुनिया।
चेरिया के आने गइले सवती ले अइले;
सवती पइँचवा[५] कइसे फेरबि रावल मुनिया ॥२॥
लाली लाली पूरिया, छीपा[६] भरि जऊरिया[७];
परत परत[८] महुरा[९] डालबि रावल मुनिया।
खात पीअत सवती बड़ा नीक[१०] लागेला;
अँचवे[११] के बेरिया[१२] कपरा घूमे रावल मुनिया ॥३॥
जाहु तोर सवती कापार घूमे लागेला;
जाई सुतु ओहि गाजाओबर रावल मुनिया।
हर[१३] जोति अइले, कुदारि[१४] मारि अइले,
ओरी[१५] तर बइठे मनवा मारि रावल मुनिया ॥४॥
सभ के त देखिले हम आगाना से दुअरा[१६],
पूरुबी बांगालिन काहांवा बाड़ी रावल मुनिया।

१. एक घास। २. खेतों के बीच का रास्ता, पगडण्डी। ३. दुःख करना। ४. दुबला हो जाना। ५. बदलना, विनिमय। ६. थाली। ७. खीर। ८. तह। ९. विष। १०. अच्छा। ११. हाथ धोना। १२. बारी। १३. हल। १४. कुदाल। १५. छप्पर का अन्तिम भाग। १६. द्वार।

पूरुबी बांगालिन गरभी गुमनिया[1],
सूतल होइहें ओही राजा ओबर रावल मुनिया ॥५॥

एक पैंना[2] मरले दोसर पैना मरले;
तबो नाहीं लेली करवटिया[3] रावल मुनिया।
जब कुछ सुनगुन धनिया के ना पवले,
पूका[4] फारि रोवेला मरदवा रावल मुनिया ॥६॥

स्त्री कहती है कि मेरे पति ने गेहूँ बोया था; परन्तु उसके स्थान पर घास पैदा हो गई। वह खेत की मेढ़ पर बैठ कर दुःखी हो रहा है। पति को सम्बोधित करती हुई वह उसे सान्त्वना देती है कि तुम दुःखी मत होओ, मैं अंकरी को बदल कर गेहूँ लाकर पीसूँगी ॥१॥

पति कहता है गेहूँ पीसते-कूटते तुम दुबली हो गई हो, यदि कहो तो एक दासी ले आऊँ। पति दासी लेने के लिए गया; परन्तु परदेस से एक सौत लेता आया। स्त्री दुःखी होकर कहती है कि—सौत को मैं कैसे बदल कर लाऊँ ॥२॥

स्त्री पुनः कहती है—मैं लाल-लाल पूरी बनाऊँगी। थाली भर कर खीर बनाऊँगी और उसकी तह-तह में विष डाल दूँगी। उसने पूरी बनाकर दी। खाते समय सौत को अच्छी लगी; परन्तु हाथ धोते समय सिर घूमने लगा ॥३॥

तब पहली स्त्री ने कहा—यदि तुम्हारा सिर घूम रहा है, तो अँधेरे घर में जाकर सो जाओ। इतने में उसका पति हल जोत कर तथा खेत खोद कर आया और उदास होकर ओरी के नीचे बैठ गया ॥४॥

उसने अपनी माँ से पूछा—मैं सब को देख रहा हूँ; परन्तु पूर्वी बंगालिन को नहीं देख रहा हूँ। माता ने उत्तर दिया—पूर्वी बंगालिन बड़ी घमंडी है। वह कहीं अन्धेरे घर में सोई होगी ॥५॥

पति घर में गया और उसने अपनी (मृता) पत्नी को एक दो चाबुक मारा; परन्तु उसने बिल्कुल ही करवट नहीं ली। जब पति ने देखा कि वह कुछ भी हिलडुल नहीं रही है, तब उसे मृत समझ कर जोर से चिल्ला कर ोने लगा ॥६॥

सौतिया डाह के विषम परिणाम का चित्र इस गीत में बड़ी मार्मिक रीति से खींचा गया है। सौतिया डाह से बड़े-बड़े अनर्थ होते हैं। देहातों में रोज ही ऐसी दुर्घटनाएँ देखने में आती हैं, जिनमें सौत के घर आते ही पहली स्त्री या तो उसी को मार डालती है या स्वयं आत्म-हत्या कर लेती है।

(१२)

प्रसंग—ननद और भावज के झगड़े के कारण पति का परदेस जाना। ननद के द्वारा प्रसन्न कर अपने भाई को वापस घर लौटा लाना। भावज की उक्ति—

१. घमंडी। २. बैल को हाँकने का चाबुक। ३. करवट। ४. चिल्ला चिल्लाकर।

ननदी झगरवा कइली, पिया परदेस गइले।
किया हो रामा, भउजी रोवेलि छतिया फाटे हो राम ॥१॥

पीसहु भउजी रे जीरहुलि[1] सतुवआ[2] रे।
किया हो रामा, हम जाइबि भइया के उदेसवा[3] हो राम ॥२॥

एक बने गइली राम दुसर बने गइली।
किया हो रामा, तीसर बने भइया धुइयाँ[4] रमावे हो राम ॥३॥

छोड़ु छोड़ु भइया रे बनवा के धुइयाँ।
किया हो रामा, भउजी रोवेले छतिया फाटे हो राम ॥४॥

कइसे हम छोड़ी बहिना बनवा के धुइयाँ।
किया हो रामा, भारी रे मोगलवा[5] के नोकर हो राम ॥५॥

लेहु ना भइया रे ढाल, तरुवरिया।
किया हो रामा, मोगल के सिरवा उतारहु[6] हो राम ॥६॥

कइसे ले बहिना हम सिरवा उतारबि।
किया हो रामा, नूनवा निखिया[7] केई दीहें हो राम ॥७॥

ऊँचे मन्दिल चढ़ि भउजी निरेखेलि[8]।
किया हो रामा, आगे भइया पीछे बहिना आवे हो रामा ॥८॥

अइसन ननदी के सरिया[9] पहिराइबि रे।
किया हो रामा, गइलो[10] सेनुरवा लवटावेलि हो राम ॥९॥

भावज कहती है कि ननद ने झगड़ा किया और इस कारण मेरा पति परदेस चला गया। ननद कहती है—मेरे भाई के चले जाने से भावज बिलखकर रो रही है और उसके रोने से मेरी छाती फटी जाती है ॥१॥

ननद ने भावज से कहा कि ऐ भावज! तुम बारीक सत्तू पीस कर मेरे भोजन के लिए दो। मैं अपने भाई को खोजने के लिए परदेस जाऊँगी ॥२॥

ननद कहती है—मैं एक बन में गयी, दूसरे बन में गयी, तीसरे बन में जाकर देखा कि भाई धूनी रमा रहा है अर्थात् ईश्वर के ध्यान में मगन है ॥३॥

बहन ने भाई से कहा कि ऐ भइया! तुम बन में धूनी रमाना छोड़ दो। घर में भावज बड़े करुण स्वर में रो रही है, जिसे सुन छाती फटी जाती है ॥४॥

भाई ने उत्तर दिया—ऐ बहन! मैं बन में धूनी रमाना कैसे छोड़ दूँ। मैं एक बड़े मुग़ल (मुसलमान शासक) की नौकरी कर रहा हूँ ॥५॥

---

१. बारीक। २. सत्तू। ३. उद्देश्य, खोज। ४. भस्म लगा साधु बनना। ५. मुगल। ६. काटना। ७. ऋण, बदला। ८. देखना। ९. साड़ी। १० नष्ट।

बहन ने उत्तर दिया—ऐ भइया ! तुम ढाल और तलवार लो और अपने मालिक मुग़ल का सिर काट डालो ॥६॥

भाई ने कहा—ऐ बहन ! मैं अपने स्वामी मुग़ल के सिर को कैसे काटूं। उसके नमक खाने की नीरव (बदला या ऋण) कौन चुकायेगा ॥७॥

भावज ऊँची अटारी पर चढ़ कर अपने पति के आने की प्रतीक्षा कर रही थी। इतने में उसने देखा कि आगे भाई (उसका पति) और पीछे बहन चली आ रही है ॥८॥

भावज ने इस पर प्रसन्न होकर कहा कि ऐसी ननद को मैं साड़ी पहनाऊँगी, जिसने मेरे नष्ट सिन्दूर को लौटा लिया अर्थात् घर से गायब पति को प्राप्त कर उसे फिर घर लौटा लायी ॥९॥

(१३)

प्रसंग—पति का रुष्ट होकर परदेस चला जाना तथा माता के द्वारा घर लौट चलने की उससे प्रार्थना करना।

ननदी आँगानावा चनन गांछि बिरवा हो।
लवँग चुवेला सारी राति हो राम ॥१॥
लवँग बीनि[1] बीनि सेजिया डसवलीं हो।
सोवन चलले राजा के कुँअरवा हो राम ॥२॥
आगे हटु, आगे हटु राजा के कुँअरवा हो।
पातर चोलिया भीजेले पसेनवा[2] हो राम ॥३॥
भींजता त भीजि देहु ननदी के भऊजी हो।
धोबी घरवा देबि हम धोआइ हो राम ॥४॥
धोबिया के पूतवा जे बाड़ा रंग[3] रसिया हो।
चोलिया मिरोरि[4] रस लूटे हो राम ॥५॥
आताना बचनिया प्रभु सुनही ना पवले हो।
चलि भइले पुरुब मोरंग देसवा हो राम ॥६॥
मचिया बइसल तुहुँ सासु बढ़इतिनि[5] हो।
आपन बेटा लेहु ना बोलाइ हो राम ॥७॥
फिरु[6] चलु फिरु चलु बबुआ अब घरवा हो।
बिरही कोइलिया[7] सेजिया बोले हो राम ॥८॥

१. चुनकर। २. पसीना। ३. प्रेमी, रंगीला। ४. मसल कर। ५. श्रेष्ठ। ६. लौट चलो। ७. स्त्री।

भावज कहती है कि ननद के आँगन में लौंग और चन्दन के वृक्ष हैं और उनसे सारी रात लौंग गिरती रहती हैं॥१॥

लौंग को चुन कर मैंने सेज बिछायी और उस पर सोने के लिए राजा का कुँअर मेरा पति चला॥२॥

सेज पर सोने पर स्त्री ने पति से कहा कि ऐ राजा के कुँअर! जरा आगे हटो, क्योंकि पसीने के कारण मेरी पतली चोली भींग रही है॥३॥

पति ने उत्तर दिया—ऐ ननद की भावज! यदि तुम्हारी चोली भींगती है, तो उसे भीगने दो। मैं उसे धोबी के घर देकर धुला दूँगा॥४॥

इस पर स्त्री ने कहा—धोबी का लड़का बड़ा रँगीला है। वह मेरी चोली को मरोरकर (धीरे से दबाकर) रस लूटता है अर्थात् स्तन स्पर्श का आनन्द लेता है॥५॥

इनना बचन पति अभी सुनने भी न पाया था कि (स्त्री के आचरण पर सन्देह कर) वह पूर्व दिशा में मोरंग देश को चल पड़ा॥६॥

बधू अपनी सास से कहती है कि मचिया पर बैठने वाली ऐ श्रेष्ठ सास! तुम अपने परदेस जाते हुए लड़के को बुला लो॥७॥

सास ने लड़के को रास्ते में जाकर मनाया और कहा कि ऐ बच्चे! अब घर को लौट चलो, लौट चलो। तुम्हारी सेज पर बिरही कोयल बोलती रहती है अर्थात् वियोग में तुम्हारी स्त्री सेज पर छटपटाया करती है॥८॥

इस गीत में पति के अधीर तथा चंचल स्वभाव की अच्छी झाँकी मिलती है। वह तनिक सी बात पर अप्रसन्न हो जाता है और अप्रमाणित कारणों से स्त्री के आचरण पर सन्देह करने लगता है। यद्यपि इस गीत में सन्देह का कोई भी कारण दिखाई नहीं पड़ता। संभवतः यही देख कर भवभूति ने कहा है कि—

'यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः'।

(१४)

प्रसंग—निर्धनता के कारण पति का स्त्री से गहना बेचने के लिए माँगना। पत्नी का न देने के लिए बहाना करना।

आरे मोरे पिछुआरावा खजूरवा; त फरिके[१] लटकि बलमू।
आरे चढ़हिं के रहले देवरवा; त चढ़ले हमार बलमू॥१॥

आरे एक फलवा पकले[२] गिरइते; त धनिया तोहार बलमू।
आरे जोड़[३] धनिया हेठ[४] फुरहुरवा[५]; त पाकल गिराइबि बलमू॥२॥

१. फलकर। २. पका हुआ। ३. ले लो। ४. नीचे। ५. साड़ी का अग्रभाग।

आरे पकल पकल फलवा खाला; त काचाका[1] गिरावे बलमू।
धनिया काढ़[2] नाहि नाक के नथियवा; त खरची चलाइबि बलमू ॥३॥
पियवा हँसे लगिहे दरवा रे देयादवा[3]; त नथिया बिकइले बलमू।
पियवा हँसे लगिहे दरवा रे देयादवा; त हसुली बिकइले बलमू ॥४॥
धनिया का करिहें दरवा रे देयाद; त बिपति गवांउ[4] रे बलमू।
धनिया सपति हउवे[5] रे सिंगार; त बिपति गवांउ रे बलमू ॥५॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे खजूर का वृक्ष फलों से लद जाने के कारण लटक गया था। उन फलों को तोड़ने के लिए देवर चढ़ने वाला था। परन्तु मेरा पति ही पहले चढ़ गया ॥१॥

स्त्री ने पति से कहा—एक भी पका फल तो अपनी स्त्री के लिए गिराओ। पति ने कहा—तुम अपने आँचर को नीचे रक्खो। तब मैं पका फल उसमें गिराऊँगा ॥२॥

स्त्री कहती है—पति सब पके फल खा गया और कच्चा फल मेरे लिए गिराता है। पति कहता है—ऐ स्त्री ! तुम अपने नाक की नथिया निकालो और दो। तब मैं घर का खर्च (भोजन) चलाऊँगा ॥३॥

स्त्री ने उत्तर दिया—ऐ पति ! मेरी नथिया और हसुली के बिक जाने पर सब बन्धु और बान्धव हम लोगों की निर्धनता पर हँसने लगेंगे ॥४॥

पति ने उत्तर दिया—लोग हँस कर क्या करेंगे ? ऐ स्त्री ! सम्पत्ति में शृंगार करना अच्छा लगता है। विपत्ति के दिन तो किसी भी प्रकार से काट लेना चाहिए ॥५॥

(१५)

प्रसंग—किसी स्त्री का बगीचे में फूल तोड़ने के लिए जाना। माली का आना तथा स्त्री का अपमान। स्त्री के द्वारा जमुना में डूबने का विचार।

गांव के पछिम भँवरा[6] पोखरा रे खोनवले;
पोखरा ऊपर बंगला छावेले रे दइया ॥१॥
ससुई ननदिया जनमवा के बइरी;
फूलवा के भेजे आधि रतिया रे दइया ॥२॥
फाड़[7] भरि लोहँनी, चँगेली भरि लोहँनी;
चलि अइले खेत रखवरवा रे दइया ॥३॥
फूल मोर छिटले, चँगेली तूरि बिहले;
सट सट मारि बेह फोरलसि[8] रे दइया ॥४॥

१. कच्चा। २. निकालो। ३. बान्धव। ४. बिताओ। ५. है। ६. पति। ७. आँचर। ८. फोड दिया।

एक मनवा करेला[1] नइहर चलि जइतीं;
ना त जमुना में बूड़ि मरितीं रे दइया ॥ ५ ॥

नइहर के गइले रे भउजी लुलुअइहें[2];
बूड़ला से सखी छूटि जइहें रे दइया ॥ ६ ॥

कोई स्त्री कहती है कि गाँव के पश्चिम में मेरे पति ने तालाब खुदवाया है और उसके ऊपर रहने के लिए एक सुन्दर बँगला बनवाया है ॥१॥

मेरी सास और ननद जन्म से ही बैरी हैं। वे आधी रात को फूल चुनने के लिए बाग में मुझे भेजती हैं ॥२॥

मैंने बाग में जाकर आँचर भर और चँगेली भर फूल चुने ही थे कि इतने में उसका रखवारा माली चला आया ॥३॥

उसने मेरे फूल बिखेर दिये, चँगेली को तोड़ दिया और छड़ी से मार-मार कर मेरी देह को फोड़ दिया—घायल कर दिया ॥४॥

इस पर दुःखी होकर स्त्री कहती है कि मन में आता है कि ससुराल से भगकर मैं मायके चली जाऊँ, या जमुना में डूब मरूँ ॥५॥

फिर वह सोचती है कि नइहर जाने पर मेरी भावज मुझ से क्रोधित होकर बोलेगी और डूब जाने पर सब सखियों से मेरा साथ छूट जायेगा ॥६॥

---

१. करता है। २. क्रोधित होकर बोलेगी।

रोपनी की गीत

(१)

प्रसंग—भाई का बहन के प्रति प्रगाढ़ प्रेम। वस्त्र और अलंकार लेकर मानिकचन्द का मैना की ससुराल जाना। इस कारण मैना की दायादिन का डाह।

मचिया बइठलि तुहु मातु हो बढ़इतिनि ।
तोहरा ही कोखिया माता जी धियवा नाहिं जामेले हो की ॥ १ ॥

चाहि दिन मानिकचन्द[1] तहरो भइले जनमवा ।
ओहि दिन मैना[2] के कइली गवनवा हो की ॥ २ ॥

केहू नाहिं अइले मानिकचन्द केहू नाहिं गइले ।
अतना[3] बचनिया मानिकचन्द सुनहीं ना पावेले हो की ॥ ३ ॥

चलि ना भइले मानिकचन्द सहर रे बजरिया ।
बेसहे[4] ना लगले बहिनि जोगे[5] चुनरिया हो की ॥ ४ ॥

बेसहे ना लगले बहिनि जोगे चोटी, बन्द, टिकुलिया ।
बेसहे ना लगले बहिनि जोगे चुड़िया हो की ॥ ५ ॥

बेसहे ना लगले बहिनि जोगे इँगुरा हो सेनुरवा ।
बेसहे ना लगले बहिनि जोगे घिवही मिठइया हो की ॥ ६ ॥

लेई के चलले मानिकचन्द बहिन के हो उदेसवा[6] ।
जाई के खाड़ा भइले चनन बिरिछिये[7] हो की ॥ ७ ॥

आँगाना बहरइत[8] चेरिया हो लउडिया ।
ताहारा मैना रे आइल बाड़े भइया हो की ॥ ८ ॥

आजु जो ना रहिते ते चेरिया मरितीं चटकनवे[9] ।
हमरा त चेरिया रे जनमे ना भइया हो की ॥ ९ ॥

जाहि दिन मैना हो भइले उनुकर[10] जमनवा ।
ओहि दिन मैना हो भइले तोहरो गवनवा हो की ॥१०॥

१. भाई का नाम। २. बहन का नाम। ३. इतना। ४. खरीदना। ५. योग्य लिए। ६. उद्देश्य, खोज। ७. वृक्ष। ८. बुहारती हुई। ९. चपत। १०. उसका।

जाई के मैना हो भइया से भेंटवा करेली[1]।
लेहु ना बहिना रे लाली रे चुनरिया हो की।।११।।
पेन्हि ना[2] लेहु बहिना चुड़िया, काँगानावा हो की।।१२।।
पेन्हि के मैना हो ओसरवा[3] खाड़ा रे भइली।
देखि के गोतिनिया[4] मुरुछा[5] खाले हो की।।१३।।
तोहरा के देबि नागिन दूध भात हो खोरवे[6]।
मैना के भइअवा तुहु हुँसि[7] आव हो की।।१४।।
हमरा बरोबरि[8] नागिन मैना होई गइली हो।
ताहार दूधवा हम नाहिं पियबि हो की।।१५।।
मैना के भइअवा रे हम नाहि डसबों।
आपना माई[9] के बाड़े[10] एक रे लड़िकवा रे की।।१६।।

(२)

प्रसंग—पानी भरती हुई स्त्री का किसी मुसाफिर से प्रेम। अन्त में मुसाफिर की नीच जाति मालूम होने पर स्त्री का पश्चात्ताप।

मचिया बइठलि तुहु सासु हो बढ़इतिनि।
कहि तू त[11] आहो ए सासुजी, पनिया के जइती नु रे की।।१।।
कइसे तू आहो ए बहुआ, पनिया के जइबू।
ओहि रे नगरिया ससुर, भसुरवा बाड़े नु रे की।।२।।
सासु के कहलकी[12] बहुआ मनबो[13] ना कइली।
चलि भइली पानी भरे कुँइयाँ नु रे की।।३।।
घोड़वा चढ़ल राम मुसाफिर एक आवेले।
एक बून[14] आहो एसाँवरि पनिया पिआव नु रे की।।४।।
पनिया पिअवली साँवरि दाँतवा झलकवली।
तोरा संगे आहो मुसाफिर हम बलु[15] चलबि नु रे की।।५।।
ऊँच झरोखवा चढ़ि बिअही[16] निरखेली नु रे की।।६।।
मचिया बइठल ए सासु जी, सासु जी बढ़इतिनि।
मोर सामी आहो ए सासु जी, उढ़री[17] ले आवेले नु रे की।।७।।

१. कन्ती है। २. पहन लो। ३. बरामद। ४. दायादिन। ५. मूर्छा। ६. कटोरा। ७. काट आओ। ८. बराबर, मुकाबिले में। ९. माता। १०. है। ११. तो। १२ कहना, कथन। १३. नहीं माना। १४. बूंद। १५. बल्कि। १६. बिवाहिता। १७. रक्षिता, रखेलिन।

खोलहु आहो ए सँवरिया, चूनरी लहँगवा।
लुगरी[1] पहिरि सुअरि[2] चरावहु नु रे की।।८।।
जाहु हम जनितीं ए मुसाफिर जाति के हव तू दूसधवा[3]।
ससुर नगरिया तोहिके फँसिया दिअइतीं[4] नु रे की।।९।।
जूठ[5] मोर खइलू ए सँवरिया, पीठि लागि[6] सोवलू।
तब हू ना तुहु जतिया बिचरलू[7] नु रे की।।१०।।
अब तुहु भइलू ए सँवरिया, मोर पियारी दुसधिनिया[8]।
सूअरि चराइ कइसों दिनवा काटहु नु रे की।।११।।

(३)

प्रसंग—कोइरी की लड़की से किसी राजा की कामुक चेष्टा।

कवना कियरिया रे गजरा मुरइया।
कवना कियरिया[9] बैंगनवा हो राम।।१।।
बड़की कियरिया में गजरा[10] मुरइया[11]।
छोटकी कियरिया बैंगनवा हो राम।।२।।
बैंगन तूरि-तूरि खँचिया[12] भरवली।
बेंचे चचली मथुरा नगरिया हो राम।।३।।
खोरिअन-खोरिअन फिरे कोइरिनिया[13]।
केहु लेहु बैंगन मुरइया हो राम।।४।।
ऊँचे मन्दिल चढ़ि रनिया पुकारे।
ऊपर बैंगन लेइ आवहु हो राम।।५।।
कइसे में मन्दिल बैंगन लेइ आईं।
तोरा घरे राजावा छिनार[14] हो राम।।६।।
राजावा त गइलन कोइरिनि बन के अहेरिया[15]।
ऊपर बैंगन लेइ आवहु हो राम।।७।।
कइ रूपया के तोरे गजरा मुरइया।
कई रूपया के तोर सुरतिया हो राम।।८।।
टकवा रूपइया[16] के गजरा मुरइया।
लाख रूपइया मोर सुरतिया हो राम।।९।।

१. फटा, पुराना कपड़ा। २. शूकरी, सूअर। ३. एक नीच, अस्पृश्य जाति। ४. दिलाती। ५. जूठा। ६. पीठ से सटकर। ७. विचार किया। ८. दुसाध की स्त्री। ९. क्यारी। १०. गाजर। ११. मूली। १२. टोकरी। १३. कोइरी की स्त्री। १४. व्यभिचारी। १५. शिकार। १६. दो रुपया।

एक गोड़[1] बाहर एक गोड़ भीतर।
राजावा धरेला बहिना बहियां हो राम।।१०।।
घरी राति गइली पहर राति गइली।
कोइरिनि बिटिया[2] रोवे छछयलवा[3] हो राम।।११।।
किया तोरे कोइरिनि माई मन परली[4]।
किया रे सहोद्रा[5] जेठ भाई हो राम।।१२।।
नांहि मोर राजावा रे माई मन परली।
नांहि रे सहोद्रा जेठ भाई हो राम।।१३।।
हमरा त मन परल कोइरी छोकड़वा[6]।
जिन्हि संगे रचिलें[7] कियरिया हो राम।।१४।।

(४)

प्रसंग—किसी स्त्री का बालक पति से विवाह। तिस पर पति का परदेस जाना और सौत को लाना।

बाबा मोर रहित त नींक[8] बर खोजिते।
भइया खोजेले बर गदेलवा[9] हो राम।।१।।
से हो रे गदेलवा देखि धइलीं धीरजवा।
कुछु दिन में उ[10] गइल परदेसवा हो राम।।२।।
बाट के बटोहिया तुहु मोर भइया।
एहि बाटे[11] देखुअ[12] मोर गदेलवा हो राम।।३।।
देखुईं में देखुईं[13] बहिना हाजीपुर के हटिया।
हिरि फिरि[14] रतन बेसाहे हो राम।।४।।
कहवां गँववल प्रभु ठीक दुपहरिया।
कहवां गँववल निसुराति[15] हो राम।।५।।
जूआ में गँववलीं हम ठीक दुपहरिया।
तासवा[16] खेलत निसुराति हो राम।।६।।
तोहरी कहलका प्राभु में ना पतिअइबों[17]।
तुलसी के चउरवा[18] छुई आव हो राम।।७।।

१. पैर। २. लड़की। ३. जोरसे चिल्लाकर रोना। ४. याद आ गयी। ५. सहोदर। ६. लड़का। ७. बनाती हूँ। ८. अच्छा। ९. नादान, मूर्ख, बालक। १०. वह। ११. रास्ते में। १२. देखा है। १३. मैंने देखा है। १४. घूम फिर कर। १५. निःशब्द रात्रि। १६. ताश। १७. विश्वास करूँगी। १८. चबूतरा।

तुलसी चउरवा छुवत हम मरबों।
सिर के सेनुरवा दुरलभ होई हो राम ॥८॥
सिर के सेनुरवा प्राभु हम बलु तजबों।
सवती बिरहिया[1] ना सहाले[2] हो राम ॥९॥
काँटवा सालेला[3] प्रभु घरी रे पहरवा।
सवती सालेले भरि जिनगी[4] हो राम ॥१०॥

(५)

प्रसंग—किसी स्त्री के उज्ज्वल, पवित्र तथा आदर्श सतीत्व का वर्णन।

आम महुअवा के घनी रे बगिया;
ताहि बिचे राह[5] लागि गहले हो राम ॥१॥
ताहि तर ठाढ़ भइली ए रे सोहागिनि;
नयना से निरवा ढारे[6] हो राम ॥२॥
बाट के चलत बटोहिया पूछे काहे तुहु ठाढ़[7];
केकर जोहेलू[8] तू बटिया नयन नीर ढारे हो राम ॥३॥
तोहर निअर[9] मोर पातर बलमुआ;
उनुकर बाट खाड़ा जोहेले हो राम ॥४॥
लेहु ना सांवरि डाल भरि सोनवा;
छोड़ु परदेसिया के आस[10] हो राम ॥५॥
आगि लगइबो में डाल भरि सोनवा;
करबों परदेसिया के आस हो राम ॥६॥
कबहीं त लवटीहें मोर बनिजरवा;
पनही[11] से तोहि के पिटइबो हो राम ॥७॥

आम और महुआ का घना बागीचा है और उसके बीच में रास्ता बन गया है ॥१॥

उसी के नीचे एक सौभाग्यवती स्त्री खड़ी है और अपनी आँखों से आँसू गिरा रही है अर्थात् रो रही है ॥२॥

रास्ते में चलने वाले यात्री उससे पूछते हैं कि ऐ स्त्री ! तुम क्यों खड़ी हो और किसके आने की प्रतीक्षा करती हुई तुम अपनी आँखों से आँसू गिरा रही हो ? ॥३॥

१. व्यंग्य वचन। २. सहा जाता है। ३. कष्ट देता है। ४. जिन्दगी। ५. रास्ता। ६. गिराती है। ७. खड़ा। ८. खोजती हो। ९. समान। १०. आशा। ११. जूता।

स्त्री ने उत्तर दिया—तुम्हारे ही समान मेरा पति भी पतला है, उसी का रास्ता मैं देख रही हूँ ॥४॥

यात्री ने कहा—ऐ सुन्दरी ! डाल भर कर तुम सोना मुझसे लो और अपने परदेसी पति की आशा छोड़ दो ॥५॥

स्त्री ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारे डाल भर सोना में आग लगा दूँगी और परदेसी पति की बाट जोहूँगी ॥६॥

कभी तो मेरा पति लौटेगा—उस समय मैं तुमको जूतों से पिटवाऊँगी ॥७॥

(६)

प्रसंग—किसी पति के स्त्री प्रेम तथा मातृ भक्ति के सामंजस्य का वर्णन।

हरि मोर चलले उतर बनिजरिया;
बुअरा कदम[1] लाइ गइले हो राम ॥१॥
जब-जब धनिया रे मनवा तोर उदसिहें[2],
तब तू कदम तर ठाढ़ होइह हो राम ॥२॥
बारहो बरिस पर हरि मोर अइले;
ओहि रे कदम तर गोनिया[3] ढारेले हो राम ॥३॥
माई लेइ दउरली लोटवा के पनिया;
बहिना सिंघासन पिढ़वा[4] हो राम ॥४॥
धनि लेइ दउरेली पँचरंग बनिया[5];
बेनिया हो लेले धनि तेवइली[6] हो राम ॥५॥
माई के काढ़ेले पँचरंग छिटिया[7];
आरे बहिना के लहर पटोरवा[8] हो राम ॥६॥
धनिया के काढ़ेले फटही लुगरिया;
लुगरी के लेके धनि तँवइली हो राम ॥७॥
उहवाँ के रूसल[9] धनिया बन-बन चलली;
आइ के पहुँचली आपन नइहर हो राम ॥८॥
कहना बबुआ हो आपन सलवा;
तहरो कुसलवा हम सुनबि हो राम ॥९॥
हमरो त बाड़े आमा बड़ी रे कुसलिया;
धनि[10] के कुसलिया हम चाहिलें हो राम ॥१०॥

१. कदम्ब। २. उदासीन होगा। ३. माल उतारना। ४. पीढ़ा। ५. पंखा। ६. दुःखी हो गयी। ७. छींट। ८. रेशमी वस्त्र। ९. रुष्ट हुई। १०. स्त्री।

तोहरी ही धनिया बबुआ बड़ी रिसिअहिया[1];
रूसि के गइली आपन नइहरवा हो राम ॥११॥
देहु ना आमा हो ढेबुआ[2] रे रूपइया;
चुरिया के बहाने[3] धनि के देखबि हो राम ॥१२॥
आरे टिकुली के बहाने धनि के देखबि हो राम ॥१३॥
खोरिअन-खोरिअन फिरेले चुरिहरवा[4];
चुरिया रे पहिरवे गहकिनिया[5] हो राम ॥१४॥
खोरिअन-खोरिअन फिरेले मनिहरवा;
टिकुली रे बेसहवे गहकिनिया हो राम ॥१५॥
आपन महलिया भइल बोलली सँवरिया,
चुरिया रे लेआउ चुरिहरवा हो राम ॥१६॥
जाताना चुरिहरवा भइया चुरिया ना पहिरवल,
ओताना निहारे[6] मोर सुरतिया हो राम ॥१७॥
का चुरिहरवा तुहु बहियाँ मोर ममोरल,
तोहरो से सुन्नर बाड़े पियवा मोर हो राम ॥१८॥
का तुहु सुन्नरि करति बाड़ू हो बखनवा[7],
हम हीं हई[8] तोर सुन्नर पियवा हो राम ॥१९॥
आताना बचनिया सुन्नरि सुनही ना पवली;
भागि गइली आपन महलिया हो राम ॥२०॥

(७)

प्रसंग—सच्चे गुरु की महत्ता का प्रतिपादन।

सतगुरु देसवा हो लागेले बजरिया हो सोहागिनि।
जहवाँ रतन[9] हीरवा[10] बिकाइ हो सोहागिनि ॥१॥
ऊँटवा के मुहवाँ में जिरवा ना समाई हो सोहागिनि।
चिऊँटी मुखे सउसे[11] पहाड़ हो सोहागिनि ॥२॥
हथिया के पिठिये बिलरिया असवरवा[12] हो सोहागिनि।
सिंहवा के पीठि फेकरे[13] सिआर हो सोहागिनि ॥३॥
बाट में चलेले बटोहिया भइया हितवा हो सोहागिनि।
गुरु के सनेस खोजे जइह हो सोहागिनि ॥४॥

१. क्रोधित होनेवाली। २. पैसा। ३. ब्याज से। ४. चूड़ी बेचनेवाला, मनिहार। ५. ग्राहकिन, खरीदनेवाली। ६. देखता है। ७. प्रशंसा। ८. हूँ। ९. रत्न। १०. हीरा। ११. समग्र। १२. चढ़ा हुआ। १३. रोता है, चिल्लाता है।

तोहरा गुरुजी के चिन्हलों ना जनलो हो सोहागिनि।
कइसे कहबि समुझाई हो सोहागिनि ॥५॥
हमरो सनेसवा गुरु जी से कहिह हो सोहागिनि।
कवना विधि उतरबि पार हो सोहागिनि ॥६॥
हमरा गुरु जी के घरवा चनन गँछिया हो सोहागिनि।
ऊहें बाड़ गुरु जी हमार हो सोहागिनि ॥७॥
सत्त[1] के नइया सुरत[2] करुवरिया[3] हो सोहागिनि।
सत गुरु लइहें नइया पार हो सोहागिनि ॥८॥
इ हो गितिया[4] 'दरिया साहब' गवले हो सोहागिनि।
सत गुरु लेहु[5] ना बिचारि हो सोहागिनि ॥९॥

(८)

प्रसंग—भावज और देवर का अनुचित संवाद। पति की सहिष्णुता।

हरि मोर गइले उतरि बनिजरिया मोर नायका[6] रे।
हमके दे गइले लछन देवर, चतुर बगे जाइबि हो ॥१॥
तोहरी चुनरिया भउजी हमरो चदरिया मोर नायका रे।
दुनो जाना सोई ना पलंगिया, चतुर बने जाइबि हो ॥२॥
हंसत खेलत देवरा बड़ नीक लागे मोर नायका रे।
दिन दिन देहिया मोर गहुंआइलि,[7] चतुर बने जाइबि हो ॥३॥
बारहो बरिस पर हरि मोर अइले, मोर नायका रे।
महल के धगड़िनि[8] कइसे आइल, चतुर बने जाइबि हो ॥४॥
तोहरी बहुअवा 'चलनी'[9] छववली[10] मोर नायका रे।
चलनी के दाम माँगे आइलि, चतुर बने जाइबि हो ॥५॥
इत गंववलू माता गलवे[11] देवलवे मोर नायका रे।
महल नउनिया[12] कइसे आइल, चतुर बने जाइबि हो ॥६॥
तोहरी बहुअवा बबुआ नोंहवा[13] कटवली मोर नायका रे।
नोह के कटवनी माँगे आइल, चतुर बने जाइबि हो ॥७॥
इत गँववलू माता गलवे देवलवे मोर नायका रे।
दुअरा धोबिनिया कइवे आइलि, चतुर बने जाइबि हो ॥८॥

१. सत्य। २. स्मरण। ३. कर्णधार, मल्लाह। ४. गीत। ५. ले लो। ६. पति। ७. भारी हो गयी। ८. धाय। ९. आटा चालने का यन्त्र। १०. मरम्मत कराया। ११. इधर-उधर करके। १२. नाइन। १३. नाखून।

तोहरी बहुअवा बबुआ लुगवा[1] धोअवली मोर नायका रे।
लूगा के धोअबनी[2] मांगे आइल, चतुर बने जाइबि हो।।९।।
इत गंवबलू माता गलवे देवलवे मोर नायका रे।
खटिया होरिलवा कइसे रोवेला, चतुर बने जाइबि हो।।१०।।
ना हम मारबि धनि, ना हम गरिआइबि, मोर नायका रे।
देवरा लेके निकलि ना जाहु, चतुर बने जाइबि हो।।११।।

(९)

प्रसंग—लचिया नामक किसी सुन्दरी को फुसलाकर कुटनी का किसी कुंअर के पास व्यभिचार के लिए ले जाना तथा लचिया का पश्चात्ताप।

ए राम छव रे महिनवा के लाचो अंलवतिया[3] हो राम।
ए राम झरोखवे चढ़ि खाली बमेरिया[4] हो राम।।१।।
ए राम घोड़वा चढ़ल अइले राजा के कुअरवा हो राम।
ए राम परि गइले लचिया कुवर के नजरिया हो राम।।२।।
ए राम लाचो के सुरतिया देखि कुंअर मुरुछइले[5] हो राम।
ए राम घोड़वा के बन्हले कदम गंछिया हो राम।।३।।
ए राम कुंअर जाइ सोवले रंग महलिया हो राम।
ए राम नाहिं करेले आपन जलपनिया[6] हो राम।।४।।
ए राम गऊँआ के रहलि एक बुढ़िया कुटनिया हो राम।
ए राम कुंवर जी कुटनिया बोलवले हो राम।।५।।
ए राम लेहु ना कुटनी रे घिवही[7] लड्डइया हो राम।
ए राम लचिया के तुहु फुसलवाहु[8] हो राम।।६।।
ए राम लेइ ना लिहली कुटनी घिवही लड्डइया हो राम।
ए राम चलि भइलि लचिया के उवेसवा हो राम।।७।।
ए राम एक बने गइली दोसर बने गइलीं हो राम।
ए राम तीसर बने मिले चरवहवा हो राम।।८।।
ए राम लेहु ना लारिका रे संकर लड्डइया हो राम।
ए राम कवन हवे[9] लचिया के मकनिया हो राम।।९।।

१. वस्त्र, साड़ी। २. कपड़े की धुलाई। ३. नव प्रसूता स्त्री। ४. बयार हवा। ५. मूर्छित हो गया। ६. जल-पान। ७. घी का बना हुआ। ८. लालच देकर लुभा लेना। ९. है।

ए राम जाहाँ बाड़े चनन के बिरिछिया[1] हो राम।
ए राम उहे हवे लचिया के मकनिया हो राम॥१०॥

ए राम जाइ चहुँपलि[2] कूटनी लाची के मकनिया हो राम।
ए राम हम हई लाची के मऊसिया[3] हो राम॥११॥

ए राम आँगाना बहरहत चेरिया लउड़िया हो राम।
ए राम आइल बाड़ी लाची के मऊसिया हो राम॥१२॥

ए राम आजु जोना रहितू चेरिया लउड़िया हो राम।
ए राम दूनो गाले मरिती चाटाकानावा हो राम॥१३॥

ए राम हमरो ना जनमेले मऊसिया हो राम।
ए राम गाँव घर के हवीं हम मऊसिया हो राम॥१४॥

ए राम लाचो धाइ के कइली भेंट अँकवरिया[4] हो राम।
ए राम लेहु ना लचिया रे घिवही लडुइया हो राम॥१५॥

ए राम चल लाचो गाँगा आसानानावा[5] हो राम॥१६॥

ए राम मचिया बइठलि तुहु सासु जी हो राम।
ए राम हम हम जइबो गाँगा आसानानावा हो राम॥१७॥

ए राम जनि तुहु जाहु गाँगा आसानानावा हो राम।
ए राम गोद केरे बालाका भूखे रोइहें[6] हो राम॥१८॥

ए राम साभावा बइठल तुहु ससुर बढ़इता हो राम।
ए राम ससुर हम जइबो गाँगा आसानानावा हो राम॥१९॥

ए राम आँगाना कुँइया खोनइबो हो राम।
ए राम रेसम के डोरिया हम लगइबो हो राम॥२०॥

ए राम आँगाना में बहुआ करु आसानानावा हो राम।
ए राम दुअरे पर सुरुज उगाई[7] देबों हो राम॥२१॥

ए राम कुइयाँ पनिया पतिलवा[8] बाड़े हो राम।
ए राम गंगा जी के पनिया बाड़ा नीमन[9] हो राम॥२२॥

ए राम केहू के कहलकी लाचो मनबे ना कइली हो राम।
ए राम कूटनी के पीछे लाचो चलली हो राम॥२३॥

१. वृक्ष, पेड़। २. पहुँच गयी। ३. मौसी, माँ की बहन। ४. आलिंगन। ५. स्नान। ६. रोयेगा। ७. उगा दूँगा। ८. पतला। ९. अच्छा।

ए राम उहवाँ कुँवर घोड़वा दउरवलनि[1] हो राम।
ए राम चलि गइले गंगा अरारावा[2] हो रामा॥२४॥

ए राम कूटनी साथे लचिया मारे जल में डुबुकिया हो राम।
ए राम लचिया के चूनरी कुअ उठवलिन[3] हो राम॥२५॥

ए राम जल बीचे लाचो करेली मिनितिया[4] हो राम।
ए राम देहु ना कुंवरवा मोर चुनरिया हो राम॥२६॥

ए राम जल के मछरिया[5] देहिय काटत बाड़े हो राम॥२७॥

ए राम जब लक[6] लायो हमरा घड़वा नाहि चढ़बू हो राम।
ए राम तब ले चुनरिया नाहि देबो हो राम॥२८॥

ए राम चढ़ि गइली लायो कुंअर जी घोड़वा हो राम।
ए राम कुंअर चलले आपन महलवा हो राम॥२९॥

ए राम आंगना बहरइत हुउवे तु लउड़िया हो राम।
ए राम हमरो पलंगिया डासि आवहु हप राम॥३०॥

ए राम ताहि पर कुंअर लचिया संगे सूतेले हो राम।
ए राम लचिया के अँखिया ढरे लोरवा[7] हो राम॥३१॥

ए राम मन में बिचारे लचिया ढारत लोरवा हो राम।
ए राम बड़[8] केरे कहलिया[9] हम नाहि कइलीं हो राम॥३२॥

(१०)

प्रसंग—किसी स्त्री का ससुराल के कष्टों का पति से निवेदन करना।

जहिया[10] से अइलो पिया तहरी महलिया में;
राति दिन कइलीं टहलिया[11] रे पियवा॥१॥

घर के करत काम सूखल देही के चाम[12];
सुखवा सापानावा होई गइले रे पियवा॥२॥

बड़की गोतिनिया जे हईं मलकिनिया[13] से;
भसुर जी छयला चिकिनिया[14] रे पियवा॥३॥

१. दौड़ा दिया। २. किनारा। ३. उठा लिया। ४. बिनती, प्रार्थना। ५ मछली। ६. तक। ७. आँसू। ८. बड़ा। ९. कहना, आज्ञा। १०. जिस दिन से। ११. काम। १२. चमड़ा। १३. मालकिन। १४. शौकीन।

हरवा चोतत तोर गोड़वा पिरइले;[1]
रुपया के मुँह नाहीं देखलीं रे पियवा।।४।।

तोहरे इरीखवा[2] से जाइबि नइहरवा में;
भऊजी के लरिका खलाइबि रे पियवा।।५।।

चिपरी[3] के पाथि[4] पाथि दिन हम काटबि;
अब नाहिं आइबि तोर दुअरिया रे पियवा।।६।।

स्त्री कहती है कि ऐ पति ! जब से मैं तुम्हरे घर में आयी हूँ, तब से मैं रात-दिन काम कर रही हूँ ।।१।।

घर का काम करते-करते मेरे श ीर का चमड़ा सूख गया है और सुख स्वप्न के समान दुर्लभ हो गया है।।२।।

मेरी बड़ी दायादिन घर की मालकिन है और मेरा जेठ बड़ा शौकीन और दुराचारी है ।।३।।

ऐ पति ! खेत में हल जोतते-जोतते तुम्हारे पैर दुखने लगे; परन्तु मैंने अभी रुपये का मुँह नहीं देखा। (भाव यह है कि पति खेत में हल चलाकर बड़े परिश्रम से अन्न पैदा करता है; परन्तु स्त्री को उसकी कमाई का एक पैसा भी नहीं मिलता) ।।४।।

मैं तुमसे ईर्ष्या करके अपने मायके चली जाऊँगी और अपनी भावज का लड़का खेला करके अपने दिन काटूंगी।।५।।

मैं उपले पाथ करके अपने समय को बिताऊँगी ; परन्तु अब तुम्हारे दरवाजे पर नहीं आऊँगी।।६।।

---

१. दर्द करने लगा। २. ईर्ष्या। ३. उपला। ४. बनाकर।

बिरहा

(१)

प्रसंग—किसी गोपी का यशोदा को उलाहना देना।

बरज[१] जसोदा माई आपना ललन[२] के;
रोके ले जमुनवा के घाट।
घरवा रहेला कान्हा लरिका गदेलवा,[३]
बाहारा हो गइले बटवार[४]॥

कृष्ण ने किसी गोपी से रास्ते में छेड़खानी की है। इस पर वह क्रुद्ध होकर जशोदा के पास जाकर उलाहना देती हुई कह रही है कि ऐ यशोदा माता! तुम अपने बच्चे को मना कर दो। वह जमुना घाट पर हम लोगों को रोकता है। घर में तो कृष्ण नादान बच्चे की तरह रहता है; परन्तु बाहर दुष्टता करता है।

(२)

प्रसंग—जशोदा का उत्तर गोपी के प्रति।

झूठ हईं[५] सखिया झूठ ही सहलेरी[६],
झूठ तोर कुल परिवार।
अब ही त मोर लारिका नादानवा,
का जाने घटिया[७] के राह॥

जसोदाजी उलाहना देने वाली गोपी को उत्तर देती हुई कहती हैं कि तुम्हारी सखियाँ सब झूठ बोल रही हैं। तुम्हारा कुल तथा परिवार झूठ बोलनेवाला है; अतः मैं तुम्हारा भी विश्वास नहीं कर सकती। अभी तो मेरा बच्चा बिल्कुल ही नादान है। भला वह जमुना के घाट का रास्ता क्या जानता है?

१. मना करो। २. बच्चा। ३. नादान। ४. दुष्ट। ५. झूठी हैं। ६. संगिनी।
७. घाट।

(३)

प्रसंग—किसी ोपी का जमुना के पार जाना।

कब से हम ठाढ़ा[1] बानी जमुना का तीरवा;
नइया ना ले आवे नन्द लाल।
संग ही के सखिया पार होई गइली[2];
अब हम भइलीं बेहाल[3]॥

कोई गोपी कह रही है मैं कब से जमुना के किनरे खड़ी हूँ; परन्तु नन्द लाल मुझे पार उतारने के लिए नाव ही नहीं ले आता। मेरी साथ की सब सखियाँ पार हो गईं। अब मैं बहुत ही व्याकुल हूँ।

(४)

प्रसंग—गोपी का कृष्ण से दही खाने के लिए अनुरोध।

जोइ[4] तुहु खाइब[5] दहिया कन्हैया,
तूर[6] ना पारासवा[7] के पात।
खइला से दहिया जे बचिहें कन्हैया,
उहे[8] वही विरिजा[9] बिकाई॥

ऐं कृष्ण! यदि तुम दही खाना चाहते हो, तो पलाश का पत्ता तोड़ो। तुम्हारे खाने से जो दही बचेगा, वही ब्रज मण्डल में बेचा जायगा।

(५)

प्रसंग—कृष्ण के पत्ता तोड़ते समय गोपी का छल से पार हो जाना।

जब ले कन्हैया तुरेले[10] चले पातावा;
तब ले सखि पारवा हो जाई।
पारवा उतरि सखि अंगूठा दिखवलीं,
खाइल मुवनू[11] दहि के लुवाठ[12]॥

जब कृष्णजी ोपी के कहने से पत्ता तोड़नेके लिए गये, तभी वह गोपी जमुना के पार चली गई। पार उतर करके उसने श्री कृष्ण को अँ ूठा दिखलाते हुए कहा कि ऐ दुष्ट! अब दही खा लो! इस विरहे में ोपी की चतुरता तथा छल बड़ी सुन्दर रीति से चित्रित किया गया है।

---

१. खड़ी है। २. हो गई। ३. विह्वल। ४. तुम। ५. खाओगे। ६. तोड़ो। ७. पलाश। ८. वही। ९. ब्रजमण्डल। १०. तोड़ता है। ११. मृत (दुष्ट) १२. जलकर बुझी हुई लकड़ी (गंदी वस्तु)।

(६)

प्रसंग—कृष्ण का यशोदा से निवेदन।

अब नाहिं गइया चराइबि जसोदा माई,
आपन खोज तू चारावाह।[१]
किया हम होइबो रे जोगिया[२] फकीरवा;
किया जमुना के घटवार॥[३]

कृष्णजी कहते हैं कि ऐ यशोदा माता अब मैं तुम्हारी गायों को नहीं चराऊँगा। तुम अपने लिए कोई गाय चरानेवाला खोज लो। अब या तो मैं योगी हो जाऊँगा, या यमुना के घाट का घटवार।

(७)

प्रसंग—कृष्ण की राधा से क्रीड़ा।

सिरि बिन्द्राबन[४] के पकली[५] मकोइया,
राधा तूर[६] डढ़िया मरोरि[७]।
एको मकोइया राधा तूर ही ना पवली,
तले[८] कान्हा दिहले झकझोरि[९]॥

श्री कृष्ण ने राधा से वृन्दावन में पकी हुई मकोई (एक फल) को तोड़ने के लिए कहा। राधा डाल (शाखा) को झुकाकर अभी एक भी फल नहीं तोड़ने पायी थी कि तब तक कृष्ण ने उस डाल को जोर से हिला दिया।

(८)

प्रसंग—कृष्ण की क्रीड़ा का वर्णन।

जइसन[१०] बाटे गोकुला ओइसन[११] मथुरा नगरिया,
ओइसन बा बिरिजवा[१२] के नारि।
ओइसन बाड़े सिरिकिसुना कन्हैया,
रोके ले गोवालिनि[१३] के राह॥

जैसे गोकुल है, वैसे ही मथुरा नगरी है तथा वैसी ही ब्रज की स्त्रियाँ हैं। कृष्णजी भी

१. गाय चरानेवाला। २. योगी। ३. मल्लाह। ४. वृन्दावन। ५. पकी हुई। ६. तोड़ो। ७. झुकाकर। ८. तब तक। ९. हिला दिया। १०. जैसे। ११. वैसा। १२. ब्रजमण्डल। १३. ग्वालिन।

वैसे ही हैं। वे ग्वालिन के मार्ग रोकते हैं। भावार्थ यह है कि जैसी गोपियाँ हैं, वैसे कृष्ण भी लम्पट हैं। दोनों का जोड़ा खूब पटा है।

(९)

प्रसंग—भगवती से प्रार्थना।

मइया जगदम्बा छोड़ि के कहवाँ भइलू लम्बा,
हमरा के छोड़ि गइलू केकरा भरोस[1]।
तहरी[2] सरनिया[3] धइके गइले बिरहवा,
हमरा के द तू सनतोस[4]।।

हे भगवती! हमें छोड़कर आप दूर क्यों हो गईं? हमको आपने किसकी आशा पर छोड़ दिया है? मैं आपकी शरण में आकर बिरहा गा रहा हूँ। आप मुझे सन्तोष प्रदान कीजिए; अर्थात् भक्त की इच्छा की पूर्ति कीजिए।

(१०)

प्रसंग—पति की उक्ति पत्नी के प्रति।

जहिया[5] से छोड़लू मोर सँगवा ए मोहिनी,
छोड़ली[6] बिरहवा के राग।
सजि[7] ए बिरहवा जब तू मनमोहिनी,
गइतीं दंगल[8] ललकार।।

पति अपनी स्त्री से कह रहा है—ऐ मेरे मन को मोह लेनेवाली स्त्री! जब से तुम्हारा वियोग हुआ, तब से मैंने बिरहा गाना छोड़ दिया है। यदि तुम बिरहा गाने के लिए मुझे उत्साह देतीं, तो मैं प्रतियोगिता के अवसर पर ललकार कर गाता।

(११)

प्रसंग—नायिका का अंग-वर्णन।

हूरवा[9] नियर तोरा जुरवा[10] ए गोरिया,[11]
पूअवा[12] नियर[13] तोर गाल।
पान नियर तू त पातर[14] बाड़ू गोरिया,
फूलवा नियर सुकुवार[15]।।

१. आशा। २. तुम्हारी। ३. शरण। ४. सन्तोष। ५. जब से। ६. छोड़ दिया। ७. उत्साह देना। ८. प्रतियोगिता। ९. लाठी का निचला भाग। १०. बालों को गोलाकार बाँधना, जूड़ा। ११. सुन्दरी। १२. मालपुआ। १३. समान। १४. पतली हो। १५. कोमल।

नायक कहता है कि प्रिये! तेरा जूड़ा (बालों का एकत्र गोलाकार बाँधना) लाठी के निचले भाग के समान बड़ा है। तुम्हारे गाल मालपुए के समान मुलायम तथा लाल है, तुम्हारा शरीर पान के समान पतला है तथा तुम फूल के समान कोमल हो।

इस बिरहे में देहाती के अंगों की उपमा बड़ी ही सुन्दर है।

(१२)

प्रसंग—कुलटा स्त्री का वर्णन।

कवना[१] गलिया में गलबल[२] भइले,
कवना भइले इनरा[३] पर सोर।[४]
कवना पतरकी के टिकुली[५] भुलइले,
कइले बिया मरदा बिटोर[६]॥

किस गली में हल्ला मचा हुआ है? किस कुएँ पर शोर हो रहा है? किस पतली सुन्दर स्त्री की बिन्दी भूल गई है, जिसने इतने पुरुषों को उसे खोजने के लिए एकत्रित कर लिया है?

(१३)

प्रसंग—देहाती ससुर का वर्णन।

इहे बूढ़ रगरी,[७] घींचि[८] के बाँधे पगरी,
बिना घीव खिचरी ना खाई।
एक दिन बूढ़वा से घिउआ[९] ओरइले;
देला पतोहिया के गारि[१०]॥

कोई आदमी किसी क्रोधी बूढ़े का वर्णन करते हुए कहता है कि यह बुड्ढा बड़ा ही हठी है। यह अपनी पगड़ी को खींचकर बाँधता है तथा बिना घी की खिचड़ी नहीं खाता। एक दिन घर में घी समाप्त हो गया, तो वह अपनी पतोहू को घी न देने के कारण गाली देने लगा।

जो लोग देहाती दुनिया की कुछ जानकारी रखते हैं, उन्हें भलीभाँति ज्ञात होगा कि अनपढ़, हठी ससुर अपनी पतोहू को मारने में भी नहीं हिचकते।

(१४)

प्रसंग—नायिका की पितृगृह से बिदाई।

१. किस। २. हल्ला। ३. कुआँ। ४. शोर। ५. बिन्दी। ६. एकत्रित। ७. हठी। ८. खींचकर। ९. घी। १०. गाली।

कानी[1] अंगुरिया इत बिरिझल[2] ए सखिया,
बायाँ अंगवा रे सिहिराइ[3] ।
ससुरा से सइयाँ डालेले मोर चरचा[4]
ठाढ़ देहिया रे घहराइ[5] ॥

कोई नायिका अपनी सखियों से कह रही है कि मेरी कनिष्ठिका अँगुली में कष्ट हो रहा है तथा मेरा बाँया अंग सिहिर रहा है। मेरा पति अपने ससुर (मेरे पिता) से मुझे अपने संग ले चलने की चर्चा कर रहा है। अतः मेरे शरीर में कम्पन मालूम हो रहा है।

कन्या की बिदाई का कितना मार्मिक चित्रण है।

(१५)

प्रसंग—बिरहा के गायक का वर्णन।

सगरी[6] दुनियवाँ[7] में गावे चुरमनिया,
रसड़ा में तेजुवा गड़ेरि[8] ।
रेपुरा के गऊँवा[9] में गावे धन देउवा,
मुदइन[10] के विहरे[11] करेज[12] ॥

सारी दुनिया में चरमनिया, रसड़ा में तेजुवा नामक गड़ेरिया तथा रेपुरा गाँव में धनदेव बिरहा गाते हैं, जिसे सुनकर शत्रुओं का हृदय फट जाता है।

(१६)

प्रसंग—स्त्री की शोभा का वर्णन। सखी की उक्ति सखी के प्रति।

छिटिया[13] पहिरि गोरी बिटिया[14] हो गइली,
पियरी[15] पहिरि लरकोरि[16] ।
मथवा बान्हाई[17] गोरी हो गइली बुनेलवा[18],
कि ताकेली[19] ससुरवा की ओरि[20] ॥

छींट का सुन्दर कपड़ा पहन कर मेरी सखी लड़की बन गई तथा पीला कपड़ा पहनकर

१. कनिष्ठिका। २. दुखना। ३. सिहिरना। ४. चर्चा। ५. कम्पन होना। ६. सारी। ७. दुनिया। ८. गड़ेरिया। ९. गाँव। १०. शत्रु मुद्दई। ११. विदीर्ण होना। १२. कलेजा, हृदय। १३ छींट का कपड़ा। १४. लड़की। १५. पीला वस्त्र। १६. नयी प्रसूता वधू। १७. सुसज्जित करना। १८. सुन्दरी, रूपवती। १९. देखती है। २०. तरफ।

नयी प्रसूता स्त्री के समान बन गई। अपने सिर के बालों को सुसज्जित करके नायिका रूपवती हो गई और अपने प्रियतम से मिलने के लिए सदा ससुराल की ओर देखा करती है।

(१७)

प्रसंग—पति के पतंग उड़ाने का वर्णन।

ननदी के भइया उड़ावे पतरेंगवा,[१]
गोरी धइलेबा[२] बगड़ोरि[३]।
टूटि गइले डोरिया, उड़ेल पतरेंगवा,
गोरी बइठ जोबना[४] मरोरि[५]॥

कोई स्त्री कह रही है कि मेरी ननद का भाई अर्थात् मेरा पति पतंग उड़ा रहा था और मैं पतंग की डोरी को पकड़े हुए थी। इतने में पतंग की डोरी टूट गई और पतंग उड़ गयी। मैं लज्जा के मारे अपने स्तनों को मरोड़कर बैठ गई।

(१८)

प्रसंग—पति का अनाचार वर्णन।

कजरी[६] दिनवा बोलवली दागाबाजावा,[७]
अइले पिड़ियवा के दीन।
भूखलि पिड़ियवा[८] बिगरले[९] दागाबाजावा,
उबलो टिसूनवा[१०] में आगि॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने अपने नायक को कजली (सावन) के दिनों में बुलाया था। परन्तु वह दगाबाज पिड़िया के दिनों (कातिक) में आया। मैं पिड़िया के व्रत के कारण उपवास थी; परन्तु उसने अपने कदाचरण से मेरे व्रत को बिगाड़ दिया। मैं उसकी काम-तृष्णा में आग लगा दूंगी।

(१९)

प्रसंग—राधा कृष्ण की लीला।

सिरि बिरिनाबनवा के कुंजगलियवा[११] में,
राधे ओरमवली[१३] हा डारी।

१. पतंग। २. पकड़े हुए हैं। ३. रस्सी। ४. स्तन। ५. मरोड़कर, दबाकर। ६. कजली। ७. दगाबाज। ८. पिड़िया का व्रत। ९. नष्ट कर दिया। १०. डालूंगी। ११. तृष्णा। १२. वृन्दावन। १३. झुकाना।

एकहू बइरि[1] राधे तुरहू[2] न पवली,
देले कान्हा[3] बँसिया बजाई ।।

श्री वृन्दावन की कुंज गली में राधा ने एक वृक्ष की डाल को झुकाया; लेकिन राधा उस वृक्ष की डाल से एक भी बेर का फल नहीं तोड़ने पायी थी कि इतने में ही कृष्णजी ने अपनी मोहनी वंशी बजा दी।

(२०)

प्रसंग—गोपी कृष्ण की लीला।

रिमझिम बँसिया बजवले कन्हैया,
ओहि ए गोकुलवा के खोरि[4]।
एक सौ सहसर[5] गोपी ताकेली[6] झरोखवा,[7]
कान्हा के उमिरि[8] बाटे थोरि[9]।।

कृष्ण ने गोकुल की गलियों में अपनी मधुर वंशी बजायी। उसे सुनकर हजारों गोपियाँ अपने झरोखों से श्रीकृष्ण की ओर देखने लगीं; परन्तु कृष्ण की थोड़ी आयु देखकर उन्हें बड़ी निराशा हुई, क्योंकि उनकी तृप्ति उनसे नहीं हो सकती थी।

(२१)

प्रसंग—गोपी कृष्ण का प्रेमवर्णन।

तुलसी धागावा प्रेम के जियरा,[10]
मति तूरहि[11] हो चाटाकाई[12]।
जब टूटि जइहें तुलसीजी के धागावा,
बीचे गाँठी[13] रे परिजाई।।

कोई गोपी कहती है कि मेरे हृदय में पड़ी हुई प्रेम की माला को ऐ कृष्ण ! तुम चटका करके मत तोड़ो। यदि यह माला टूट जायगी, तो फिर इसके बीच गाँठ पड़ जायगी। अर्थात् प्रेम में अन्तर पड़ जायगा।

(२२)

प्रसंग—देवर की कुदृष्टि।

---

१. बेर। २. तोड़ना। ३. कृष्ण। ४. गली। ५. सहस्र। ६. देखती हैं। ७. खिड़की। ८. आयु। ९. थोड़ा, कम। १०. हृदय। ११. तोड़ना। १२. चटक शब्द करके। १३. गाँठ, ग्रन्थि।

हरदी रंगवा बेदरदी[1] बेदरदी;
पियरी रंगवा चाटाकार[2]।
कुसुम[3] रंगवा में चूनरी[4] रंगवलों,
देवरा[5] छाकि रे झाकि जाय।।

कोई नायिका कहती है कि हलदी का रंग बिल्कुल फीका होता है और पीला रंग बहुत चटकीला होता है। मैंने अपनी चूँदरी (साड़ी) को कुसुम्भी रंग में रँगवाया था। उस साड़ी को पहने हुए मुझको मेरा दुष्ट देवर झाँक-झाँक कर देखता है।

(२३)

प्रसंग—कृष्ण का बंशी बजाना। गोपी की उक्ति अपनी किसी सखी के प्रति।

बंसिया बजाई बस[6] कइले कन्हैया जी,
एही[7] जमुनावा के तीर।
मथुरा नगरिया में भइली कुसलइया,[8]
कान्हा भइले[9] जतिया अहीर।।

कोई गोपी कह रही है कि कृष्णजी ने इस यमुना के तीर पर अपनी वंशी बजाकर सब को वश में कर लिया है। मथुरा नगर में यह समाचार फैल गया है कि ग्वालों के साथ रहने के कारण कृष्ण की जाति भी अहीर हो गई है अर्थात् वे अहीर हो गये हैं।

(२४)

प्रसंग—जमुना पार करा देने के लिए राधा की केवट से प्रार्थना।

जमुना का तीरे हाँकि[10] लावतारी[11] राधिका;
जे केवट नइया लेइ आव।
तोहरा के देबि केवट हाथ के मुँदरिया;
हमके जमुना में झिझरी[12] खेलाव।।

जमुना के किनारे राधिका जी जोर से पुकारती हुई केवट से कह रही हैं कि ऐ केवट ! नाव को शीघ्र ले आओ। यदि तुम जमुना में मुझे नाव में बैठाकर नौ-क्रीड़ा करोगे, तो मैं तुमको अपने हाथ की अँगूठी दूँगी।

१. फीका। २. चटकीला। ३. कुसुम्भी। ४. साड़ी। ५. देवर। ६. वश। ७. इसी। ८. कुशल, समाचार। ९. हो गये हैं। १०. आवाज। ११. लगाती है। १२. यह उस क्रीड़ा का नाम है, जो नाव के द्वारा की जाती है। इसमें डाँड़ों के सहारे नाव को एक ही दिशा में वृत्ताकार घुमाते रहते हैं। यह क्रीड़ा देहातों में बहुत प्रचलित तथा प्रिय है।

(२५)

प्रसंग—कृष्ण की वंशी के व्याज से स्तुति। गोपी की उक्ति सखी के प्रति।

रोज रोज बंसिया बाजेले अनगुताहाँ;[1]
कि एक दिन बाजे बाजे निसुराति[2]।
किसुन जी के मरमिया[3] केहू[4] न जाने;
देले[5] बाड़े कुपथवा[6] पर लात[7]॥

कोई गोपी कहती है कि कृष्ण की बंशी नित्य प्रातःकाल बजा करती है; परन्तु एक दिन नीरव रात्रि में वह बज उठी (जिससे गोपियों को बड़ा कष्ट हुआ)। कृष्णजी के मर्म को कोई नहीं जानता है। उन्होंने कुमार्ग पर पैर रक्खा है। भावार्थ यह है कि कृष्ण की बंशी मनमोहकता के कारण गोपियों को बेसुध कर देती है; अतः उसे कुसमय में नहीं बजाना चाहिए। परन्तु कृष्ण समय-कुसमय का विचार नहीं करते; अतः उनका यह कार्य निन्द्य है।

(२६)

प्रसंग—गोपी की उक्ति कृष्ण के प्रति।

कांचे[8] इ बंसिया बनवल कन्हैया जी;
छेद कइल[9] तू दुई चारि।
बाजु बाजु बंसिया छत्तिस गो[10] रागवा;
नाहीं देबि जमुनवा में फेंकि॥

ऐ कृष्ण! तुमने कच्चे बाँस की बाँसुरी बनायी है और उसमें दो चार छेद भी कर दिये हैं। ऐ बंशी! तुम छत्तीस रागों में बज उठी। नहीं तो मैं तुम्हें जमुना में फेंक दूँगी।

(२७)

प्रसंग—नवोढ़ा, ज्ञात, यौवना, ग्वालिन की उक्ति अपने पति से।

छोटी चुकीं रहलीं त बछरू[11] चरवलीं,
पियलीं बकेनवा[12] के दूध।
हालि[13] हालि गावाना करइहे माटि[14] लागाना;
कि खिलल[15] बा बकेनवा के दूध।

१. प्रातःकाल। २. निःशब्द रात्रि। ३. मर्म, रहस्य। ४. कोई। ५. दिया है। ६. कुमार्ग। ७. पैर। ८. कच्चा। ९. किया। १०. संख्या की समाप्ति सूचक प्रत्यय। ११. बछड़ा। १२. सद्यः प्रसूता गाय। १३. शीघ्र। १४. नष्ट करने वाला। १५. मालूम पड़ना।

कोई युवती ग्वालिन कह रही है कि जब मैं छोटी बच्ची थी, तब गाय का बछड़ा चराती फिरती थी और नवप्रसूता गाय का दूध पीती थी। (अतः मेरा शरीर लड़कपन से ही पुष्ट है) ऐ दुष्ट पति! तुम मेरा गौना शीघ्र कराओ, क्योंकि मेरे स्तनों में दूध का आगम ज्ञात हो रहा है, अर्थात् मैं पूर्णरूप से युवती हो गई हूँ।

इस बिरहे में 'माटि लगाना' विशेषण पति के लिए अत्यन्त उपयुक्त है। इसका अर्थ होता है मिट्टी में मिलाने वाला अर्थात् नष्ट करनेवाला। चूंकि स्त्री का यौवन पति के उपयुक्त न होने से नष्ट हो रहा है; अतः ऐसे लापरवाह पति को माटि लगाना न कहे, तो और क्या कहें।

(२८)

प्रसंग—किसी भक्त द्वारा देवी का वर्णन।

पानावा नियर[१] मोर पातरि[२] हे देबिया,
फूलवा नियर सुकुवारि[३]।
बिजुली नियर मोर तड़पेलि देबिया;
जे बजर[४] नियर घहराइ[५]॥

कोई भक्त कहता है कि मेरी देवी (देवल) पान के समान पतली है तथा फूल के समान सुकुमार है। वह बिजली के समान तड़पती है और उनकी गंभीर आवाज़ वज्र के समान घहराती अर्थात् गूंजती है।

(२९)

प्रसंग—असंभावित वस्तुओं का घटना या होना।

घाटावा[६] लागेले कालकातावा[७] की ओरिया,[८]
कि बाराखा[९] बरिसे नैपाल।
ओरिया इ चुवेली बनारस के खोरिया;[१०]
कि किचकिल[११] भइल[१२] संसार॥

कलकत्ता की ओर बादल उठते हैं औ नैपाल में वर्षा होती है। बनारस की गलियों में उस वर्षा का पानी चूता है तथा सारा संसार इस जल से पंकमय बन जाता है। भाव यह है कि दैवयोग से अघटित वस्तुएं भी प्रायः घट जाया करती हैं।

१. पान की तरह, । २. पतली। ३. कोमल, सुकुमार। ४. बज्र। ५. गूंजना। ६. बादल। ७. कलकत्ता। ८. तरफ, ओर। ९. मकान या छप्पर का वह अगला भाग जहाँ से वर्षा का पानी जमीन पर गिरता है। १०. गली। ११. पंकमय। १२. हो गया है।

(३०)

प्रसंग—गोपियों का कृष्ण-दर्शन के लिए मथुरा जाना। एक सखी की उक्ति दूसरे के प्रति।

चल ए सखी उहवाँ[1] चलीजां मिलि तहवाँ;[2]
जहवाँ[3] बसेले बृजराज।
गोरस[4] बेंचत में हरि मिलि जइहें;
एक पन्थ दुइ काज॥

ऐ सखी! हम लोग मिल कर उस स्थान पर चलें, जहाँ पर कृष्णजी रहते हैं। गोरस (दही तथा इन्द्रिय-सुख) बेंचते हुए कृष्णजी से भेंट हो जायेगी। इस प्रकार एक पन्थ और दो काम हो जायेगा।

इस बिरहे में 'एक पन्थ दो काज' इस कहावत का कितना सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(३१)

प्रसंग—किसी गोपी की कृष्ण के द्वारा पकड़े जाने पर अपने को छुड़ाने के लिए उनसे प्रार्थना।

छोड़ि द कन्हैया मोरी नरमी[5] कलइया;[6]
जे तूं भरे दा जमुनवा में नीर।
तोहरा के देबि कान्हा लहुरी[7] ननदिया;
कि साँचवा[8] में ढारल[9] बा सरीर॥

कोई गोपी प्रार्थना करती हुई कृष्णजी से कह रही है कि ऐ कृष्ण! तुम मेरी कोमल कलाई को छोड़ दो। मुझे जमुना में जल भरने दो। हे कृष्ण! इस मुक्ति के पुरस्कार स्वरूप मैं तुम्हें अपनी छोटी ननद को दूँगी, जिसका शरीर साँचे में ढला हुआ है, अर्थात् जो अत्यन्त सुन्दरी है।

साँचे में शरीर ढालने की कल्पना कितनी नूतन तथा मनोरम है।

(३२)

प्रसंग—बालकों के साथ खेलते हुए जमुना जल में गिरे हुए गेंद को कृष्ण के द्वारा निकाला जाना।

छटकल[10] गेंनवा जमुनवा में गिरवे;
गेना[11] साथावा जे कान्हा जाइ।

१. वहाँ। २. तहाँ। ४. जहाँ। ४. दही, इन्द्रिय सुख। ५. कोमल। ६. कलाई। ७. छोटी। ८. साँचा। ९. ढालना बनाना। १०. छटक कर, उछलकर। ११. गेंद।

अपने ला डुबले , गेंनवा ना डूबैं बिहुले;
गेना संगे कान्हा चलि आइ।।

जब कृष्ण अपने साथियों के साथ गेंद खेल रहे थे, तब गेंद छटक कर जमुना के जल में जाकर गिर पड़ी। कृष्ण भी गेंद के साथ जमुना में कूद पड़े। कृष्णजी न तो स्वयं ही डूबे और न गेंद को ही डूबने दिया। गेंद को निकाल कर वे उसके साथ ही बाहर निकल आये।

(३३)

प्रसंग—परदेसी प्रियतम की दीन-दशा का वर्णन। पत्नी की उक्ति सखी के प्रति।

भोंपू सुनि कलवा के पिया गोदवा में भागे;
जे करे चटकलिया[1] में काम।
ईट के देवालि ऊपर टीन के छवैया,[2]
चमड़ा के रसिया[3] समान।।

मेरा पति—जो कलकत्ते के चटकल में काम करता है—इतना कायर है कि वह कारखाने के भोंपे की आवाज सुनकर डर करके मेरी गोद में भाग कर चला आता है। कारखाने में ईंटों की दीवाल है, टीन की छाजन है और चमड़े की रस्सी वहाँ लगी हुई है।

पति के कायरता की इतनी उत्कृष्ट कल्पना क्या कहीं मिल सकती है? कारखाने के भोंपू की आवाज के डर से स्त्री की गोद में छिपना कायरता की चरम सीमा है।

(३४)

प्रसंग—सखियों के द्वारा कृष्ण का घेरना। गोपी की उक्ति।

चानावा[4] के घेरेले का कारी बदरिया,[5]
कि लंका घेरेले हनुमान।
तीन सौ साठि सखि घेरेले कन्हैया;
जो मांगतारे[6] दहिया[7] के दान।।

कोई गोपी कह रही है कि जिस प्रकार बादल चन्द्रमा को घेरते हैं, जैसे हनुमान ने लंका को चारों ओर से घेर लिया था, उसी प्रकार से तीन सौ साठ सखियों ने कृष्णजी को घेर लिया, जो दही माँग रहे थे।

१. चटकल (जूट का कारखाना)। २. छाजन। ३. रस्सी। ४. चन्द्रमा। ५. बादल। ६. माँगते हैं। ७. दही।

(३५)

प्रसंग—किसी गोपी की उक्ति कृष्ण के प्रति।

तोहरा बूते[1] ना चलिहें नइया कन्हैया;
मोरा बूते ना चलिहें जहाज।
अपने परावा[2] उतरलीं मोहन जी,
बहियाँ धइला के करीह[3] लेहाज[4]।।

कोई गोपी कह रही है कि ऐ कृष्ण ! तुम्हारी शक्ति से नाव नहीं चल सकती और मेरी शक्ति से जहाज नहीं चल सकता। ऐ कृष्ण ! मैं स्वतः पार उतर गयी। परन्तु आप बाँह धरे की लाज रखना अर्थात् मेरी सहायता से कभी विमुख न होना।

(३६)

प्रसंग—गाय को दूर चराने के लिये ले जाते हुए किसी ग्वाले की मनोव्यथा का वर्णन।

सीरी[5] बिरिनाबनवा[6] से गोरुवा[7] डहरले;[8]
गँउवा[9] छूटेले बड़ी दूर।
सोने के कटोरिया में दूधभात छूटले,
मेहरी[10] छूटेले लरकोरि[11]।।

कोई ग्वाला कहता है कि श्री वृन्दावन से मैं गायों को चराने के लिए चला गया। मेरा गाँव बहुत दूर छूट गया। सोने की कटोरी में मेरा दूध भात खाना छूट गया तथा गोद में छोटे बच्चे वाली मेरी स्त्री भी छूट गयी। भावार्थ यह है कि बाला स्त्री का वियोग मुझे बहुत सता रहा है।

(३७)

प्रसंग—स्त्री की टिकुली का वर्णन।

तालावा में चमकेला चाल्हवा[12] मछरिया[13];
इनरा[14] में चमकेले डोरि।
साभावा में चमकेले सामि[15] के पगरिया[16];
लिलारा[17] पर टिकुली लमोरि[18]।।

१. शक्ति। २. पार। ३. करना। ४. लाज। ५. श्री। ६. वृन्दावन। ७. गाय, बैल। ८. ले चला। ९. गाँव। १०. स्त्री। ११. गोदी में छोटे बच्चे वाली स्त्री। १२. चाल्ह नामक। मछली। १३. कुँआँ। १४. रस्सी। १५. स्वामी, पति। १६. पगड़ी। १७. ललाट। १८ लम्बी, बड़ी।

जिस प्रकार तालाब में चाल्ह नामक मछली चमकती है ; कुएँ में रस्सी चमकती है; तथा सभा में पति की पगड़ी चमकती है, उसी प्रकार से स्त्री के ललाट पर लम्बी टिकुली शोभायमान होती है।

(३८)

प्रसंग—उड़ती हुई चिड़िया पर अन्योक्ति। कवि की उक्ति।

उड़ली चिरिइया झुरे[१] झाँग[२] बइठलि;[३]
राम नामवा के गोहराईं[४]।
निचवा जे घूमत बाटे पापी रे बहेलिया;
ऊपर बाजवा रे मेड़राईं[५]॥

कवि कहता है कि उड़ती हुई चिड़िया सूखे हुए अरहर के पौधे पर बैठ गई तथा राम नाम को पुकारने लगी। नीचे पापी बहेलिया उसे मारने के लिए घूम रहा है तथा ऊपर उसे खा डालने के लिए बाज मँडरा रहा है।

कवि ने इस विरहे में अन्योक्ति के सहारे मनुष्य की दशा का वर्णन किया है। मनुष्य पक्षी है। वह विषय-वासना में फँसकर इधर-उधर घूमता रहता है। उसके नाश के लिए यमराज उसके सिर पर मँडरा रहा है। फिर भी वह नहीं चेतता है।

(३९)

प्रसंग—पुत्र का क्लेश हरने के लिए देवी की प्रार्थना।

तीन देवढ़ी के भीतर बा मोर देबिया;
कि जहवाँ झुलेला[६] लामि[७] केस[८]।
तोहरा बालाकावा पर परल बा संकाटवा[९];
धर ना जोगिनिया के भेस॥

कोई भक्त कहता है कि मेरी देवी तीन ड्योढ़ी भीतर रहती हैं ; जहाँ उसके लम्बे केश सदा झूलते रहते हैं। ऐ स्त्री ! तुम्हारे बालक पर विपत्ति पड़ी हुई है ; अतः तुम योगिनी का वेश धारण कर देवी की प्रार्थना करो।

(४०)

प्रसंग—पति-गर्विता स्त्री की उक्ति किसी पुरुष के प्रति।

१. सूखा। २. अरहर का पौधा। ३. बैठी है। ४. पुकारती है। ५. मँडराती है। ६. झूलता है। ७. लम्बा। ८. केश। ९. संकट, आपत्ति।

जब हम रहलीं बारी[1] कुंवारी[2];
तब ले सहलीं[3] तोर गारी[4]।
मरद बखानी[5] हम ओकरा[6] के[7]
जो बियहला[8] पर हमारा के दे गारी॥

जब तक मैं छोटी तथा कुँवारी थी, तब तक मैं तुम्हारी गाली को सहती थी; परन्तु अब विवाह हो जाने पर मैं उसी को मर्द (बहादुर) कहूँगी, जो मुझे गाली देने की हिम्मत कर सके। भाव यह है कि मेरा पति इतना बलवान् है कि उसके सामने मुझे गाली देने की कोई हिम्मत ही नहीं कर सकता।

(४१)

प्रसंग—साधु की संगति का वर्णन।

संगति करे के ओहि[9] साधु बाबा के;
जाहवा चोरिया नाहीं होइ।
होत फजिर[10] साधु ठोकेले[11] खंजड़िया[12],
राम के भजनिया ले होइ॥

उसी साधु की संगति करनी चाहिए, जिसकी संग से चोरी न हो सके। सबेरा होते ही वह अपनी खंजड़ी बजाने लगता है और राम का भजन करने लगता है।

(४२)

प्रसंग—बिरहा गाने के पहले किसी अहीर की सरस्वती से प्रार्थना।

आव ए सुरसति[13] गला चढ़ि बइठ,
कड़ी[14] कड़िया दिह जोर[15]।
गावत में लागे सोहावन मोर देविया हो;
सुनतरवा लागे अनमोल[16]॥

अहीर प्रार्थना करता है कि ऐ सरस्वती! तुम आओ और मेरे गले में बैठ जाओ। तुम

१. छोटी। २. अविवाहिता। ३. सहन किया। ४. तुम्हारी। ५. गाली। ६. प्रशंसा करूँगी। ७. उसको। ८. विवाह होने पर। ९. उसी। १०. सबेरा। ११. बजाना। १२. एक प्रकार का बाजा, जिसे प्रायः साधु लोग बजाया करते हैं। १३. सरस्वती। १४. कड़ी, पद। १५. जोड़ना, बनाना। १६. कर्णप्रिय।

मेरे बिरहा की प्रत्येक कड़ी को जोड़ दो, जिससे गाने में यह अत्यन्त सुहावना लगे तथा सुनने में कानों को सुख देनेवाला हो।

बिरहा के गवैया की यह प्रार्थना कितनी भाव पूर्ण है।

(४३)

प्रसंग—सरस्वती देवी के स्वरूप का वर्णन।

एक त देविया मोर आंगावा के पातरि,
दोसरे सोबरन[1] हवे[2] देहि[3]।
तीसरे बैठे देबी सोने के कालासावा[4];
हमारा देबी ले सुघर[5] बाटे केहि[6]॥

भक्त कहता है कि एक तो मेरी देवी का अंग अत्यन्त पतला है, दूसरे उनका शरीर सुवर्ण के समान चमकता रहता है, तीसरे वह सोने के कलश पर बैठती है। हमारी देवी से कौन अधिक सुन्दर है ? अर्थात् कोई भी नहीं।

(४४)

प्रसंग—भावज तथा ननद की परस्पर उक्ति।

टिकुली[7] से टिकुली बदलि ले भउजी[8];
कोदो[9] से बदलि दे तू धान।
पियवा से पियवा बदलि दे छोडी ननदी,
मोर पिया लरिका[10] नादान[11]॥

ननद अपनी भावज से कह रही कि ऐं भावज ! मेरी टिकुली से अपनी टिकुली तुम बदल लो और मेरे कोदो से अपना धान बदल लो। इसके उत्तर में हास्य प्रिय भावज कह रही है, कि ऐं छोटी ननद ! अपने पति से तुम मेरा पति बदल लो ; क्योंकि पेरा पति अत्यन्त नादान है बालक है।

भावज की उक्ति कितनी मार्मिक तथा चुटीली है। ननद के साथ उसका परिहास कितना गूढ़ है।

(४५)

प्रसंग—ननद का उत्तर भावज के प्रति।

---

१. सुवर्ण। २. है। ३. शरीर। ४. कलश ५. सुन्दर। ६. कौन। ७. बिन्दी। ८. भाभी। ९. मोटा अनाज। १०. लड़का। ११. छोटा।

नून[1] देबि मंगनी तेल देबि मंगनी[2];
संइया के मंगनिया ना देबि।
हमरो पियवा डण्डी[3] के जोखल[4];
घटिहे त केकरा[5] से लेबि[6]॥

ननद कहती है कि ऐ भावज ! मैं तुम्हें नमक उधार दे सकती हूँ, तेल भी मँगनी दे सकती हूँ ; परन्तु अपने पति को मैं उधार कभी नहीं दे सकती। मेरा प्रियतम तराजू पर तौला हुआ है। यदि वह घट जायेगा, तो मैं किससे उसकी पूर्ति कराऊँगी।

(४६)

प्रसंग—नायिका के अंग का वर्णन।

हुरवा नियर तोर जुरवा पतरकी;
टेकुआ[7] अइसन[8] तोर माँग।
लड्डू नियर तोर छाती के जोबनवा[9];
केरवा[10] अइसन तोर टाँग[11]॥

ऐ पतली स्त्री ! तुम्हारे बालों का जूड़ा लाठी के निम्न भाग के समान गोल तथा सुन्दर है; तुम्हारी माँग टेकुआ के समान सीधी है, तुम्हारे स्तन लड्डू के समान गोल तथा बड़े हैं तथा तुम्हारे पैर केले के तने समान सुन्दर तथा मनोरम हैं

इस बिरहा में जो उपमाएँ दी गई हैं, वे सभी देहाती जीवन से ली गई हैं। माँग को टेकुआ कहना जितना सटीक है, स्तन को लड्डू कहना उतना ही चित्ताकर्षक।

(४७)

प्रसंग—पानी भरती हुई स्त्री का वर्णन।

गगरी में फँसरी[12] लगवले मुनेसरी;
इनरा[13] में देले लटकाइ।
निहुरि[14] निहुरि तें त पनिया भरत बाड़े[15]
जोबना के पड़े परिछाइ[16]॥

कोई कहता है कि ऐ मुनेसरी ! तूमने घड़े में रस्सी लगाकर उसे कुएँ में लटका दिया है। तुम झुक-झुक कर पानी भर रही हो और तुम्हारे स्तन का प्रतिबिम्ब कुएं में पड़ रहा है।

१. नमक। २. उधर। ३. तराजू। ४. तौला हुआ। ५. किससे। ६. लूंगी। ७. सोने के एक औजार। ८. तरह। ९. स्तन। १०. केला। ११. पैर। १२. रस्सी का फंदा। १३. कुँआँ। १४. झुक झुक कर। १५. भरती हो। १६. प्रतिबिम्ब।

(४८)

प्रसंग—बाल पति का वर्णन। पत्नी की उक्ति सखी के प्रति।

मोर पिछुअरवा घनी रे बंसवरिया;
बिनु पुरुआ[1] घहराई।
हमरा गोड़वा में बाड़ी बजनी[2] पइरिया,[3]
सुनि सुनि पियवा डेराई॥

मेरे घर के पिछले भाग में बाँसों का घना झुरमुट है, जो बिना पुरुवा हवा के भी आवाज किया करता है। मेरे पैर में शब्द करनेवाली पायजेब है, जिसको सुन-सुनकर मेरा पति डर जाता है।

इस बिरहे में उस समय का चित्र अंकित है, जब बालकों का विवाह अत्यन्त छोटी उमर में हुआ करता था। पायजेव की आवाज से पति का डरना उसके बचपन का द्योतक है।

(४९)

प्रसंग—ससुराल का वर्णन।

बड़ नीक लागेला भइसिया के दहिया;
बनलि[4] रहे ससुरारि।
अंगुरी के सानावा[5] बोलावे सरहजिया[6];
लोगवा देला सब गारि[7]॥

ऐसी ससुराल सदा वनी रहे, जहाँ भैंस का दही खाने को मिलता है तथा बहुत अच्छा लगता है। सरहज जहाँ अपनी अंगुली के इशारे से बुलाया करती है तथा गाँव के सब लोग मजाक में गाली दिया करते हैं।

ठीक ही है—

"असारे खलु संसारे सारं श्वसुरमन्दिरम्"

(५०)

प्रसंग—दुष्ट पति का मिथ्यालाप वर्णन।

रतिया कहेला पिया नथिया[8] गहंइबों[9],
दिनवा में डाले बिसमोर[10]।

१. पुरवैया। २. शब्द करनेवाली। ३. पायजेब। ४. कायम रहना। ५. संकेत। ६. श्यालक की स्त्री। ७. गाली। ८. नाक का एक गहना। ९. बनवाना? १०. विस्मरण।

जो तुहु करब ना अपनी बचनिया[1];
सेजिया तजबि[2] हम तोर ।।

पत्नी कहती है कि रात में क्रीड़ा करते समय पति कहता है कि मैं नथिया बनवा दूंगा; परन्तु दिन में वह भूल जाता है। जो तुम अपने वचन को सत्य करके न दिखलाओगे, तो मैं तुम्हारी सेज को छोग़ दूँगी, अर्थात् तुम्हारे साथ नहीं सोऊँगी।

(५१)

प्रसंग—पति की उक्ति पत्नी के प्रति।

कवना किअरिया[3] में दवना मडुअवा[4];
कवना[5] किअरयि में धूप।
कवना किअरिया में बइठे मन मोहिनी;
धरेली जोगिनिया के रूप ।।

पति कहता है कि किस क्यारी में मँडुवा उत्पन्न होता है और किस क्यारी में धूप लगती है। मेरी स्त्री जो जोगिनी का रूप धारण किये हुए हैं, किस क्यारी में बैठी हुई है।

(५२)

प्रसंग—वही—

पछिली किअरिया में दवना मडुअवा;
बिचली किअरिया में धूप।
अगिली किअरिया में बइठे मन मोहिनी;
धरेले जोगिनिया के रूप ।।

पिछली क्यारी में मँडुवा का अन्न लगा हुआ है। बिचली क्यारी में धूप लगती है। मेरी स्त्री जोगिनी का रूप धारण कर अगली क्यारी में बैठी हुई है।

(५३)

प्रसंग—पति-पत्नी की क्रीड़ा का वर्णन। पत्नी की उक्ति पति के प्रति।

रोरिया[6] चलाय मोके मरलसि बलमुआ;
लागल बा बदनिया[7] में तीर ।।

१. वचन। २. छोड़ दूंगी। ३. क्यारी। ४. अन्न विशेष। ५. किस। ६. छोटा मिट्टी का टुकड़ा। ७. शरीर।

जतना ना अवहे[1] रोरिया के मरलका[2];
ओतना[3] अवहे[4] बिरहावा के पीर॥

पत्नी कहती है कि मेरे पति ने छोटा ढेला फेंककर मुझे मारा है। उस ढेले से मेरे शरीर में तीर के लगने के समान वेदना हो रही है; परन्तु उसका ढेला मारना मुझे उतना कष्ट नहीं देता, जितनी उसके विरह की पीड़ा सताती है।

विरह-वेदना की कितनी तीव्र व्यंजना इस बिरहे में हुई है।

(५४)

प्रसंग—राम, लछुमनवा की सीता के द्वारा सेवा।

राम लछुमनवा बनवा के चलले;
सीता चललीं संग लोर[5]।
राम लछुमनवा को लगली पिअसिया[6];
सीता देली अमरित[7] घोर[8]॥

रामचन्द्र और लक्ष्मणजी वन को चले। सीता भी उनके साथ हो गईं। जब राम और लक्ष्मण को प्यास लगी, तब सीता ने अमृत घोल कर दिया। अर्थात् अपने अमृत तुल्य मीठे वचनों के साथ उन्हें जल पीने को दिया।

(५५)

प्रसंग—गंगाजी की बाढ़ का वर्णन।

गंगा जी त बहुत बढ़ि गइलीं
तूरति[9] आवेली आरार[10]।
तुरहीं के रहली बगसर[11] के किलवा;
तूरेली भिरग[12] मुनि के धाम॥

गंगाजी बाढ़ के कारण बहुत बढ़ गयी हैं और अपने किनारों को गिराती हुई चली आ रही हैं। वे बक्सर के किले को गिराने वाली थीं; लेकिन उन्होंने भृगु मुनि के धाम (बलिया में स्थित भृगुजी का मन्दिर) को तोड़ दिया।

गंगाजी की बाढ़ ने कई बार भृगुजी के मन्दिर को गिरा दिया, यह बात प्रसिद्ध है।

१. दुःख देता है। २. मारना। ३. उतना। ४. मालूम पड़ता है। ५. साथ साथ, ६. प्यास। ७. अमृत। ८. घोलना। ९. तोड़ती हुई। १०. किनारा। ११. बक्सर। १२. भृगु।

(५६)

प्रसंग—भूली हुई टिकुली को खोजने के लिए देवर का प्रयत्न।

हाजीपुरवा गजबेनुली[1] टिकुलिया[2],
अइलीं सागर में भुलवाई।
लहुरा[3] देवरवा मोर गजब खेलडिया;
लवगे सागर महाजाल[4]॥

भावज कहती है कि हाजीपुर की गजबेनुली नामक प्रसिद्ध बिन्दी को मैं किसी तालाब में भुला आई हूँ। लेकिन मेरा छोटा देवर बहुत बड़ा खिलाड़ी है। उसने उस तालाब में बहुत बड़ा जाल लगा रखा है।

(५७)

प्रसंग—नायक के द्वारा नायिका के मायके की निन्दा।

नइहर[5] नइहर का कइले बाडु गोरिया;
देखल बा नइहरवा तोहार।
रेड़वा[6] के लागल बा टाटरवा[7] ए गोरिया;
सियारा[8] जे करेला गोहार[9]॥

नायक कहता है कि ऐ सुन्दरी स्त्री! मायके जाने के लिए तुम क्यों बार-बार हठ कर रही हो। मैंने तुम्हारा मायका देखा है अर्थात् वहाँ जाने पर तुम्हें कितना सुख मिलेगा, यह मैं जानता हूँ। तुम्हारे घर में रेड़ (अरण्ड) के पेड़ का टट्टर लगा हुआ है, जो शीघ्र टूट जाता है और गीदड़ घर में घुस कर 'हुआ हुआ' किया करते हैं।

(५८)

प्रसंग—पति के निश्चित तिथि पर न आने पर स्त्री के द्वारा काग आदि शकुन की निन्दा।

झूठ भइले सधुआ[10], झूठ बियफइया[11];
झूठ भइले कागावा के बोल।
झूठ भइले बाभाना के पतरा[12] ओ पोथिया;
कि सइंया नाहिं अइलेहा[13] मोर॥

१. एक प्रकार की टिकुली। २. सधवा स्त्रियों के ललाट में चिपकने वाली बिन्दी। ३. छोटी। ४. बड़ा जाल। ५. मायका। ६. अखंड। ७. टट्टर। ८. गीदड़। ९. आवाज। १०. साधु। ११. वृहस्पतिवार। १२. पंचांग। १३. आया।

स्त्री कहती है कि मेरे पति के आने के विषय में जो साधु ने भविष्यवाणी की थी, वह झूठी हो गयी; वृहस्पति का शुभ दिन भी झूठा निकला (क्योंकि आज ही पति आनेवाला था) काग की बोली भी झूठी ही निकली। पति के आने की तिथि को बतलाने वाले पण्डितजी का पत्रा और पोथी भी झूठ साबित हुई, क्योंकि बतायी गयी निश्चित तिथि पर मेरा पति नहीं आया।

(५९)

प्रसंग—पति के आने का समाचार सुनकर स्त्री का अपनी देह को सुसज्जित करना।

जब सुनलीं अपना पिया के अवइया[1];
कसिके[2] लिहलीं जुरवा[3] बंधाइ।
माँह बाटवा[4] में मोर पिया मरइले;
बांधल हमार जुरवा तवाँई[5]॥

पत्नी कहती है कि जब मैंने अपने पति के आने का समाचार सुना, तब मैंने अपने बालों का जूड़ा कसकर बाँध लिया; लेकिन बीच रास्ते में ही मेरा पति मार डाला गया। अब बाँधा गया मेरा जूड़ा यों ही बेकाम हो गया, क्योंकि पति के बिना शृंगार करना व्यर्थ है।

(६०)

प्रसंग—दुष्ट नायक के प्रति नायिका की उक्ति।

घुसुकल घुसुकल[6] दुअरिया पर अइले;
हम कचरत[7] रहलीं पान।
अइसन मर करेला बलनवा[8] खींची मारीं;
इन कर[9] लड़कइयाँ के बान[10]॥

दुष्ट नायक धीरे-धीरे मेरे दरवाजे के पास आया, जब मैं पान खा रही थी। मेरी ऐसी इच्छा करती है कि मैं बेलन से खींचकर इसे मारूँ; क्योंकि इसकी लड़कपन की ऐसी ही आदत है। बिना पूछे ही वह घर में घुस आता है।

(६१)

प्रसंग—अहीर की स्त्री का अपने पति से गिरह न खोलने की प्रार्थना।

गाजीपुरवा के फरिबिहियाँ[11] बलमुआ,[12]
गोड़वा[13] मुरकले[14] तोहार।

१. आगमन। २. जोर से। ३. जूड़ा। ४. बाट, रास्ता। ५. व्यर्थ होना। ६. धीरे-धीरे चलना। ७. खूब चबाना। ८. बेलना। ९. इसका। १०. आदत। ११. गिरह खेलनेवाला। १२. पति। १३. पैर। १४. मोच खाना।

गोड़[1] तोर लागिलें ननदिया के भइया;
छोड़ि द करियवे[2] हमार ॥

मेरा पति गाजीपुर का प्रसिद्ध गिरह खेलनेवाला है। गिरह खेलते समय उसके पैर में मोंच आ गई। ऐ मेरी ननद के भाई ! (पति) मैं तुम्हें हाथ जोड़ती हूँ। मेरी शपथ से तुम गिरह खेलना छोड़ दो। यह बिनती कितनी मार्मिक है।

(६२)

प्रसंग—कोयल के द्वारा सपत्नी को लक्षित करती हुई अन्योक्ति।

सूतल[3] सुगवा जगावेले कोइलिया;
चल सुगवा मोर गाँव।
तोहरा देसवा ना आम के अठिलिया;[4]
हमरा देसवा लखराव[5] ॥

कोई स्त्री कहती है कि कोयल मेरे सोये हुए तोते को जगाती है और कहती है कि तुम मेरे गाँव चलो। क्योंकि ऐ तोते ! तुम्हारे देश में आम की अठली भी नहीं होती और मेरे देश में बहुत बड़ा बगीचा है, जिससे आम खाने को खूब मिलेगा।

भावार्थ यह है कि सपत्नी (कोयल) मेरे पति (सुग्गा) को फँसाकर अपने साथ ले जाना चाहती है तथा अनेक प्रकार का प्रलोभन देती है। कोयल के ऊपर सपत्नी की अन्योक्ति कितनी सटीक है। दोनों मीठा बोलती हैं तथा दोनों मन हर लेती हैं।

(६३)

प्रसंग—सास तथा पतोहु के झगड़े का सुन्दर वर्णन।

ससुई पतोहिया में लागल बा झगड़वा;
कइली मुसरवा[6] के मार[7]।
आजु पतोहिया के हम बन दिहितो;
जो जिअत रहिते बढ़ऊ[8] हमार ॥

सास तथा पतोहू में झगड़ा हुआ है और आपस में मूसल से मार-पीट कर रही हैं। इस पर सास कहती है कि यदि मेरा बूढ़ा पति जीता रहता, तो मैं आज इस पतोहू को घर से निकाल कर बनवास दे देती।

१. गोड़ लगना, प्रणाम करना। २. शपथ, कसम। ३. सोया हुआ। ४. गुठली। ५. लक्षाराम, बड़ा बगीचा। ६. मूसल। ७. मार-पीट। ८. बूढ़ा पति।

सास और पतोहू के झगड़े का कितना सजीव वर्णन है।

(६४)

प्रसंग—मारनेवाली गाय का वर्णन।

सिकिया[१] अइसन तोर चुँचिया[२] ए सोकनी;
मूसर[३] अइसन[४] तोर धार।
सोकनी[५] गइया हवे बड़ही हरदिया[६];
बार-बार खुँटवा तुराइ[७]॥

सोकनी (गाय का एक विशेष प्रकार) गाय का स्तन सींक के समान पतला है और उसके दूध की धारा मूसल के समान मोटी है। सोकनी गाय बहुत मारनेवाली होती है। और बार-बार अपने खूंटे को उखाड़ डालती है।

ग्राम्य-जीवन का क्या ही सुन्दर चित्रण है।

(६५)

प्रसंग—समय की परिवर्तनशीलता का वर्णन।

आमावा के डढ़िया[८] बोलेले कोइलिया;
सुगा[९] बरवा[१०] के बोले डाढ़ि।
आमावा मउरा गइले, सेमर[११] उकठि[१२] गइले
बरवा के सूखि गइले डाढ़ि॥

आम की डाली पर कोयल बोलती है तथा तोता वट वृक्ष की डाल पर बैठ कर बोलता है। परन्तु समय के परिवर्तन से आम का पेड़ सूख गया, सेमल भी नष्ट हो गया और वह वृक्ष की विशाल शाखा भी सूख गयी।

(६६)

प्रसंग—रूपगर्विता नायिका की उक्ति नायक के प्रति।

तोर संगवा हम नाहिं सूतबि करियवा[१३];
तू करिया हम गोरी।
तोर जमलका[१४] होइहें करियवा;
हँसिहे नगरिया के लोग॥

१. सींक। २. स्तन। ३. मूसल। ४. समान। ५. गाय विशेष। ६. मारनेवाली। ७. तोड़ देती है। ८. डाल। ९. तोता। १०. बट वृक्ष। ११. शाल्मली। १२. सूख गया, नष्ट हो गया। १३. काला। १४. जन्मा हुआ सन्तान।

नायिका कहती है कि ऐ काले, कुरूप नायक! तुम काले हो और मैं गोरी (गौर वर्ण वाली) हूँ। अतः मैं तुम्हारे साथ नहीं सोऊँगी, क्योंकि तुम्हारे संबंध से काला लड़का पैदा होगा और उन कुरूप बच्चों को देखकर गाँव के सब लोग हँसने लगेंगे।

(६७)

प्रसंग—किसी देहाती नायिका का वर्णन सखी की उक्ति सखी के प्रति।

पातर[१] कुँइया निरमल बाटे पनिया;
तू बाड़ू अलबेली[२] नार।
पनिया भरत सखि खुलेला आंचरवा[३];
तूर रहलू निपटे[४] गँवार॥

कुआँ पतला है, इसमें निर्मल जल भरा हुआ है। तुम तो अलबेली (बड़ी सुन्दर) स्त्री हो। पानी भरते हुए तुम्हारा आँचल खुल गया। (जिससे स्तन दिखाई पड़ने लगा) ऐ! सखी तुम तो बिल्कुल मूर्ख हो।

(६८)

प्रसंग—किसी नायका की उक्ति कुलटा नायिका के प्रति।

बजर के छतिया तोर बाटे ए चानावा[५],
पथल[६] छतिया भइल मोर।
हमरा के फांसि[७] के छोड़वलू अब घरवा,
के पोंछिहें माई के लोर[८]॥

नायक नायिका से कहता है कि ऐ चानावा! तुम्हारी छाती वज्र के समान कठोर है और मेरी छाती पत्थर के समान कठिन है। तुमने मुझे अपने मोह-जाल में फँसाकर मेरा घर छुड़ा दिया है। अब मेरी माता के आँसू को कौन पोंछेगा? अर्थात् जब मेरी माता मेरे वियोग के कारण रोने लगेगी, तो कौन उसे सांत्वना देगा।

(६९)

प्रसंग—नायिका का नायक से गहना बनाने के लिए कहना।

हमरा के नथिया गहंइह[९] तीन फकिया,
जाइबि नइहरवा[१०] हम आजु।

१. पतली। २. सुन्दरी। ३. आंचल। ४. बिल्कुल। ५. चानावा नामक स्त्री। ६. पत्थर। ७. फँसा करके। ८. आँसू। ९. बनादो। १०. मायका।

हम तोर जाइके बढाइबि इजतिया[1];
हमरा के गहना से साजु[2]।।

ए नायक ! तुम मेरे लिए तीन फाँस वाली नथिया (नाक में लगाने का गहना) बना दो ! मैं आज अपने मायके जाऊँगी। तुम मुझे गहने से सुसज्जित कर दो, मैं तुम्हारी इज्जत मायके जाकर बढ़ाऊँगी।

(७०)

प्रसंग—किसी कुलटा की उक्ति।

नकिया के टूटल बा नथियवा बलमुआ;
अइसन गर्हनिया[3] ना होइ।
अइसन गर्हनिया तब होइहें ए पियवा;
जब सोनरा मिलनिया[4] रे होइ।।

ऐ पति ! मेरे नाक की नथिया टूट गयी है। इस गढ़न (ढंग) की नथिया मिलना अब कठिन है। ऐसी गढ़न की नथिया तभी मिल सकती है जब मिलनेवाला सोनार हो।

(७१)

प्रसंग—भावज की फूहड़पन का वर्णन।

ननदी भउजिया में भइल बा झगड़वा;
चिलर[5] हेरि माड़े ले पिसान[6]।
एक पडवा दाल साढ़े तीन घड़ा पानी;
एक लोटा नून[7] अरु हरदी पुरान।।

ननद और भावज में झगड़ा हुआ है। भावज इतनी फूहड़ है कि जूँ मारकर उसको आटे में डाल कर गूँथती है। एक पाव दाल में साढ़े तीन घड़ा पानी डालती है, उसमें एक लोटा नमक छोड़ देती है और घून लगी हुई पुरानी हलदी पीसकर डालती है।

देहाती फूहड़ स्त्री का कितना सजीव चित्रण किया गया है।

(७२)

प्रसंग—पति का रात्रि में घर पर न सोने पर स्त्री का उसे उपालम्भ।

१. इज्जत। २. सुसज्जित कर दो। ३. गढ़न। ४. मिलनेवाला, मित्र, उपपति। ५. जूँ। ६. आटा। ७. नमक।

उखिया बोअलसि सरपतवा[1] बलमुआ;
गुड़ भेली[2] काहावाँ से होइ।
अपने त सुतेला उ खेत खरिहानावा;
गोदिया में बबुआ कहाँ होई॥

स्त्री कहती है कि पति ने सरपत नामक ईख—जिसके रस से गुड़ तैयार नहीं होता है—को खेत में बो दिया है; अतः गुड़ कहाँ से उत्पन्न हो सकता है। पति स्वयं खलिहान में रात्रि के समय सोता है। अतः ऐसी दशा में पुत्र कहाँ से पैदा होगा।

(७३)

प्रसंग—पति के सुन्दर होने की पत्नी की कामना।

इहे कठपुतरी सरइवा[3] से उतरी;
अइसन बलमुआँ रहिते मोर।
भर दिन राखिबि तोहि के सोना के पिंजड़वा;
रतिया कन्हैया होइब[4] मोर॥

स्त्री कहती है कि यह काठ की पुतली स्वर्ग से उतरी है, अर्थात् उसकी दिव्य आकृति है। यदि मेरा पति भी इतना ही सुन्दर होता, तो उसे दिन भर सोने के पींजड़े में रखती और रात्रि में उससे क्रीड़ा करती।

(७४)

प्रसंग—कुबरी से प्रेम करने के कारण किसी गोपी का कृष्ण को उपालम्भ।

गोखुला में कइल गोखुलइया[5] तू कन्हैया;
मथुरा में कइल ठकुराई।[6]
कूबरी के लेके छावेल[7] मधुबानावा;
राधिका के विहल[8] बिसराई॥

कोई गोपी कह रही है कि हे कृष्ण ! तुमने गोकुल में खिलवाड़ किया तथा मथुरा में

१. विशेष प्रकार की ईख जिसके रस से गुड़ नहीं बन सकता। २. गुड़ का गोल पिण्डा। ३. स्वर्ग। ४. होओगे। ५. गोकुल का भाव अर्थात बालक्रीड़ा। ६. अगुवा या नेता बनना। ७. निवास करते हो। ८. दिया।

जाकर प्रतिष्ठा प्राप्त की। अब तुम कूबरी को अपने साथ में लेकर मधुवन में विराज रहे हो और बिचारी राधिका को बिल्कुल भुला दिया है।

गोपी का उपालम्भ कितना मार्मिक है।

(७५)

प्रसंग—स्त्री के द्वारा पति के विषय में परिहास। सखी के प्रति उक्ति।

छोटका बलमुआ मोर बाड़ा नीक लागेगा,
हंसत बखरिया[१] में जात।
झूलवा[२] के तरेउ त मिसेला[३] जोबानवा,
जइसे मिसेला जोन्हरिया[४] के बालि[५]॥

नायिका कह रही है कि मेरा छोटा पति मुझे बड़ा अच्छा लगता है। वह सदा हँसते हुए घर में जाता है। चोली के नीचे छिपे हुए मेरे स्तनों को इसी प्रकार वह मीसता है (स्पर्श करता है) जैसे जोन्हरी के फल को किसान लोग मीसते हैं। आशय यह है कि वह स्तनों को धीरे धीरे मलता है, जिससे बड़ा सुख मिलता है।

---

१. गोशाला, घर। २. चोली। ३. मलता है। ४. अन्न। ५. पौ० अन्न से युक्त भाग।

काँहार के गीत

(१)

प्रसंग—पति का बंगाल से सपत्नी का लाना। प्रथम पत्नी के द्वारा उसकी निन्दा।

पुरुब देसवा से आवेले सवतिया[1] रे ना ॥१॥
नकिया में बावेले लंवगिया रे ना ॥२॥
दांतावा में जड़ेले मिसिया रे ना ॥३॥
अंखिया में करेले सुरुमिया रे ना ॥४॥
हँसेली त झलकेला बतिसिया रे ना ॥५॥
रोवेली त झरेला सुरुमिया रे ना ॥६॥
सोरहों सिंगार करके चलली बजरिया रे ना ॥७॥
भेंट भइल चउक बजरिया रे ना ॥८॥
आगि लागे पियवा तोर रहनिया रे ना ॥९॥
अइले पियवा दिनवा बिताई के रे ना ॥१०॥
बुढ़वा बेमार बाड़े जियरा डेरइले रे ना ॥११॥
रिन्हलीं[2] हम जनेरा[3] के भतिया[4] रे ना ॥१२॥
एक कवर[5] बुढ़वा खअहु न पवले रे ना ॥१३॥
फेरे बुढ़वा छतिया पर हथवा रे ना ॥१४॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरी सौत पूरब देश (बंगाल) से आ रही है। वह नाक में लौंग पहनती है ॥१–२॥

वह अपने दाँतों में मिस्सी और आँखों में सुरमा लगाती है ॥३–४॥

जब वह हँसती है, तब उसके दाँत झलकने लगते हैं और रोती है तो सुरमा गिरने लगता है ॥५–६॥

वह सोलहों शृंगार करके बाजार को चली। चौक बाजार में उससे मेरी भेंट हो गयी ॥७८॥

वह पति से कहती है—तुम्हारी चाल चलन मे आग लग जाय। तुम क्रीडा का समय व्यतीत करके अब आये हो ॥९–१०॥

---

१. सपत्नी। २. पकाना। ३. मक्का। ४. भात। ५. कौर, ग्रास।

स्त्री अपनी सखी से कहती है—मेरा बढ़ा पति बीमार है। इससे डर लगता है। उसके खाने के लिए मैंने मक्का का भात बनाया है॥११—१२॥

अभी बूढ़े ने एक कौर खाया भी नहीं था कि वह मेरी छाती पर हाथ फेरने लगा॥१३–१४॥

(२)

प्रसंग—किसी स्त्री के द्वारा ससुराल के दुःखों का वर्णन।

चेतहु[1] घरवा आपन। टेक

बाबा घरे रहलीं त बबुनी[2] कहवलीं।
आरे सइयाँ घरे चतुद सेयान ॥१॥ चेतहुँ घरवा आपन।
बाबा घरे रहलीं त दूध भात खइलीं।
आरे सइयाँ घरे सतुआ मोहाल[3] ॥२॥ चेतहुँ घर वा आपन।
बाबा घरे रइलीं त जुनरी पहिरलीं।
आरे सइया घरे लुगरी[4] पुरान॥३॥ चेतहु घरवा आपन।
बाबा घरे रहलीं त सेजिया पर सूतलीं।
आरे सइयाँ घरे टूट[5] ही मचान[6] ॥४॥ चेतहुँ घरवा आपन।

कोई स्त्री आप ही आप कह रही है कि अब मुझे अपने घर की चिन्ता करनी चाहिए। जब मैं अपने पिता के घर में थी, तब 'बच्ची' कहलाती थी। परन्तु पति के घर में अब चतुर तथा सयानी कहलाती हूँ। अतः अब मुझ चेतना चाहिए। ॥१॥

जब मैं पिता के घर में थी, तो दूध और भात खाती थी; परन्तु अब पति के घर में सत्तू भी दुर्लभ है॥२॥

जब पिता के घर में थी; तो सुन्दर साड़ी पहनती थी; परन्तु पति के घर में पुराना फटा हुआ वस्त्र पहनने को मिलता है ॥३॥

जब मैं पिता के घर में थी, तब सुन्दर सेज पर सोती थी; परन्तु अब पति के घर में टूटी हुई मचान पर सोना पड़ता है॥४॥

ससुराल के दुखों का कितना मार्मिक चित्रण है।

(३)

प्रसंग—किसी स्त्री का अपने पति से परदेश में शृंगार की वस्तुएँ मँगवाना।

१. चेत करो। २. बच्ची। ३. दुर्लभ। ४. फटा, पुराना वस्त्र। ५. टूटी हुई। ६. बाँस का बना हुआ बैठने का स्थान।

के[1] मोर जइहें रे उरुबी पुरुबिया रे जान ॥१॥
आरे के मोर जइहें[2] कलकतवा रे जान ॥२॥
देवर मोर जइहें रे उरुबी पुरुबिया रे जान ॥३॥
सइयाँ मोर जइहें कलकलवा रे जान ॥४॥
केइ रे लेअइहें लाल चोटी[3] बानावा रे जान ॥५॥
केइ रे लेअइहें फूल[4] गेनवा रे जान ॥६॥
देवर मोर लेअइहे लालचोटी बानावा रे जान ॥७॥
सइयाँ मोर ले अइहें फूल गेनवा रे जान ॥८॥
केइ रे लगइहें लाल चोटी बानावा रे जान ॥९॥
केइ रे खेलिहें फूल गेनवा रे जान ॥१०॥
देवर लगइहें लाल चोटी बानावा रे जान ॥११॥
हम पियवा खेलिवि फूल गेनवा रे जान ॥१२॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर का कौन आदमी पूरब देस को जायेगा और कौन कलकत्ता जायेगा ॥१–२॥

मेरा देवर पूरब देश को जायेगा और मेरा पति कलकत्ता जायेगा ॥३–४॥

मेरे लिए कौन लाल चोटी लायेगा और कौन फुलगेना लायेगा ॥५–६॥

मेरा देवर लाल चोटी लायेगा और मेरा पति फूलगेना लायेगा ॥७–८॥

मेरे बालों में कौन लाल चोटी बाँधेगा और कौन फूलगेना खेलेगा ॥९–१०॥

मेरा देवर मेरे बालों में लाल चोटी बांधेगा और मैं पति के साथ फूलगेना खेलूँगी ॥११–१२॥

(४)

प्रसंग—किसी कुलटा के प्रेम में फँस जाने के कारण पत्नी के द्वारा पति की निन्दा।

उहे सहरिया के बिटुइया[5] लुभाइ रे ले लेना। टेक
पूरुब गइले राजा पच्छिम गइले।
लोभाइ रे ले लेना, उहे सहर के बिटुइया ॥१॥ लुभाइ०
हम तोसे पूछिलें पातर बलमुआ कि कइसन हवे रे ना।
आरे सहरिया के बिटुइया कि कइसन हवे रे ना ॥२॥
पान अइसन पातरि लवंग अइसन[6] ढुरहुर[7]।
उनुकर हवे करिहइया[8] कि दुबिया[9] अइसन ना ॥३॥

१. कौन। २. जायेगा। ३. बालों को गूँथकर लगाया गया सूत या रेशम का झब्बा। ४. सूत का बना हुआ गोला-गेंदा जो बालों में शृंगार के लिए लगाया जाता है। ५. बिटिया, लड़की। ६. ऐसी, समान। ७. सुडौल। ८, कलेजा, कमर। ९. दूब।

आगि लगावहु सइयाँ तोरी रे रहनिया।
कि नासि रे दिहल ना, आपन कुल खानदानवा।।४।।

कोई स्त्री कहती है कि शहर की कोई युवती, सुन्दरी लड़की मेरे पति को लुभा लेती है। मेरा पति पश्चिम तथा पूरब दोनों ओर गया; परन्तु वह सभी जगह मोहित कर लिया गया।

वह स्त्री अपने पति को सम्बोधित करती हुई कहती है कि ऐ मेरे पतले बालम ! मैं तुमसे पूछती हूँ कि वह शहर की युवती लड़की—जिस पर तुम मोहित हो—कैसी है।।२।।

पति ने उत्तर दिया—वह लड़की पान के समान पतली, लौंग के समान सुडौल है और उसकी कमर दूब के समान पतली और मुलायम है।।३।।

स्त्री ने कहा—ऐ पति ! मैं तुम्हारे आचरण में आग लगाती हूँ, क्योंकि तुमने दुराचार के द्वारा अपने पवित्र कुल को नष्ट कर दिया है।।४।।

(५)

प्रसंग—क्रीड़ा के समय पत्नी का हार टूट जाना तथा पति के द्वारा उसे गुँथाने की प्रतिज्ञा।

कि रचि रचि ना।।टेक।।
बेंतवा चिरिय[1] मोहन बाँगाला छावावेले।
कि रचि रचिना,[2] मोहन काटेले[3] खिरिकिया।।१।। कि रचि०
ताहि ऊपर मोहन साजे सुख सेजिया।
कि रचि रचिना, आइ गइली सुख निनिया।।२।। कि रचि०
आधि हि राति मोहन बहियाँ लफवले।
कि रचि रचि ना, टूटि गइल गज मोतिया।।३।। कि रचि०
टूटे गज मोतिया, बिहरे[4] मोरी छतिया।
कि रचि रचि ना, बाबा के रे गजमोतिया।।४।। कि रचि०
लागे देहु सँवरो हो हाजीपुर के हटिया।
कि रचि रचि ना, हम गुहाइबि[5] गजमोतिया।।४।। कि रचि०

कोई स्त्री कहती है कि बेंत को चीरकर मेरे पति ने घर को छवाया है और उसने मकान में बड़े प्रेम से खिड़की बनवायी है।।१।।

उस बँगले के ऊपर पति ने सेज बिछाई और मुझे सुखपूर्वक नींद आ गयी।।२।।

आधी रात को पति ने मेरे स्तन-स्पर्श के लिए हाथ बढ़ाया, जिससे मेरी गजमुक्ता की माला टूट गयी।।३।।

१. चीर करके। २. प्रेम से। ३. बनाया। ४. फट जाना। ५. गुँथाऊँगा।

गज मुक्ता की माला टूटने के दुःख के कारण मेरी छाती फटने लगी ॥४॥

इस पर पति ने कहा कि ऐ साँवली स्त्री ! हाजीपुर की हाट—सोनपुर मेला—को लगने दो। मैं तुम्हारी गजमुक्ता की माला को उस समय गुँथा दूँगा ॥५॥

(६)

प्रसंग—कहार के लड़के से गीत सुनने की लिए किसी स्त्री की प्रार्थना।

लचकति आवेला बाँस के कहरिया रे ना ॥१॥
दइया कँहरत आवेले काँहारा के पूतवा रे ना ॥२॥
गोड़ तोरा लागिले काँहारा के बेटवा रे ना ॥३॥
दइया अपनी भजनिया मोंहि सुना देहु रे ना ॥४॥
जो तुहु रनिया रे सुनबू भजनिया रे ना ॥५॥
रनिया संकर[1] लडुइआ मोंहि खिआदेहु रे ना ॥६॥
हमरो रे लडुआ रे बिखिया[2] के मातल[3] रे ना ॥७॥
काँहारा जे खाला से हो मरि जाला रे ना ॥८॥
तहरो हि लडुआ रानी बिखिया के मातल रे ना ॥९॥
तहरो बिअहुआ[4] कइसे जियेला रे ना ॥१०॥
हमरो बिअहुआ हवे बड़ा रे बिसनिया[5] रे ना ॥११॥
उनुका त लडुआ नीमन[6] ना लागेला रे ना ॥१२॥

बाँस की काँवर लचकती हुई चली आ रही है और कहार का लड़का भार के बोझ से लदा हुआ कराहता चला आ रहा है ॥१–२॥

कोई स्त्री कहती कि ऐ कहाँर के लड़के ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। तुम अपना एक (गीत) मुझे सुनाओ ॥३–४॥

कहार के लड़के ने कहा—ऐ रानी ! यदि तुम मेरे गीत को सुनना चाहती हो, तो तुम मुझे शक्कर (चीनी) का लड्डू खिलाओ ॥५–६॥

इस पर रानी ने कहा—मेरा लड्डू विष से भरा हुआ है। जो कहार इसे खाता है, वह मर जाता है ॥७–८॥

कहार ने कहा—ऐ रानी ! यदि तुम्हारा लड्डू विष से भरा हुआ है, तो उसे खाकर तुम्हारा पति कैसे जीता है ?॥९—१०॥

स्त्री ने उत्तर दिया—मेरा पति बड़ा रूसनेवाला है। उसको लड्डू अच्छा ही नहीं लगता ॥११–१२॥

१. शक्कर। २. विष। ३. मत्त, भरा हुआ। ४. पति। ५. रुष्ट। ६. स्वादिष्ट।

(७)

प्रसंग—किसी सुन्दरी का चना भुनाने के लिए भाड़ पर जाना तथा उसके अनुपम सौन्दर्य को देखकर भड़भूंजे का मूच्छित हो जाना।

सेर भरि चानावा[1] सासु जोखि[2] दिहली, ननदि नापि[3] लिहली।
मोर बलमुआ हो, सांवरो चलेली घोनसारि[4] ॥१॥
दबिला[5] चलवली त छूटल आचारवा।
मोर बलमुआ हो, गोंड़वा[6] गिरेला मुरुछाई[7] ॥२॥
कि तोरा गोंड़वा रे अइली जाड़ा जुड़िया।
मोर बलमुआ हो कि तोरा बथेला कापार ॥३॥
नाहिं मोरा सँवरों रे आइल जाड़ा[8] जुड़िया।
मोर बलमुआ हो, नाहिं मोर बथेला[9] कापा ॥४॥
तहरो सुरति[10] देखि हम मुरुछइलीं।
मोर बलमुआ रे, तोहरो बलमुआ कइसन बाय[11] ॥५॥
हमरो बलमुआ रे, चान[12] अइसन सुन्नर[13]।
मोर बलमुआ रे, देखला में हियरा[14] जुड़ाय[15] ॥६॥

कोई स्त्री कहती है कि मेरी सास ने सेर भर चने को तौलकर तथा ननद ने उसे बरतन से नापकर दिया और मैं उसे भाड़ में भुनाने के लिए ले चली ॥१॥

जब मैंने उसे भूनने के लिए कलछुल चलायी तब मेरा आँचर हट गया और मेरे स्तनों को देखकर भड़भूँजा मूच्छित होकर गिर गया ॥२॥

मैंने पूछा कि ऐ भड़भूँजी ! क्या तुम्हें जुड़ैया आ गयी है अथवा तुम्हारा सिर दुख रहा है ॥३॥

उसने उत्तर दिया—न तो मुझे जड़ैया आती है और न मेरा सिर ही दुख रहा है ॥४॥

तुम्हारे अनुपम सौन्दर्य को देखकर मैं मूछित हो गया हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारा पति कैसा है ॥

स्त्री ने उत्तर दिया—मेरा पति चन्द्रमा के समान सुन्दर है, जिसको देखते ही हृदय शीतल हो जाता है ॥६॥

१. चना। २. तौलकर । ३. नाप कर। ४. भाड़। ५. मोटी कलछुल। ६. भड़भूजा। ७. मूछित। ८. जुड़ैया। ९. दुखता है। १०. सौन्दर्य। ११. है। १२. चन्द्रमा। १३. सुन्दर । १४. हृदय। १५. शीतल होना।

गोड़ के गीत

(१)

प्रसंग—सीताराम से भक्त की सहायता देने की प्रार्थना।

सीताराम, लछुमन, भरत, सतुरघन[१]; अगुआ[२] हउवे माहाबीरा।
जय जय नारायन त्रिभुवन सामी; हर देहिया के दुःख पीरा॥१॥
जरत अगिनि प्रह्लाद उबरले; गनिका पढ़ावत कीरा।
मध्य सभा में द्रोपदी प्रन[३] रखले; हरत दुसासन चीरा॥२॥
भारत में भरदूल[४] के अंडा; घड़ा तोरि के छिपाई।
ग्राह मारि गजराज उबरले;[५] संकट होई न सहाई॥३॥

कोई भक्त कहता है कि राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न चारों भाई भक्तवत्सल हैं और हनुमानजी इनके अगुआ हैं—अग्रदूत हैं। ऐ तीनों लोक के स्वामी, नारायण भगवान्! मेरे शरीर के दुःख और पीड़ा का हरण करो॥१॥

ऐ भगवन! आपने जलती हुई अग्नि से प्रह्लाद की रक्षा की, तोते को 'सीताराम' 'सीताराम' पढ़ानेवाली पापिनी वेश्या का उद्धार किया, कौरवों की भरी हुई सभा में द्रौपदी की लज्जा रखी, जब कि दुष्ट दुःशासन उसकी साड़ी को खींच रहा था॥२॥

महाभारत के युद्ध में आपने भरदूल पक्षी के अण्डे को घड़े में छिपा लिया और उसे नष्ट होने से बचा लिया। आपने मगर मारकर हाथी (गजराज) को बचाया। आज मैं भी संकट में पड़ा हुआ हूँ। अतः मेरी भी सहायता कीजिए॥३॥

(२)

प्रसंग—सीता के स्वयंवर में धनुष तोड़ने के लिए राजाओं का समागम।

सिया प्रन कठिन कठोर ए माई॥टेक॥
पिता जनक जी स्वयम्बर ठनले[६]; रचि के माड़ो छाई।
देस देस के भूप सब अइले; ताहि बिच धेनुहा[७] देत ओठगाई॥१॥
पहिले रावनु बानासुर अइले; तिल भरि भूमि ना सकेले छोड़ाई।
राजा जनक बचन एक बोलेले[८]; करि करुना बिलखाई॥२॥

१. शत्रुघ्न। २. अग्रदूत। ३. लज्जा। ४. पक्षी विशेष। ५. बचाया। ६. रचा है। ७. धनुष। ८. कहा।

वीर विहीन भइली बसुधा अब, तिल भरि भूमि ना सकेले छोड़ाई।
आतान बचन जब सुने वीर लछुमन; बात बोलेले अरथाई[1] ॥३॥
अइसन बात जनि बोल ए जनक जी;
अइसन[2] धेनुही तूरलीं लरिकाई ॥४॥
सिया प्रन कठिन कठोर ए माई ॥

सीता अपने माता से कहती है कि ऐ माता, पिताजी का प्रण अत्यन्त कठोर है। उन्होंने स्वयंवर रचा है और विवाह के लिए सुन्दर मण्डप बनवाया है। देश-देश के राजा इस स्वयंवर में आये हैं; परन्तु वे सब लोग धनुष को उठा कर भारी होने के कारण छोड़ देते हैं ॥१॥

पहले रावण फिर बाणासुर ने आकर धनुष को उठाया; परन्तु तिल भर भी कोई उसे जमीन से ऊपर नहीं उठा सका। इस पर दुःखी होकर जनक ने एक वचन कहा ॥२॥

जनक ने कहा—मैं समझता हूँ कि अब पृथ्वी वीरों से रहित हो गयी है; क्योंकि कोई भी इस धनुष को तिलभर भी नहीं उठा सकता। जब इस वचन को लक्ष्मणजी ने सुना, तब वे अर्थ सहित गंभीर वचन बोले ॥३॥

ऐ जनकजी! आप ऐसे गर्वयुक्त वचन मत बोलिए। इस तरह के अनेक धनुष—छोटे धनुष—मैंने अपने बचपन में अनेक बार तोड़े हैं ॥४॥

(३)

प्रसंग—पति के परदेस चले जाने पर स्त्री की चूड़ी फोड़ देने की धमकी।

फूल एक फूलि गइले; फूलेला दावानावा[3]।
पिया मोर गइले विदेसवा; कइ के गवनवा ॥१॥
जाँघ[4] तोर थाको रे पियवा; बँहियाँ लागो घुनवा[5]।
जाँहि हाथे डलले रे मुअना[6]; सिर में सेनुरवा ॥२॥
फोरबो में संकर चुरिया; मेटबि सेनुरवा।
हतबो में आल्हर[7] जियरा; तोहरे कारानावा ॥३॥
मति फोर संख के चूड़िया; मति मेटहु सेनुरवा।
जनि हत आल्हर जियरा; रहबो हजूरवा[8] ॥४॥

कोई स्त्री कहती है कि दौना के फूल फूल रहे हैं। मेरा पति गौना कराकर परदेस चला गया ॥१॥

१. अर्थयुक्त। २. इस प्रकार का। ३. पुष्प विशेष। ४. पैर। ५. कीड़ा। ६. एक गाली (मृतक) ७. कोमल। ८. सामने, प्रत्यक्ष।

(वियोग की कथा देने के कारण स्त्री पति को शाप देती हुई कहती है कि) ऐ पति ! परदेस जाते समय तुम्हारा पैर थक जाय और तुम्हारी उन बाहों में घुन लग जाय, जिन हाथों से तुमने मेरे सिर में सिन्दूर लगाया ॥२॥

मैं तुम्हारी वियोग-व्यथा के कारण अपनी शंख की चूड़ियों को फोड़ दूँगी ; सिन्दूर को मिटा दूँगी ; अपने कोमल प्राणों को नष्ट कर दूँगी ॥३॥

इस पर पति ने उत्तर दिया---ऐ स्त्री ! तुम अपनी शंख की चूड़ियों को मत फोड़ो, माँग के सिन्दूर को मत मिटाओ और अपने प्राणों को मत छोड़ो। मैं तुम्हारे सामने ही रहूँगा---परदेस नहीं जाऊँगा ॥४॥

इस गीत में स्त्री का उत्कट पति-प्रेम दिखाया गया है।

(४)

प्रसंग---स्त्री-पुरुष के कलह का वर्णन।

पियवा के कठिन करेजवा हो; सइयाँ बाउर[1] कइल। टेक॥
सूतल में रहली पिया संगे सेजिया;
बाते बाते बढ़ि गइले रेरिया[2] हो॥१॥ पियवा०
पहिले त पिया तुहु मोहि गरिअवल[3];
मोरी बोलिया त भइल[4] फकीरवा हो॥२॥
सइयाँ बाउर कइल।
बाट के बटोहिया तुहु मोरे भइया।
एहि रहिया देखल पियवा आभागवा हो॥३॥
सइयाँ बाउर कइल।
देखुईं में देखुईं[5] हो हाजीपुर के हटिया;
धनि जोगे[6] रतन बेसाहे[7] हो॥४॥
सइयाँ बाउर कइल।

कोई स्त्री कहती है कि मेरे पति का हृदय बड़ा ही कठिन है। उसने बहुत ही बुरा किया। मैं अपने पति के साथ सेज पर सोयी हुई थी ; बातों ही बातों में उससे झगड़ा हो गया॥१॥

ऐ पति ! पहले तुम्हीं ने मुझे गाली दी और मेरे उत्तर देने पर तुम फकीर (साधु) बन गये और विदेस को चले गये॥२॥

ऐ रास्ते के यात्री ! तुम पेरे भाई हो। क्या तुमने इस रास्ते से जाते हुए मेरे अभागे पति को देखा है॥३॥

१. बुरा। २. झगड़ा। ३. गाली दी। ४. हो गये। ५. देखा है। ६. लिए या योग्य। ७. खरीदता है।

यात्री ने उत्तर दिया—हाँ, हाँ, मैंने उसको हाजीपुर के हाट—सोनपुर के मेले—में अपनी स्त्री के योग्य रत्न और आभूषणों को खरीदते हुए देखा है ॥४॥

(५)

प्रसंग—गौने के समय ससुराल जाती हुई कन्या का विलाप। लोगों का उसे उपदेश।

रतन जतन करु, भजन के तन्न धरु;
सतगुरु अमृत हो राम, जतन कइसे राखबि ॥१॥
रतन पहिरि रामा चललीं बजरिया हो;
एहि बाटे रतन हेराइल, खोजत दिनवा बीतल ॥२॥
खेलत में रहलीं रामा सुपुली मउनिया;
अचक्के में अइले हो नियार, चलबि केसिया झारी ॥३॥
लाली लाली डड़िया रामा; सबुज रंग ओहरवा;
लागि गइले बत्तीस कहार ॥४॥
गोड़ तोरा लागिले अगिला काहांरवा;
तनि एक डोलिया बेलमाव ॥५॥
बाबा घरे रहनी त बबुनी कहवनी;
सइयां घरे चतुर सयान, चेतबि घरवा आपन ॥६॥
एक त अन्धारी राति चोरवा मूसेले थाती;
पियवा के बनिया ह कुबानि, सूतेला घरवा साझे ॥७॥
अब का तू झखेलू नारि, बइठेलू मन मारि;
घरी हो पहरवा के संग, समुझि दुखवा रोइबि ॥८॥

कोई स्त्री कहती है कि रत्न को यत्नपूर्वक रखना चाहिए, भजन करना चाहिए; सत्य गुरु के उपदेश रूपी अमृत को मैं यत्नपूर्वक कैसे रक्खूंगी. मैं रत्न आभूषण पहनकर संसार रूपी बाजार में चली। रास्ते में रत्न खो गया, जिसे खोजते इतने दिन बीत गये ॥१–२॥

मैं सुपुली-मौनी से खेल रही थी। अचानक मेरे गौने के दिन का समाचार आ गया। मेरी पालकी लाल थी; सब्ज रंग का ओहार (पर्दा) उस पर लगा था और मुझे ले चलने के लिए बत्तीस कहार लगे हुए थे ॥३॥

ऐ कहार! मैं तुम्हें प्रणाम करती हूँ। जरा मेरी डोली थोड़ी देर के लिए रोक दो! मैं अपने पिता के घर में बच्ची कहलाती थी; परन्तु पति के घर में चतुर, सयानी कहलाती हूँ ॥५–६॥

एक तो अन्धेरी रात्रि है और समय रूपी मूस—चूहा—जीवन रूपी धन को चुरा रहा है। पति की आदत बड़ी बुरी है। वह सन्ध्या को ही सो जाता है। कोई सखी कहती है—अब तू उदासीन होकर क्यों बैठी है। अब तो एक घड़ी या पहर का साथ है। अब दुःख करके रोने से क्या लाभ? अन्त में ससुराल तो जाना ही होगा ॥७–८॥

(६)

प्रसंग—परदेस जाते हुए पति को स्त्री का मना करना।

नरिअर के टीकवा[1] तूरेला दूनो हिकवा[2];
बर[3] तू घर ही रहित ना॥१॥
आरे भरित तुहू बखरी[4] के पनिया;
बहू तू घर ही रहित ना॥२॥
घर ही रहित दाल भात खइत;
सोइ त सीतल पटिया[5] ना॥३॥
बाल बचा से मिलि जुलि रहित;
करि त सुख व बिलसिया ना॥४॥
दुलहा घर ही रहित ना,
भरि त बखरी के पनिया॥५॥
दुलहा घर ही रहित ना।

कोई स्त्री अपने पति से कह रही है कि नारियल का टीका मुझे बड़ा ही कष्ट देता है। ऐ पति! यह बहुत अच्छा होता कि तुम घर पर ही रहते॥१॥

तुम खण्डहर में बैलों की नाद में पानी भरते और घर पर ही रहते॥२॥

ऐ पति! यदि तुम घर पर रहते, तो दाल और भात खाते तथा शीतल शय्या (या सीतल-पाटी) पर सोते॥३॥

तुम अपने बाल बच्चों के साथ सुखपूर्वक हिलमिल कर रहते और आनन्द से विलास करते॥४॥

ऐ पति! घर पर ही तुम रहते, तो अच्छा होता और खण्डसर में बैलों के नाद में पानी भरते॥५॥

(७)

प्रसंग—आभूषण के लिए स्त्री की लालसा।

हलबल[6] दलबल धुनिया धूने;
सूत काते हलुवाई।
फुफती तर के झुलनी झूले;
बुढवलि के कामाई॥१॥

१. आभूषण। २. शक्ति, ताकत। ३ बर, पति। ४. खण्डहर। ५. पाटी, सेज। ६. जल्दी में, जोरों से।

झुलनी मन के ना बनी।
खुर खुर खुर खुर टाटी[1] बोले;
हम जानि पियवा मोर।
पियवा के भेसे भेसे[2] अइले;
कागाना ले गइले चोर॥२॥
झुलनी मन के ना बनी।

दियवा बारि के छोटी ननदी;
महलिया में पइठल चोर।
झारि झूरि[3] के सब धन हरले;
झूलनी के बनवइहें मोर॥३॥

कालकाता के बजरिया,
झूलनी मन के ना बनी॥

कोई स्त्री कहती है कि धुनिया जोरों से रुई धुनता है और हलुवाई उसका सूत कातता है। मेरा गोपनीय अंग कम्पित हो रहा है। मेरे नाक की नथुनी इच्छानुसार सुन्दर ही बनी है॥१॥

मेरे घर का टट्टर खुर खुर आवाज़ करता है। मैंने समझा कि मेरा पति आ रहा है। पति के वेश में ही चोर आये और मेरे कंगन को चुरा ले गये॥२॥

ऐ मेरी छोटी ननद! दीपक जलाकर चोर मेरे महल घर में घुस आये और मेरा धन चुराकर लेकर चले गये। अब मेरी नथुनी को कौन बनवायेगा?॥३॥

कलकत्ता के बाजार में भी नथुनी मेरे इच्छानुसार नहीं बन सकी थी॥

(८)

प्रसंग—किसी गोपी का कृष्ण से अपनी गेडुरी माँगना।

गेडुरी[4] दहु लाल करबि झगरा। टेक
जब मोरा गेडुरी में लागत चाँदी;
सिरि भगवान् जी राखसु पानी[5]॥१॥ गेडुरी०
जब मोरा गेडुरी में लागल मोती;
जस चान सुरुज कर जोती[6]॥२॥ गेडुरी०
जब मोरा गेडुरी में लागल सोना;
सासु, ननद करे घरवा में टोना[7]॥३॥ गेडुरी०

१. टट्टर। २. वेश। ३. सब कुछ। ४. मिट्टी का घड़ा रखने का वृत्ताकार गोला। ५. इज्जत। ६. प्रकाश। ७. जादू।

जब मोरा गेडुरी में लागल हीरा;
तू त चोरवल[1] जाति अहीरा ॥४॥ गेडुरी०

कोई गोपी कृष्ण से कहती है कि तुम मेरी गेडुरी दे दो। नहीं तो मैं तुम से झगड़ा करूँगी। मेरी गेडुरी में चाँदी लगी हुई है। अब भगवान् ही मेरी इज्जत रक्खें ॥१॥

मेरी गेडुरी में मोती लगे हुए हैं। वे ऐसे मालूम होते हैं, जैसे सूर्य और चन्द्रमा का प्रकाश हो ॥२॥

मेरी गेडुरी में जब सोना लगता है, तब सास और ननद टोना-जादू कर देती हैं ॥३॥

मेरी गेडुरी में हीरा जड़ा हुआ है। ऐ कृष्ण ! तुम अहीर जाति के हो और चूँकि अहीर लोग प्रायः चोर होते हैं, अतः तुमने मेरी गेडुरी को चुरा लिया है ॥४॥

(९)

प्रसंग—'जिअरा नामक स्त्री का आनन्द-विलास वर्णन। ननद तथा भावज से प्रश्नोत्तर।

आमवा महुअवा के बाग ताहि रे बीच राह लगी।
आमवा के लामे[2] लामे पात टिकोरवा लटकि रहीं ॥१॥

'जियरा'[3] महुआ में लागि गइले कोंच[4], छतिया बिचे उठे जोबना।
'जिअरा' जोबन के मातल तिरियवा, महलिया में डासे सेजिया ॥२॥

'जिअरा' राति भर खेले हुय[5] हुगिया; भोरवा[6] में जाली नदिया।
'जिअरा' नदिया में मारेली डुबुकिया; सुखावे लामी केसिया ॥३॥

'जिअरा' हँसि के पूछे लहुरी ननदिया;
बताउ भउजी राति के बतिया[7]।
आवे देहु मास आगाहानावा[8], करबि तोर गवनवा;
तबे तुहु जनबू इहे बतिया ॥४॥

आम और महुए का बगीचा था, उसमें रास्ता बना हुआ था। आम वृक्ष के लम्बे-लम्बे पत्ते थे और उनमें टिकोरे लटक रहे थे ॥१॥

जब महुए के वृक्ष में 'कोहता' लगने लगे, तब जियरा नामक स्त्री की छाती पर स्तन वृद्धि को प्राप्त होने लगे। यौवन के मद से मस्त 'जियरा' महल में सेज बिछाने लगी ॥२॥

'जियरा' रात्रि भर तो आनन्द-विलास करती है और दिन को नदी में नहाने के लिए जाती है। वह नदी में डुबकी लगाती है और अपने लम्बे बालों को सुखाती है ॥३॥

१. चुरा लिया। २. लम्बी। ३. नाम (व्यक्तिका)। ४. कोइता नामक फल। ५. आनन्द विलास ६. प्रातःकाल। ७. बात। ८. अगहन।

'जियरा' की छोटी ननद उससे हँस कर पूछती है कि ऐ भावज ! रात्रि के जो बात हुई उसे मुझे बतलाओ। इस पर चतुर भावज ने उत्तर दिया कि अगहन का महीना आने दो। ऐ ननद ! मैं तुम्हारा गौना उस समय कर दूँगा। तभी तुम रात्रि की बात को ठीक तौर से समझ सकोगी ॥४॥

(१०)

प्रसङ्ग—सास तथा ननद के द्वारा बधू की ताड़ना।

गाँव के पछियवा झझरिया[१] एक पीपर हो राम।
ताहि तर रेसमी खेलेली झाकाझूमर[२] हो राम ॥१॥
केहु देला गेहुँआ रे, केहु रे जनेरवा[३] हो राम।
कवन बैरिनिया भेजावे, जवगोजई[४] हो राम ॥२॥
सासु देले गेहुँआ, ननदिया जनेरवा हो राम।
मोर गोतिनी भेजावे जवगोजई हो राम ॥३॥
सेर भरि गेहुँआ के एक झीकि[५] कइली हो राम।
छलकि छलकि गिरेला जवगोजई हो राम ॥४॥
सासु मोर मारे ननदिया गरिआवे हो राम।
गोतिनी बैरिनिया मोसे झगड़ा करेली हो राम ॥५॥

गाँव के पश्चिम की ओर हवादार एक पीपल का पेड़ है। वहीं पर रेशमी नामक स्त्री झकाझूमर (एक खेल) खेलती है ॥१॥

कोई गेहूँ देता है, कोई जनेरा (मक्का) देता है और कोई जौ गोजई भिजवाती है ॥२॥

सास गेहूँ देती है, ननद जनेरा देती है और दायादिन जौगोजई भिजवाती है ॥३॥

रेशमी कहती कि मैंने सेर भर गेहूँ को पीसने के लिए एक ही चक्की में लगा दिया, परन्तु जवगोजई छलक-छलक कर गिर पड़ती है ॥४॥

इस अपराध के कारण सास मुझे मारती है ; ननद गाली देती है और बैरिन दायादिन मुझसे झगड़ा करती है ॥५॥

देहातों में प्रायः देखा जाता है कि छोटी-छोटी बातों के लिए भी बहू और सास में झगड़ा हो जाता है और सास बहू की कपाल क्रिया तक कर बैठती है। उपर्युक्त गीत में इसी की एक झाँकी हमें देखने को मिलती है।

१. हवादार। २. एक खेल जिसे लड़कियाँ खेलती हैं। ३. मक्का। ४. जौ और गेहूँ से मिला हुआ अन्न। ५. चक्की में डाला गया कुछ अन्न।

पचरा

(१)

प्रसङ्ग—विविध देवताओं का स्मरण।

आरे पुरुब में सुमिरिलें[1] उगल[2] सुरुज जी के;
आरे पछिम में सुमिरिलें चन्नर[3] जोति हो।
आरे आठवा ही काठवा के नइया सिरिजल[4] हो;
आरे कँचन के माँगतारी माँग[5] हो॥१॥

भक्त कहता है कि पूर्व दिशा में मैं उगे हुए सूर्य की और पश्चिम में चन्द्रमा की ज्योति का स्मरण करता हूँ, जिन्होंने आठ काठ को मिलाकर नाव बनाई और उसके माँग—अगले भाग—को सोने का बनाया॥१॥

(२)

प्रसंग—कल्याण के लिए देवताओं का प्रस्थान।

आरे आगे त चढ़ेले सुरुज जी;
आरे पिछवा चढ़ेली चन्नर जोति हो।
आरे बिचवा में चढ़ेली हमरा विघिन[6] जी बहिनियाँ
नइया खेवेला[7] केवटा मलाह हो॥२॥

भक्त कहता है—उस नाव पर आगे सूर्य बैठते हैं और चन्द्रमा की ज्योति (प्रकाश) विराजमान है। उस नाव के बीच में हमारी विघन उपस्थित करने वाली बहन (काली, भगवती) विद्यमान है। मल्लाह नाव को खे रहा है॥२॥

भगवती अत्यन्त शीघ्र ही भक्तों पर ष्ट हो जाती हैं और किसी कार्य में बाधा उपस्थित कर देती हैं। इसीलिए इस पचरे में उन्हें 'बिघिनजी बहिनियाँ' कहा गया है॥

१. स्मरण करता हूँ। २. उदित। ३. चन्द्र। ४. बनाया। ५. नाव का अगला भाग। ६. विघ्न। ७. खेता है।

(३)

प्रसङ्ग—देवताओं का स्मरण (सुमिरन)

आरे उत्तर में सुमिरिलें उत्तर देवतवा;
दखिन में सुमिरों[१] बीर हनुमान हो।
आरे पूरुब में सुमिरिलें पूरुब देवतवा;
चलि भइलीं कमरू[२] का देस हो॥

उत्तर दिशा में मैं उत्तर के देवता का स्मरण करता हूँ और दक्षिण में वीर हनुमान् को ध्यान में लाता हूँ। पूर्व दिशा में मैं उस भगवती की अराधना करता हूँ, जो कामक्षा देश (आसाम) को चली गई हैं अर्थात् जो आसाम प्रान्त में कामक्षा देवी के मन्दिर में विराजमान है॥

(४)

प्रसङ्ग—भगवती देवी की प्रसन्नता के लिए हवन।

आरे हूम[३] भइले जाप[४] भइले;
धुंववाँ चलेला आकास हो।
आरे लेहु लेहु लेहु ए देबी;
धुंववाँ के बास[५] हो॥

भक्त देवी से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ऐ भगवती ! मैंने हवन किया तथा जप भी किया। हवन का धुँआ उठ कर ऊपर आकाश में जा रहा है। ऐ भगवती ! तुम इस धुएँ की गन्ध को ग्रहण करो॥

(५)

प्रसङ्ग—देव का पूजा करने वाले ब्राह्मण पुरोहित से प्रश्न

आरे कथि[६] केरा[७] लकड़ी ए बाबा;
आरे कथि केरा घीव हो।
आरे कथि के पलउए ए[८] बाभन;
आरे करेल आहुतिया[९] हो॥

देवी ब्राह्मण पुरोहित से पूछ रही हैं कि भगवती की प्रसन्नता के लिए हवन करते समय

१. स्मरण करता हूँ। २. कामाक्षा। ३. हवन। ४. जप। ५. सुगन्ध। ६. किस। ७. की। ८. पल्लव। ९. हवन।

तुम किस चीज़ की लकड़ी तथा किस जानवर का घी प्रयोग में लाओगे। ऐ ब्राह्मण ! तुम किस वृक्ष के पल्लव से हवन करोगे।

यज्ञ में यह सदा ध्यान में रक्खा जाता है कि यज्ञ की सामग्री—लकड़ी तथा घी शुद्ध होनी चाहिए। इसीलिए देवी पुरोहित से यह प्रश्न कर रही है। सामग्री अपवित्र होने से देवी अप्रसन्न हो जाती हैं।।

(६)

प्रसङ्ग—ब्राह्मण पुरोहित का देवी को उत्तर।

आरे आम के पलउआ ए देवी;
गइया[1] केरा घीव हो।
आरे परास[2] के लकड़िया ए देवी;
करीलें आहुतिया हो।।

ब्राह्मण कहता है कि ऐ देवी ! मैं आम के पल्लव, गाय का घी और पलाश की लकड़ी से हवन कर रहा हूँ।

हवन के लिए ये तीनों वस्तुएँ अत्यन्त पवित्र समझी जाती हैं।

(७)

प्रसङ्ग—देवी का ब्राह्मण से प्रश्न पूछना।

आरे केकरा आँगनवा दावना मड़ुअवा[3]
केकरा आँगनवा निमिया गाँछि हो।
काहाँवा जे फूलेला अड़हुल[4] फूलवा;
के मोर बाट जोहे हो।।

देवी ब्राह्मण से पूछती हैं कि दवना और मड़ुआ का फूल किसके आँगन में है और नीम का वृक्ष किसके घर में है। अड़हुल का फूल कहाँ खिलता है और कौन मेरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है।

देवी को दवना और मड़ुवा का फूल, नीम का गाछ और अड़हुल का लाल पुष्प अत्यन्त प्रिय है। देवी की पूजा इन्हीं फूलों से होती है। इसीलिए देवी इनके विषय में पूछ रही हैं।

(८)

प्रसङ्ग—ब्राह्मण का उत्तर।

१. गाय। २. पलास। ३. पुष्प विशेष। ४. लाल, सुन्दर एक फूल।

आरे मलिया आँगनवा दावना मड़ुअवा;
सेवका आँगनवा निमिया गाँछि हो।
आरे बगिया में फूलेला अड़हुल[1] फूलवा;
सेवक रउरी बाट जोहे हो॥

ब्राह्मण उत्तर देता है कि ऐ देवी! माली के आँगन में दौना और मड़ुआ का फूल खिला हुआ है और भक्त सेवक के आँगन में नीम का वृक्ष है। बाग में अड़हुल का फूल विकसित है और सेवक आपकी बाट देख रहा है।

(९)

प्रसङ्ग—भक्त सेवक की भगवती देवी से प्रार्थना।

आरे गंगा जी के गंगिवटि[2] माती;
त अवरु गंगाजल हो।
ए मनवा हाथवा खिअइले[3] घर लिपइत[4];
त रउरा चिते दाया नाहिं हो॥

भक्त भगवती से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि गंगाजी की नयी मिट्टी और गंगाजल से भगवती का पूजागृह लीपते-लीपते मेरा हाथ घिस गया, परन्तु देवी के चित्त में फिर भी दया नहीं आयी। भक्त की इस प्रगाढ़ भक्ति को देख करके भी देवी का हृदय नहीं पिघला॥

(१०)

प्रसङ्ग—सेवक का देवी से प्रश्न।

कौन फूल फूलेला लाहारलि[5];
कवन फूल रन्थ[6] साजे हो।
ए मइया कवना फूलवा रहेलू लोभाइ[7];
सेवक राउर बाट जोहे हो॥

सेवक कहता है कि कौन फूल अत्यन्त सुन्दर तथा ताजा फूलता है और किस फूल से आपका (भगवती) रथ सजाया जायेगा। ऐ माता! तुम किस फूल को अत्यन्त पसन्द करती हो! सेवक आगमन के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है।

१. एक प्रकार का लाल बड़ा फूल, जो देखने में बड़ा सुन्दर मालूम होता है; परन्तु सुगन्ध बहुत कम पाई जाती है। २. गंगा की नयी मिट्टी। ३. घिस गया। ४. लिपते हुए। ५. हरा, भरा। ६. रथ। ७. प्रसन्न होना, मोहित हो जाना।

(११)

प्रसङ्ग—देवी का उत्तर।

अड़हुल फूल फुलेला लाहारलि;
चम्पा फूल रन्थ साजे हो।
ए सेवका बेला फूल रहीलें लोभाई;
सेवकवा मोर रन्थ साजे[1] हो।।

देवी कहती है कि अड़हुल का फूल सुन्दर फूला हुआ है और चम्पा का फूल मेरे रथ को सुसज्जित करने के लिए लगाया जाता है। ऐ सेवक ! मैं बेला के फूल को बहुत पसंद करता हूँ। तुम मेरे रथ को सुसज्जित करो।

हमारे शास्त्रों में लिखा है कि प्रत्येक देवता का कोई न कोई वाहन या सवारी है। भगवती का वाहन गदहा है ; परन्तु वे उसे रथ में जोत कर नहीं चलतीं। फिर भी इस पचरे में रथ सजाने का उल्लेख है।

(१२)

प्रसङ्ग—सेवक की देवी से प्रार्थना।

दावना मड़ुअवा के टटिया;
देवघरवा भल सोभेला हो।
ए मइया झुर झुर लागेला बयारि;
सेवक राउर बाट जोहे हो।।

सेवक कहता है कि ऐ देवी ! दौना और मरुवा के फूल से सुसज्जित आपके पूजा गृह की टाटी (टट्टर) है ; अतः आपका देवघर—देवतागृह—बहुत ही सुशोभित हो रहा है। ऐ माता ! हवा धीमी-धीमी चलती हुई बड़ी सुन्दर लगती है। मैं सेवक आपकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

(१३)

प्रसङ्ग—सुग्गे को कामरूप जाकर कामाक्षा देवी को प्रसन्न कर लाने का आदेश।

हरियर सुगना रातुल[2] तोर ठोर[3] हो;
जाहु जाहु जाहु ए सुगना कवरू[4] का देस हो।
आरे रूसल[5] बाड़ी मोर देबिया ए सुगना;
तू हू त ले अइह मनाई हो।।

१. सुसज्जित करो। २. लाल। ३. चोंच। ४. कामाक्षा। ५. रुष्ट।

कोई भक्त रुष्ट देवी को प्रसन्न करने के लिए सुग्गा (तोता) से कहता है कि ऐ तोते ! तुम्हारा रंग हरा है और तुम्हारी चोंच लाल है। तुम कामाक्षा देवी के देश की ओर अर्थात् पूर्व चले जाओ। मेरी देवी रुष्ट हो गई है। उन्हें तुम प्रसन्न करके ले आओ।

(१४)

प्रसङ्ग—कामरूप से देवी का प्रस्थान।

कवरू देसवा से चलेली भगवती;
पहुँचेली मलिया आवास हो।
किया मोर सेवका बाझेला[1] देवघरवा[2];
किया जोहे बटिया हमार हो।।

(सुग्गा के वहाँ जाने पर देवी प्रसन्न होकर चल पड़ीं) कामाक्षा देश (आसाम) से भगवती चल पड़ी और माली के घर आ पहुँची। वे पूछने लगीं—क्या मेरा सेवक देवी-गृह में पूजा करने में फँसा है अथवा वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा है।

(१५)

प्रसङ्ग—देवी से प्रसन्न होने की प्रार्थना।

जागु जागु देविया जागु दुरुगवा[3];
जागु दिनवानाथ[4] हो।
जागु जागु इहवाँ[5] के डिहऊ[6];
तोहरे कइले बानी आस[7] हो।।

भक्त कहता है—ऐ देवी दुर्गा ! आज जग जाओ, अर्थात् प्रसन्न होओ (क्योंकि सोना या रुष्ट होना अप्रसन्नता का लक्षण है); ऐ दिन के स्वामी—सूर्य—आप भी प्रसन्न होइए। इस गाँव के ग्राम-देवता ! तुम भी जग कर दया करो, क्योंकि मैंने तुम्हारी ही आशा कर रक्खी है।

(१६)

प्रसङ्ग—डिहवार से प्रसन्न होने की प्रार्थना।

तोहरा के देबि ए डिहऊ;
हुमवा से जाप हो।
आजु आके देखु डिहवा;
होखु होसियार हो।।

१. फँसना, कार्य में व्यस्त होना। २. देवी का घर (पूजागृह)। ३. दुर्गा। ४. दीनानाथ, सूर्य। ५. यहाँ का। ६. ग्राम-देवता। ७. आशा।

आजु एहिजा[1] अतनी[2] ठइयाँ[3];
भारी परल बा[4] काम हो॥

भक्त कहता है कि ऐ ग्राम-देवता! मैं तुमको हवन और जप दूँगा अर्थात् तुम्हारे लिए हवन और जप करूँगा। ऐ ग्राम-देवता! आज तुम आओ और मेरे ऊपर दया करो। आज यहाँ—इस स्थान पर—तुम्हारे लिए बहुत बड़ा काम करने के लिए है। अर्थात् आज तुमको मेरे ऊपर दया कर बहुत बड़ा काम करना होगा।

(१७)

प्रसङ्ग—भगवती देवी की यात्रा। सेवक के द्वारा रुकने की प्रार्थना।

आरे लाली लाली डड़िया के सबुज ओहरवा हो;
लागि गइले बतीस कहार हो।
आरे गोड़ तोर लागिले अगिला काहारवा;
जरि एक डोलिया बेलमाव हो॥

लाल रंग की पालकी के ऊपर हरे रंग का परदा पड़ा हुआ है। उसमें बत्तीस पालकी ढोने वाले कहार लगे हुए हैं। ऐसी शानदार पालकी में मेरी भगवती चलती हैं। भक्त कहता है कि ऐ अगले कहार! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरता हूँ; भगवती की पालकी को थोड़ी देर के लिए रोक लो, जिससे वे मुझ गरीब की दशा को देख कर दया करें॥

(१८)

प्रसङ्ग—भगवती देवी का कालीपूर जाना।

डोलिया पर चढ़ि भइली काली[5] मोर देविया हो;
चलि भइली कालीपूर[6] के हाट हो।
काली जी से करेली भेटवा[7] चोटवा;
फेरु[8] डोलिया रे लवटाव हो॥

पालकी पर चढ़ कर मेरी काली (कृष्ण वर्ण की) भगवती कालीपूर के हाट—कलकत्ता—को चल पड़ी। वहाँ पर वे कलकत्ते की सुप्रसिद्ध कालीजी से भेंट मुलाकात करके फिर पालकी को लौटा कर चली आईं।

१. यहाँ। २. इस। ३. स्थान। ४. पड़ा है। ५. काले रंग की। ६. कालीजी का पुर-नगर अर्थात् कलकत्ता। ७. भेंट मुलाकात। ८. फिर।

(१९)

प्रसङ्ग—भगवती देवी का दूर देश का जाना।

आरे बान्धल बाड़े संकर लड्डइया हो;
अँवटल[1] बाड़े दूध हो।
आरे कर ना कलेउवा[2] ए देवी,
जइबू[3] बड़ी दूर हो॥

सेवक कहता है कि ऐ देवी! तुम को बहुत दूर जाना है; अतः तुम कुछ जलपान कर लो। तुम्हारे जलपान करने के लिए चीनी का लड्डू बाँध कर रक्खा हुआ है और दूध भी गर्म कर दिया गया है।

(२०)

प्रसङ्ग—देवी का इन्द्रपुर जाना।

आरे इन्दरपूर[4] लागल बाटे भारी रे कचहरिया;
ओही कचहरिया में बइठल[5] मोर भगवती हो।
अगल बगल[6] में बइठेले पंचवा;
बीचवा में बइठेली मोर रे बड़ी देबिया हो॥

इन्द्रपुर—स्वर्गलोक में बहुत बड़ी कचहरी (सभा) लगी हुई है और उसी कचहरी में मेरी भगवती बैठी हुई है। अगल-बगल इधर-उधर दूसरे देवता बैठे हुए हैं और बीच में मेरी श्रेष्ठ भगवती विराजमान हैं।

(२१)

प्रसङ्ग—रोगी भक्त की देवी से प्रार्थना

आरे मातावा घिनइले[7] अवरू पितवा घिनइले हो;
घिनइले नगरिया के लोग हो।
आरे सेनुरा के बान्हल[8] तिवई घिनइली हो,
घिनि गइले कुल परिवार हो॥

कोई कठिन रोग से ग्रस्त भक्त देवी से प्रार्थना करता हुआ कहता है कि ऐ देवी! मेरे भयंकर रोग को देख कर मेरे पिता और माता मुझ से घृणा करते हैं तथा नगर के लोग भी मुझे

१. गर्म किया गया। २. जलपान। ३. जाओगी। ४. इन्द्र का नगर (स्वर्गलोक)। ५. बैठी हुई है। ६. इधर उधर। ७. घृणा करती है। ८. बँधी हुई।

घृणा की दृष्टि से देखते हैं। सिन्दूर रूपी रस्सी से बँधी हुई विवाहिता स्त्री भी तथा कुल तथा परिवार के सब लोग मुझ से घृणा करते हैं।

(२२)

प्रसङ्ग—रोगी भक्त की प्रार्थना

मन के दुःखवा से हो प्रेम जोती गंगा डूबे चललीं;
से हो गंगा मोसे घिनाई हो।
उहवाँ से[1] उठलीं बिरिझ[2] बन गइलीं;
कुसवा उखारि डसली[3] सेज हो।।

ऐ देवी ! रोग के असह्य होने के कारण मैं गंगा में डूबने के लिए चला; परन्तु वह (शरण-दायिनी) गंगा भी मुझ से घणा करने लगी। वहाँ से उठकर मैं कठिन जंगल में चला गया और कुश को उखाड़ कर अपने लिए शय्या बनायी।।

(२३)

प्रसङ्ग—देवी का भक्त को आश्वासन।

आरे चलु चलु भगता रे आपन देवघरवा;
करु ना देवघर के सिंगार रे।
कइसे में चली देवी आपन देवघरवा;
बचल[4] बा ठटरी[5] हमार रे।।

रोग से अत्यन्त क्षीणकाय भक्त को आश्वासन देती हुई देवी कहती है कि ऐ भक्त ! देवीगृह में चलो और उसको सुसज्जित करो (तब मैं वहाँ आकर तुम्हारे रोग को छुड़ा दूँगी)। तब भक्त कहता है—ऐ देवी ! मैं अपने देवघर को कैसे चलूँ, क्योंकि रोग से क्षीण होने के कारण अब मेरी केवल ठटरी (अस्थि-पञ्जर) बच गयी है।

(२४)

प्रसंग—प्रसन्न होकर देवी का भक्त के शरीर में नयी जीवनशक्ति का संचार करना।

रुइया के फाहावा[6] से मांस के सिरिजली;
कानी अँगुरी चीरि डालेली प्रान हो।

१. वहाँ से। २. घना। ३. बिछाया। ४. बच गया है। ५. अस्थि पञ्जर। ६. रूई का फाहा, एक भाग।

घरवा ले अइली देविया देवघरवा;
दिया[1] बाती[2] बार[3] ना भाण्डार हो॥

देवी ने भक्त की दयनीय दशा पर प्रसन्न होकर रूई के टुकड़े से उसके शरीर में मांस की सृष्टि की; अपनी कनिष्ठिका अँगुली को चीरकर उसमें प्राण डाला, देवी देवघर को चली आई और भक्त से कहने लगी कि अपने भाण्डार में दीपक जलाओ॥

(२५)

प्रसङ्ग—भक्त की असमर्थता का वर्णन।

कइसे में बारी दीपक देवघरवा;
घरवा घरनी ना तेल ना बाती हो॥

देवी का उत्तर—

घरवा देबि घरनी[4] रे भगता;
भाड़ावा[5] देबि तेल हो।
सोने के दीयवा[6] रेसम केरि बाती;
बारु बारु[7] दियवा रे सेवका, जरेला सारी राती॥

भक्त कहता है—ऐ देवी! मैं अपने घर में दीपक कैसे जलाऊँ? मेरे घर में न तो स्त्री है, न तेल है और न बाती है। देवी ने उत्तर दिया—

ऐ भक्त! मैं तुम्हारे घर में स्त्री दूंगी और घड़े में तेल दूंगी। मैं सोने का दीपक और रेशम की बत्ती दूंगी। तुम अब दीपक को जलाओ, जिससे वह सारी रात जलता रहे॥

इस पचरे में देवी की प्रसन्नता का वर्णन किया गया है। भक्तवत्सला देवी का हृदय भक्त की दुर्दशा को देख कर अन्त में पिघल गया और अन्त में देवी ने भक्त को रोग-मुक्त ही नहीं किया, बल्कि उस के घर को धन तथा जन दोनों से भर दिया।

१. दीपक। २. बत्ती। ३. जलाओ। ४. स्त्री। ५. भाण्ड। ६. दीपक। ७. जलाओ।

निरगुन

(१)

प्रसंग —मृत्यु के समय जीव की दशा का वर्णन। परमात्मा से मिलने के लिए आत्मा की पुकार।

पाँच रे पचीस कोसे बसेले महाजन[1] हो।
आहो रामा कवना अवगुनवे हरि[2] मोरे रूसेले हो राम ॥१॥
बाट बटोहिया हो रामा, तुहु मोरे भइया हो।
आहो रामा एहि बाटे देखुब[3] हरि मोरे आपन हो राम ॥२॥
पाँच रे पचीस कोसे बसेले महाजन हो।
आहो रामा उहवें बसेले हरि तोर आपन हो राम ॥३॥
नाहिं देखलीं डोलीं[4] बाँस नाहि रे कहरिया[5] हो।
आहो रामा कवना अवगुनवे हरि मोर रूसल[6] हो राम ॥४॥
आइ गइले डोली बाँस अइले कहरिया हो।
आहो रामा कतहू ना देखलीं हरि मोर आपन हो राम ॥५॥
बहियाँ लफाई[7] हरिजी डोलिया चढ़वले हो।
आहो रामा सोना के महलिया[8] अगिया लागलि हो राम ॥६॥
कउड़िनि कउड़िनि[9] मायावा[10] बटोरलीं हो।
आहो रामा जँहवे के तँहवे उ तौंवाहल[11] हो राम ॥७॥
देहिया के मलि मलि जतन से रखलीं हो।
आहो रामा हंसा[12] के जाते मटिया मिलल हो राम ॥८॥
गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो।
आहो रामा जगवा में केहू नाहिं आपन हो राम ॥९॥

वह श्रेष्ठ पुरुष यहाँ से तीस कोस की दूरी पर रहता है, अर्थात् बहुत दूर स्थित है। न मालूम किस अवगुण के कारण मेरा पति (ईश्वर) मुझसे रुष्ट हो गया है ॥१॥

१. परमात्मा। २. पति (ईश्वर)। ३. देखा है। ४. पालकी। ५. पालकी ढोने वाले कहार। ६. रुष्ट। ७. बढ़ा कर। ८. संसार। ९. कौड़ी। १०. माया, (प्रेम, लोभ)। ११. व्यर्थ। १२. जीव।

स्त्री कहती है कि बाट में चलने वाले ऐ बटोही! तुम मेरे भाई लगते हो। क्या तुमने इस रास्ते से जाते हुए मेरे पति को देखा है॥२॥

बटोही ने उत्तर दिया—यहाँ से बहुत दूर महाजन (महान् पुरुष, ईश्वर) रहता है। वहीं पर तुम्हारा पति भी निवास करता है॥३॥

स्त्री ने कहा—मैंने अभी तक (मुझे ससुराल ले जाने के लिए) न तो पालकी ही देखी और न उसे ढोने वाले कहार ही। किस अवगुण के कारण मेरा पति रुष्ट हो गया है? ॥४॥

(गौने का समय समीप होने से मुझे ले चलने के लिए) पालकी और कहार भी आ गये। लेकिन मेरा पति (अज्ञानवश) दिखाई नहीं पड़ता है॥५॥

इतने में पति ने अपने हाथ से मुझे पकड़ कर डोली में बैठा दिया और सोने के महल में आग लग गई अर्थात् मृत्यु के बाद सारा धन-धान्य व्यर्थ पड़ा रह गया॥६॥

इस जीवन में थोड़ा-थोड़ा करके जो कुछ सांसारिक प्रेम मैंने बटोर रक्खा था, वह जहाँ का तहाँ ही व्यर्थ पड़ा रह गया ॥७॥

इस शरीर को मैंने मल-मल करके अत्यन्त स्वच्छ रखा था; परन्तु जीव (प्राण) के निकलते ही यह शरीर मिट्टी में मिल गया॥८॥

कबीरदासजी इस निर्गुन को गाते हैं और कहते हैं कि इस संसार में कोई अपना नहीं हैं, अर्थात् कोई मृत्यु के पश्चात् साथ देने वाला नहीं है॥९॥

(२)

प्रसङ्ग—ध्यान, जप के बिना बिताये गये जीवन की निरर्थकता पर पश्चात्ताप।

बाला मुनि बाला मुनि कुँइया[१] खोनवले हो राम॥ १॥
आहो रामा, डोरिया बरत[२] दिन बीतल हो राम॥ २॥
दस पाँच सखिया मिलि पनिया के चलली हो राम॥ ३॥
आहो रामा, कुँइयाँ परेला ठाठाकाल[३] हो राम॥ ४॥
टूटि गइल डोरिया; भठि[४] गइल कुँइयाँ हो राम॥ ५॥
आहो रामा झझकि[५] चलेले पनिहारिन हो राम॥ ६॥
ओह पार गंगा मइया, एह पार जमुना हो राम॥ ७॥
आहो रामा, बिचवा में जोगिया धुनिया लावेला हो राम॥ ८॥
मिलहु सखिया हो मिलहु सलेहरि हो राम॥ ९॥
आहो रामा, जोगिया के मड़इया[६] देखन जाइबि हो राम॥१०॥
जोगिया के मड़इया में बाजे बर हो बाजाना हो राम॥११॥
जोगिया के मड़इया में नाचेली सुरति[७] सोहागिनि[८] हो राम॥१२॥

१. कूप। २. बटते हुए। ३. शुष्क। ४. नष्ट हो गया। ५. क्रोधित। ६. झोपड़ी। ७. ध्यान। ८. स्त्री।

हिरि फिरि ताके[1] जोगिया, मुँह से ना बोलेला हो राम ।।१३।।
हिरि फिरि ताके जगवा में केहु नाहिं आपन हो राम ।।१४।।
गावेली सुरति सोहागिनि दुई निरगुनवा हो राम ।।१५।।
गाई गाई मनवा समुझावेली हो राम ।।१६।।
गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो राम ।।१७।।
आहो रामा जगवा में केहु नाहिं आपन हो राम ।।१८।।

बाला मुनि (ईश्वर) ने संसार रूपी कूप को खुदवाया अर्थात् संसार की सृष्टि की ।।१।।

उस कुँए से जल निकालने के लिए अर्थात् इस संसार से लाभ उठाने के लिए कर्मरूपी रस्सी को बटते-बटते ही मनुष्य का सारा जीवन बीत गया ।।२।।

दस, पाँच सखी (मनुष्य) मिलकर पानी निकालने को कुँए पर गई है; परन्तु वह बिल्कुल शुष्क हो गया था ।।३—४।।

कर्मरूपी रस्सी टूट गई और मायारूपी कूप नष्ट हो गया और सब पनिहारिन क्रोधित होकर लौट चलीं; अर्थात् जीवन की निस्सारता देखकर मनुष्य को बहुत पश्चात्ताप हुआ ।।५—६।।

इस पार गंगा थीं और उस पार में यमुना थीं। दोनों नदियों के बीच में एक जोगी धूनी रमा रहा था ।।७—८।।

कोई सखी कहती है कि सब सखी एकत्र होकर उस योगी की झोपड़ी को देखने के लिए चलें ।।९—१०।।

उस योगी की झोंपड़ी में बारह प्रकार के बाजे बज रहे हैं और उस में ध्यानरूपी स्त्री नाच रही है; अर्थात् योगी निर्विकल्पक समाधि में मग्न है ।।११—१२।।

योगी बार-बार सब का मुँह देखता है; परन्तु अपने मुँह से कुछ भी नहीं बोलता। मानों बार-बार वह यह बतला रहा हो कि संसार में कोई भी अपना नहीं है ।।१३—१४।।

ध्यानरूपी सुहागिन दो निर्गुन को गाती है और गा-गाकर अपने मन को समझाती है ।।१५—१६।।

कबीरदासजी इस निर्गुन को गाते हैं और गा-गाकर कहते हैं कि इस संसार में अपना कोई नहीं है ।।१७—१८।।

ये 'निर्गुन' वास्तव में कबीरदासजी के नहीं हैं, देहाती कवियों ने अपनी कविता को महत्त्व देने के लिए कबीर का नाम जोड़ दिया है।

(३)

प्रसङ्ग—पति का पत्नी के प्रति उत्कृष्ट तथा आदर्श प्रेम का वर्णन।

---

१. देखना।

सूतल रहनी पियवा संगे सेजिया ए राम।
ए राम हँसि के पूछेला छयेलवा[1] ए राम ॥१॥
हम तोसे पूछीलें सँवरो तिरियवा ए राम।
ए राम कवन कवन फलवा खइबू[2] ए राम ॥२॥
आम मोरा घर ही, इमिलिया[3] मोरा घर ही ए राम।
ए राम हम खाइबि पाकल[4] नरियरवा ए राम ॥३॥
अतना बचन सइयाँ सुन ही ना पवले ए राम।
ए राम चलि भइले ओहि मोरँग देसवा ए राम ॥४॥
बरहो बरसि पर लवटल बनिजरवा ए राम।
ए राम ओरिया[5] तर बइठे मनवा मारि ए राम ॥५॥
सब केहू लउके मोरा आँगना से दुअरवा ए राम।
ए राम साँवरो तिरियवा नइखी लउकत[6] अ ए राम ॥६॥
तहरो तिरियवा बबुआ मनवा मतलबी[7] ए राम।
तहरो गोबिन्द होइहें आमा के रसोइया ए राम ॥७॥
जो धनि रहिते आमा के रसोइया ए राम।
ए राम जेवना परोसत धनि झलकती ए राम ॥८॥
अइसनि आमा के डोम हाथ बेचितों ए राम।
अइसन बसल[8] गिरिहवा[9] मोर उजरली ए राम ॥९॥
बाट में चलत बटोहिया भइया हितवा ए राम।
ए राम एहि बाटे देखुअ साँवर तिरियवा ए राम ॥१०॥
देखुईं में देखुईं ओहि जमुना के तिरवा ए राम।
ए राम हाथ के घरिलवा सिरवा गेडुरि[10] ए राम ॥११॥
दाँतवाँ जे पइतीं रे जन्तर[11] मढ़इती ए राम।
ए राम केसिया के चँवर डोलइतीं राम ॥१२॥

कोई स्त्री कह रही है कि मैं अपने पति के साथ सेज पर सो रही थी; तब उस छैलवा (पति) ने हँस करके मुझसे पूछा ॥१॥

उसने कहा--ऐ साँवली स्त्री ! मैं तुमसे पूछता हूँ कि तुम कौन कौन से फल खाओगी ॥२॥

मेरे घर ही में आम और इमली है। तब स्त्री ने कहा कि मैं नारियल खाऊँगी ॥३॥

इतना बचन पति ने अभी सुना भी नहीं था कि वह मोरंग देश को चल पड़ा ॥४॥

१. सुन्दर, शौकीन पति। २. खाओगी। ३. इमली। ४. पक्का। ५. छप्पर का अगला भाग। ६. नहीं दिखती। ७. इच्छानुसार काम करने वाली। ८. व्यवस्थित, बसा हुआ। ९. गृह। १०. घड़ा रखने का गोला पात्र। ११. यन्त्र।

बारह वर्ष के बाद वह (पति) व्यापारियों के झुण्ड के साथ आया और उदासीन होकर ओरी के नीचे बैठ गया ॥५॥

पति कहता है—सब लोग मुझे दरवाजे पर दिखाई पड़ते हैं; परन्तु वह साँवली स्त्री देखने में नहीं आती ॥६॥

माता ने उत्तर दिया—ऐ पुत्र ! तुम्हारी स्त्री अपने मन की मतलबी है, अर्थात् अपनी स्वतन्त्र इच्छानुसार कार्य करने वाली है। वह तुम्हारे पुत्र के साथ रसोई घर में होगी ॥७॥

पुत्र ने उत्तर दिया—ऐ माता ! यदि मेरी स्त्री रसोई घर में होती, तो भोजन परोसते समय अवश्य दिखाई पड़ती ॥८॥

(संभवतः अपनी स्त्री की मृत्यु का कारण माता को समझ कर) पुत्र ने कहा कि ऐसी माता को मैं डोम के हाथ बेच दूँगा, जिसने मेरी स्त्री का बध किया है और इस प्रकार मेरे बसे हुए घर (गृहस्थी) को उजाड़ दिया है ॥९॥

वह राह में चलते हुए बटोही से पूछता है कि तुमने मेरी साँवली स्त्री को इस रास्ते से जाते हुए देखा है ॥१०॥

बटोही ने कहा—हाँ, मैंने जमुना के किनारे हाथ में घड़ा और सिर पर गेडुर लिए हुए उसे देखा है ॥११॥

पति ने कहा—यदि उस मृत स्त्री के दाँत को मैं पा जाऊँ, तो मैं यन्त्र मढ़ा कर उसे पहनूँ और उसके बालों को चँवर बना कर हिलाता फिरूँ ॥१२॥

(४)

प्रसङ्ग—देवर के कलुषित प्रेम तथा पति के सच्चे प्रेम का वर्णन।

नदिया के तीरे देवरु बछरु[1] चरावेले।
कि आहो मोरे रामा, साँवनवाँ रे झड़ी लागेला ए राम ॥१॥
बाट में चलत बटोहिया भइया हितवा।
कि आहो मोरे रामा, हमरो सनेसवा लेले जइह ए राम ॥२॥
हमरो सनेसवा तुहु देवरा के कहिह।
कि आहो मोरे रामा, भऊजिया तोरी बोलावेले ए राम ॥३॥
आताना बचन देवरु सुनही ना पवले।
कि आहो मोरे रामा, जहजिया रे चढ़ि आवेले ए राम ॥४॥
अइलनि देवरु चौकटवा चढ़ि बइठेले।
कि आहो मोरे रामा, सरब दुःखवा अवहेला[2] ए राम ॥५॥
डाड़ मोर बथेला कपार[3] मोर टनकेला[4]।
कि आहो मोरे रामा, सरब दुःखवा अवहेला ए राम ॥६॥

१. बछड़ा (वत्स)। २. मालूम होना। ३. सिर। ४. दर्द करना।

आताना बचन देवरु सुनही ना पवले।
कि आहो मोरे रामा, खिड़किया से कूदि के भगले ए राम ॥७॥

बाट में चलत बटोहिया भइया हितवा।
कि आहो मोरे रामा, मोर रे सनेसवा ले ले जइहे ए राम ॥८॥

मोर रे सनेसवा पियवा से जाइ कहिहे।
कि आहो मोरे रामा, धनिया तोरि बोलावेली ए राम ॥९॥

आताना बचन प्रभु सुनही ना पवले।
कि आहो मोरे रामा, नौकरिया छोड़ि धावल आवेले ए राम ॥१०॥

अइलनि सइयाँ सेजरिया[१] चढ़ि बइठेले।
कि आहो मोरे रामा, सरब दुःखवा अवहेला ए राम ॥११॥

घरि राति गइली, पहर राति गइली।
कि आहो मोरे रामा, सरब[२] दुःखवा भागेला ए राम ॥१२॥

कोई प्रोषितपतिका स्त्री कहती है कि नदी के तीर पर मेरा देवर बछड़ों को चराता है। इस सावन के महीने में वर्षा की झड़ी लगी हुई है ॥१॥

स्त्री कहती है कि राह में चलते हुए ऐ मेरे बटोही भाई ! मेरा सन्देश जरा लेते जाना ॥२॥

तुम मेरा सन्देश देवर को देना और उससे कहना कि तुम्हारी भावज तुमको बुला रही है ॥३॥

(बटोही ने यह सन्देश देवर से कहा और) वह इतना सुन भी न पाया था कि जहाज पर चढ़कर चला आया ॥४॥

देवर आया और चौखट पर आकर बैठ गया। उसे देखकर मुझे सब दुःख देह में व्याप्त होने लगे ॥५॥

मेरी कमर में दर्द होने लगा और सिर दुःखने लगा। इस प्रकार सब दुःख व्याप्त हो गये ॥६॥

(कामुक देवर भावज की ऐसी दुःखद अवस्था में क्रीड़ा-विलास की संभावना न देखकर) इतना वचन अभी सुनने भी न पाया था कि खिड़की से कूदकर वह भाग गया ॥७॥

फिर वह स्त्री कहती है कि ऐ बटोही ! तुम मेरे सन्देश को लेते जाना और मेरे इस सन्देश को पति को दे देना तथा उमसे कहना कि तुम्हारी स्त्री तुम्हें बुला रही है ॥८—९॥

स्त्री के इस सन्देश को पूर्ण रूप से पति अभी सुनने भी न पाया था कि अपनी नौकरी छोड़कर घर चला आया ॥१०॥

१. सेज, पलंग। २. सर्व, सब।

पति घर आया और सेज पर चढ़कर बैठ गया। उस समय सारे शरीर में दुःख व्याप्त हो रहा था ॥११॥

(पति के आने के आनन्द के कारण) एक घड़ी या एक रात बीतते ही शरीर का सारा दुःख भाग गया ॥१२॥

इस गीत में कामुक देवर का झूठा प्रेम तथा पति के सच्चे प्रेम का अच्छा खाका खींचा गया है।

(५)

प्रसङ्ग—निराश्रय आत्मा की पुकार।

बाला जोगी बाला जोगी कुववाँ खोनवले।
कि आहो मोरे रामा, डोरिया हो बरत दिन बीते ए राम ॥१॥
टूटि गइले डोरिया भसि गइले कुववाँ।
कि आहो मोरे रामा, केकरा रे दुअरिया[1] दिनवा[2] काटबि ए राम ॥२॥
हाथ छूछ फाँड़ छूछ[3] केहू नाहिं बात पूछे।
कि आहो मोरे रामा, केकरा[4] हो दुअरिया दिनवा काटबि ए राम ॥३॥
नइहर में माई नाहीं; ससुरा में सइयाँ नाहीं।
कि आहो मोरे रामा, केकरा हो दुअरिया दिनवा काटबि ए राम ॥४॥

कोई स्त्री कह रही है कि बाला जोगी ने कुआँ बनवाया और उस कुएँ से जल निकालने के लिए रस्सी बँटते ही मेरा सारा जीवन व्यतीत हो गया ॥१॥

रस्सी टूट गयी और कुँआ नष्ट हो गया। अब किसके दरवाजे पर मैं अपने दिन काटूँगी अर्थात् समय बिताऊँगी ॥२॥

मेरे हाथ में, अञ्चल में कुछ भी द्रव्य नहीं है ; अतः कोई मेरी बात नहीं पूछता। अब मैं किसके दरवाजे पर समय बिताऊँगी ॥३॥

मेरे मायके में माता जीवित नहीं हैं और न ससुराल में पति ही है। अब मैं किसके दरवाजे पर अपना समय व्यतीत करूँगी ॥४॥

इस निर्गुन का भाव यह है कि निराश्रय जीव को ईश्वर के बिना भला कौन पूछ सकता है।

(६)

प्रसङ्ग—किसी गोपी से कृष्ण की गोरस लेने की चेष्टा। गोपी का मना करना तथा मथुरा न आने की धमकी।

१. द्वार। २. दिन काटना, कष्ट से समय बिताना। ३. रिक्त, खाली। ४. किसके।

आरे दहि बेंचत चलली रामा जमुना किनरवा हो।
कि आहो मोरे रामा, आधी डहरी[1] रगरा[2] मचावेला ए राम।।१।।
दहि मोर खइले रामा, फोरेले मटुक सिरवा।
कि आहो मोरे रामा, गेडुरी रे जमुना में दहवावेला ए राम।।२।।
जइसे इ गेडुरी रामा जमुना में लाहारलि[3] मारे।
कि आहो मोरे रामा, ओइसे बिहरेला[4] करेजवा मोर ए राम।।३।।
बाँहि मोर पकड़ि लेले, बोलीलें त गारी देले।
कि आहो मोरे रामा, हम के ले जाले कुञ्ज बन भीतर ए राम।।४।।
बाँहि मोर छीड़ि देहू, कहिलें से[5] मानि लेहू।
कि आहो मोरे रामा, बिहने[6] फजीरे[7] भेंटवा करबि ए राम।।५।।
कहेला भिखारी राम अतना निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, फिरि नाहि आइबि एहि जमुनवा ए राम।।६।।

कोई गोपी कहती है—मैं जमुना के किनारे दही बेचने को चली कि रास्ते ही में कृष्ण ने झगड़ा करना शुरू कर दिया।।१।।

उस ने मेरे दही को खा लिया और मेरे सिर पर रक्खे हुए दही के बर्तन को फोड़ दिया और गेडुरी को जमुना के जल में बहा दिया।।२।।

जिस प्रकार से यह गेडुरी जमुना में छिछली मारती है, उसी प्रकार मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है।।३।।

कृष्ण ने मेरी बाँह को पकड़ लिया है और कुछ छोड़ने के लिए कहती हूँ, तो गाली देते हैं। मुझे बलपूर्वक कुञ्जवन के भीतर ले जाते हैं।।४।।

गोपी कृष्ण से कहती है कि तुम मेरी बाँह को छोड़ दो; जो कहती हूँ, उसे मान लो। मैं कल प्रातःकाल तुम से भेंट करूँगी।।५।।

भिखारी राम निर्गुन को गाते हुए कहते हैं कि फिर मैं (गोपी) जमुना के किनारे नहीं आऊँगी।।६।।

(७)

प्रसङ्ग—दही बेचने के लिए गोपियों का मथुरा आना और कृष्ण की मोहनी मुरली सुनकर मोहित हो जाना।

दही बेंचन चललीं रामा, अब सखी लेके संगवा में।
कि आहो मोरे रामा, डहरी में हरि जी भेंटइले हो रामा।।१।।

---

१. मार्ग। २. झगड़ा। ३. छिछली। ४. विदीर्ण होना, फट जाना। ५. वह। ६. प्रातःकाल। ७. उषाकाल।

सब सखियाँ जे अब आगे पीछे चलली हो।
कि आहो मोरे रामा, हमरा के बिचवा में डालेली हो राम ।।२।।
पहिले आवाज रामा बँसुरी बजवले हो।
कि आहो मोरे रामा, सखि सब मोह परिगइली हो राम ।।३।।
आरे मुरली के धुनि सुनि दहिया उतरलीं हो।
कि आहो मोरे रामा, सुनें लगलीं बँसुरी के सबदिया हो राम ।।४।।
कवन डगरिया से बँसुरी सुनि अइली हो।
कि आहो मोरे रामा, कवन डगरिया अब मैं जाइबि हो राम ।।५।।
कहेला भिखारी राम अतना निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, फेर नाहि जाइबि ओहि डगरिया हो राम ।।६।।

कोई गोपी कहती है कि सब सखिया को संग मे लेकर मै दही बेचने के लिए चली। रास्ते मे कृष्णजी मिल गये ।।१।।

कृष्णजी को देखकर सब सखिआ आगे और पीछे हो गयी और मुझे बीच मे कर दिया ।।२।।

पहले शब्द मे कृष्ण ने वंशी को आवाज की अर्थात बजाया। बाँसुरी के शब्द को सुनकर सब सखियाँ मोहित हो गयी ।।३।।

मुरली की आवाज को सुनने के लिए सब ने अपने दही का पात्र उतार लिया तथा वंशी के शब्द को ध्यान से सुनने लगी ।।४।।

वे आपस मे पूछती है कि किस रास्ते से बाँसुरी की आवाज आ रही है और अब हम लोग किस रास्ते से घर जायेगी ।।५।।

भिखारीराम निर्गुन को गाता हुआ कहता है कि मै (गोपी) इस रास्ते से नही आऊँगी ।।६।।

(८)

प्रसङ्ग—प्रोषितपतिका स्त्री का विरह-वर्णन।

एक तो मैं बारी भोरी, दूसरे पिया जी के चाकी।
कि आहो मोरे रामा; तिसरे बिरह के देहिया मातल ए राम ।।१।।
फूलि लोहें गइलीं बागी, चुनरी मोरि अटकेली।
कि आहो मोरे रामा; पिया बिनो केहू ना छोड़ावेली ए राम ।।२।।
सिकिया से बोरि बोरि कइली हो काजारावा हो।
कि आहो मोरे रामा, ढरकत लोरवा चोलिया भीजेला हो राम ।।३।।

१. शब्द। २. पुनः, फिर। ३. उस। ४. कम आयु वाली। ५. बावली। ६. हर लिया गया है। ७. मतवाला। ८. डुबाकर। ९. आँसू।

एक दिन चढ़ली बारी, पिया के अटरिया हो।
कि आहो मोरे रामा, मनवा में करेली बिचार नु एक राम ॥४॥
जोगी के आँगानावा रामा, अनंद[1] बाधाव बाजे।
कि आहो मोरे रामा, नाचतारी सुरति सोहागिनि हो राम ॥५॥
गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, गाइ गाइ सखी समुझावेले हो राम ॥६॥

कोई विरहिणी स्त्री कहती है कि एक तो मैं स्वयं छोटी तथा भोली हूँ, दूसरे मेरा प्रिय परदेस चला गया है और तीसरे विरह के कारण मेरा शरीर मतवाला हो रहा है ॥१॥

मैं बाग में फूल चुनने गई थी। वहाँ पर मेरी चुनरी काटों में उलझ गई। मेरे पति के बिना कोई उसे छुड़ाने वाला नहीं था ॥२॥

मैंने सींक से लेकर काजल लगायाँ तथा मेरी आँखों के आसुओं से मेरी चोली भीज गई ॥३॥

एक दिन मैं अटारी पर प्रियतम को देखने के लिए चढ़ी और अपगे मन में विचार करने लगी ॥४॥

मैंने देखा कि एक जोगी (प्रियतम) के आँगन में आनन्द का बधावा बजा रहा है और ध्यान रूपी स्त्री नाच रही है ॥५॥

कबीरदासजी निर्गुन गाते हैं और गा-गाकर सखियों को समझाते हैं ॥६॥

(९)

प्रसङ्ग—दान-पुण्य न करने से उत्पन्न पश्चात्ताप का वर्णन।

नाहिं कइलीं दान पुनवा, अवरू[2] धरमवा हो।
कि आहो मोरे रामा, पिया अइले गवना करावे हो राम ॥१॥

माई देली गाहाना, पिता जी देले गइया हो।
कि आहो मोरे रामा, चलहीं के बेरिया[3] सब कुछ छूटल ए ॥२॥

जाहु हम जनितीं रामा, सभ कुछु छूटिहें हो।
कि आहो मोरे रामा, दान धरमवा खूब करितीं हो राम ॥४॥

बाभाना[4] खिअइतीं[5] रामा; गंगवा नहइतीं हो।
कि आहो मोरे रामा, बनि अइते मुकुती[6] हमार नु ए राम ॥४॥

गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, गाइ गाइ सखी समुझावेले ए राम ॥५॥

१. आनन्द। २. और। ३. समय। ४. ब्राह्मण। ५. खिलाती। ६. मुक्ति, मोक्ष।

कोई स्त्री कह रही है कि मैंने दान-पुण्य और धर्म का कार्य कुछ भी नहीं किया कि इतने में प्रियतम गौना कराने के लिए चला आया ; अर्थात् मृत्यु का समय समीप चला आया ॥१॥

मेरी माता ने गहना दिया और पिता ने गाय दी ; परन्तु ससुराल जाते समय सब कुछ छूट गया ॥२॥

यदि मैं जानती कि ससुराल जाते समय सब कुछ छूट जायेगा, तो मैं धर्म तथा दान खूब कर लेती ॥३॥

मैं ब्राह्मण को भोजन कराती और गंगा-स्नान करती, जिससे मेरी मुक्ति बन जाती ॥४॥

कबीरदासजी निर्गुन गाकर सब सखियों को समझा रहे हैं ॥५॥

(१०)

प्रसङ्ग—दुष्ट सास की कठोरता का वर्णन ; नयी बधू की उक्ति।

पहिले ओहीले हम अइनीं गावानावा हो।
कि आहो मोरे रामा, पानी के भेजावेली सासु हो राम ॥१॥
देखलीं कुँवा के रीति[1] मन मुसुकइलीं हो।
कि आहो मोरे रामा, कुँइया पर लागेला भीरिया[2] हो राम ॥२॥
माथ पर माटी के ले चललीं मटुकिया हो।
कि आहो मोरे रामा, डाड़[3] पर गगरी ले चललीं हो राम ॥३॥
डोलवा से पानी भरि, भरलीं गगरिया[4] हो।
कि आहो मोरे रामा, भीरिया में फूटेली गगरिया मोर हो राम ॥४॥
बोली मोर भींजि गइले, सेनुर[5] छुटि गइले हो।
कि आहो मोरे रामा, पियवा से कवन मुंह देखाइबि हो राम ॥५॥
गावेले कबीरदास इहे निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, गाइ गाइ सखि समुझावेले हो राम ॥६॥

बधू कह रही है कि जब मैं सर्वप्रथम गौना होने के बाद ससुराल आई, तब सास ने पानी भरने के लिए कुँए पर भेज दिया ॥१॥

मैंने कुँएँ पर इकट्ठी भीड़ को देखा और मन में मैं मुसकाने लगी ॥२॥

मैंने सिर पर मट्टी का मटका लिया और कमर पर गगरी को रक्खा और उसे लेकर चली ॥३॥

मैंने डोल से घड़े में पानी भर दिया; परन्तु ज्योंही उसे भर कर ले चलने लगी, त्यों ही भीड़ की अधिकता के कारण मेरी गगरी फूट गयी ॥४॥

१. ढंग, प्रकार। २. भाड़। ३. कमर। ४. छोटा घड़ा। ५. सिन्दूर।

घड़े को फूटने से मेरी चोली भीग गयी और सिर का सिन्दूर छूट (भूल) गया। अब मैं अपने पति को कौन-सा मुँह दिखलाऊँगी; क्योंकि मेरा रूप कुरूप हो गया है ॥५॥

कबीरदास निर्गुन गाकर सखियों को समझाते हैं ॥६॥

(११)

प्रसङ्ग—विरक्त भाई को बहन के द्वारा तपस्या छुड़ाकर घर लौटाने का प्रयत्न। भाई की अलौकिक निर्ममता।

पिसि देहु पिसि देहु भउजी, जिरहुलि[1] सतुइया[2] हो।
कि आहो मोरे रामा, हम जाइबि भइया के उदेसवा[3] नु ए राम ॥१॥
एक बने गइलीं रामा, दुई बने गइली हो।
कि आहो मोरे रामा, तीसरे बने धुइयाँ रमावेला ए राम ॥२॥
छोड़ु छोड़ु जोगिया रे जंगल के धुइयाँ हो।
कि आहो मोरे रामा, भउजी के रोवले छतिया फाटेला ए राम ॥३॥
कइसे के छोड़ीं बहिना जंगल के धुइयाँ[4] हो।
कि आहो मोरे रामा, दुनिया से नेहिया[5] अब त छूटल ए राम ॥४॥
गावेले कबीरदास यह निरगुनवा हो।
कि आहो मोरे रामा, गाइ आइ सखी समुझावेले हो राम ॥५॥

कोई ननद अपनी भावज से कह रही है कि ऐ भावज! तुम मेरे लिए बारीक सत्तू पीस दो। मैं अपने भाई को लौटाने के लिए जाऊँगी ॥१॥

मैं एक बन में गयी, दूसरे बन में गयी; परन्तु तीसरे बन में जाकर देखा कि भाई जंगल में धूनी रमा रहा है ॥२॥

मैंने उससे कहा कि ऐ भाई! तुम बन में धूनी रमाना छोड़ दो। तुम्हारे वियोग में भावज के रोने के कारण मेरा हृदय फटा जा रहा है ॥३॥

तब भाई ने कहा—ऐ बहन! मैं धूनी रमाना कैसे छोड़ दूँ। अब तो मैंने संसार की सब मोह-माया छोड़ दी है। अतः उसे कैसे छोड़ूँ ॥४॥

कबीरदासजी यह निर्गुन गाते हैं और गा-गाकर सखियों को समझाते हैं ॥५॥

---

१. बारीक। २. सत्तू। ३. उद्देश्य, खोज। ४. धूनी। ५. स्नेह, प्रेम।

देशभक्ति

(११)

प्रसङ्ग—देश-दशा का वर्णन तथा चरखा चलाने की अपील।

गाँधी के आइल जमाना[1] देवर जेलखाना अब गइले[2]
जब से तपे सरकार बहादुर, भारत मरे बिनु दाना ॥१॥
देवर जेलखाना०

हाथ हथकड़िया बा गोड़वा[3] में बेड़िया;
देसवा भरि होइल दिवाना[4] ॥२॥
देवर जेलखाना०

इज्जत राखि लेहु भारत मइया;
चरखा चलावहु मसताना[5] ॥३॥
देवर जेलखाना०

कमला, सरोजिनी, विजया के [illegible];
नाम [illegible] कइली [illegible] ॥४॥
देवर जेलखाना०

कोई भावज अपने देवर से कहती है कि अब महात्मा गाँधी का समय आ गया। देश-सेवा के लिए अब तुम को जेल जाना होगा। जब से सरकार बहादुर का राज्य हुआ है, तब से भारत अन्न की कमी के कारण मर रहा है ॥१॥

अब देशभक्तों के हाथ मे हथकडी है और पैरो मे बेडी है। सारा देश पागल हो गया है ॥२॥

ऐ देवर! अब तुम भारतमाता की लाज रख लो और मस्त (मग्न) होकर चरखा चलाओ ॥३॥

कमला देवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू और विजय लक्ष्मी पण्डित ने मर्दों के समान बहादुरी के कार्य किये है; अत तुम भी देशसेवा मे लग जाओ ॥४॥

---

१. समय। २. जाना होगा। ३. पैर। ४. पागल। ५. मस्त, लीन।

(२)

प्रसङ्ग—देश-दुर्दशा का वर्णन।

गुनि गुनि बिहरति[1] छतिया कि देखि लेइ हो।
गांधी, सुभास ओ जवाहर भइले जोगिया, कि देस लागि हो॥१॥
सखिया तू बनहु जोगिनिया कि देस लागि[2] हो।
काटि देहु, काटि देहु, काटि देहु बहिनों कि काटि देहु हो॥२॥
भारत मइया के बिपति के जालवा[3] कि काटि देहु हो॥३॥

कोई स्त्री अपनी सखियों को उत्साहित करती हुई कह रही है कि देश की दुर्दशा को देखकर उसका स्मरण कर मेरी छाती फटी जा रही है। महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस और जवाहरलाल नेहरू देशसेवा के व्रत में जोगी हो गये हैं॥१॥

ऐ सखियो! तुम भी देश की सेवा करने के लिए जोगिनी बन जाओ और भारतमाता की विपत्ति के जाल—पराधीनता के बन्धन—को सर्वदा के लिए काट दो॥२—३॥

(३)

प्रसङ्ग—स्त्री की पति से चरखा लाने की प्रार्थना तथा उसे कातकर स्वराज्य प्राप्त करने का सन्देश।

अब हम कातबि चरखवा, पिया मति जाहु बिदेसवा। टेक
हम कातबि[4] चरखा सजन[5] तुहु लाव,
मिलिहें एही से सुराजवा॥१॥
पिया मति०
होइहें सुराज तबें सुख मिलिहें;
कटि जइहें सब के कलेसवा[6]॥२॥
पिया मति०
देसवा के लाज रहे चरखा से
गांधी के मानो सनेसवा[7]॥३॥
पिया मति०
कहता रे गांधी जी कि चरखा चलावहु;
एहीं[8] से हटिहे कलेसवा॥४॥
पिया मति०

१. फटती है। २. लिए। ३. जाल, बन्धन। ४. चलाऊँगी। ५. प्रिय पति। ६. क्लेश। ७. सन्देश। ८. इसी।

कोई स्त्री अपने पति से कहती है कि ऐ पति ! अब मैं चरखा कातूँगी; अतः तुम परदेस मत जाओ। तुम चरखा बनाकर लाओ, मैं उसे कातूँगी। इसी से स्वराज मिलेगा ॥१॥

जब स्वराज मिलेगा, तभी देशवासियों को सुख मिलेगा और सब लोगों का क्लेश दूर हो जायेगा ॥२॥

महात्मा गाँधी के सन्देश को मान जाओ। देश की लाज चरखे से ही रहेगी, अर्थात् इसी के द्वारा स्वराज्य की प्राप्ति होगी ॥३॥

महात्मा गांधी कहते हैं कि चरखा चलाओ। इसी से सब देशवासियों का कष्ट दूर होगा ॥४॥

(४)

प्रसङ्ग—विदेशी-शासन की आलोचना।

परदेसिया के नइया डगमग होले ॥ टेक ॥
देस गरीबी के भार लदल बा,
बिच मझधारवा में डगमग डोले ॥१॥
परदेसी के०

बाढ़ा आकाल रोग देसवा में बाटे;
विपती के बादल गड़गड़ बोले ॥२॥
परदेसी के नइया०

दुखवा के नदिया अगम जल पनिया;
जुलुम[1] के हउवा[2] सन सन डोले ॥३॥
परदेसी के नइया०

सासक मलहवा भइल मतवलवा;
बिनती कइला पर कुछुओ[3] ना बोले ॥४॥
परदेसी के नइया०

अब तोर नइया ना बचिहे विदेसिया;
"राम नाम सत" अब नदिया में होले[4] ॥५॥
परदेसिया के नइया डगमग डोले ॥ टेक ॥

कोई आदमी कहता है कि ऐ विदेशी ! तुम्हारी नाव डगमग हो रही है। देश की गरीबी के भार से वह भारी हो गयी और मध्यधारा में डगमगा रही है ॥१॥

देश में अकाल और रोग फैले हुए हैं और विपत्ति के बादल गड़गड़ करते हुए गरज रहे हैं ॥२॥

१. जुल्म, अत्याचार। २. हवा। ३. कुछ भी। ४. होता है।

दुःख रूपी नदी में अथाह जल भरा हुआ है और अत्याचार की हवा सन-सन चल रही है ॥३॥

शासक रूपी मल्लाह मतवाला है और वह जनता की प्रार्थना पर कुछ नहीं बोलता—ध्यान नहीं देता ॥४॥

ऐ विदेशी! अब तुम्हारी नाव नहीं बच सकती। नदी के बीच में ही "राम नाम सत" होना चाहता है, अर्थात् नाव डूबना चाहती है ॥५॥

(५)

प्रसङ्ग—वर्तमान शासन की आलोचना।

होइ गइले कंगाल[1] हो विदेसी तोरे रजवा[2] में ॥टेक॥
सोनवा के थाली जहवाँ जेवना जेंवत रहली।
कठवा के डोकिया[3] के होइ गइल मुहाल[4] हो ॥१॥
विदेसी०
भारत के लोग आज दाना[5] बिना तरसै भइया।
लन्दन के कुत्ता उड़ावे माजा[6] माल हो ॥२॥
विदेसी०
आवे असोक, चन्द्रगुप्त हमरे देसवा में।
लोरवा[7] बहावे देखि तोहरो हवाल[8] हो ॥३॥
विदेसी०
जुग जुग जीयसु[9] हमार गाँधी, जवाहर।
जे[10] दूर करले मोर गरीबन के हाल हो ॥४॥
विदेसी०

ऐ विदेशी! तुम्हारे राज्य में सारा देश निर्धन हो गया। जहाँ सोने की थाली में हम लोग भोजन परोसती थीं, वहाँ अब काठ का छोटा वर्तन भी दुर्लभ हो गया है ॥१॥

भारतवासी आज अन्न के बिना भूखों मर रहे हैं और लन्दन के कुत्ते हलुआ तथा पूड़ी खा रहे हैं ॥२॥

यदि अशोक और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य इस देश में लौटकर फिर आयें, तो तुम्हारे द्वारा की गयी देश की दुर्दशा को देखकर निश्चय ही आँसू बहायेंगे ॥३॥

मेरे गाँधी और जवाहर जुग-जुग तक जीते रहें, जो गरीबों की दुर्दशा को दूर करने का प्रयत्न कर रहे हैं ॥४॥

१. अत्यन्त गरीब। २. राज्य। ३. काठ का बना हुआ छोटा कटोरा। ४. दुर्लभ। ५. अन्न। ६. आनन्द, सुन्दर भोजन। ७. आँसू। ८. दुर्दशा। ९. जीते रहें। १०. जो।

पूर्वी

(१)

प्रसङ्ग—भावज का ननद से अपने पति के परदेस से लौटने के सपने का वर्णन।

सूतल में रहनी ननदी देखनी सापानवा[१]।
कलकतवा से मोर बलमू अइलन[२] हो राम॥१॥
तू कइसे जानत बाड़ू लहुरी भउजिया।
कलकतवा से मोर भइया आवेले हो राम॥२॥
पैर पिरइले[३] ननदी उठत बा दरदिया।
से कागा भइया आगम[४] जनवले हो राम॥३॥
कहत 'महेन्दर मिसिर' सुनु न्यारी सखिया।
से तेरह बरस बीति गइले हो राम॥४॥

भावज अपनी ननद से कह रही है कि ऐ ननद ! जब मैं सो रही थी, तब मैंने सपना देखा कि कलकत्ता से मेरा पति घर को लौट आया॥१॥

तब ननद ने पूछा—ऐ छोटी भावज ! तुम कैसे जानती हो कि कलकत्ता से मेरा भाई आ रहा है ?॥२॥

भावज ने उत्तर दिया—मेरे प्यारे भाई कौए ने बोल कर उनके आने की सूचना मुझे दी है। उन की बाट देखते-देखते मेरे पैरों में पीड़ा होने लगी और मेरे हृदय में दर्द उठ रहा है॥३॥

'महेन्द्र मिश्र' कहते हैं कि ऐ प्यारी सखी ! सुनो, मेरे पति को परदेस गये आज तेरह वर्ष व्यतीत हो गये॥४॥

(२)

प्रसङ्ग—दही बेचने के लिए मथुरा जाती हुई किसी गोपी को श्रीकृष्ण का छेड़ना।

दही बेचें जात रहनी मथुरा नगरिया।
भेटाइ हो गइले ना, बिचे मोहन रसिया[५]॥१॥
भेटाइ हो गइले ना।

१. स्वप्न। २. आ गया। ३. पीड़ित होने लगा। ४. आगमन, आने की सूचना। ५. रसिक।

दहि मोर खइले मटुक[1] सिर फोरले।
लुटाई हो देले ना, मोर गोरस छछिया ॥२॥
लुटाइ हो देले ना।

रस के बिहारी छबि साँवली सुरतिया।
मसकाइ[2] हो देले ना, मोर रेसम के चोलिया ॥३॥
मसकाइ हो देले ना।

कोई गोपी कह रही है कि मैं मथुरा नगरी में दही बेचने के लिए गयी हुई थी ; इतने में रसिक कृष्णजी रास्ते ही में मिल गये ॥१॥

उन्होंने मेरे दही को खा लिया, सिर पर रक्खे गये दही के मटके को फोड़ दिया और जो कुछ छाछ बची हुई थी, उसे भी लुटा दिया ॥२॥

कृष्णजी रस को लूटने वाले हैं, उनकी साँवली सूरत मन को मुग्ध करने वाली है। उन्होंने मेरी रेशम की चोली को मसका दिया ॥३॥

श्रीकृष्ण की 'खुटाई' का यह कितना सुन्दर वर्णन है।

(३)

प्रसङ्ग—पति के परदेस चले जाने पर सुग्गे के द्वारा स्त्री का अपने प्रियतम के पास सन्देश भिजवाना।

पिया मोरे गइले रामा पुरुबी बनिजिया।
कि देके गइले ना, एक सुगना खिलौना ॥१॥
कि देके गइले ना।

तोरा के खिअइबों सुगना दूध भात खोरवा।
कि लेइ के सुतबों ना, दूनो जोबन के बिचवा ॥२॥
कि लेइ के सुतबों ना।

घरी राति गइले, पहर राति गइले।
सुगवा काटे लगले ना, मोर चोलिया के बनवा ॥३॥
कि काटे लगले ना।

अस मन करे सुगवा भुइयाँ ले पटकितीं।
कि दूजे मनवा ना, मोर सामी के खिलौना ॥४॥
कि दूजे मनवाना।

१. दही रखने का मटका। २. मसका देना, फाड़ना।

उड़ल उड़ल सुगा गइले कलकतवा।
कि जाइ के बइठेना, और सामी जी के पगिया ।।५।।
कि जाइ के बइठे ना।

पगरी उतारि सामी जाँघ बइठवले।
कि कह सुगा ना, मोरे घर के कुसलतिया ।।६।।
कि कह सुगा ना।

माई तोहरा कूटनी, बहिनि तोर पिसनी।
कि जइया कइली ना, तोर बउरी दोकनिया ।।७।।
कि जइया कइली ना।

स्त्री कहती है कि मेरा पति पूर्व की ओर व्यापार करने के लिए गया और मेरे लिए खिलौना रूप में एक सुग्गा दे दिया। ऐ सुग्गे ! मैं तुमको कटोरे में दूध-भात खाने के लिए दूँगी और दोनों स्तनों के बीच में तुम्हें लेकर सोऊँगी ।। १—२।।

जब एक घड़ी, एक प्रहर रात बीत गयी, तब सुग्गा मेरी चोली के बन्द को काटने लगा। इस अपराध के कारण कभी मन में ऐसा आता है कि सुग्गे को जमीन पर पटक दूँ; परन्तु फिर खयाल आता है कि मेरे स्वामी का यह खिलौना है ।। ३—४।।

सन्देश लेकर सुग्गा उड़ते-उड़ते कलकत्ता गया और मेरे पति की पगड़ी पर जाकर बैठ गया। स्वामी ने पगड़ी से उतार कर उसको अपने जंघा पर बैठा लिया और पूछने लगा कि ऐ सुग्गे ! मेरे घर का समाचार कहो ।।५—६।।

सुग्गे ने कहा—तुम्हारी माता अर्थाभाव के कारण अन्न कूटती है, बहन आटा पीसती है और तुम्हारी स्त्री दुकान करती है ।।७।।

(४)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री की नथुनी का तालाब में गिरना तथा उसे निकालने के लिए केवट से प्रार्थना।

कोठवा ऊपर चढ़ि झाकेली बारि धनिया।
कि ना हो अइले हा, अलगरजी मोर बलमुआ ।।१।।
कि ना हो अइले हा।

मोर पिछुअरवा सोनरवा छोकड़वा।
कि गढ़ि देहुना, तीन पतिया मोर झुलनिया ।।२।।
कि गढ़ि देहु ना।

माथ मींसे चलली रामा बाबा के सागारावा।
कि हेराइ हो गइले ना, तीन पतिया मोर झुलनिया ।।३।।
कि हेराइ हो गइले ना।

गोड़ तोरा लागिलें केवटा मलहवा।
कि लगाइ देहु रे ना, सागर में महाजालवा ॥४॥
कि लगाइ देहु रे ना।

एक जाल लवलीं, दोसर जाल लवलीं।
कि नाहिं मिलले हा, तीन पतिया तोर झुलनिया ॥५॥
कि नाहिं मिलले ना।

कोई कम उम्र वाली स्त्री कोठे के ऊपर चढ़कर पति के मार्ग को देखती हुई कहती है कि आज भी मेरा अलमस्त पति नहीं आया ॥१॥

मेरे घर के पीछे रहने वाले सोनार के ऐ लड़के! तुम तीन पत्तों वाली मेरी नाक की नथुनी को बना दो ॥२॥

स्त्री कहती है—मैं अपने बालों को साफ करने के लिए अपने पिता के तालाब पर गयी थी। वहीं पर मेरी तीन पत्तों वाली नथुनी भूल गयी ॥३॥

ऐ मल्लाह! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। तुम तालाब में जाल लगाकर मेरी नथुनी को निकाल दो ॥४॥

मल्लाह कहता है—मैंने एक बार जाल लगाया, दूसरी बार भी जाल लगाया; परन्तु तुम्हारी तीन पत्तों वाली नथुनी नहीं मिल सकी ॥५॥

बड़े तालाब को सागर या समुद्र कहने की प्रथा अब भी विद्यमान है। राजपूताने में कितने ही तालाबों का नाम सागर है; जैसे—अन्नासिंह का बनवाया तालाब अन्नासागर के नाम से प्रसिद्ध है। मैसूर राज्य में स्थित सुप्रसिद्ध तालाब को 'शिव-समुद्रम्' कहते हैं। यह मीलों में फैला हुआ है। तथा यहाँ बिजली भी तैयार की जाती है।

(५)

प्रसङ्ग—गौने के समय ससुराल जाते समय किसी स्त्री का विषाद।

माँजत[1] में रहली रामा करके कागानावा[2]।
कि आइ हो गइले ना, मोरा ससुरा से बाभानावा ॥१॥
कि आइ हो गइले ना।

आईं आईं[3] बाबाजी, बइठी मोर आँगानावा।
कि सोचि देहु ना, मोर साइति[4] गाँगानावा ॥२॥
कि सोचि देहु ना।

---

१. साफ करना। २. कंगन। ३. आइए। ४. मुहूर्त।

आजु एकवसिया त काल्हु[1] दूआवसिया[2]।
कि तेरसिया[3] केरे ना, धनिया तोहरो गावानावा ॥३॥
कि तेरसिया केरे ना।

हँसत खेलत धनिया मथवा बन्हवली।
कि रोई रोई ना, धनिया पेन्हली[4] गाहानावा ॥४॥
कि रोई रोई ना।

कोई स्त्री कहती है कि मैं अपने हाथ के कंगन को मलकर साफ कर रही थी कि इतने में मेरी ससुराल से मेरी विदाई का सन्देश लेकर ब्राह्मण चला आया ॥१॥

आइए, आइए ब्राह्मण देवता, मेरे आँगन में बैठिए और मेरे गौने का शुभ मुहूर्त बतलाइए ॥२॥

ब्राह्मण ने सोचकर कहा—ए स्त्री ! आज एकादशी है और कल द्वादशी है। परसों त्रयोदशी के दिन तुम्हारे गौने का शुभ मुहूर्त है ॥३॥

स्त्री ने हँसते खेलते हुए अपने सिर के बालों को सुसज्जित किया; परन्तु बिदाई के समय रो-रोकर गहना पहनने लगी ॥४॥

(६)

प्रसङ्ग—किसी दुश्चरित्र ससुर का अपनी पुत्र-वधू से बुरा प्रस्ताव। वधू का मुँहतोड़ उत्तर।

सात पाँच सखिया मिलि माथवा बन्हवली।
सखियवा एक हमही हो बारी[5] कुवारी ॥१॥ सखियवा०
मचिया बइठल बाबा तुहु हो बड़इता।
कि कताना दिनवा रखब हो बारी कुंवारी ॥२॥ कि काताना०
तोर गवनवा धनिया नान्हे[6] ही में कइनीं।
कि कन्त तोरे गइलन हवे हो विदेसवा ॥३॥ कि कन्त०
जवना रहिया बाबा मोर गइलन हो छयलवा।
कि तवने[7] रहिया हमरा के हो बतलइत ॥४॥ कि तवने०
जवने रहिया धनिया तोर गइलन छयलवा।
कि तवने रहिया कुसावा हो पारासावा[8] ॥५॥ कि तवने०
लेहु ना धनिया हो डाल[9] भरि सोना।
कि तेजि देहु आपन हो छयलवा[10] ॥६॥ कि तजि०

१. कल। २. द्वादशी। ३. त्रयोदशी। ४. पहिनती है। ५. बाला। ६. लड़कपन। ७. उसी। ८. कुश और कण्टक। ९. दौरी। १०. छैला, पति।

नाहिं हम लेबों बाबा डाल भरि सोनवा।
कि नाहिं हम तेजबि आपन हो छयलवा ॥७॥ कि नाहिं०

पाँच, सात सखियों ने मिलकर अपने सिर के बालों को सुसज्जित किया, परन्तु ऐ सखी! मैं ही एक ऐसी हूँ, जो अभी तक अविवाहिता हूँ ॥१॥

मचिया पर बैठने वाले ऐ श्रेष्ठ ससुर! अब तुम कितने दिनों तक मुझे क्वारी रक्खोगे ॥२॥

ससुर ने कहा—ऐ बधू! मैंने लड़कपन ही में तुम्हारा गौना कर दिया था; परन्तु तुम्हारा पति उसी समय विदेश चला गया।

तब बधू कहती है—जिस रास्ते से मेरा पति परदेस को गया है, तुम वही रास्ता मुझको बतला दो ॥३—४॥

ससुर ने उत्तर दिया—ऐ बधू! जिस रास्ते से तुम्हारा पति परदेस गया है, उस रास्ते में अनेक कुश और कण्टक हैं ॥५॥

ऐ बधू! तुम डाल भर सोना लो और अपने पति के आने की आशा छोड़ दो।

इस पर उस पति परायणा स्वाभिमानिनी स्त्री ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारे डाल भर सोने को हर्गिज नहीं ले सकती और पति को कभी भी नहीं छोड़ सकती ॥६—७॥

(७)

प्रसङ्ग—राधा तथा कृष्ण का प्रश्नोत्तर।

कलसिया लेके ना हो राम, कलसिया[1] लेके ना।
गोरिया चलली हा जमुनवा, हो कलसिया लेके ना ॥१॥

केकर हऊ[2] तुहु बारी हो, दुलारी, केकर[3] हऊ ना।
तुहु पतरी तिरियवा[4], केकर हऊ ना ॥२॥

राजा वृखभानु जी के बारी हो दुलारी।
आरे सइयाँ जी के ना, हम हई[5] पतरी तिरियवा ॥३॥
कि सइयाँ जी के ना।

कोई सुन्दरी, गौर वर्ण वाली स्त्री जमुना के किनारे पानी भरने के लिये चली। (रास्ते ही में कृष्ण जी मिल गये और उससे पूछने लगे) ॥१॥

तुम किसकी प्यारी पुत्री हो और तुम किसकी पतली स्त्री हो? ॥२॥

उस स्त्री (राधा) ने गर्व से उत्तर दिया—मैं राजा वृषभानु की प्यारी पुत्री हूँ और अपने पति की सुन्दरी, पतली स्त्री हूँ ॥३॥

१. कलसा, घड़ा। २. किसकी बेटी हो। ३. किसकी दुलारी हो। ४. नाजुक नारी। ५. अपने पति की नाजुक नारी हूँ।

(८)

प्रसङ्ग—गोपियों का विरह वर्णन।

मधुबनवा गइले हो; मधुबनवा गइले ना।
मोरा बंसीवाला कान्हा; मधुबनवा गइले ना॥१॥
बंसिया बजवले कान्हा; ओहि[1] मधुबनवा।
सबदिया[2] सुनि के ना; मोर जिया[3] घबरइल हो॥२॥
सबदिया सुनि के ना।
ओहि मधुबनवा से, ऊधो बाबा अइले।
कि लेके अइले ना, एक जोगवा के[4] पतिया॥३॥
कि लेके अइले ना।
पतिया बाँचत मोर छतिया कड़कली[5]।
कि फंसि हो गइले ना, ओहि कूबरी का संगवा॥४॥
कि फंसि हो गइले ना।

कोई गोपी कहती है कि मेरे बंशी को बजाने वाले कृष्ण मधुवन को चले गये हैं। उन्होंने मधुवन में बंशी बजाई और उसके मोहक शब्दों को सुनकर मेरा चित्त घबड़ाने लगा॥१—२॥

कुछ दिनों के बाद उसी मधुबन से उद्धवजी योग का सन्देश लेकर आये। उस सन्देश को पढ़कर—जो कृष्ण ने भेजा था—मेरी छाती फट गई और मैंने समझ लिया कि कृष्ण उस कूबरी के प्रेम-जाल में फँस गये हैं॥३—४॥

(९)

प्रसङ्ग—स्त्री की बीमारी के कारण पति की परेशानी।

मोरा पिछुअरवा रामा लीलवा[6] खेतवा।
मोरा बलमुआ रे, नील रंगे चूनरी रंगाव॥१॥
मोर बलमुआ रे०
चुनरी पहिरत मातरि[7] आइलि जाड़ा जुड़िया[8]।
मोर बलमुआ रे सालवा, दोसालावा ओढ़ाव॥२॥
मोर बलमुआ रे०
सालवा, दोसालावा ओढ़त छूटली हो गरमिया।
मोर बलमुआ रे रसे[9] रसे बेनिया[10] डोलाव॥३॥
मोर बलमुआ रे०

१. उसे। २. शब्द। ३. हृदय। ४. चिट्ठी। ५. फटगई। ६. नील। ७. मात्र ही। ८. जड़ैया। ९. धीरे-धीरे। १०. पंखा।

बेनिया डोलावत मातरि बहियाँ रे मुरुकली[1]।
मोर बलमुआ रे पटना से बैदा[2] बोलाव ॥४॥
मोर बलमुआ रे०

बैदा त माँगे रामा साठि हो रुपइया।
मोर बलमुआ रे जल्दी से मोहरा भुनाव ॥५॥
मोर बलमुआ रे०

मोहरा भजावत मातरि अखिया रे उलटली[3]।
मोर बलमुआ रे मेहरि[4] भइली जीव के जंजाल[5] ॥६॥
मोर बलमुआ रे०

कोई स्त्री कहती है कि मेरे घर के पीछे नील के खेत लगे हुए हैं। ऐ मेरे पति ! मेरी साड़ी को नील के रंग में रँगा दो ॥१॥

चूनरी पहनते ही मुझे जाड़ा आने लगा। ऐ पति ! तुम मुझे दुशाला ओढ़ाओ ॥२॥

शाल और दुशाला ओढ़ते ही मुझे गर्मी मालूम होने लगी। ऐ पति ! अब तुम मुझे धीरे-धीरे पंखा झलो ॥३॥

जब मैं स्वयं पंखा झल रही थी, तब सुकुमारता के कारण मेरे हाथ में मोच आ गई। मेरे पति ! तुम पटना से दवा करने के लिए वैद्य को बुलाओ ॥४॥

वैद्य दवा के लिए साठ रुपये माँगता है। मेरे पति ! जल्दी से तुम मुहर को भुनाओ ॥५॥

मुहर को भुनाते समय पति की आँखें उलट गई अर्थात् उसे हार्दिक कष्ट हुआ और वह कहने लगा—स्त्री मेरे प्राणों के लिए संकट बन गई है ॥६॥

(१०)

प्रसङ्ग—पति का परदेस से आना और स्त्री से दरवाजा खोलने के लिए कहना।

सइयाँ मोर गइले रामा पुरुबी बनिजिया।
से लेइ हो अइले ना, रस बेंदुली[6] टिकुलिया ॥१॥
से लेइ हो अइले ना।

टिकुली में साटि[7] रामा बइठली अटरिया।
से चमके लगले ना, मोर बेंदुली टिकुलिया ॥२॥
से चमके लगले ना।

१. मोच आ गयी। २. वैद्य। ३. अत्यन्त दुःख हुआ। ४. स्त्री। ५. फन्दा, झंझट। ६. बिन्दी। ७. चिपकाकर।

घोड़वा चढ़न आवे, राजा के छोकड़वा।
से धड़कन लागे ना, मोर कोमल रे करेजवा[1] ।।३।।
से धड़कन लागे ना।

खोलु खोलु धनिया आरे बजर[2] केवरिया।
से आजु तोरा ना, अइले सइयाँ परदेसिया ।।४।।
से आजु तोरा ना।

कहत 'विश्वनाथ' धनि हवे तोर भगिया।
से छम छम बाजे ना; द्वार खोलत पयजनिया[3] ।।५।।
से छम छम बाजे ना।

मेरा पति पूर्व दिशा में व्यापार करने के लिए गया और वहाँ से वह बहुत सुन्दर टिकुली ले आया है ।।१।।

मैं उस टिकुली (बिन्दी) को अपने ललाट में चिपका कर अटारी पर बैठ गयी और मेरी बिन्दी अत्यन्त शोभा देने लगी ।।२।।

राजा का लड़का (कुँअर) घोड़े पर चढ़ कर उधर आने लगा। उसे देखकर मेरा कोमलहृदय काँपने लगा, (भावार्थ यह है कि पति को अचानक आता देखकर आश्चर्य से मेरा हृदय धड़कने लगा) ।।३।।

पति ने कहा—ऐ स्त्री अपने कठिन कपाट—जोर से बन्द किये गये दरवाजे—को खोलो। आज तुम्हारा परदेशी पति घर लौट कर आया है ।।४।।

विश्वनाथ' कहते हैं कि ऐ स्त्री ! तुम्हारा भाग्य धन्य है। पति के लिए द्वार खोलते समय पैर की पैंजनी छमछम बजने लगी ।।५।।

(११)

प्रसङ्ग—शिव के विचित्र वेश को देखकर पार्वती की माता की चिन्ता।

बंसहा[4] चढ़ल सिव के अइली बरिअतिया[5] राम।
डेराला जियरा, अंगवा लपेटले बाड़े साँप ।।१।।
ए डेराला जियरा।
अंग में विभूति सोभे, गले मुण्डमाला राम।
डेराला जियरा, नागावा छोड़ले फुफुकार ।।२।।
ए डेराला जियरा।

१. कलेजा। २. बज्र, कठिन। ३. पैजनी। ४. बैल। ५. बारात।

मन में बिचारे मैना, गउरा अति सुन्दर राम।
डेराला जियरा, बरवा मिलेले बउराह[1] ॥३॥
ए डेराला जियरा।
नारद बाबा के हम काही रे बिगड़ली राम।
डेराला जियरा, बरवा खोजेले बउराह ॥४॥
ए डेराला जियरा।
अइसन बउरहवा से हम गउरा ना बिअहबो[2] राम।
डेराला जियरा, बलु[3] गउरा रहिहें कुआर ॥५॥
ए डेराला जियरा।
कहत 'विश्वनाथ' तनि भेखवा बदलि द राम।
डेराला जियरा, नइहर के लोग पतिआसु[4] ॥६॥
ए डेराला जियरा।

बैल पर चढ़े हुए शिवजी के साथ उनकी बारात आई। उन्होंने अपने अंगों में सर्प लपेट रक्खे थे। अतः उन्हें देखकर डर मालूम होता था ॥१॥

उनके अंग में विभूति (भस्म), गले में मुण्डमाला विराजमान थी और सर्प फुफुकार छोड़ रहे थे ॥२॥

पार्वती की माता 'मैना' अपने मन में विचार करती है कि मेरी गौरी (पार्वती) अत्यन्त सुन्दर है; परन्तु उसका पति (शिव) पागल मिल गया (तभी तो उसका विचित्र वेश है) ॥३॥

नारद मुनि का मैंने क्या बिगाड़ा था, जो उन्होंने मेरी पुत्री के लिए पागल पति खोजा ॥४॥

मेरी पार्वती भले ही क्वाँरी—अविवाहिता—रह जाय; परन्तु मैं ऐसे पागल वर से विवाह कभी नहीं करने की ॥५॥

इस पर पार्वती शिव से प्रार्थना करती है कि ऐ शिव! तुम अपना वेश बदल दो और असली रूप को धारण करो, जिससे मेरे मायके के लोग तुम्हारी 'शिवता'' पर विश्वास करें ॥६॥

(१२)

प्रसङ्ग—राधा-कृष्ण की रासलीला का वर्णन।

बड़ि बड़ि अंखिया तोरी साँवली सुरतिया; ए मुरलिया वाले।
मारेल[5] नयनवा के बान; ए मुरलिया वाले ॥१॥
सिरिवृन्दाबनवा के कुञ्ज गली में; ए मुरलिया वाले।
सखिया बिचे रासावा[6] रचाव[7]; ए मुरलिया वाले ॥२॥

---

१. पागल। २. विवाह करूँगी। ३. बल्कि। ४. विश्वास करें। ५. मारते हो। ६. रास। ७. करो।

ओहि समे[1] अइली राधे बहियाँ झकझोरली[2], ए मुरलिया वाले।
भोला बाबा अइले चोरवा लागि; ए मुरलिया वाले।।३।।

आँखि के इसारा[3] राधे सखियन के दिहली; ए मुरलिया वाले।
सखि साम पकड़ि ले आव; ए मुरलिया वाले।।४।।

कोई गोपी कहती है कि मुरली बजाने वाले ऐ कृष्ण ! तुम्हारी बड़ी-बड़ी आँखें हैं और तुम्हारी सुरत साँवली है। तुम अपनी आँखों से—कटाक्ष से—बाण मारते हो।।१।।

श्री वृन्दावन की कुञ्जगली में तुम मेरी सखियों के साथ रास रचाते हो अर्थात् रास-लीला करते हो।।२।।

उसी समय अर्थात् रासलीला करते समय राधाजी चली आयीं।

कृष्ण ने उनकी बाँह को पकड़ लिया तथा उसे झकझोर दिया। यह सारा दृश्य शिव चुपके से देख रहे थे ।।३।।

राधा ने अपनी आँखों से सखियों को संकेत किया तथा सखियों ने कृष्ण को पकड़ लिया ।।४।।

(१३)

प्रसङ्ग—किसी स्त्री की मायके जाने के लिए उत्कट अभिलाषा तथा इसके लिए पति से निवेदन।

जहिया[4] से सइयाँ मोरे छुवले लिलरवा[5]।
हो दुलभवा भइले ना, मोर बाबा के नगरिया।।१।।
कि दुलभवा भइले ना।

गोड़[6] तोरा लागो रामा; सइयाँ रे गोसइयाँ:
कि दिनवा चारि ना; मोके जाये द नइहरवा।।२।।
कि दिनवा चारि ना।

गंगा बढ़ि अइली रामा; जमुना भी उतरइली[7]।
से कइसे जइबू ना; अपना बाबा के नगरिया।।३।।
से कइसे जइबू ना।

कटवों में केरवा[8] गँछिया; बेड़वा[9] हो बनइबों।
से ताहि रे चढ़ि के ना; जइबों बाबा के नगरिया।।४।।
से ताहि रे चढ़ि के ना।

१. उसी समय। २. जोरों से हिला दिया। ३. इशारा। ४. जिस दिन से। ५. लिलार। ६. पैर। ७. उमड़ गयी है। ८. केला। ९. बेड़ा।

कोई स्त्री कहती है कि जब से पति ने मेरे ललाट को स्पर्श किया, अर्थात् मेरी माँग में सिन्दूर लगा कर विवाह किया, तब से मेरे पिता का घर मेरे लिए दुर्लभ हो गया ।।१।।

पति से प्रार्थना करती हुई वह स्त्री कहती है—ऐ स्वामी, पति ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। केवल दो-चार दिनों के लिए मुझे मायके जाने दो ।।२।।

इस पर पति ने उत्तर दिया—गंगाजी बाढ़ के कारण बढ़ गयी हैं, यमुना भी अधिक पानी होने से उमड़ गयी हैं। अतः तुम अपने पिता के घर कैसे जाओगी ।।३।।

स्त्री कहती है—मैं केले के पेड़ को काटूँगी और उसका बेड़ा बनाऊँगी। उसी बेड़े पर चढ़कर मैं अपने पिता के घर जाऊँगी ।।४।।

सचमुच विवाह के बाद पुत्री दूसरे की वस्तु हो जाती है और मायके आना भी उसके लिए दुर्लभ हो जाता है। जब पति का 'आर्डर' मिलता है, तभी वह जा सकती है, अन्यथा नहीं। इसी विवशता को ध्यान में रखकर कालिदास ने लिखा है "अर्थो हि कन्या परकीय एव"

(१४)

प्रसङ्ग—भावज तथा देवर का प्रेम-वर्णन।

आरे माथ मींज गइलों रामा; बाबा के सागारावा।
कि हेराइ[1] हो गइले ना; मोर नाक के झुलनिया ।।१।।
कि हेराइ हो गइले ना।
गोड़ तोरा लागों रामा; लहुरा देवरवा।
से खोजि देहु ना; मोर नाक के झुलनिया ।।२।।
से खोजि देहु ना।
कइसे में खोजीं रामा; भउजी तोर झुलनिया।
कि भइया बाड़े ना; तोरे नाक के झुलनिया ।।३।।
कि भइया बाड़े ना।
भइया डर मति करु; लहुरा रे देवरवा।
तू खोजि देहु ना; मोर नाक के झुलनिया ।।४।।
तू खोजि देहु ना।
तोहरा के लेइ के देवरा; दूर देस जइबों।
कि तोके लेके ना; हम खिलबों[2] पातालावा ।।५।।
कि तोके लेके ना।

मैं अपने सिर के बालों को साफ करने के लिए अपने पिता के तालाब में गयी थी। वहीं पर मेरी नाक की नथुनी खो गयी ।।१।।

१. खो गयी। २. बहुत दूर चला जाना।

भावज अपने देवर से कहती है---ऐ मेरे छोटे देवर ! मैं तुम्हारे पैरों पर गिरती हूँ। मेरी नाक की नथुनी तुम खोज दो॥२॥

कामुक देवर ने कहा---ऐ भावज ! मैं तुम्हारी नाक की नथुनी को कैसे खोजूँ। मेरा बड़ा भाई देख रहा है॥३॥

भावज ने कहा---छोटे देवर ! तुम अपने भाई का डर मत करो। तुम मेरी नाक की नथुनी को खोज दो॥४॥

ऐ देवर ! मैं तुम्हें लेकर दूर देश को चली जाऊँगी, मैं पाताल तक पहुँच जाऊँगी अर्थात् बहुत ही सुदूर चली जाऊँगी॥५॥

(१५)

प्रसङ्ग---कठिन तपस्या करके पागल पति प्राप्त करने के कारण पार्वती का उपालम्भ।

बउरहवे लागि[1] ना हो गउरा; बउरहवे[2] लागि ना।
तू त कइलू अतना तपवा[3]; बउरहवे लागि ना॥१॥
नाहि उनुकर घर गउरा; नाहि बा दुआरावा।
कि सूते ओते ना; ओहि गछिया के छहिंवाँ॥२॥
कि सूते ओते ना।

खाये के त खाले भोला; भाँग ओ धतूरवा।
कि पहिरे ओहिरे ना; ओहि बाघवा के छालवा[4]॥३॥
कि पहिरे ओहिरे ना।

कबहू ना करे भोला; एकहू ऊदामावा[5]।
कि नाचे लागे ना; लेके डमरू के हाथवा॥४॥
कि नाचे लागे ना।

अइसन बउराह अइहें[6]; कवनो ना कामावा।
कि तेजि देहु ना; गउरा आपन परानावा[7]॥५॥
कि तेजि देहु ना।

कोई सखी पार्वती से कहती है कि ऐ पार्वती ! तुमने इतनी कठोर तपस्या की, फिर भी तुमको शिव के समान पागल ही पति मिला॥१॥

१. लिए। २. पागल। ३. तपस्या। ४. चर्म। ५. उद्यम, कार्य। ६. आयेगा। ७. प्रण प्रतिज्ञा।

ऐ पार्वती ! न तो उनका कहीं घर है और न कहीं द्वार है। वह वृक्षों की छाया के नीचे सोते हैं ॥२॥

शिवजी भाँग और धतूरा खाते हैं और वे बाघ का चाम—व्याघ्र चर्म—पहनते हैं ॥३॥

शिवजी कभी कोई कार्य नहीं करते तथा समय-समय हाथ में डमरू लेकर नाचने लगते हैं ॥४॥

ऐसा पागल पति किसी भी काम में नहीं आ सकता—किसी कार्य के योग्य नहीं है, अतः ऐ पार्वती ! तुम शिव ही से विवाह करने के अपने प्रण को छोड़ दो ॥५॥

पाराती

(१)

प्रसङ्ग—भक्त के द्वारा भगवान् की खोज तथा उनके मिलने के स्थानों का वर्णन।

कब मिलिहैं हो कब मिलिहैं दीनानाथ हमारे कब मिलिहैं ।। टेक ।।
पहिले मिलिहैं नन्द घरे हो, होत पारात[१] दुआर[२] खेले हो ।।१।।
दूसरे मिलिहैं विदुर घरे हो, नून[३] बिना जेंवना जेवें हो ।।२।।
तीसरे मिलिहैं सबरी घरे हो, जूठ[४] बइरि[५] चीखि चीखि खाले हो ।।३।।
चउथे मिलिहैं राजभवन हो, खम्भा से निकसि हरनाकुस[६] फारे हो ।।४।।
पंचवें मिलिहैं तुलसी भवन हो; बीनि बीनि[७] पापी जरूर तरिहैं हो ।।५।।
कब मिलिहैं हो कब मिलिहैं, दीनानाथ हमारे कब मिलिहैं ।।६।।

कोई भक्त पूछ रहा है कि मेरे दीनानाथ (भगवान्) मुझे कहाँ मिलेंगे ? वह फिर आप ही उत्तर देते हुए कहता है कि पहले वह नन्द के द्वार पर प्रातःकाल खेलते हुए मिलेंगे और दूसरे वह विदुर के घर मिलेंगे, जहाँ पर उन्होंने बिना नमक का ही भोजन किया था ।। १—२।।

तीसरे वह शबरी के घर मिलेंगे, जहाँ उन्होंने जूठे बेर को चख-चख कर खाया था। चौथे वह राज-भवन में मिलेंगे, जहाँ उन्होंने खम्भे को तोड़ कर हिरण्यकश्यपु का वध किया था ।। ३—४।।

पाँचवें वह तुलसीदासजी के भवन में मिलेंगे, जहाँ वे पापियों का बीन-बीन कर उद्धार करते हैं ।।५।।

मेरे दीनानाथ मुझे कब मिलेंगे ।।६।।

(२)

प्रसङ्ग—भगवान् की रक्षा के बिना भक्त की दुर्दशा।

राम बिना रघुनाथ बिना ; अइसन हाल हमार भइल साम बिना ।। टेक ।।
आरे फेरला[८] बेगर[९] पान बिगरि गइल ; हाथ बेगर मोछि[१०] हमारी ।।१।।
बान्धल[११] घोड़ा घासि नाहिं खइहें, कइसे होइबि असवारी[१२] ।।२।।
राम बिना रघुनाथ बिना ; अइसन हाल हमार भइल साम बिना ।।३।।

१. प्रातःकाल। २. द्वार। ३. नमक। ४. जूठी। ५ बेर (बदरी फल)। ६. हिरण्यकश्यपु ७. चुन-चुन कर। ८. उलटना। ९. बिना। १०. मूंछ। ११. बंधा हुआ। १२. सवार।

कोई भक्त कहता है कि राम, रघुनाथ तथा श्याम (कृष्ण) के बिना मेरी ऐसी दुर्दशा हो गयी है।

बिना उलटे-पुलटे रखने से पान खराब हो जाता है तथा बिना हाथ फेरे मूछें कड़ी नहीं रहती। इसी प्रकार से बिना कुछ कर्म किये पुण्य नहीं मिल सकता ॥१॥

बँधा हुआ घोड़ा घास नहीं खा सकता; अतः उस पर सवार होना कठिन है। उसी प्रकार कर्म-बन्धन में फँसा हुआ जीव मुक्ति की प्राप्ति नहीं कर सकता ॥२॥

(३)

प्रसङ्ग—प्रियतम के आने की अवधि पूछना तथा उसके लिए विभिन्न प्रकार की तैयारी।

काताना दिनन पर अइब ए रघुबर—॥ टेक ॥

सोने के गडुआ गंगा जल पानी, पिअब ए रघुबर, पिअइब ए रघुबर ॥१॥
पाँच पाँच पनवा के बिरवा लगवलीं, [कातानाo] चभब ए रघुबर, चभइब ए रघुबर ॥२॥
फुलवा चुनि चुनि सेजिया डसवलीं; [कातानाo] सोइब ए रघुबर, सोअइब ए रघुबर ॥३॥
काताना दिनन पर अइब ए रघुबर।

ऐ प्रियतम ! (भगवान्) तुम कितने दिनों पर आओगे। सोने के लोटे में मैंने पानी रक्खा है। उसे कब पियोगे और पिलाओगे। पान को कब खाओगे तथा खिलाओगे ॥१—२॥

तुम्हारे लिए फूलों की सेज बिछाई है। उस पर कब सोओगे तथा मुझे भी सुलाओगे ॥३॥

(४)

प्रसङ्ग—सीता के भावी पति के लिए सखियों की चिन्ता।

बोले अब जानकी जनक भवन —॥ टेक ॥
सीता जनकजी के आँगन बहारेली[1]।
धीरे धीरे भइली जवान भवन में ॥१॥ बोलेo
कइ असनान[2] पूजा करेले जनक जी।
के बर होइहें एहि रे भुवन में ॥२॥ बोलेo
होला अपसोच जनक जी का मन में।
के होइहें एहि रे भुवन में ॥३॥ बोलेo
सीता के सखिया पूछेली भवन में।
के बर होइहें एहि रे भुवन में ॥४॥ बोलेo

१. झाड़ू लगाती है। २. स्नान।

माता का असीस से, पिता का पीरिति[1] से।
राम बर होइहें एहि रे भुवन[2] में॥५॥ डोले०
गुरु का चरन में, हरि का भजन में।
डोले अब जानकी जनक भवन में॥६॥ डोले०

सखियाँ कहती हैं कि जनक के भवन में जानकीजी घूम रही हैं। सीता जनकजी के आँगन को बुहारती हैं और वह धीरे-धीरे युवावस्था को प्राप्त कर रही हैं॥१॥

जनकजी स्नान कर पूजा करते हैं और अपने मन में यह सोचते हैं कि सीता का भावी पति इस संसार में कौन होगा॥२॥

जनकजी के मन में यह चिन्ता हो रही है कि सीता का भावी वर कौन होगा॥३॥

सीताजी की सखियाँ उनकी माता से पूछती हैं कि सीता का भावी वर इस संसार में कौन होगा॥४॥

सीता की माँ कहती हैं कि माता (मेरे) के आशीर्वाद से और पिता के अटूट प्रेम के कारण राम ही वर होंगे॥५॥

अब जानकी जनकजी के घर में गुरु के चरणों में प्रेम करती हुई तथा हरि भजन में ध्यान लगाती हुई फिर रही हैं॥६॥

(५)

प्रसङ्ग—दशरथ से कैकेयी का राम का बनवास तथा भरत का राज्याभिषेक ये दो वर माँगना। भरत का ननिहाल से बुलाया जाना तथा अयोध्या का राज अस्वीकार।

बाँसावा काटावन चलले राजा दशरथ ए बधू कारनवे॥१॥
अंगुरी में गड़ेला खापाचार[3] ए बधू कारनवे॥२॥
धाउ तेहु नउवारे[4], धाउ तेहु बरिया[5] ए बधू कारनवे॥३॥
केकई के पकड़ी ले आउ, ए बधू कारनवे॥४॥
किआ[6] राजा मारि हें, किआ गरिअइहें[7], ए बधू कारनवे॥५॥
किआ राजा दीहें देससे निकाल, ए बधू कारनवे॥६॥
नाहिं राजा मरिहें[8] नाहिं गरिअइहें, ए बधू कारनवे॥७॥
नाहिं राजा दीहें देससे निकाल, ए बधू कारनवे॥८॥
अइली केकई अंगुरी जाँति[9] बइठलीं, ए बधू कारनवे॥९॥
दसरथ के अइलीं सुखनीनी[10], ए बधू कारनवे॥१०॥

१. प्रीति, प्रेम। २. संसार। ३. लकड़ी या बाँस का तीक्ष्ण तथा पतला टुकड़ा। ४. नाई। ५. जाति विशेष। ६. क्या। ७. गाली देंगे। ८. मारेंगे। ९. दबाकर। १०. सुख निद्रा।

माँगु माँगु केकई कवन फलवा, ए बधू कारनवे ॥११॥
जे तोहरा हिरदया[1] समाई[2], ए बधू कारनवे ॥१२॥
राम लछुमन बन के सिधरिहें[3], ए बधू कारनवे ॥१३॥
भरत का तिलक लिलार[4], ए बधू कारनवे ॥१४॥
माँगे त मंगलू बुरा फलवा, ए बधू कारनवे ॥१५॥
लिहलू[5] मोर करेजवा[6] निकाल, ए बधू कारनवे ॥१६॥
धाउ[7] तेहु नउवा रे तेहू बरिया, ए बधू कारनवे ॥१७॥
भरत के पकड़ि ले आऊ, ए बधू कारनवे ॥१८॥
किया गंगा लाभ[8] भइले बाप दसरथ, ए बधू कारनवे ॥१९॥
किया रे कोसिला हमरी माइ, ए बधू कारनवे ॥२०॥
नाहिं गंगा लाभ भइले दसरथ बाप[9], ए बधू कारनवे ॥२१॥
नाहिं रे कोसिला तोहरी[10] माई, ए बधू कारनवे ॥२२॥
राम, लछुमन दूनो[11] बन के सिधरले, ए बधू कारनवे ॥२३॥
भरत के तिलक लिलार, ए बधू कारनवे[12] ॥२४॥
हम तोसे पूछिलें कोसिला माइ, ए बधू कारनवे ॥२५॥
काहे हमरे परेला हाँकार[13], ए बधू कारनवे ॥२६॥
हमसे का पूछेल[14] भरत, हमार, ए बधू कारनवे ॥२७॥
पूछ[15] केकई अपनी माइ, ए बधू कारनवे ॥२८॥
हम तोसे पूछिलें, केकई, माइ, ए बधू कारनवे ॥२९॥
काहे हमरे परेला हाँकार, ए बधू कारनवे ॥३०॥
खाइल[16] ए बबुआ दही संगे भातवा, ए बधू कारनवे ॥३१॥
भोग ए अजोधा के राज, ए बधू कारनवे ॥३२॥
आगि लाहिहु मातवा दहिया संगे भातवा, ए बधू कारनवे ॥३३॥
जरि हे जाहु[17] अजोधा के राज ए बधू कारनवे ॥३४॥

राजा दशरथ अपनी स्त्री कैकयी की आज्ञा के कारण बाँस काटने के लिए चले। बाँस काटते समय उनकी अँगुली में बाँस का एक तेज धार वाला, नोकीला टुकड़ा चुभ गया ॥१—२॥

वे पुकारने लगे कि ऐ नाई और ऐ बारी ! तुम लोग जल्दी दौड़ कर जाओ और कैकेयी को पकड़ कर लाओ ॥३—४॥

१. हृदय। २. आवे। ३. जायेंगे। ४. ललाट। ५. लिया। ६. कलेजा। ७. दौड़ो। ८. मर जाना। ९. पिता। १०. तुम्हारी। ११. दोनों। १२. कारण से। १३. पुकार, बुलाहट। १४. पूछते हो। १५. पूछे। १६. खाया। १७. नष्ट हो जाना, खाक में मिल जाना, जल जाना।

नाई तथा बारी अपने मन में कहने लगे कि क्या राजा कैकेयी को गाली देंगे या मारेंगे अथवा उसे देश से निकाल देंगे ॥५—५॥

वे स्वयं फिर कहते हैं कि न तो राजा कैकेयी को गाली देंगे, न मारेंगे और न उसे देश से निकाल ही देंगे ॥७—८॥

रानी कैकेयी बुलाई गई, वह आई और राजा की अँगुली को दबाकर बैठ गई राजा दशरथ को सुखपूर्वक नींद आ गई ॥९—१०॥

नींद टूटने पर राजा ने प्रसन्न हो कर कहा कि कैकेयी ! जो तुम्हारे हृदय में हो, ऐसे अभिलषित वर माँगो ॥११—१२॥

"आज राम और लक्ष्मण बन को जायँ और भरत का राज्याभिषेक हो।" ये दो वर कैकेयी ने राजा दशरथ से माँगे ॥१३—१४॥

इस पर राजा दशरथ ने कहा कि तुमने बड़ा बुरा वर माँगा। इन वरों के द्वारा मानों तुमने मेरे कलेजे को काट कर बाहर निकाल दिया हो ॥१५—१६॥

ऐ नाई और बारी ! तुम लोग दौड़ कर जाओ और भरत को तुरन्त पकड़ ले आओ ॥१७—१८॥

नाई के जाने पर भरत ने कहा कि क्या मेरे पिता दशरथ को गंगालाभ हो गया या मेरी माता कौशल्या ही मर गई ॥१९—२०॥

दूत ने उत्तर दिया—न तो आपके पिता दशरथ जी मरे हैं और न माता कौशल्या ही ॥१२—२२॥

राम और लक्ष्मण बन को चले गये हैं और भरत का राज्याभिषेक होने वाला है। ॥२३—२४॥

जब भरतजी अयोध्या आये, तब वे कौशल्या से कहते हैं—ऐ माता कौशल्या ! मैं तुम से पूछता हूँ कि मेरी बुलाहट क्यों हुई है ॥२५—२६॥

कौशल्या ने कहा—ऐ भरत ! मुझ से क्यों पूछते हो ? जाकर तुम अपनी माता कैकेयी से पूछो ॥२७—२८॥

भरत ने कैकेयी से कहा—ऐ माता कैकेयी ! मैं तुमसे पूछता हूँ कि मेरी बुलाहट क्यों हुई है ॥२९—३०॥

कैकेयी ने उत्तर दिया—ऐ पुत्र ! दही के साथ भात खा लो। तुम्हें अयोध्या का राज्य भोगने के लिए बुलाया गया है ॥३१—३२॥

इस पर क्रोधित होकर भरत ने उत्तर दिया—ऐ माता ! ऐसे दही-भात में आग लग जाय और अयोध्या का समस्त राज्य जल कर खाक हो जाय। मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता तथा मोह नहीं है ॥३३—३४॥

(६)

प्रसङ्ग—कृष्ण के द्वारा गोपियों का चीरहरण। अपने चीर को पाने के लिए गोपियों की प्रार्थना तथा न देने पर फौजदारी करने की धमकी।

इ बिरिजा[1] बिसरत नाहीं ॥ टेक ॥
सरबे सोना के छावल[2] दुवरिका[3] राम।
गोरस के सुख नाहीं ए मोहन ॥१॥ इ बिरिजा०
जाहि दिन से मोर गोकुला छूटले।
उ सुखवा अब नाहीं ए मोहन ॥२॥ इ बिरिजा०
सखियन के साथे राधे चलली नहाये।
बहतर[4] धरेली उतारी ए मोहन ॥३॥ इ बिरिजा०
चीरा अवरू चोली कदम तर धइली।
अध जल परेली उघारि ए मोहन ॥४॥ इ बिरिजा०
चुनरी लेके कदम चढ़ि बइठेले।
अब जल परेली उघारि ए मोहन ॥५॥ इ बिरिजा०
अब हमार चुनरी दे द मनमोहन।
हम जल में बानी उघारि[5] ए मोहन ॥६॥ इ बिरिजा०
जब हम चुनरी देबि सुनु राधे।
दुनो हाथे अदित[6] मनाव ए मोहन ॥७॥ इ बिरिजा
पुरइन[7] पात पहरि[8] निकल राधे।
हम जल में बानी उघार ए मोहन ॥८॥ इ बिरिजा०
अब हमार बाबा सुनिहें मन मोहन।
बाबा करिहें फउदरिया[9] ए मोहन ॥९॥ इ बिरिजा०
दे द हमार चुनरी निकले द जमुना से।
बहुत हम कइली चिरउरी[10] ए मोहन ॥१०॥ इ बिरिजा०

कोई गोपी कह रही है कि ऐ कृष्ण ! वह ब्रजमण्डल मुझे आज भी नहीं भूलता। यद्यपि समस्त द्वारिका सोने की बनी हुई है ; परन्तु यहाँ पर गोरस (दूध, दही या इन्द्रियों का सुख, भोग विलास) नहीं मिलता ॥१॥

जिस दिन से मेरा गोकुल का निवास छूटा है, उस दिन से वे सब आनन्द भी जाते रहे ॥२॥

एक दिन अन्य सखियों के साथ राधाजी जमुना नहाने के लिए चलीं और उन्होंने अपने वस्त्र उतार कर किनारे पर रख दिये ॥३॥

अपनी साड़ी और चोली को उन्होंने कदम्ब-वृक्ष के नीचे रख दिया और नंगी होकर आधे जल में स्नान करने के लिए चली गयीं ॥४॥

१. ब्रज। २. छायी गयी। ३. द्वारिका। ४. वस्त्र। ५. नंगा। ६. आदित्य, सूर्य। ७. कमल के पत्तों से शरीर ढककर। ९. फौजदारी। १०. बिनती, प्रार्थना।

इतने में कृष्णजी उनकी साड़ी को लेकर कदम्ब पर चढ़ कर बैठ गये और वह जल में नंगी स्नान करती रहीं ॥५॥

राधा कृष्ण से प्रार्थना करती हैं कि तुम अब मेरी साड़ी को दे दो, क्योंकि मैं जल में नंगी पड़ी हुई हूँ ॥६॥

कृष्ण ने उत्तर दिया—मैं तुम्हारी चूनरी को दे दूँगा; परन्तु तुम दोनों हाथों को उठा कर भगवान् सूर्य की प्रार्थना करो ॥७॥

कृष्ण के वस्त्र न देने पर राधा कमल के पत्तों से तन को ढंक कर जल से बाहर निकल आई ॥८॥

राधा ने कृष्ण से कहा कि यदि मेरे पिता तुम्हारे इस कुकर्म को सुन लेंगे, तो वे अवश्य तुम पर फौजदारी का मुकदमा चला देंगे ॥९॥

ऐ कृष्ण ! मैंने तुमसे बहुत प्रार्थना की। अब मुझे वस्त्र दे दो और उन्हें पहन कर जमुना से निकलने दो ॥१०॥

(७)

प्रसङ्ग—भगवान् का भजन करने के लिए भक्तों को चेतावनी।

हमरा त रामे रामे धन खेती—॥ टेक ॥
उपजेला[1] हीरा हीरा मोती।
हमरा त रामे रामे धन खेती ॥१॥ हमरा त०
के हवे[2] बैला, के हवे हरवाहवा[3]।
हम हवे बैला, सुरति हरवाहवा ।२॥ हमरा त०
जब ले चले, तब ले जोती[4]।
उपजेला हीरा मोती ।३॥ हमरा त०
जब ते सुझे तब से चेती[5]।
हमरा त रामे रामे धन खेती ॥४॥ हमरा त०

कोई भक्त कहता है कि राम का नाम ही मेरा धन है और वही मेरी खेती है। इस खेती से हीरा और मोती पैदा होते हैं। अर्थात् राम का नाम जपने से अमूल्य पुण्य की प्राप्ति होती है ॥१॥

इस खेती में कौन बैल है, कौन हल चलाने वाला हरवाहा है ?—मन बैल है और भगवान् का ध्यान ही हरवाहा है। अर्थात् ध्यान के द्वारा मन को प्रेरित करने पर भगवान् की प्राप्ति होती है ॥२॥

इस खेती से हीरा और मोती उत्पन्न होते हैं। अतः जब तक हो सके, तब तक बैल के

१. उत्पन्न होता है। २. है। ३. हल चलाने वाला व्यक्ति। ४. जोतना, खेत में हल चलाना। ५. चेत करना, होश में आना।

द्वारा इस खेत को जोतना चाहिए। भाव यह है कि मन के द्वारा भगवान् का भजन करना चाहिए ॥३॥

जब से होश हो जाय, तभी से चेत जाना चाहिए। क्योंकि राम का नाम ही असली धन है और यही असली खेती है॥४॥

(८)

प्रसङ्ग—कृष्ण की मधुबन में क्रीड़ा।

करत बिहार बिहारी[1] मधुबन[2] में। टेक।
बिहारी मधुबन में, बिहारी मधुबन में।
करत बिहार बिहारी एहि बन में॥१॥
करत बिहार बिहारी मधुबन में।

कोई भक्त कहता है कि कृष्णजी मधुबन में क्रीड़ा कर रहे हैं। वे मधुबन के इसी जंगल में सदा क्रीड़ा करते हैं॥१॥

(९)

प्रसङ्ग—गोपियों की मधुपुर में जाने देने के लिए कृष्ण से प्रार्थना।

जाये दे रे मोहनवा, मधुपुर दहिया लेके ॥टेक॥
जब तुहु मोहन गोरस चहब, भर पेटवा तुहु पइब।
दूध, दही सब दिन अब मिलिहैं, मिसिरी, माखन खइब॥१॥
जाये दे रे मोहनवा, मधुपुर दहिया लेके॥२॥

कोई गोपी कह रही है कि ऐ मोहन! हम लोगों को दही लेकर मधुपुर जाने दो। ऐ मोहन! जब तुम गोरस (दूध दही या इन्द्रियों का स्वाद) चाहोगे, तब हम लोग तुमको पेट भर देंगी॥१॥

अब तुम को दूध, दही, मक्खन और मिश्री प्रतिदिन खाने को मिलेगा; अतएव हम लोगों को बिना छेड़खानी किये अब मधुपुर जाने दो॥२॥

(१०)

प्रसंग—कौशल्या का राम को प्रातःकाल में जगाना।

उठ ए लाल जी भोर[3] भइल कहे कोसिला रानी। ॥टेक॥
होत पारात[4] रघुबीर जगावेली कोसिला रानी।
उठ ए लालजी भोर भइल कहे कोसिला रानी॥१॥

१. कृष्ण। २. वृन्दावन। ३. उषाकाल। ४. प्रातःकाल।

कइ सखि हँसेली, कइ सखि बिहँसेली, कइ सखि मंगल गाई।
दस सखि हँसेली, दस सखि बिहँसेली, दस सखि मंगल गाई॥२॥
आसन मारि सिंघासन[1] बइठेले, भरत जी चंवर के डोलाई।
तुलसी दास परताप राम के; हरि के चरन चित लाई॥३॥
उठ ए लालजी भोर भइल कहे कोसला रानी॥४॥

कौशल्याजी कहती हैं कि ऐ मेरे पुत्र! उठो अब सवेरा हो गया॥१॥

तुम्हें सोया हुआ (इतनी देर तक) देखकर कितनी सखियाँ हँस रही हैं, कितनी मुसकाती हैं और कितनी मंगल-गान कर रही हैं॥२॥

दस सखियाँ गाती हैं; दस मुसकाती हैं और दस मं ल गान कर रही हैं। इतना सुनकर रामचन्द्रजी उठे और आसन लगा कर सिंहासन पर बैठ गये और भरतजी चँवर डुलाने लगे॥३॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि राम का प्रताप बहुत बड़ा है। उन्हीं के चरणों में चित्त को लगाना चाहिए॥४॥

(११)

प्रसंग—गाय दुहने के लिए यशोदा का कृष्ण को प्रातःकाल जगाना।

उठ ए ग्वाल दुहवैया[2], गइया बछवा हुकुरन[3] लगले।
भइल बिहान[4] निनियो ना टूटल, गोपी, गोप सभी लोग जगले॥१॥
पीठि ठोकत चुचुकी[5] पारत, मनमोहन अब उठन लगले।
झूमत निकलेले कुँवर कन्हैया, गोपी लोग प्रेम रस पगले॥२॥

यशोदाजी कहती हैं कि ऐ गायों को दुहने वाले ग्वाले कृष्ण! अब उठो, गाय और बछड़े (दूध दुहे जाने के लिए तथा पीने के लिए) अब आवाज कर रहे हैं। अब प्रातःकाल हो गया है, परन्तु तुम्हारी निद्रा अभी भी नहीं टूटी। गोप और गोपी सभी जग गये हैं॥२॥

यह सुन कर कृष्णजी उठे और बछड़े की पीठ ठोक कर पुचकारने लगे। वे झूमते हुए घर के बाहर निकले और उन्हें देख कर सभी गोपियाँ प्रेम से पागल हो गईं॥२॥

(१२)

प्रसङ्ग—मामा के यहाँ से लौटे हुए भरत का राम बनवास सुन बन जाने के लिए व्याकुल होना।

होत परात हमहू बन जाइबि, अवध अइहें कवन राम।
अवध आजु हमरा के काटे, में ना जिअबि[6] बिनु राम॥१॥
नगर के बासी सभ[7] दोस दीहें, अवध के राज बेकाम।
होत परात हमहू बन जाइबि, अवध अइहें[8] कवन काम॥२॥

१. सिंहासन। २. दुहने वाला। ३. हुंकारना। ४. प्रातःकाल। ५. पुचकारना। ६. जीऊँगा। ७. सब। ८. आयेगा।

भरतजी कहते हैं कि दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही मैं भी वन को जाऊँगा। अवध का राज्य मेरे किस काम आयेगा। राम के बिना अवध आज मुझे काट रहा है। मैं राम के बिना नहीं जी सकता ॥१॥

नगर के सब निवासी मुझे दोष देंगे। अयोध्या का राज्य मेरे लिए व्यर्थ है; अतः प्रातः-काल होते ही मैं बन को अवश्य चला जाऊँगा ॥२॥

(१३)

प्रसङ्ग—गाय को कम दुहने के कारण किसी गोपी का कृष्ण को उलाहना देना।

कहियो[1] दूहे सेर भर आध सेर; कहियो दूहे अधपैया[2]।
मोहन जी से अब ना दुहाइबि[3], हम आपन धेनु गैया ॥१॥
कान्हा लिहले काली कमरिया;, हाथ में लेले लकुड़िया[4]।
होत परात कान्हा बन चलले, गोपी संग बिछुड़िया[5] ॥२॥

कोई गोपी कहती है कि कृष्ण कभी तो मेरी गाय से सेर भर दुहता है, कभी आध सेर और कभी आध पाव ही दुहता है; इसलिए मैं कृष्ण से अब अपनी गायों को नहीं दुहाऊँगी ॥१॥

कृष्णजी यह सुन कर क्रुद्ध हो गये और वे कन्धे पर काली कमली और हाथ में लाठी लेकर, ग्वालों का साथ छोड़कर, प्रातःकाल होते ही वन को चले गये ॥२॥

(१४)

प्रसङ्ग—प्रातःकाल रामचन्द्रजी को जगाना।

उठहु हो दशरथ के दुलरुवा[6] ॥ टेक ॥
बरमा जगले बिसुनु जगले।
जगले बीर हनुमान हो ॥१॥ दशरथ के दुलरुवा०
सिवजी जागले,. किसुनजी जागेले।
जागेले तिरिभुवननाथ हो[7] ॥२॥ दशरथ के दुलरुवा०
तोहरा जगले जगत सभ जागले।
घर घर खुलैला केवार हो[8] ॥३॥ दशरथ के दुलरुवा०

ऐ दशरथ के दुलारे राम! उठो जग जाओ। ब्रह्मा, विष्णु तथा हनुमान सभी जग गये ॥१॥

शिवजी, कृष्णजी, भगवान् सभी जग गये। तुम्हारे जगने से सारा संसार जग जायेगा और घर-घर के किवाड़ खुल जायँगे; अतः अब तुम जग जाओ ॥२॥ -३

१. किसी दिन। २. आध पाव। ३. दुहाऊँगी। ४. लकुट, लाठी। ५. बिछुड़ कर, छोड़कर। ६. प्यारा। ७. त्रिभुवन। ८. कपाट (दरवाजा)।

(१५)

प्रसङ्ग—शुभ शकुन के लिए ग्वालिन द्वारा श्रीकृष्ण का प्रातःकाल मुँह देखने के लिए यशोदा से प्रार्थना करना परन्तु उनके द्वारा प्रार्थना की अस्वीकृति।

जगा द जगा द ए जसोदा मइया अपना ललन के।
हम मुंहवां के देखे अइलीं तोहरा ललन के॥१॥
आताना वचन जब सुनेली जसोदा मइया।
बोली बोलेलि झाहाराई[1], ललन के॥२॥
जाउ रे गोआलिनि[2] अपना भवन के।
का मोसे रारि[3] मचाई ललन के॥३॥
जगा द जगा द ए जसोदा मइया अपना ललन के।
हम मुंहवा के देखे अइलीं तोहरा ललन के॥४॥
अधिका अधिका दहिया बिकाई।
घरे बहिया बछवा बिआई, ललन के॥५॥
आताना वचन जब सुनेली जसोदा मइया।
बोली बोलेलि झाहाराई ललन के॥६॥
जाउ रे गोआलिनि अपना भवन के।
का मोसे रारि मचाई, ललन के॥७॥
आताना बचन जब सुनेली गोआलिनि।
अंखियन नीर ढराई[4] ललन के॥८॥
जेकरा[5] कारन हम घर बन तजलीं[6]।
से हो निठुर[7] होइ, जाइ ललन के॥९॥
आताना वचन जब सुनले किसुनजी।
मुंहवा उघारि[8] देखलवले, ललन के॥१०॥

कोई ग्वालिन कहती है कि ऐ यशोदा माता! तुम अपने बालक (कृष्ण) को जगा दो। मैं तुम्हारे पुत्र का मुँह शुभ सकुन के लिए प्रातःकाल देखने आयी हूँ॥१॥

यशोदा ने जब इतना वचन सुना, तब वह क्रोध-पूर्ण वचन बोलने लगीं॥२॥

वे कहने लगीं कि ऐ ग्वालिन! तुम अपने घर को जाओ। व्यर्थ में मुझसे क्यों झगड़ा कर रही हो॥३॥

१. क्रोधित हो करके। २. ग्वालिन। ३. झगड़ा। ४. गिराना। ५. जिसके। ६. त्याग दिया। ७. निष्ठुर। ८. खोल करके।

ऐ यशोदा ! तुम अपने पुत्र को जगा दो ! मैं उसके मुँह को देखने के लिए आयी हूँ ॥४॥

कृष्ण का शुभ तथा मंगलमय मुख देख लेने से मेरे दही की बिक्री बहुत अधिक बढ़ जायेगी और मेरी गाय बछड़ा पैदा करेगी ॥५॥

इतना वचन यशोदा ने जब सुना, तब क्रोधित होकर कहने लगीं कि ऐ ग्वालिन ! तुम अपने घर जाओ। मुझसे क्यों झगड़ा कर रही हो ॥६—७॥

जब ग्वालिन ने यह निष्ठुर वचन सुना, तब वह अपनी आँखों से आँसू गिराने लगी, अर्थात् रोने लगी ॥८॥

वह कहने लगी कि जिस कृष्ण के प्रेम में फँस जाने के कारण मैंने अपना घर और बन सभी कुछ छोड़ दिया, वह भी आज इतने निष्ठुर हो गये हैं (और इतनी प्रार्थना करने पर भी अपना मुँह नहीं दिखलाते ॥९॥

गोपी की इस प्रेममयी प्रार्थना को कृष्ण ने ज्योंही सुना, त्योंही झट से उन्होंने अपना मुँह खोल उस गोपी को दिखला दिया (और इस प्रकार उसकी प्रार्थना पूरी कर दी) ॥१०॥

भजन

(१)

प्रसङ्ग—भगवान् का भजन करने की लोगों को चेतावनी देना।

राम बेसाह[1] कइ भाई; सुग्गर[2] तन पाई के ॥टेक॥
इ मन बनिया हाट लगावेला; हीरा, मोती, जवाहर बिकाई ॥१॥
पाप, पुन्न दुइ पलरा बाटे; त्रिभुवन तनिका लगाई ॥२॥
पाँच, पचीस दुइ मास बनतवा; दाया धरम तन लाई ॥३॥
बेसहि ओसहि के घर चलि अइह; हिरदा[3] धर गेठि[4] आई ॥४॥
तुलसीदास प्रभु आस[5] चरन के; हरि के चरन चित लाई ॥५॥

कवि संसार के लोगों को सम्बोधित करता हुआ कह रहा है कि ऐ भाइयो! इस सुन्दर शरीर को प्राप्त करके राम नाम को खरीदो अर्थात् भगवान् को भजो। यह मन रूपी बनिया संसार रूपी बाजार को लगाता है, जिसमें हीरा, मोती और जवाहरात बिकते हैं ॥१॥

इन तीनों भुवन में पाप और पुण्य यही तराजू के दो पलड़े हैं ॥

इस संसार में सदा दया और धर्म को ही अपने शरीर में रखना चाहिए, अर्थात् करना चाहिए ॥३॥

तुम इस संसार रूपी बाजार में राम नाम का सौदा करके घर चले आना। इस बात को हृदय में गाँठ बाँध लो ॥४॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि केवल प्रभु (भगवान्) के चरणों का ही सहारा है। अतः उनके चरणों में चित्त लगाना चाहिए ॥५॥

(२)

प्रसङ्ग—जीवन भर किये गये पापों के दूर न होने के कारण पश्चात्ताप।

मन मैली के दाग राम कइसे छूटी ॥टेक॥
छिछली[6] गड़हिया[7], गुदरी[8] पुरानी।
धोबिया बिसनिया[9], करेला नादानी ॥१॥ मनमैली०

१. खरीदना। २. सुन्दर। ३. हृदय। ४. गाँठ। ५. आशा। ६. उथला। ७. छोटा तालाब। ८. फटहा वस्त्र। ९. रुष्ट।

मइल[1] से भरल हमार गुदरी पुरानी।
हमरा जे पास में कउड़ी[2] ना कानी ॥२॥ मनमैली०

कोई भक्त कह रहा है कि मेरे मन का मैल रूपी धब्बा कैसे छूटेगा। कपड़ा धोने का तालाब बहुत उथला है और मेरा वस्त्र बहुत पुराना है। अर्थात् मैं पुराना पापी हूँ। गुरु रूप धोबी शीघ्र ही रुष्ट हो जाता है और मूर्खता करता है ॥१॥

मेरा कपड़ा मैल से भरा हुआ है और हमारे पास एक भी पैसा नहीं है, जिसे देकर धोबी से अपना कपड़ा धुलवा सकूँ ॥२॥

(३)

प्रसङ्ग—सांसारिक दुःख रूपी भार से लदी जीवन नौका के पार लगाने की प्रार्थना। भगवान् में प्रेम करने के लिए उपदेश।

आरे गहिरी नदिया केवट मतवालावा ए साजनवा[3] ॥१॥
कवना बने रामजी के ढूँढ़बि[4] ए साजनवा ॥२॥
आरे बोझलि[5] नइया बिना गोनो[6] के ए साजनवा ॥३॥
कवना बने रामजी के ढूँढ़बि ए साजनवा ॥४॥
कवना बने खोजबि, कवना बने ढूँढ़बि ए साजनवा ॥५॥
जाताना बिगारे मोर करम बिगारे ए साजनवा ॥६॥
आरे ना देबि केहु के दोसवा ए साजनवा ॥७॥
हरि के चरन गुन गाइबि ए साजनवा ॥८॥
जगवा में केहू[7] ना आपन ए साजनवा ॥९॥

भावार्थ यह है कि भगवान् के बिना इस जीवन रूपी नौका को कोई भी पार लगाने वाला नहीं है ; अतः भगवान् के चरणों में प्रेम करना चाहिए।

(४)

प्रसङ्ग—श्रीकृष्ण के मोहिनी रूप का वर्णन।

मोहनि रूप धइले हरि बानी ॥ टेक ॥
दांत में मिसी, नयन में सुरमा ले दरपन मुसकानी ॥१॥
हाथ में मेंहदी गोड़[8] में महावर, ले दरपन मुसकानी ॥२॥
डाड़े[9] सोभे घूमघुमउआ[10], नील बरन के सारी ॥३॥

१. मैल। २. पैसा। ३. मित्र। ४. खोजना। ५. भार से लदी हुई। ६. नाव को खींचने के लिए रस्सी। ७. कोई। ८. पैर। ९. कमर। १०. करधनी।

सुन्दर पीत पीताम्बर ओढ़ले, ठुमुकि[1] कुंज गली में नचानी ॥४॥
दस सखी मिलि आगे चलली, दस सखी पिछानी[2] ॥५॥
केहु ना लखे[3] रे कि इ हवे जनानी कि मरदानी ॥६॥
एक सखी धरि बाँहि पकड़ि पहिचानी ॥७॥
इ त हवे नन्द बाबा के लाला दुलरानी[4] ॥८॥
मोहनि रूप धइले हरि बानी ०

कोई गोपी कह रही है कि आज कृष्ण ने मोहिनी स्त्री का रूप धारण कर लिया है। उन्होंने अपने दाँतों में मिस्सी, आँखों में सुरमा और हाथ में मेंहदी तथा पैर में महावर लगा लिया है। शीशे में अपने रूप को देखकर वे मुसकाते हैं ॥१—२॥

अपनी कमर में करधनी और नीले रंग की साड़ी उन्होंने पहन रक्खी है। सुन्दर पीताम्बर को ओढ़े हुए, वे ठुमुक कर कुञ्ज गली में नाच रहे हैं ॥३—४॥

दस सखियाँ उनके आगे चलती हैं और दस सखियाँ पीछे चल रही हैं। कोई यह नहीं पहचान सकती कि बीच में यह स्त्री जा रही है या कोई पुरुष ॥५—६॥

इसी बीच एक सखी ने श्रीकृष्ण की बाँह को पकड़कर उनको पहचान लिया और कहने लगी कि यह तो नन्द बाबा के लाड़िले पुत्र हैं ॥७—८॥

सचमुच श्रीकृष्ण का यह मोहिनी रूप बड़ा ही सुन्दर तथा भक्तों के हृदय को आनन्दित करने वाला है ॥९—१०॥

(५)

प्रसङ्ग—किसी गोपी की प्रार्थना श्रीकृष्ण के साथ रहने तथा क्रीड़ा करने की।

साम[5] बंसिया बजाइबि हो रउरे साँगावा ॥ टेक॥
आरे राउर मटुका[6] अपना सिर लेइबि।
आपाना ही केसिया के चोटिया गुहाइबि हो ॥१॥ रउरे साँगावा
साम बंसिया बजाइबि हो रउरे साँगावा।
साम मुरली बजाइबि हो रउरे साँगावा ॥२॥ रउरे साँगावा।
आरे राउर पीताम्बर अपना कन्धा पर लेइबि।
आपना आँचारा पर रउरा के बैठाइबि हो ॥ रउरे साँगावा
आरे हम दहि बेचन चलली मथुरा नगरिया।
हमहू बिरिजा[7] के नारी कहाइबि हो रउरे साँगावा ॥४॥
सूरदास बड़ आस[8] चरन के, हरि के चरन चित्त लाई ॥५॥

१. धीरे-धीरे चलना। २. पीछे। ३. देखना। (लक्षित)। ४. लाड़िला। ५. श्याम। ६. घड़ा। ७. ब्रज। ८. आशा।

कोई गोपी कह रही है कि ऐ कृष्णजी ! मैं आपके साथ बंशी बजाऊँगी। मैं आप के घड़े को अपने सिर पर ले लूँगी और सिर के बालों की चोटी (बेणी) बनाऊँगी ।।१।।

ऐ कृष्ण ! मैं तुम्हारे साथ ही मुरली या बंशी बजाऊँगी ।।२।।

मैं आपके पीताम्बर को अपने सिर पर ले लूँगी और अपने आँचर पर आप को बैठाऊँगी ।।३।।

मैं दही बेचने के लिए मथुरा नगरी को जा रही हूँ। मैं भी आपके साथ रहकर अब ब्रज की स्त्री कहलाऊँगी ।।४।।

सूरदासजी कहते हैं कि हरि के चरणों की ही अब आशा है ; अतः उसी में अब चित्त लगाना चाहिए ।।५।।

(६)

प्रसङ्ग—राधा का दही बेचने के लिए मथुरा जाना और कृष्ण का दही खा जाना तथा मटका फोड़ देना।

आरे ले लिहली सिर मटुका हो, सँवार[1] लिहली केस।
दहिया बेचन राधे चललीं हो, ओही जमुना के देस ।।१।।

आरे दही मोरा खइले हो कान्हर[2], मटुका दिहले हो फोर।
बहियाँ मोर मुरुकवले[3] हो, मनवा बसेला हो फोर ।।२।।

आरे बेचि खोंचि के हो राधे, आँगाना भइलू हो ठाढ़।
मुँह तोर हम देखबि हो राधे, अझुराइल[4] हो बाड़े बार ।।३।।

कावाना नगरिया हो राधे, दहि बेचे तुहु जाई।
कावाना बरने[5] के बालाकवा, हो, दहिया ले ले जाई ।।४।।

आरे मथुरा नगरिया जसोवा हो, दहिया बेचे जाइ।
साम बरन के बालाकवा हो, दहिया[6] मोर खाइ ।।५।।

कोई गोपी कहती है कि राधा ने अपने बालों को सँवारकर सुशोभित कर सिर पर मटका रख लिया और वह दही बेचने के लिए जमुना के प्रदेश अर्थात् मथुरा को चलीं ।।१।।

राधा कहती है कि कृष्ण ने मेरे दही को खा लिया और सिर पर के घड़े को फोड़ दिया। उन्होंने मेरी बाँह को मुरुका दिया। फिर भी अपनी मोहिनी मूर्ति के कारण वे मेरे मन में बस रहे हैं ।।२।।

श्रीकृष्ण ने कहा—राधे ! तुम अपना दही बेचकर मेरे आँगन में खड़ी हो जाओ। मैं उलझे हुए बालों से सुशोभित तुम्हारे मुख को देखना चाहता हूँ ।।३।।

१. शृंगार करना। २. कृष्ण। ३. तोड़ दिया। ४. उलझे हुए। ५. वर्ण, रंग। ६. दधि, दही।

गोपी पूछती है कि ऐ राधे ! तुम किस नगर में दही बेचने के लिए जाती हो और किस रंग का बालक तुम्हारे दही को छीन लेता है॥४॥

राधे ने कहा—मथुरा में मैं दही बेचने जाती हूँ और श्याम वर्ण का बालक मेरे दही को खा जाता है॥५॥

(७)

प्रसङ्ग—किसी गोपी के साथ विवाह करने के लिए श्रीकृष्ण से सखियों की प्रार्थना।

कहाँ चलि जाईं हो कन्हैया बोलि[1] तोरी॥ टेक॥
राह बाट मोहि रोकेले हो, बोली बोलेले अन्धियारी।[2]
पास पड़ोसिनि सोर कइली, घर आँगन में छूटेला गोहारी[3]॥१॥
बछवा रे उ जे[4] छान[5] तुरावे कूदि परे तड़वाही[6]।
धइ पकड़ि पकड़ियो जे लेली झमकि चढ़ेली अटारी॥२॥
सूतल रहलीं सपन एक देखलीं, चिहुँकि[7] उठिलीं डर लागे बड़भारी।
मोरा नइहरवा बयद[8] बनि अइले, आपु धइले मोरी नारी[9]॥३॥
सभ सखी समझावन लगलीं, अब कृष्ण हो जा घरबारी[10]॥४॥

कोई गोपी श्रीकृष्ण के दुर्व्यवहारों से ऊब कर कह रही है कि ऐ कृष्ण ! तुम्हारी बोली (बुरे बचन) के कारण मैं कहाँ चली जाऊँ ? तुम मुझे रास्ते में रोक लेते हो और बुरी-बुरी बातें कहने लगते हो। तुम्हारी बुरी बातों के कारण पास की पड़ोसिन स्त्रियाँ हल्ला करने लगती हैं और मेरे घर तथा आँगन में शोरगुल मचने लगता है।१॥

बछड़ा तो वही बहादुर है, जो अपने बन्धन को तोड़कर शीघ्रता से कूदकर भाग जाता है। परन्तु तुमको तो गोपियाँ पकड़कर, तुम्हें लेकर अटारी पर चढ़ जाती हैं॥२॥

मैं जब सो रही थी, तब मैंने एक सपना देखा और डर के मारे चिहुँक कर उठी। मेरे मायके में कृष्णजी वैद्य बनकर आये और मेरी नाड़ी देखने लगे॥३॥

मेरी सब सखियों ने कृष्णजी को समझाना शुरू किया कि हे कृष्ण ! अब तुम गृहस्थ बन जाओ और विवाह कर इस गोपी के साथ रहो॥४॥

(८)

प्रसङ्ग—सीता के वियोग में राम का चकवा से उन का पता पूछना और उसके अभिमानजनक उत्तर पर लक्ष्मण का उसे मार डालना।

१. बचन। २. बुरा, अन्धकारमय। ३. आवाज (जोरों की)। ४. जो। ५. बैर का बन्धन। ६. शीघ्रता से। ७. अचानक जग पड़ना। ८. वैद्य। ९. नाड़ी। १०. गृहस्थ।

राम नाम कठिन भइले हो; ए कठिन भगवान् ॥ टेक ॥
तर बहेली गंगा ऊपर असमान, ताहि बीचे जोगी लगावेला धियान[१] ॥१॥
राम लछुमन दुनो भाई; सीता के बाट जोहत[२] चलि जाई ॥२॥
ए कठिन०
सुनहु चकवा, सुनहु एक बात, एहि बाट देखुअ सीताजी के जात ॥३॥
रहिले तालाब बीचे खिलिलें[३] आकास, ना हम देखलीं सीताजी के जात ॥४॥
ए कठिन०
सुनहु लछुमन भेदहु एक बान; चकवा चकई बोलेला अभिमान ॥५॥
ए कठिन०
चकवा मरले दह हो गइले सून,[४] रावन के मरले लंका जइसे सून ॥६॥
ए कठिन०

इस कलियुग में राम का नाम लेना कठिन है। नीचे गंगाजी बहती हैं और ऊपर आकाश है। उसी के बीच में योगी ध्यान लगाता है ॥१॥

राम और लक्ष्मण दोनों भाई सीता का रास्ता देखते हुए अर्थात् उन्हें खोजते हुए चले जा रहे हैं ॥२॥

वे लोग चकवा नामक पक्षी से पूछते हैं कि ऐ चकवा! तुम एक बात सुनो। क्या तुमने सीताजी को इस रास्ते से जाते हुए देखा है ॥३॥

चकवा ने उत्तर दिया—मैं तालाब के बीच में रहता हूँ और मैं आकाश में उड़ता फिरता हूँ। मैंने सीताजी को नहीं देखा है ॥४॥

राम ने लक्ष्मण से कहा—ऐ लक्ष्मण! तुम एक बाण को चढ़ाओ और इस पक्षी को मारो क्योंकि यह अभिमान के साथ बोलता है ॥५॥

लक्ष्मण ने चकवा को मार दिया। उसके मरने से वह तालाब वैसे ही शून्य हो गया, जैसे रावण के मरने से लंका ॥६॥

(९)

प्रसङ्ग—राधा का कृष्ण की मुरली चुराना और कृष्ण का उसे खोजना। राधा का कृष्ण को उलाहना।

बंसिया चोरवलीं राधा प्यारी ॥ टेक ॥
उ दिनवा भूलि गइल ए मोहन, कान्हे कमरिया[५] डारी।
आरे बहियाँ में बहियाँ मेरवल ऐ मोहन, खाटा[६] बहिया जुठारी[७] ॥१॥

१. ध्यान। २. प्रतीक्षा करना। ३. लुप्त हो जाना (उड़कर)। ४. शून्य। ५. कम्बल। ६. खट्टा। ७. उच्छिष्ट।

केहु देखेले बा हो, बंसिया चोरवली राधा प्यारी।
गोखुला अवरु मथुरा में खोजलीं, कतहुँ ना मिललीं राधा प्यारी।।२-।।
बंसिया चोरवली०
अतरसवा के लहंगा पहिनले, झिमझिमानी[1] के सारी।
गोरी गोरी बहियाँ, हरिअर[2] चुरिया; उनहीं के नइयाँ राधा प्यारी।।३।।
केहु देखले बा हो, बंसिया चोरवलीं राधा प्यारी।।४।।

राधाजी कृष्ण से कहती है कि ऐ कृष्ण! क्या तुम वह दिन भूल गये, जब तुम ने अपने कन्धे पर कम्बल डाल रक्खा था, मेरी बाँहों में अपनी बाँह डालकर चलते थे और मेरे खट्टे दही को खाकर जूठा कर देते थे।।१।।

कृष्ण कहते हैं—किसी ने मेरी बंसी को चुराते हुए राधा को देखा है। मथुरा और गोकुल में मैंने खोज लिया, वह कहीं नहीं मिली।।२।।

वह अतरस का लहँगा तथा बारीक साड़ी पहने हुए है। उनकी बाहें गोरी हैं, जिनमें हरी चूड़ियाँ हैं। उन्हीं का नाम राधा है।।३—४।।

(१०)

प्रसङ्ग—राधा की कृष्ण से सिर पर घड़ा रख देने की प्रार्थना।

बिहारी मोरी गागर भरि द हो।।टेक।।
गागरि भरि द, सिर पर धरि द; लेइ कदम्ब पहुँचाई द हो।।१।।
इ मति जान कृस्ना राधा अकेली; सोलह सौ सखी मोर बाड़ी सहेली।।२।।
इ मति जान कृस्ना राधा कुँआरी; साम सुनर के हम हईं दुलारी।।३।।
सिरिबिरिदावन कुंज गली में, मोर कन्हैया बहियाँ पकड़ी हो।।४।।
बिहारी मोरी गागरि भरि द हो।

ऐ कृष्ण! मेरा घड़ा जल से भर दो, उसे मेरे सिर पर धर दो और मुझे थोड़ी दूर पहुँचा दो। यह मत समझो कि मैं अकेली हूँ। सोलह सौ सखियाँ मेरे साथ हैं।।१—२।।

ऐ कृष्ण! यह मत समझो कि मैं क्वाँरी हूँ, वृन्दावन में कृष्ण ने मेरी बाँह पकड़ी है और मैं उनकी दुलारी हूँ।।३—४।।

(११)

प्रसङ्ग—राम भजन जहाँ न हो वहाँ पर नींद को जाने को आदेश।

१. झीना कपड़ा। २. हरित।

चलु चलु रे निनरिया,[१] जेहि घर राम भजन ना होई ।।टेक।।
कावाना कारन से रोगी जागे, कावाना कारन से भोगी[२]।
कावाना कारन से चोरवा जागे, कावाना कारन से जोगी ।।१।।
चलु० चलु०
रोग के कारन रोगी जागे, भोग कारानवा भोगी।
धन का लोभे चोरवा जागे, तपवा कारन के जोगी ।।२।।
चलु० चलु०
पहिले पहर[३] में रोगी जागे, दोसरा पहर में भोगी।
तीसरा पहरवा में चोरवा जागे, चउथा[४] पहरवा में जोगी ।।३।।

ऐ नींद ! उस स्थान को चलो, जहाँ पर राम का भजन नहीं होता। किस कारण से रोगी जगता है, किस कारण से भोगी, चोर तथा जोगी जागते हैं ।।१।।

रोग के कारण रोगी जगता है, भोग-विलास के कारण कामुक पुरुष जागते हैं, धन के लोभ से चोर जगता है तथा तपस्या करने के लिए जोगी जागता है ।।२।।

पहले पहर में रोगी जागता है, दूसरे पहर में कामुक पुरुष जागते हैं, तीसरे पहर में चोर जागते हैं और चौथे पहर में जोगी जागते हैं ।।३।।

(१२)

प्रसङ्ग—भगवान् से जीवन-नौका को मँझधार से निकालने की प्रार्थना।

सुन ए रघुबर ।। टेक ।।
बहि गइले पुरवैया, मारेला हिलोर[५] ।।१।। सुन ए रघुबर
करेला करेजवा, अब त हड़ोर[६] ।।२।। सुन ए रघुबर
नाँहि तोर नइहर, नाँहि परिवार ।।३।। सुन ए रघुबर
नाँहि मोर भइया, कहू रखवार ।।४।। सुन ए रघुबर
केकरा के करबि, अब हम गोहार ।।५।। सुन ए रघुबर
अब मोरि नइया, परलि मँझधार ।।६।। सुन ए रघुबर
नइयाँ हलइहें, अब त तोहार ।।७।। सुन ए रघुबर
तोहरा बिना लागे, सगरे आन्हार[७] ।।८।। सुन ए रघुबर
तुलसीदास प्रभु, आस तोहार ।।९।। सुन ए रघुबर
हरि के चरनिया पर, लागल धियान[८] ।।१०।। सुन ए रघुबर

१. नींद। २. कामुक। ३. प्रहर, घड़ी। ४. चौथा। ५. लहर मारना। ६. डर लगना। ७. अन्धकार। ८. ध्यान।

पुरवैया हवा बह रही है और नदी में हिलोरें उठ रही हैं। यह देख कर मेरा हृदय डर रहा है ॥१—२॥

न तो मेरा मायका ही कहीं है और न परिवार ही। न तो मेरा भाई ही जीवित है जो मेरी रक्षा कर सके ॥३—४॥

अब मैं किसको पुकारूँ ? मेरी नाव अब मँझधार में पड़ गयी है ॥५—६॥

ऐ भगवान ! तुम्हारे बिना अब सब मुझे अन्धेरा ही दिखाई दे रहा है। यदि इस समय तुम मेरी रक्षा न करोगे, तो लोग तुम्हारे 'अशरण शरण' नाम की हँसी उड़ायेंगे ॥७—८॥

तुलसीदासजी कहते हैं कि भगवान् ! आप की ही आशा है। अब हरिजी के चरणों पर ध्यान लगाना चाहिए ॥–९–०॥

(१३)

प्रसङ्ग—हरि भजन के बिना जीवन को व्यर्थ बिताने के कारण पश्चात्ताप।

आगाड़ी[1] जाइके, ऊहवें, भजबि[2] भगवान ॥टेक॥

अइले सिपाही भइले सफेदा,[3] भूलि गइले गुरु ज्ञान।
बालापन हम खेलि गँववली, भूलि गइले गुरु ज्ञान ॥१॥
आगाड़ी०

भइल जवानी मऊगी[4] संग सूतलीं, भूलि गइले गुरु ज्ञान।
बूढ़ भइले तन कांपे लागल, जम अंगुरी बुझावतारे[5] सान ॥२॥
आगाड़ी०।

कोई पापी पश्चात्ताप करता हुआ कह रहा है—मैंने सोचा था कि आगे जाकर अर्थात् गर्भावस्था से बाहर निकलकर मैं ईश्वर का भजन करूँगा ; परन्तु ऐसा नहीं कर सका। जब यम-राज के सिपाही मृत्यु के समय मुझे लेने के लिए आये, तो डर के मारे मेरा शरीर सफेद हो गया और गुरु का उपदेश भूल गया ॥१॥

मैंने बालकपन खेल में बिताया, जवानी स्त्री के साथ सोकर बिताया, और वृद्धावस्था आने पर शरीर काँपने लगा। अब यमराज उँगली हिला कर मृत्यु का संकेत करने लगा। इस प्रकार मेरा सारा जीवन व्यर्थ ही व्यतीत हो गया ॥२॥

(१४)

प्रसङ्ग—वृन्दावन में श्रीकृष्ण की रासलीला का वर्णन।

१. आगे। २. भजूँगा (भजिष्यामि)। ३. डर के कारण सफेद। ४. स्त्री। ५. बतलाता है।

बिरिवावन में हो ।। टेक ।।

केहु सखि गावे केहु बजावे केहु तूरे तान।
सिरिबिरिवावन कुंज गलीं में; मांगे दही के दान ।।१।।

गोपी के आगे गोप नाचे, झनर झनर बाजे ताल।
जमुना तीर कदम के नीचे, नाचे अहीर के लाल ।।२।।

श्री कृष्ण वृन्दाबन की कुञ्ज गली में गोपियों से दही माँगते हैं। कोई गोपी गाती है कोई बजाती है और आलाप लेती है ।।१।।

जमुना के किनारे, कदम्ब के नीचे नन्द के लाल कृष्ण गोपियों के आगे नाच रहे हैं और कठताल झनझन आवाज करता हुआ बज रहा है ।।२।।

(१५)

प्रसङ्ग—काम में लगी हुई स्त्री के द्वारा परदेश से आए हुए प्रियतम को न पहचानना और उसके अन्तर्ध्यान हो जाने पर पश्चात्ताप करना।

सुन ऊधो प्यारे हो, मन के मन में रही ।। टेक ।।

ए पार गंगा ओह पार जमुना, बीचवा सरजू बही।
अपने कन्हैयाजी पार उतरि गइले, हमरा से कुछु ना कही ।।१।।
सुन ऊधो प्यारे०

बार हो बरिस[1] पर हरि घर अइले[2] हम दहि मथत रही।
हम अभिमानी चिन्हलीं[3] ना जनलीं, हरि मोर छपित[4] रही ।।२।।
सुन ऊधो प्यारे०

अलिये खोजलीं, गलिये खोजलीं, खोजलीं कुंजगली।
पात पात बिरिदावन खोजलीं, हरि मोर ना मिललीं ।।३।।
सुन ऊधो प्यारे०

ओहि नन्दलाल के सुरति[5] ना बिसरे, मोर मन थिर ना रही।
सुन ऊधो प्यारे, मन के मन में रही ।।४।।

कोई गोपी कह रही है—ऐ प्यारे ऊधो! सुनो मेरे मन की बात मन ही में रह गयी। इस पार गंगा बहती है, उस पार जमुना बहती है और बीच में बहती है सरयू। कृष्णजी स्वयं नदी के उस पार चले गये; परन्तु मुझसे कुछ भी नहीं कहा ।।१।।

१. वर्ष। २. आया (आगत)। ३. पहचाना। ४. छिपा हुआ। ५. स्मृति।

बारह वर्ष के बाद हरिजी (या पति) घर लौटकर आये, जब मैं दही मथ रही थी। मैं अभिमानिनी अपने कार्य में लगी रहने के कारण अपने प्रियतम को न पहचान सकी और मेरा पति अन्तर्ध्यान हो गया ॥२॥

मैंने इस गली में, उस गली में, कुञ्जगली में तथा वृन्दाबन के पत्ते-पत्ते में अपने प्रियतम को खोजा; परन्तु वह नहीं मिला ॥३॥

उस प्रियतम की स्मृति नहीं भूलती तथा उसके अन्तर्ध्यान हो जाने के कारण मेरा मन स्थिर नहीं। ऐ ऊधो! सुनो, मेरे मन की अभिलाषा मन में ही रह गयी। अर्थात् उसकी पूर्त्ति नहीं हो सकी ॥४॥

विविध

(१)

प्रसङ्ग--कृष्ण से मिलने के लिए, दही बेचने के व्याज से राधिका का वृन्दावन जाना।

सुनि के मुरलिया उठे राधा गुजरिया[1];
सारी पहिर के चुनरिया[2] रंगदार ॥१॥

रसे[3] रसे बंसिया बजावे कान्हा बेनवा;
सुनि के गुजरियन के लागल बा धियानवा[4] ॥२॥

बाड़ा भोरे गइली अपना सखि के गोहनवा[5];
उभड़ल जोबन बांधे चोली के बंधनवा[6] ॥३॥

झलकेला बतीसी खाली मगही के पनवा;
सुकवा नाहिंन उनकर चमकेला नयनवा ॥४॥

ससुई ससुरवा से कइके बहनवा[7];
दहिया के बेंचे खातिर[8] चलली मधुबनवा ॥५॥

पहिरि चुनरिया रंगदार मिले चलली रसिया[9] से;
फेरि[10] करेली सोरहो सिंगार ॥६॥

ग्वालिन राधिका मुरली के शब्द को सुनकर रंगीन साड़ी को पहन कर उठी ॥१॥

श्री कृष्णजी धीरे-धीरे बंशी बजाते हैं और ग्वालिन उसे सुनकर ध्यान में मग्न हो जाती हैं ॥२॥

राधा अपनी सखी के घर बहुत तड़के गयी। उसने अपने उभरे हुए यौवन को चोली के बन्द से बाँध रक्खा था ॥३॥

उसके दाँत झलकते हैं, आँखें सुग्गा की आँखों की तरह चमकती हैं तथा वह मगह देश का पुराना पान खाती है ॥४॥

वह सास और ससुर से व्याज करके दही बेचने के लिए वृन्दावन को चल पड़ी ॥५॥

१. गुर्जरी, ग्वालिन। २. रंगीन साड़ी। ३. धीरे धीरे। ४. ध्यान। ५. गृह। ६. बन्द, बन्धन। ७. बहाना, व्याज। ८. लिए। ९. प्रेमी। १०. पुनः, फिर।

वह सोलहो शृंगार करके, रंगीन साड़ी पहन कर, अपने प्रेमी से मिलने के लिए चल पड़ी ॥६॥

(२)

प्रसङ्ग--पति-पत्नी के विलास का वर्णन।

पुरवा बहेला फुर-फुरवा[1] ए भाई; पछुआ बहेला ललकार[2] ॥टेक॥
कोठवा के ऊपर सीतल बहे पवना, लाल पलंग मखमल के बिछवना ॥१॥
नइहर से नारि अइली ससुरा में गवना;
तापर[3] सुते सुन्दर नारि सइयाँ के खेलवना[4] ॥२॥
कुतुबन कहे कि देखि के लागेला डेरावना[5];
पुरवा बहेला ललकार ॥३॥
कोठवा के नीचे एक टूटही ओसारी[6];
सोरहो सिंगार कइले अइली सुन्दर नारी ॥४॥
कुतुबन कहे कि मोर उमरिया बितल सारी;
पछुवा बहेला ललकार ।५॥
नइहर से हमरा के ले आइल सइयाँ;
काहे बिहल[7] ससुरा में बिसराई ॥६॥
पुरवा बहेला फुर-फुरवा ए भाई;
पछुवा बहेला ललकार ॥७॥

पुरवैया हवा फुर-फुर अर्थात् धीरे-धीरे बह रही है और पछुआ हवा ललकार कर जोरों से बहती है। अटारी के ऊपर शीतल हवा बह रही है। लाल पलंग बिछा हुआ है और उस पर मखमल का बिछौना है ॥१॥

बधू मायके से गौना कराकर ससुराल में आयी। पति की क्रीड़ा-भूत वह स्त्री उस पलंग पर जाकर सोती है ॥२॥

वह स्त्री कहती है कि यह प्रथम समागम का दृश्य भयानक मालूम हो रहा है। तिस पर पछुआ हवा ललकार कर जोरों से बह रही है ॥३॥

उस कोठे के नीचे एक टूटा हुआ ओसारा (बरामदा) है। उसमें सोलहो शृंगार करके एक स्त्री आई है ॥४॥

वह स्त्री पति से कहती है कि मेरी सारी उम्र बीत गई, तब तुम भोग करने के लिए आये हो ॥५॥

१. धीरे-धीरे। २. जोरों से। ३. उसके ऊपर। ४. बालकों के खेलने का सामान। ५. भयावना। ६. बरामदा। ७. दिया।

वह कहती है—पति मायके से गौना कराकर मुझे ले आया अब ससुराल में आने पर उसने मुझे क्यों विस्मृत कर दिया है? ॥६॥

पुरवैया हवा धीरे-धीरे बह रही है, परन्तु पछुआ ललकार कर जोरों से बहती है।७॥

इस गीत में जो मादकता तथा मस्ती है, उसका वर्णन करना कठिन है। सारे गीत में एक अजीब प्रवाह है, जो पुरवैया हवा के समान ही धीरे-धीरे आगे बढ़ता जाता है॥८॥

(३)

प्रसङ्ग—पति की मृत्यु पर स्त्री का करुण-विलाप।

आइ के मउतिया[1] गइल बा नियराई[2];
हमरे संइया के करम त गइले फूटि॥१॥
फूटि गइल करम परीत[3] भइल खटिया;
हमहू रोवेनी सिरहान धइके पटिया॥२॥
कबहूं ना छुवले बालम दूबिओ के सटिया,[4]
कबहूं ना भइले हमरो बालम से संघतिया[5]॥३॥
हमरे सइयाँ के करम त गइले फूटि;
एहि बीच आ के जम्भु[6] त लिहले लूटि॥४॥

स्त्री कहती है कि मेरे पति का भाग्य फूट गया है; क्योंकि उसकी मृत्यु अत्यन्त समीप आ गई है॥१॥

उसका भाग्य फूट गया। अब खाट में ही उसकी प्रीति है, अर्थात् मर जाने के कारण चारपाई को छोड़कर उठ नहीं सकता। अब मैं खाट के सिर की ओर की पाटी (पटिया) को पकड़ कर रो रही हूँ॥२॥

मेरे प्रिय पति ने मुझे दूब की छड़ी से भी कभी नहीं छुआ था (लाठी से मारने की कथा तो दूर रही) पति से मेरा कभी भी समागम नहीं हुआ (क्योंकि गौना होते ही वह मर गया)॥३॥

मेरे पति का भाग्य फूट गया और इसी बीच में यमराज ने उन्हें लूट लिया अर्थात् मार डाला॥४॥

पति की मृत्यु पर पत्नी के द्वारा किया गया यह विलाप कितना हृदय द्रावक तथा पाषाण हृदय को भी पिघला देने वाला है॥५॥

(४)

प्रसङ्ग—स्त्री को अपने घर लाने के लिए पति का ससुराल जाना। भाई के द्वारा बहन को न भेजना।

१. मौत। २. नजदीक। ३. प्रीति-प्रेम। ४. छड़ी। ५. समागम। ६. यमराज।

कहवाँ से चलि अइले रातुल[1] सुगवा[2] रे;
कहवाँ ही लेले बसेर[3] रे ॥१॥
केकरा चउपरिया[4] चढ़ि बइठेला सुगवा रे;
लेला रमइया जी के नाँव रे ॥२॥
किया सुग्गा खइबे रे पर पकवनवा[5];
किया खइबे ललका अनार रे ॥३॥
नाहीं सासु खइबों रे पर पकवनवा;
नाहीं खइबों ललका अनार रे ॥४॥
हम त जे लेबि सासु सुहवा[6] कवन देई;
जिन देखि नयना जुड़ाई रे ॥५॥
अपने दरबरिया से निकले कलन लाल;
तीरवा धनुष लेले हाथ रे ॥६॥
एहि तीरवा वे मरबों रातुल सुगवा;
मागेला बहिनिया हमार रे ॥७॥
अपना रसोइया से निकले कवन देई;
नूपुर देलि झहराई[7] रे ॥८॥
जनि भइया मारहु रातुल सुगवा रे;
एहि सुगवा के घरे बास[8] हमार रे॥९॥

कहाँ से लाल सुग्गा (पति) चला आ रहा है और यह कहाँ अपना बसेरा (निवास) करेगा ॥१॥

यह किसकी चौपाल पर बैठेगा। यह मेरे पति का नाम ले रहा है ॥२॥

स्त्री पूछती है—ऐ सुग्गे ! तुम पकवान खाओगे, या लाल अनार खाओगे ? ॥३॥

वह सुग्गा (पति) कहता है कि ऐ स्त्री ! न तो मैं पकवान खाऊँगा और न लाल अनार ही खाऊँगा ॥४॥

ऐ सास ! मैं तो वह वस्तु लूंगी, जिसको देखकर नयनों को तृप्ति मिले ॥५॥

तब उस सास का लड़का तीर-धनुष लेकर बाहर निकला ॥६॥

वह कहने लगा कि मैं इसी धनुष-तीर से इस लाल सुग्गे को मारूंगा क्योंकि यह मेरी बहन को माँग रहा है ॥७॥

इतना सुनकर उस सुग्गे (पति) की स्त्री निकली और अपने भाई से कहने लगी कि ऐ भैया ! इस लाल सुग्गे को मत मारो; क्योंकि इसी के घर में मेरा वास (आश्रय) है ॥८—९॥

१. लाल। २. सुग्गा (पति)। ३. बसेरा (निवास)। ४. चौपाल। ५. पकवान। ६. सुभगा (स्त्री)। ७. क्रोधित होकर। ८. बसेरा (आश्रय)।

सोहर

(टिप्पणियाँ)

(१)

पंक्ति

१ **नउनिया**—नाइन का दीर्घ (विस्तृत) रूप है।

बरिनया—बारिन का विस्तृत रूप है। ब्रह्मभोज आदि उत्सव के अवसरों पर जो जाति भोजन के लिए पत्तल बना कर देती है, उसे बारी कहते हैं। बारिनबारी की स्त्री।

२ **पाँइच**—प्रतिवर्तन। देहातों में किसी के घर से उधार रूप में जो भोजन का सामान माँग कर लाया जाता है, उसे पांइच या पँइचा कहते हैं।

४ **बिसाधल**—विस्माद, विस्मादल, विसादल, विसाधल। 'दो धः' सूत्र से द का ध।

६ **बनउरवा**—बिनौला, रुई का बीज, जो भैंस को खाने के लिए दिया जाता है।

९ **चुनरिया**—चूनरी का विस्तृत रूप।

पिअरिया—पियरी का विस्तृत रूप। मंगल कार्य में पीला वस्त्र पहना जाता है।

(२)

३ **कोखिया**—कुक्षि, कोख, कोखिया।

७ **सुरुजवा**—सूर्य, सूरज, सुरुज, सुरुजवा।

८ **जुड़ाइल**—(Past Participle of) जुड़ाना, सन्तोष प्राप्त करना।

(३)

४ **जुग पलटना**—समय को बदल देना।

५ **सुराज**—स्वराज का अपभ्रंश रूप।

(४)

१ **सबदिय**—शब्द, सबद, सबदिया।

२ **बहुअरी**—बहू (बधू) के षष्ठी कारक का रूप।

७ **गोड़**—पैर।

(५)

इस गीत में माता की अभिलाषा कितनी उच्च तथा आदर्श मय है। ऐसे समय में, जहाँ

नौकरी ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य हो गया है, देश-सेवा की कामना सचमुच बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

१ **सेनुर**—सिन्दूर, सेन्दूर, सेनुर।

'इत एत् पिण्डसमेषु' सूत्र से इ का ए।

'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' से द लोपः।

२ **तिरिया**—स्त्री।

३ **अटरिया**—अटारी का विस्तृत रूप (long form)।

४ **नीक लगना**—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—अच्छा लगना, सुखद प्रतीत होना। उदाहरण "लरिकन के मिठाई बड़ा नीक लागेला"।

५ **जतनवा**—यत्न, जतन, जतनवा।

६ **किरिपा**—कृपा, करपा, किरिपा।

'ऋतोऽत्' सूत्र से ऋ का अ।

७ **देबों**—दूँगी। भोजपुरी रूप देबि। ब्रज भाषा की छाया। भविष्यत्काल का रूप।

७ **सेउवा**—सेवा। लय मिलाने के लिए 'उ' जोड़ दिया गया है। वैदिक भाषा में इसे 'स्तोभ' कहते हैं।

९ **सधिया**—श्रद्धा, सद्धा, साध, सधिया।

१० **पूत**—पुत्र, पूत।

(६)

३ **रेड़वा**—एरण्डः, रेण्ड, रेड, रेड़वा।

५ **होनहार बिरवान**—इस सुप्रसिद्ध कहावत का इस गीत में बड़ा ही सुन्दर प्रयोग हुआ है।

" **चीकन**—चिक्कण; चीकण, चीकन।

६ **लछनवा**—लक्षण, लच्छन, लछन, लछनवा।

७ **असीस**—आशिषः, आसीस असीस।

८ **गोदिया**—गोद का विस्तृत रूप (long form)।

१० **त**—तब का संक्षिप्त रूप।

" **असीसत**—वर्तमान काल का रूप।

(७)

१ **गोत**—गोत्र, गोतर, गोत।

४ **अननवा**—आनन्द, अनन्द, अनन, अननवा।

५ **सलेहरि**—सहेली का अपभ्रंश रूप।

'विपर्यय' के नियमानुसार वर्णों में परिवर्तन हो गया है।

(८)

१ **घिनावनि**—घृणावती, घिनावती, घिनावनि 'ऋतोऽत्' ऋकारस्य अकारः। 'णोनः' सूत्र से ण का न।

३. **गाजाधार**—गदाधरः (विष्णुः)

७ **नहइली**—स्नान किया। नहाना क्रिया का उत्तम पुरुष, एक वचन में 'भूतकालिक' रूप।

८ **अतवार भूखना**—रविवार का व्रत करना। पुत्र प्राप्ति के लिये स्त्रियाँ रविवार का व्रत करती हैं। इस व्रत में नमक नहीं खाना चाहिए। सूर्य को अर्घ्य देकर दिन-रात में केवल एक बार भोजन किया जाता है।

९ **जेवाइले**—जेवाना—जो जेवना (भोजन करना) का णिजन्त रूप है—का भूत कालिक रूप। जेवना—भोजन करने के अर्थ में आदर सूचक प्रयोग। उदाहरण "पिताजी, रउरा जेवे चलीं"

९ **लँगटा**—लंगोट, लंगट, लंगटा। चूंकि लंगोट पहनने वाला भी प्रायः नंगा रहता है; अतः लँगटा का अर्थ नंगा है। इसका दूसरा अर्थ नीच, दुष्ट, उच्छृङ्खल भी है। 'उ बड़ा लँगटा आदमी ह"॥

९ **बसतर**—वस्त्र, बसतर।

१० **दिअरा बारना**—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—दीपक जलाना। दूसरा अर्थ—आनन्द मनाना जैसे "रावण का मुअला से देवता लोग का घरे दिआ बरा गइल"।
'बारना' शब्द का जलाने के अर्थ में प्रयोग हिन्दी कवि रहीम ने भी किया है।
"ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत की सोय।
बारो उजियारो करे, बढ़ै अन्धेरो होय॥"

(९)

२ **लोहँना**—चुनना। जैसे 'हम फूल लोहँ जात बानी'।

४ **पलसवा**—पलास का विस्तृत रूप। जो कि पलाश का अपभ्रंश रूप है।

६ **भँवरवा**—भ्रमरः भ्रमर, भँवर, भँवरवा। भँवर का विस्तृत रूप। दूसरा अर्थ—पति, प्रेमी या प्रियतम। उदा०—
"रसवा के भेजली भँवरवा के संगिया,
रसवा ले अइले हा थोर।
अतना ही रसवा में केकरा के बटवों
सगरी नगरी हित मोर॥"
—बिरहा

७ **अड़पी**—तड़पी की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

११ **कटरिया**—कटारी (खंजर) का विस्तृत रूप।

(१०)

१ **खड़उवा**—'खड़ाऊ' का विस्तृत रूप।

२ **चटर-चटर**—खड़ाऊ पहन कर चलने पर उत्पन्न होने वाला ध्वन्यात्मक शब्द।

३ **पइसि**—प्रविश्य। 'पइसना' धातु का पूर्वकालिक क्रिया का रूप।

४ **निरबंसिया**—निर्वंशः, निरवंस, निरबंसिया। सन्तानरहित।

६ **मुड**—मुण्डः—सिर।

" **गज ओबर ?**—घर का भीतरी भाग।

८ **असनान**—स्नान, सनान, असनान। 'आगम' के नियम से 'अ' आ गया है। यह भाषा शास्त्र का नियम है। जैसे—स्टेशन— इस्टेशन ; स्कूल से इसकूल।

१२ **भुआल**—भूपालः, भुआल।
'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः, सूत्र से प लोपः।

(११)

२ **भरि लावहु**—ब्रजभाषा की छाप। भोजपुरी 'भरि ले आव'।

७ **सासु**—श्वश्रूः, सस्नूः सासु।
'कगचज' सूत्र से व लोपः। उपधादीर्घः

(१२)

२ **बरिजहु**—मना करो 'बरिजना' धातु लोट लकारका मध्यम पुरूष एक वचन का रूप।

४ **मिसिया**—दाँतों में लगाने का काला चूर्ण, जिससे दाँत सदा के लिए काले पड़ जाते हैं। स्त्रियाँ शोभा के लिए इसे अपने दाँतों में लगाती है।

५ **करबो**—करूँगी। भोजपुरी 'करबि'

६ **मोर**—मेरा। मैं का षष्ठी कारक का रूप।

(१३)

३ **बहुअवा**—बहू का विस्तृत रूप। दूसरा रूप बहुआ भी होता है।

५ **पूस**—पौष।

" **आग तापना**—आग के पास बैठकर उसकी गर्मी से सुख प्राप्त करना।
उदा०—"जाड़ा का राति में आगि तापल बाड़ा नीमन लागेला"।

९ **इमिलिया**—इमली का विस्तृत रूप।

१० **नारियरवा लों**—नारियल खाया। गर्भ की दशा में स्त्रियों का ऐसा विश्वास रहता है कि अमुक वस्तु खाने से बालक अमुक रंग अथवा स्वभाव का होगा। इसलिए इस गीत में कोई स्त्री नारियल तथा केला खाने से सुन्दर पुत्र होने का वर्णन कर रही है।

(१४)

१ **हरसेले**—हर्षना (प्रसन्न होना) का वर्तमान कालिक रूप।

२ **हंकार**—पुकार। संस्कृत के 'ह्वे' धातु से इसका संबंध जान पड़ता है।

३ **अगड़िनि**—यह धगड़िनि की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

६ **निछावर**—न्योछावर। पुत्रजन्म अथवा विवाह के अवसर पर जो दानस्वरूप द्रव्य नौकरों या काम करने वाले अन्य लोगों (धाय, नाइन, पालकी वाला, बारी, भंगी आदि) को दिया जाता है, उसे 'निछावर' कहते हैं, क्योंकि वह बालक या बर पर न्योछावर किया हुआ होता है।

७ **केरा या केरी**—संबंध कारक का चिन्ह। Post suffix या पर प्रत्यय

१० **पइबों**—ब्रज के क्रिया की छाया। भोजपुरी रूप—पाइबि।

११ **साध**—श्रद्धा, इच्छा, अभिलाषा। भोजपुरी में साध का अर्थ इच्छा है, जो संस्कृत मूल रूप 'श्रद्धा' से बिल्कुल भिन्न है। यह Transferance of meaning का अच्छा उदाहरण है।

१२ **सोहर उठना**—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—सोहर गाना।
उदा०—"आजु दशरथ का घरे सोहर उठत बा"।

जोग

(टिप्पणियाँ)

(१)

७ **पढ़ल**—'पढ़ना' क्रिया का भूतकालिक रूप।

८ **जनि**—निषेध। मत। उदा०—'इ काम तू जनि कर'।

११ **जोग**—टोना या जादू। उदाहरण—

"हँसत खेलत मोर बाबू गइले;
मन बेदिल काँहे अइले।
सासु छिनरिया जोग कइलसि;
मन बेदिल ओहि अइले"॥

'जोग' का दूसरा अर्थ संयोग या भाग्य भी है। उदा० "न मालूम कवना जोगे राउर दरसन आजु भइल बा"। 'जोग' का तीसरा अर्थ लिए भी होता है। उदा०—"कवना जोगे जोगिया तप करेला"॥

(२)

इस गीत में विद्यापति का नाम आया है। यह कहना कठिन है कि यह गीत वास्तव में मैथिल-कोकिल विद्यापति का बनाया हुआ है, अथवा अन्य किसी कवि का; परन्तु इस गीत की भाषा से जान पड़ता है कि यह शुद्ध भोजपुरी नहीं है। इसमें मैथिली, मगही तथा कहीं-कहीं ब्रज के भी रूप पाये जाते हैं।

४ **खींचि**—खींच कर। 'खींचना' की पूर्व कालिक क्रिया।

७ **इहरिया**—इहर का विस्तृत रूप। इहर—पगडंडी।

१४ **जोबनवा**—जवानी के सूचक जोबन (स्तन) का विस्तृत रूप।

१५ **मधे**—मध्ये।

१७ **कत ले**—कहाँ तक। मैथिली बोली की छाप।

२० **लेखे**—लिए। चतुर्थी कारक का विभक्ति चिह्न उदा०—"हमरा लेखे दुनिया में अब अन्हार हो गइल"।

२२ **धिरिजा**—धैर्य्य।

२१ **भनहिं**—भणति--कहता है।

(३)

१ **पिढ़िया**—पीढ़ा का विस्तृत रूप।

३ **अगबसवा**—अग्रावास, अगवास, अगवसवा। घर के आगे की जगह, अर्थात् बरामदा।

५ **बिगहा**—बीघा—२० कट्ठा जमीन।

५ **लीपन**—लेपनम्। लीपना।

३ **आँआँ**—आँवा। वह स्थान, जहाँ पर कुम्हार अपने मिट्टी के कच्चे बर्तनों को रख कर आग में पकाता है।

८ **सींझना**—पकना। उदा०—"भात सींझत बा"।

९ **ठिकरिया**—ठीकरी का विस्तृत रूप। मोटी, छोटी तथा सूखी रोटी को ठीकरी कहते हैं।

१२ **लहुरी**—लघु, छोटी। "खघथधभां हः" सूत्र से घकारस्य हकारः।

१८ **उघटना**—उद्घाटन, खोलना, प्रकाश में लाना। विपक्षी के द्वारा किसी दोष, बुराई या भलाई के बारम्बार कथन को भोजपुरी में 'उघटना' कहते हैं। जैसे—"ए गो रुपया उधार देले बाड़ त का उघटत बाड़"।

२० **अगुआई**—अग्रगामिता।

२१ **भींजल**—भींजल (भींगना) का भूतकालिक रूप।

२३ **चनन**—चन्दन।

२५ **घमवा**—घर्म, घाम, घमवा।
घाम का विस्तृत रूप।

२७ **छछैली**—उमड़ पड़ना। जल की अधिकता से युक्त होना। 'छछाना' का वास्तविक अर्थ किसी वस्तु के लिए अत्यन्त लालायित होना है। परन्तु, निन्दा अर्थ में ही इसका प्रयोग होता है। उदा० "मथुरा के चौबे खाये खातिर छाछाइल रहेला लोग।" "दलिद्दर धन खातिर छाछाला।"

३० **रोअति**—'रोना' का शतृ प्रत्ययान्त रूप।

" **अइले**—'आना' का भूतकालिक रूप।

सेहला

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **सेहरा**—सेहला, मौर या मउरि। जब दूल्हा विवाह करने के लिए जाता हैं, तब उसके सिर पर फूल, तार तथा एक प्रकार की मुलायम सूखी लता का बना हुआ मुकुट पहनाया जाता है। उसी को सेहला या भोजपुरी में मउरि कहते हैं, जो मुकुट या मोर का अपभ्रंश जान पड़ता है।

ओलरी परी—झुकना या झुक पड़ना। परन्तु झुकना तथा ओलरना के अर्थ में थोड़ा अन्तर है। कर्ता के प्रयत्न अथवा इच्छा से जो वस्तु टेढ़ी हो जाती है, उसे 'झुकना' कहते हैं। परन्तु कर्ता के बिना किसी उद्योग, प्रयत्न अथवा इच्छा से जो वस्तु स्वतः झुक जाय, उसे ओलरना' कहते हैं। उदा० "दीवाल पूरब ओर ओलरि गइल बिआ"। या "का ओलरल जात बाड़"॥

३ **नेवारना**—रोकना। उदा०—"बिना खाइल नेवरले चंगा ना होइब"॥

१४ **भाभी**—भावज।

(२)

इस गीत में बाल-विवाह की झलक मिलती है। अनेक प्रकार के आभूषण पहन कर विवाह करने के लिए जाना, सचमुच लड़कपन का द्योतक है। आजकल भी ऐसे विवाह बहुत देखने में आते हैं, जिनमें दूलहा अनेक प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित होकर विवाह करने जाता है।

१० **घुघुट**—अवगुण्ठन, घूँघट। भोजपुरी में इसे 'घूघ' कहते हैं। उदा०—"तू का घूघ काढ़ि के चलत बाड़। अब के बिटिया लजात नइखी स"॥

(३)

१ **सुइया**—सूची, सूई, सुइया।

'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' सूत्र से च लोपः।

१ **केरे**—षष्ठी कारक का चिह्न।

७ **जे**—यः, जो।

(४)

२२ **फुलवरिया**—फुलवारी का विस्तृत रूप।

डेरा गिराना—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—निवास करना। उदा० "गुरूजी ! आज डेरा कहाँ गिरी" डेरा का अर्थ रहने का अस्थायी स्थान है। उदा० "हमार डेरा बगइचा में बा'।

६ **लोकनी**—नौकरानी, दासी। आज्ञा को सदा लोकने—ग्रहण करने—के लिए वह तैयार रहती है, संभवतः इसीलिए उसका नाम लोकनी पड़ गया।

(५)

६ **फूफा**—पिता की बहन का पति।

१० **नौसे**—नौ शह, नया शाह—बादशाह, दूल्हा, वर।

११ **अम्मा**— अम्बा, अम्मा, माँ।

(६)

१ **मलहोरी**—मालाहारी अर्थात् माला को इकट्ठा करने वाला, गूँथने वाला। 'माली' शब्द का अर्थ भी यही है, अर्थात् जिसके पास माला हो वह माली है। 'माला अस्ति अस्येति माली'॥

२ **मउरि**—मुकुट या मौल। सिर का भूषण या ताज।

विवाह

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **तोहार**—'तू' का षष्ठी कारक का रूप।

३ **भदउवा**—भादों का विस्तृत रूप। भोजपुरी में अन्धकार की सघनता की उपमा 'भादों की रात' से देते हैं। जैसे—"आज भादो के रात निअर आन्हार भइल बा।"

५ **जुड़ाना**—जुड़ का अर्थ ठंढा, अतः जुड़ाना—ठंढा होना, अर्थात् शान्ति प्राप्त करना या सन्तोष लाभ करना।

६ **देवतन**—देवता लोग। 'देवता' शब्द का बहुवचन।

६ **बसेढ़ लेना**—बसेढ़—बसेरा। भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—निवास करना। उदा०—"रउरा आजु बसेढ़ काहाँ लेबि"।

७ **दहेज**—वह रुपया या वस्तु, जो विवाह होने के उपरान्त वर को दी जाती है। उसे दहेज कहते हैं।

८ **भाँडा**—भाण्ड, बर्तन।

९ **जाहु**—जो, यदि।

१० **गरुहुआ**—गुरु, बड़ा।

(२)

इस गीत में दहेज देने की कुत्सित प्रथा का वर्णन है। पुत्री अपने पिता से ससुर को प्रचुर दहेज देने के लिए प्रार्थना कर रही है; क्योंकि दहेज न देंने पर ससुराल वाले उसे ले जाकर बहुत कष्ट देंगे। पुत्री का पिता बड़ी नम्रता से जाकर दहेज देता है, तब कहीं उसका पिण्ड छूटता है।

१ **खम्भवनि**—'खम्भा' के षष्ठी का रूप।

२ **चितकाबर**—चित्रकर्बूर; रंगीन।

३ **दीहू**—'देना' क्रिया का आज्ञा (लोट) में मध्यम पुरुष एक वचन का रूप।

४ **दहेड़िया**—दहेड़ी का विस्तृत रूप। यह शब्द ब्रजभाषा का है। भोजपुरी में इसका प्रयोग बहुत कम होता है। बिहारी ने इस शब्द का प्रयोग अपने निम्नांकित दोहे में किया है—

"अरे दहेड़ी जनि धरहु; जनि तू लेहु उतारि।
नीकै ह्वै छीकै छुवै; ऐसी ही रहु नारि।"

हमारे यहाँ विवाह के अवसर पर संबंधियों के यहाँ से रुपया, दही आदि निमन्त्रण के रूप में आता है। 'दही' इसलिए आता है कि शुभ माना जाता है। यही कारण है, समधी वर के पिता को प्रसन्न करने के लिए दही लेकर जाता है।

५ **मनावन**—प्रसन्न करने के लिए। मनाने का अर्थ प्रसन्न करना है। उदा० "खिझि आइल बाड़े त छोड़ि द, का तू उनुकरा के मनवले बाड़"। मनोती इसी मनाना क्रिया का verbal noun है। इसी से मिलता-जुलता शब्द मानना है। अर्थ—आदर करना, प्रेम करना। उदा०—'दशरथजी राम के बहुत मानत रहलन'।

५ **अजोधा**—अयोध्या। राजा रामचन्द्र की राजधानी। आजकल यू० पी० के फैजाबाद जिले में एक प्रसिद्ध स्थान। हम लोगों का परम पवित्र तीर्थ।

३ **छतिया लगवले**—छाती से लगाया। हमारे यहाँ विवाह में यह प्रथा है कि जब दो समधी आपस में बारात में मिलते हैं, तब दोनों छाती से छाती लगा कर मिलते हैं। यह प्रथा बहुत ही प्राचीन है।

६ **गलईचा**—कालीन। यह बहुत मोटा तथा गुलगुल (मुलायम) होता है। संभवतः इसी लिए इसका नाम 'गलईचा' पड़ गया है।

१० **पतोहिया**—पुत्रबधू, पतोहू, पतोहिया।

११ **बखानवा**—प्रशंसा करना। संज्ञा—बखान। उदा०—
'ओकर का बखान कइले बाड़'

(३)

२ **नदिआ**—नदी का विस्तृत रूप।

२ **सेवार**—शैवाल, सेवार। 'शषोः सः' सूत्र से श का स। रलयोरभेदः। संस्कृत में 'शैवल' शब्द का प्रयोग भी इसी अर्थ में होता है। उदा०—
"इयमधिकमनोज्ञा, शैवलेनापि तन्वी;
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्" ॥

३ **चल्हवा**—एक प्रकार की मछली, जो लाल और खाने में बड़ी स्वादिष्ट होती है।

१० **बाझि गइले**—फँस गया। बझना या बझाना का अर्थ है फँस जाना अथवा कार्य में व्यस्त होना। उदा०—"बंशी में माछरि बाझि गइली" या 'हम काम में बाझल बानी' इसकी प्रेरणार्थक क्रिया 'बझाना' है, जिसका अर्थ फँसाना है।

१२ **कनियाँ**—कन्या, कनया, कनियाँ। संस्कृत में कन्या शब्द का अर्थ अविवाहिता लड़की है। परन्तु भोजपुरी में कनियाँ का अर्थ नवविवाहिता बधू है। भाषाशास्त्र के नियमा-नियमानुसार यह Transference of meaning का अच्छा उदाहरण है। ब्रजभाषा में कनिया का अर्थ गोद है। देखिये—

"धन्य धन्य वे हैं नर मैलो जो करत गात;
कनिया लगाइ अंग ऐसे सुवान की"।

राजा लक्ष्मणसिंह—'शकुन्तला' का अनुवाद। मालूम होता है कि आजकल की भाँति पहले भी छोटी अवस्था में ही लड़कियों का विवाह हो जाता था, इसीलिए संस्कृत कन्या का अर्थ भोजपुरी में नवविवाहिता बधू हो गया। इस समय भी देहातों में छोटी-छोटी लड़कियाँ कनिया पुतरी—जो कपड़े की बनी हुई १०-१२ इञ्च की स्त्री की प्रतिकृति होती है—बना कर खेलती हैं और अपनी 'कनियाँ' का विवाह बड़े धूमधाम से करती हैं। इस खेल से भी पता चलत है कि पहले समय में सचमुच कन्याओं (छोटीबच्ची) का विवाह होता था।

१२ **कुंआर**—कुमार। संस्कृत में कुमार का अर्थ अविवाहित नवयुवक है। हिन्दी में इससे दो शब्द निकले हैं (१) कुंआर (२) कुंअर। यद्यपि दोनों का मूल भाव एक ही है; परन्तु अर्थ में थोड़ा अन्तर है। भोजपुरी में किसी अविवाहित युवक को कुंआर कहते हैं; परन्तु 'कुंअर' का प्रयोग राजकुमार के अर्थ में ही होता है। जैसे कुँवर महाराजसिंह। कुंअर' का अविवाहित होना आवश्यक नहीं, परन्तु राजकुमार होना अनिवार्य है। इस प्रकार एक ही संस्कृत मूल 'कुमार' से निकले हुए इन दोनों शब्दों के अर्थ में भिन्नता पाई जाती है। भाषाशास्त्र के अनुसार 'कुंअर' को हम (Extention of meaning) का उदाहरण मान सकते हैं।

१३ **ताहार**—'तुम' शब्द का षष्ठी कारक का रूप।

१४ **कतरल**—कर्तितः। काटा गया। यह कतरना क्रिया भूतकालिक रूप (Past Participle) है।

१५ **सुरत**—सूरत, सौन्दर्य।

१७ **दंवरिआ**—यह दँवरी का विस्तृत रूप है। देहातों में जब खेत पक जाता है, तब अनाज को काट कर उसे जमीन पर फैला देते है। आठ दस बैलों को एक रस्सी में बाँध कर उस सूखे अन्न के पौधों पर उन्हें गोलाई में चलाते हैं, जिसमें बैलों के पैर से दब कर उस सूखे डाँठ से अन्न अलग हो जाय। इस क्रिया को 'दँवरी' कहते हैं।

१८ **कुरखेत**—कु क्षेत्र अर्थात् अत्यन्त दूर स्थान पर खेती करना या क्रूर-कठोर-ऊसर खेत को जोतना।

१९ **लदनियाँ**—लदनी का विस्तृत रूप। बैल की पीठ पर सामान लादने को 'लदनी' कहते हैं। चूंकि प्राचीन समय से बैल पर सामान लाद कर ही व्यापार होता था; अतः लदनी का अर्थ व्यापार हो गया॥

(४)

४ **बेलमाइ लेना**—विलम्ब कर देना। उदा० "तू हमरा के काहे बेलमावत बाड़"।

७ **धावल धूपल**—इन शब्दों का जोड़ में प्रायः सर्वदा प्रयोग होता है। अर्थ—दौड़ते हुए या परेशान होते हुए। उदा० "का धावल धूपल चलल आवत बाड़"। इसी अर्थ का सूचक भोजपुरी में एक दूसरा मुहावरा है—'जरल मरल'। उदा० 'गर्मी के दिन में उजरल-मरल हमरा दुआर पर अइले'।

१० **कह**—कहो। 'कहना' क्रिया का आज्ञा काल का रूप।

११ **थारी**—स्थाली, थाली, थारी। रलयोरभेदः। उदा० "स्थाली पुलाक न्याय"। थारी और थार में थोड़ा अन्तर है। उस छोटे गोलाकार पात्र को, जिसमें मनुष्य भोजन करता है थारी कहते हैं। परन्तु, थार उस बड़े वृहदाकार पात्र को कहते हैं, जिसमें आटा गूँधा जाता है।

१४ **रउरे**—'रउरा' शब्द भोजपुरी में आदर सूचक (Honourific form) सर्वनाम है। यह तुम के स्थान पर प्रयुक्त होता है। उदा० "रउरा काशी से कब अइली हाँ"। रउरे या राउर इसी 'रउरा' का षष्ठीकारक का रूप है। महाकवि तुलसीदासजी ने इसका प्रयोग रामायण में अनेक स्थानों पर किया है। उदा०—

"जो राउर अनुशासन पाऊँ;
कन्दुक इव ब्रह्माण्ड उठाऊँ।"
"रउरी दया कुशल रघुराया"

१४ **दमाद**—जामाता। पुत्री का पति।

१६ **अटारी**—अट्टालिका, अट्टाली, अटारी। रलयोरभेदः।

१९ **बतिया**—बच्चा। छोटी सी ककड़ी। इसका दूसरा अर्थ बात भी होता है। जैसे "कवन बतिया बति।आवत बाड़"।

२४ **कुल रखना**—भोजपुरी मुहावरा। वंश की प्रतिष्ठा सुरक्षित रखना। उदा० "मोहनी सती होइ के आपन कुल रख लिहलसि"।

इसके ठीक विपरीत दूसरा मुहावरा है 'कुल बोरना' अर्थात् बंश की प्रतिष्ठा को नष्ट करना। उदा० 'इ नालायक लरिका सचमुच आपन कुल बोरि दिहलसि'। कबीरदास ने भी इस मुहावरे का प्रयोग किया है।

जैसे—"कुलबोरनी चली अब गंगा नहाने"।

(५)

१ **दोना**—पत्ते का बनाया हुआ गोलाकार रूप, जिसमें फूल, अक्षत, मिठाई आदि रखते हैं। इसे "खदोना' भी कहते हैं।

१ **फुलवारी**—पुष्प वाटिका।

२ **साँझ**—सन्ध्या, सन्झा साँझ।

३ **चरना**—घास खाना। संस्कृत में 'चर्' धातु का अर्थ चलना होता है यथा 'रामस्यचरित' परन्तु भोजपुरी में इसका अर्थ घास चरना है।

३ **एइलि**—यह बेइलि—जो बेला का विस्तृत रूप है—की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

६ **झारा**—यह झरोखा (खिड़की) की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

६ **बरियाति**—वरयात्री। चूँकि विवाह के समय सब लोग बर के साथ यात्रा करते हैं; अतएव इन आदमियों के समूह को बारात या बरियाति कहते हैं।

६ **मुँहे पटुक देना**—मुँह पर कपड़ा देना अर्थात् लज्जित होकर बोलना ।

७ **अचास**—यह पचास (५०) की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

८ **कत्थक**—बारातों में नाचने तथा गाने वाली एक जाति।

१० **सरहज**—साला (श्यालक) की स्त्री। संभवतः सहज ही में—आसानी से—उसकी प्राप्ति हो जाती थी इसलिए उसका नाम सरहज पड़ गया हो, तो कुछ आश्चर्य नहीं।

१३ **हुरकट्टु**—यह 'झनकट्टु' की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

१४ **बरधी**—बली बर्द, बरद, बरध।

(६)

२ **धिअवा**—पुत्री, लड़की।

४ **पतरा**—पञ्चांग। इसे पत्रा भी कहते हैं; क्योंकि इसमें पत्र (पन्ने) होते हैं। इसी 'पत्रा' से पतरा शब्द निकला है।

४ **लोर**—यह भोजपुरी बोली का ठेठ शब्द है, जिसका अर्थ आँसू है। इसकी निरुक्ति ठीक-ठीक बतलाना कठिन है।

८ **चउपरिया**—चौपाल, चौपार, चउपरिया। यह चौपार का विस्तृत रूप है।

८ **लिखल**—लिखना का Past particciple है ।

१० **बराहमन**—यह ब्राह्मण का अपभ्रंश है।

१० **बरुआ**—बेदुआ या वेदपाठी। जो ब्रह्मचारी विद्यार्थी वेद का पाठ कहता है, उसे 'वरुआ' कहते हैं।

१० **गोतर उचारहु**—गोत्र का उच्चारण करना, विवाह के समय वर तथा कन्या पक्ष के पुरोहित दोनों के बंश के गोत्र का वर्णन करते हैं। इसे 'गोत्रोच्चार' कहते हैं।

११ **मेहरि**—स्त्री। भोजपुरी में इसी का पर्यायवाची शब्द 'मेहरारू' भी है; परन्तु इन दोनों शब्दों की निरुक्ति नितान्त कठिन है।

१२ **खेइबि**—पार लगाऊँगा। 'खेना' क्रिया का भविष्यत्काल का रूप। नाव चलाने के लिए जो मजूरी मिलती है। उसे 'खेवा' कहते हैं। इसे 'खेवाई' या 'उतराई' भी कहा जाता है। इस अन्तिम शब्द का प्रयोग तुलसीदासजी ने अपनी 'कवितावली' में किया है—

"नाई से न नाई लेत, धोबी से न धोबी लेत;
देके उतराई मेरी जाति ना बिगारिये"।

१५ **नवइया**—यह खेवइया की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

१५ **रूप**—रूप्यकम्। रुपया अर्थात् चाँदी। इसी अर्थ में रूपा शब्द का भी प्रयोग होता है। उदा० "रूपा के गहना गढ़ांव मोर सइयाँ हो"। संस्कृत में रूप शब्द के पहले 'जात' लगा देने पर (जातरूप) सोने का अर्थ द्योतित होता है।

१७ **बंसवरिआ**—बंशावली, बसावरी, बँसवरि, बँसवरिया।

१८ **तर**—तल, तर। रलयोरभेदः।

(७)

१ **कुइयाँ**—छोटा कुँआ। कुँआ बड़ा तथा पक्की ईंटों से जोड़ कर बनाया जाता है; परन्तु कुँइयाँ आकार में छोटी होती है तथा मिट्टी खोद कर जमीन में गड्ढा करके बना ली जाती है। इसमें ईंटों की जुड़ाई बिल्कुल नहीं होती।

४ **बतास**—हवा। इस शब्द का प्रयोग 'बात' के साथ प्रायः जोड़े रूप में हुआ करता है। भोजपुरी की एक कहावत में इन दोनों शब्दों का अच्छा प्रयोग आ है। उदा०—
"बात, बतास से गाना बिगड़ि जाला"।

८ **छाँह**—छाया, छाहा, छाँह। "छायायाँ ह:" २।१८

१० **भिनुसार**—सबेरा। भोजपुरी में प्रातःकाल के द्योतक अनेक शब्द पाये जाते हैं; परन्तु सब के अर्थ में थोड़ा-बहुत अन्तर है।

भोजपुरी	अर्थ	अंग्रेजी
१—भिनुसार	प्रातःकाल	Early morning
२—बिहान	सबेरा	,, morning
३—फजीर	सबेरा	morning
४—लोहिये पर	उषाकाल	Dawn
५—फह फाटल	उषाकाल	Dawn
६—भोर	सूर्योदय प्रातःकाल	Day break
७—किरिनि फूटल	सूर्योदय	Sun-rise

११ **उघारि**—उद्घाट्य। 'उघारना' की पूर्वकालिक क्रिया। अर्थ— खोलना। उदा०—"तू किताब उघारि के काहे नइख पढ़त"।

१३ **परोजन**—प्रयोजन, कार्य, स्वार्थ। 'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः सूत्र से य लोपः। उदा० "कवन परोजन से तू इहवाँ आइल बाड़"। इसका दूसरा अर्थ यज्ञ, उत्सव या ब्रह्मभोज भी है।
उदा० "आजु हमरा घरे परोजन बा"। संस्कृत प्रयोजन से भोजपुरी परोजन का अर्थ भिन्न है; अतः इसे Transference of meaning कह सकते हैं।

१४ **किया**—क्या। प्रश्नवाचक सर्वनाम या अव्यय।

१८ **लगनिया**—लग्न का विस्तृत रूप। अर्थ—शुभ मुहूर्त।

१८ **अगुताई**—अग्रता। आगे निकलना अर्थात् जल्दी करना।

२३ **पवढ़ी**—यह अवढ़ी की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

(८)

इस गीत से पता चलता है कि पहले समय में कन्याओं का विवाह प्रौढ़ावस्था में होता था तथा पर्दे की प्रथा का नितान्त अभाव था। कन्या अपने पिता से कहती है कि मेरे

लिए सुन्दर वर खोजना। यह तभी संभव है, जब लड़की वयस्क हो। भला आजकल की दुध मुँही बच्चियाँ ऐसा प्रस्ताव कैसे कर सकती हैं ?

इस गीत की लड़की तालाब के किनारे किसी अपरिचित युवक को देख कर उससे पूछती है कि तुम कौन हो और किसके तालाब पर स्नान कर रहे हो। यदि पर्दे की प्रथा होती, तो यह कभी भी संभव नहीं था।

२. **हिलोर मारना**—लहर लेना या हिलोरा मारना।

४ **सुहवा**—सुभगा, स्त्री।

५ **अलरू**—यह दुलरू की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

८ **करेल**—करते हो। वर्तमानकालिक रूप।

८ **पयान**—प्रयाण। यात्रा।

९ **हुँई**—Emphatic form of हूँ।

११ **पोखरवा**—पोखरा—जो पुष्कर शब्द का अपभ्रंश है—का विस्तृत रूप (long form)

१२ **बनीजी**—वाणिज्य, व्यापार।

१३ **लँहगा**—घाँघरा। एक प्रकार का स्त्रियों का अधोवस्त्र, जिसका ब्रज मण्डल तथा उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी जिलों में अधिक प्रचार है।

२२ **हमहूं**—Emphatic form of हम (मैं)।

२५ **अलुरी**—हठ, आग्रह।

२८ **बटिया**—बाट का विस्तृत रूप। बाट का अर्थ मार्ग या रास्ता होता है; परन्तु यह पगडण्डी के लिए ही प्रायः प्रयोग में आता है।

(९)

२ **महुअन**—मधूक, महूक, महुअ, महुआ।

"खघथधमां हः" २। २७ सूत्र से धस्य हः। 'कगचजदतपयवां प्रायो लोपः' २। २ से क लोपः। यह महुआ का बहुवचनान्त रूप है।

१४ **छूड़ी**—छुरिका, छूरी, छड़ी।

१५ **बिहान**—प्रातःकाल। बिहान पहले होता है। बाद में फह फटता है— आकाश में उषा दिखाई पड़ती है। विशेष के लिए देखिए विवाह नं० ७ की टिप्पणी।

१६ **हाजीपुर**—यह स्थान बिहार प्रान्त के पटना जिले के अन्तर्गत स्थित है। यह ओ० टी० आर० के सुप्रसिद्ध स्टेशन सोनपुर के बाद का दूसरा स्टेशन है। यहाँ केला तथा लीची प्रचुर मात्रा में पैदा होती है तथा प्रसिद्ध है। सोनपुर में हरिहरक्षेत्र का सुप्रसिद्ध मेला प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को लगता है जो महीनों तक रहता है। इस मेले में हाथी, घोड़े, बैल सभी चीजें बिकती है। इस मेले का विस्तार हाजीपुर तक रहता है। इसीलिए उपर्युक्त गीत में इसे 'हाजीपुर का हाट' कहा गया है।

(१०)

इस गीत से पता चलता है कि इन गीतों के समय पर्दे की प्रथा का अत्यन्त अभाव था। दूल्हा जब विवाह करने के लिए अपनी ससुराल जाता है, तब उसकी स्त्री उसके चमकते हुए दाँतों को देखने के लिए आग्रह करती है। परन्तु, वह लज्जित होकर दिखलाने से इन्कार करता है।

१ **बिरवा**—विटपः, विडवो, विरवा।
'टो डः' २।२० सूत्र से ट का ड तथा 'पो वः' २।१५ सूत्र से प का व हो गया। बाद में ड का र हो गया। इस प्रकार 'विरवा' शब्द बना है। संस्कृत में 'विटप' शब्द विशाल वृक्ष होता है; परन्तु भोजपुरी में 'विरवा' का अर्थ पौधा भी होता है।

१ **नरियर**—नारिकेलः, नारियर।
'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' सूत्र से क-लोपः। रलयोर भेदः।

७ **बिहँसि**—विहस्य। हँस करके।

१३ **कोहबर**—वह घर जिसमें विवाह के अवसर पर पति-पत्नी मिलते हैं तथा बातें करते हैं। इसकी निरुक्ति कठिन है।

१४ **घुरुमना**—घूमना, चक्कर करना। उदा० "हमार माथा घुरुमत बाटे"।

(११)

३ **सबुज**—सब्ज, हरा रंग।

५ **एने ओने**—इधर उधर। इन दोनों शब्दों का प्रयोग सदा जोड़े में होता है। जैसे—"का एने ओने देखत बाड़"।

६ **दीठि**—दृष्टि, दिट्ठी, दीठि।
'इदृष्यादिषु' १।२८ सूत्र से ऋकारस्य इकारः।
'ष्टस्य ठः ३।१० सूत्र से ष्टकारस्य ठकारः।

९ **हाथी**—हस्तिः, हथि, हाथी।
'स्तस्य थः ३।१२ सूत्र से 'स्त' का थ हो गया।

१५ **अजनिया**—यह बजनिया की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

(१२)

१ **सेयान**—चतुर तथा वयस्क (जवान) दोनों अर्थ होते हैं।

६ **दुजिया**—दूज का विस्तृत रूप।

७ **पेट में पानी**—भोजपुरी मुहावरा। किसी बात को गुप्त न रख सकना। न पचना—उदा० "ओकरा पेट में पानियो ना पचेला" अर्थात् वह किसी भी बात को छिपा नहीं सकता।

९ **उरिन**—उऋण। ऋण से मुक्त।

१० **कन्यादान**—विवाह के अवसर पर पिता पुत्री को अपनी जंघा पर बैठा कर पति को अपनी कन्या को दान रूप में सदा के लिये देता है। इस प्रथा को हमारे यहाँ 'कन्यादान' कहते हैं। चूँकि दान की हुई वस्तु पुनः ग्रहण नहीं की जाती; इसी लिए पिता अपनी पुत्री के ससुराल का धन लेना तो दूर रहा, उसके घर का अन्न-जल भी ग्रहण नहीं करता। कितने लोग तो पुत्री के ससुराल के गाँव के जल को भी नहीं पीते। हमारे यहाँ विवाह का यही महत्त्व है। यह एक Social contract (सामाजिक ठीका) नहीं है, बल्कि Religious rite (धार्मिक कृत्य) है।

१७ **जियरा पसीजना**—मुहावरा। हृदय पसीजना। दया का भाव उदय होना।

१९ **बिअहवों**—विवाह करूँगा। भविष्यत्काल का रूप।

२० **जियवा**—जिय का विस्तृत रूप।

२० **हमार**—हम (सर्वनाम) का षष्ठी कारक का रूप।

बहुरा के गीत

(टिप्पणियाँ)

(१)

पंक्ति

१ **बोझाइल**—Past participle of बोझना

३ **जनमल**— " " " जनना (पैदा करना)

४ **लइते**—लगाता (हेतु का रूप)

७ **बोझवइया**—कर्ता के अर्थ में भोजपुरी में प्रायः 'इया' प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे 'खेना' से 'खेवइया'। उसी प्रकार बोझना (लादना) से बोझवइया बना है।

(२)

१ **जमवली**—जमाया। 'जमना' का भूतकालिक रूप।

३ **गोयड़वा**—पास नजदीक।

(३)

१ **ओहिरि**—'पहिरि की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

२ **गोरिया**— गौरी, गोरी, गोरिया।

४ **गहॅला**—'गहॅना' का भूतकालिक रूप। परन्तु यहाँ वर्तमान काल में प्रयुक्त।

८ **उरेहना**—उत्कीर्णन। (नक्काशी करना)

(४)

२ **सकोर**—संकोच, सकोच, सकोर।

४ **पॅवरकिया**—पैराक-तैराक। पॅवरना (तैरना) धातु से कर्ता अर्थ में 'इया' प्रत्यय हुआ है।

५ **केसिया**—केश, केस, केसिया।

(५)

१ **ठूंठ ?**—स्थूण, स्थूणा, सूखा पेड़।

१ **पाकरि**—पर्कटी, पकरी, पाकर, पाकरि।

लागि—"लिए" के अर्थ में भोजपुरी कारक प्रत्यय (Post suffix) जैसे 'तोहरा लागि' यह सम्प्रदान कारक का चिन्ह है।

(६)

इस गीत में स्त्री के सतीत्व का आदर्श चित्र चित्रित किया है। देहातों में एक कहावत प्रचलित है कि 'घटवार बटवार होले स' अर्थात् मल्लाह दुष्ट होते हैं। ये स्त्रियों का धन ही नहीं लूटते, बल्कि इज्जत भी लूट लेते हैं। इसी गीत में मल्लाह का प्रस्ताव जितना नीचतापूर्ण है, स्त्री का उत्तर उतना ही स्वाभिमानपूर्ण। वह सुन्दरी मल्लाह के इस बुरे वचन के कारण उसके हाथ कटा लेने के लिए तैयार है। इस प्रकार आदर्श सतीत्व, अपूर्व मनस्विता तथा अलौकिक दृढ़ता की जो बाँकी झाँकी इस गीत में मिलती है, वह अन्यत्र दुर्लभ है।

१ **मरिचिया-अरिचिया**—यह मरिच का दीर्घ रूप है।
यह 'मरिचिया' की तुकान्त पुनरावृत्ति के लिए प्रयुक्त हुआ है।

११ **गोड़ लागना**—'प्रणाम करने' का भोजपुरी रूप। जैसे "गोड़ लागतानी बाबाजी"।

१५ **तड़िवन ?**—ताटङ्क। कान का गहना।

१७ **आग लगाना**—मुहावरा। किसी वस्तु को व्यर्थ या निष्प्रयोजन समझना। जैसे "जब हमारा खाहीं के ना मिली त अइसन धन में आगि ना लागाइबि"

१८ **बजर पड़ना**—मुहावरा। विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ना। गाली देने में इसका विशेष प्रयोग किया जाता है। जैसे "तोरा घरे बज्जर परो"।

२१ **लाख**—लक्ष, लच्छ, लाछ, लाख।

२२ **नेवान**—जब किसी ऋतु में कोई नया अन्न या फल पैदा होता है, तो उस ऋतु में उस पदार्थ को प्रथम बार खाने या चखने को 'नेवान करना' कहते हैं। इस गीत में 'नेवान' शब्द बड़ा सार्थक है; क्योंकि पति ने अभी प्रथम बार भी स्तनों का मजा नहीं लिया है।

पिड़िया

(टिप्पणियाँ)

(१)

इस गीत में सौतिया डाह का सुन्दर चित्रण किया गया है। पहली स्त्री अपनी सौत को देख कर कितना क्रुद्ध होती है, इसका उदाहरण हमें तुलसी के रूप में मिल रहा है। कहीं-कहीं तो दोनों पत्नियों में मार-काट की भी नौबत पहुँच जाती है, जो स्वाभाविक ही है।

३ **गोखुला**—गोकुल। मथुरा जिले में एक प्रसिद्ध पवित्र स्थान, जहाँ कृष्ण ने ग्वालों के साथ गायें चराईं थीं।

५ **लट**—जट। बाल गन्दे तथा असंस्कृत होने के कारण आपस में गुँथ से जाते हैं, उन्हें लट कहते हैं।

५ **लसारना**—किसी वस्त्र या अन्य वस्तु को मिट्टी में सानना। उदा० "आपन कपड़ा तू काहे के लसारत बाड़"।

८ **तपिहें**—तापेगें। तापना का अर्थ अग्नि के पास बैठ कर शरीर को गर्म करना है। उदा० "हम आगि तापत बानी"।

१० **पतिया**—पात का दीर्घ रूप। पत्र। पक्त। पतिया। यह पत्ता का दीर्घ रूप है।

(३)

३ **नचनिया**—नाचने वाला। 'नाचना' धातु से कर्त्ता में 'इया' प्रत्यय होता है। जैसे बजाना से बजनिया (बाजे को बजाने वाला)।

३ **नजर में गड़ना**—मुहावरा। किसी की आँखों में खटकना, बुरा लगना। उदा० "तू हमरा नजर में गड़ल बाड़"।

(४)

२ **लिलार**—ललाट। लिलार।

६ **कतेक**—कति, कितना। उदा०—

"कतेक दिनवा हो कतेक दिनवा;
हम जोहबि तोरी बटिया कतेक दिनवा"।

९ **दारार**—कीचड़ से युक्त पृथ्वी जब सूख जाती है, तब उसमें बड़े-बड़े लम्बे-लम्बे छिद्र हो जाते हैं, इन्हें 'दारार' कहते हैं। उदा० "एह साल दीअर में बाड़ा दारार फाटल बा"।

(५)

इस गीत में किसी स्त्री की सुकुमारता का बड़ा सुन्दर वर्णन किया गया है। उसकी कलाई इतनी सुन्दर है कि चूड़ियाँ पहनते समय उसमें चुभ-चुभ जाती हैं और चूड़ियों के चुभने से उसकी आँखें आँसुओं से डूब जाती हैं। यह दशा देख कर उसका पति पंखा झलने लगता है।

३ **गहकी**—ग्राहक। गाहक। गँहकी।

८ **सइयाँ**—स्वामी। सामी। साँई। सइयाँ। संस्कृत में स्वामी का अर्थ प्रभु, मालिक या श्रेष्ठ है ; परन्तु भोजपुरी सइयाँ का अर्थ पति है। 'स्वामी' में पूज्यता तथा श्रद्धा का भाव छिपा है; परन्तु सइयाँ में प्रेम की मात्रा अधिक पायी जाती है। यह Transference of meaning का उदाहरण है।

(६)

यहाँ किसी विरहणी स्त्री का चित्रण किया गया है। पति के वियोग के कारण उसकी आँखों से आँसुओं की अविश्रान्त धारा बह रही है। वह पति के आगमन की प्रतिक्षण प्रतीक्षा करती है तथा किसी प्रकार अपने समय को काट रही हैं। सचमुच यह बड़ा ही सजीव चित्रण है। जयदेव ने 'गीत गोविन्द' में कृष्ण के वियोग में राधा का ऐसा ही चित्रण किया है—

"पतति पतत्रे विचलित पत्रे,
शंकित भवदुपयानम्।
रचयति शयनं सचकित नयनं,
पश्यति तव पन्थानम्॥"

३ **जोहना**—खोजना। बाट जोहना—मुहावरा।
अर्थ:—किसी के आने की प्रतीक्षा करना।
उदा० "उनुकर का बाट जोहले बाड़ू, आजु उ ना अइहन"।

५ **रात काटना**—रात को किसी प्रकार बिताना। दिन काटना—मुहावरा। अर्थ—समय को दु:ख के साथ बिताना।

१२ **नीर ढरना**—आँखों से आँसुओं की झड़ी लगना।

(७)

१ **अइह**—'आना' का आज्ञा में म० पु० ए० व० का रूप।

२ **धनिया**—धन्या। धनया। धनियाँ। अर्थ—स्त्री, शब्द का अर्थ संस्कृत में श्रेष्ठ, प्रशंसनीय

है। विशाखदत्त ने मुद्राराक्षस में इसी अर्थ में गंगा के लिए इस विशेषण का प्रयोग किया है।

उदा०—"धन्या केयं स्थिति ते शिरसि,
शशिकला किन्तु नामै तदस्याः"।

चूंकि स्त्री समाज में श्रेष्ठ तथा आदरणीय समझी जाती है; अतः कालान्तर में यह विशेषण (धन्या) जाति वाचक संज्ञा बन गया। इस प्रकार संस्कृत 'धन्या' (प्रशंसनीया) का अर्थ भोजपुरी में स्त्री (धनिया) हो गया। यह भी अर्थ-परिवर्तन का उदाहरण है।

४ **सरमिया**—शर्म। सरम। सरमिया।

५ **मोर**—मेरा। उ० पु० ए० व० सर्वनाम 'मैं' का सम्बन्ध कारक ए० व० का रूप।

उदा० "मोर आइल बा गवना के दिनवा ए सजनी;
अब कइसे हम झलबि झुलनिया"।

७ **सोहतीं**—हेतुहेतुमद्भूत काल का उत्तम पु० ब० व० का रूप।

(८)

१ **बिरतिया**—विगत रात्रि। विराति। विरतिया। राति और विराति ये दोनों शब्द प्रायः जोड़े में (in pairs) प्रयुक्त होते हैं। उदा० "राति विराति तू एजवा मति आइल कर।'

५ **पिड़िया**—पिण्ड। पीड़। पिड़िया। गोबर के एक इञ्च लम्बे पिण्ड को जो दीवाल पर चिपकाया जाता है, पिड़िया कहते हैं। इसके विशेष विवरण के लिए भूमिका-भाग १ देखिए।

(९)

४ **केरा**—भोजपुरी में सम्बन्ध कारक के अर्थ को प्रकट करने के लिए केर या केरा प्रत्यय (Post suffix) लगाया जाता है।

उदा० "गाँव **करा** लोग इ बात कहत बा" और "इ बन **केर** बहरि ह"। कहीं-कहीं इसी अर्थ में '**कर**' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

उदा० "इ के **कर** बगइचा ह"।

५ **ना**—नहीं। निषेधात्मक अव्यय; परन्तु भोजपुरी में स्वीकारात्मक वाक्यों (Affirmative sentences) में भी 'ना' का प्रयोग पाया जाता है। यह संभवतः इस बोली की ही विशेषता है। जब हम लोग आपस में यह बोली बोलने लगते हैं, तो इस 'ना' की बाढ़ सी आ जाती है। निषेधात्मक तथा स्वीकारात्मक वाक्यों में समान रूप से इसका प्रयोग होता है। उदा० १. निषेधात्मक—"हम आजु पढ़े **ना** जाइबि"

२ स्वीकारात्मक—"कह **ना** कासी कब जाइब"

२ " "हम जाते **न**= (**ना**) बानी"

(१०)

२ **गउरा**—गौरी। गउरी। गउरा। पार्वती

३ **ईसर**—ईश्वरः। ईशर। ईसर। भगवान्

'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' से व लोपः

'शषोः सः' सूत्र से शकारस्य सकारः।

५ **खटोलवा**—छोटी, नीची चारपाई, जिस पर प्रायः बच्चे सुलाये जाते हैं। यह खटोला का दीर्घ रूप है।

८ **लालाना**—यह प्रेम-सूचक शब्द है। यह गीतों की प्रत्येक पंक्ति के अन्त में तुक को समान रूप से एक ही रखने के लिए प्रयुक्त होता है। सोहर के गीतों में इसका प्रयोग बहुलता से किया जाता है। उदाहरण के लिए 'सोहर' देखिए।

(११)

५ **रजइया**—रजाई का दीर्घ रूप। रजाई का अर्थ लिहाफ है; परन्तु खड़ीबोली में इसका अर्थ आज्ञा है।

(१२)

३ **जँजिरिया**—जंजीर का दीर्घ रूप।

४ **मगजी**—लिहाफ के किनारे चारों ओर एक सुन्दर कपड़ा लगा दिया जाता है, उसे मगजी या तोई कहते हैं।

७ **खोलबि**—'खोलना' क्रिया का भविष्यत्कालिक उ० पु० ए० व० का रूप।

७ **रे**—सम्बोधन सूचक शब्द; परन्तु यहाँ तुक की समानता तथा गाने के सुविधा के लिए प्रयुक्त।

(१३)

इस गीत में बहन का अपने भाई के लिए अटूट प्रेम दिखलाया गया है। बहन भाई के लिए उसके कल्याण के निमित्त पिड़िया का व्रत करती है तथा उसको पूजने के लिए मोरंग देश से लड्डू तथा चिउड़ा मँगाती है। परन्तु, हृदयहीन भाई यह कह कर ये चीजें लाने से मना करता है कि ये मँहगी हो गयी हैं। फिर भी बहन उसे ऐसा कहने से मना करती है।

३ **तुहु**—तुम भी।

६ **बरतिया**—व्रत। बरत। बरतिया।

७ **घिवही**—घी का बना हुआ। यह शब्द घी का विशेषण है। इसी प्रकार तेल का विशेषण तेलही बनता है।

(१४)

४ **निआर**—विवाहित लड़की की ससुराल से उसे बुलाने के लिए जो सन्देश आता है, उसे 'निआर' कहते हैं। उदा० "ताहार आजु निआर आइल बा।"

(१५)

१ **मोहर माला**—रुद्राक्ष की माला, जिसमें सोने के बीच में एक दाना इंदारुन का होता है।

३ **बेटनवा**—बेटवा का दीर्घ रूप है। अर्थ—छोटा बच्चा है।

५ **हारावा**—हार का दीर्घ रूप।

(१६)

१ **कूबरी**—श्री कृष्ण की प्रेमिका। यह कुरूपा थी और इसके कूबड़ निकला हुआ था; अतः इसका नाम ही कूबरी पड़ गया।

३ **कजरी मचाना**—कजली गाकर, उसे कहकर, आनन्द लूटना।

४ **मोर के मुकुटवा**—"मोर मुकुट, कटि काछनी, कर मुरली, उर माल।
एहि बानिक मो मन बसो; सदा बिहारीलाल॥"

(१७)

इसी गीत में किसी स्त्री के ससुराल की निपट निर्धनता का वर्णन किया गया है। गूलर का पका फल चुनकर वही मनुष्य खाता है, जो अत्यन्त दरिद्र होता है। यहाँ पर कोई स्त्री पूछ रही है कि किस मास में गोदा पकता है, जिसे मैं चुन कर खाऊँगी। इससे उसके ससुराल के दुःखों का सहज ही में अनुमान किया जा सकता है। यहाँ माता के सहज स्नेह तथा पिता की निष्ठुरता की ओर भी संकेत किया गया है।

२ **बीरन**—भाई। ब्रजभाषा में 'बीर' का अर्थ भाई है; अतः यह 'बीरन' इसी 'बीर' से बना है। भोजपुरी गीतों में 'बीरन' का बहुत प्रयोग पाया जाता है। उदा० 'बलैया लेऊँ बीरन'। बिहारी ने 'सतसई' में 'बीर' शब्द का अनेक बार प्रयोग किया है।

उदा० "क्यों न जुरै जोरी जुगल; बढ़ै सनेह गभीर।
को घटि ये वृषभानुजा; ये हलधर के बीर"॥

५ **बछरुआ**—वत्सः। बच्छो। बछरु। बछ आ।
"श्चत्सप्सां छः" ३।४० सूत्र से 'त्स' के स्थान पर 'छ' हो गया। यह बछरु का दीर्घ रूप है।

५ **बेरि**—बेला। बेरा। बेरि। समय, पारी। ब्रज में इसी अर्थ में 'बिरियाँ' शब्द का प्रयोग किया जाता है। देखिए—बिहारी "यह बिरियाँ नहि और की; तू करिया वह सोधि।
पाहन नाव चढ़ाइ जिन; कीन्हें पार पयोधि॥"

संभवतः भोजपुरी का यह 'बेरि' शब्द संस्कृत 'बेला' से निकल कर ब्रज के, 'बिरियाँ' से परिवर्तित होकर इस रूप में विद्यमान है।

७ **घिव**—घृत। घी। घिव। 'घिव गागरी' का अर्थ है अत्यन्त प्यारी वस्तु; क्योंकि घी अत्यन्त उपयोगी तथा स्वास्थ्य के लिए बहुमूल्य वस्तु है।

८ **भठिआना**—गड्ढा खोदकर किसी वस्तु को गाड़ देने को 'भठिआना' कहते हैं; अतः इसका लाक्षणिक अर्थ हुआ किसी अच्छी वस्तु को बुरे स्थान में रखना। उदा० "हमरा के तू ए नरक में काहे भठिआवत बाड़"।

(१८)

इस गीत में सौतिया डाह का जो प्रचण्ड तथा उग्ररूप चित्रित किया है, वह हिन्दी साहित्य में तो क्या, संस्कृत साहित्य में भी मिलना कठिन है।

७ **झोंटा-झोंटउवलि**—गन्दे, लम्बे तथा असंस्कृत बालों को झोंटा कहते हैं। स्त्रियाँ जब आपस में झगड़ा करती हैं, तब वे एक दूसरे पर गालियों की वर्षा कर सन्तुष्ट हो जाती हैं; परन्तु उनका यह झगड़ा जब प्रचण्ड रूप धारण कर लेता है, तब भी वे अपढ़ पुरुषों की भाँति लाठी या डण्डे का प्रयोग नहीं करतीं; बल्कि एक दूसरे का झोंटा पकड़ कर खींचने लगती हैं। इसी को 'झोंटा झोंटउवलि" कहते हैं।

१० **उदबासना**—निर्वासित करना। परन्तु इन दोनों शब्दों के अर्थ में अन्तर है। किसी की आज्ञा से दण्ड रूप में देश छोड़ने को निर्वासन कहते हैं। परन्तु, घर की परेशानियों से तग आकर आप ही आप घर छोड़ देने को 'उदबासन' कहते हैं। उदा०—

"हम उदबसला के मारे एहिजा आइल बानी"

१२ **तरकुल**—तालीकुल (ताड़ वृक्षों का समुदाय)। तारीकुल। तरकुल। संस्कृत में 'ताली' ताड़ वृक्ष को कहते हैं। देखिए—कालिदास का रघुवंश। "प्रापतालीवनश्यामं, उपकण्ठं महोदधेः"। खड़ीबोली का ताड़ तथा भोजपुरी का तरकुल इसी ताली (+कुल) से निकला हुआ है।

१२ **खोंता**—घोंसला। यह ठेठ भोजपुरी शब्द है।

(१९)

२ **पाताई**—पत्र। पात। पत्ता। पाताई।

३ **साम**—श्याम। साम। कृष्ण, पति। उदा०

"आजु हमार सामजी परदेसे गइले हा"।

३ **बिलमाना**—बिलम्ब करना। उदा० "तू हमरा के काहे बिलमावत बाड़।"

७ **कलिया**—कलिका। कली। कलिया।

८ **ओही**—उसी। निश्चयवाचक सर्वनाम।

(२०)

१ **गोरी**— गौरी। सुन्दरी स्त्री। गोरिया इसी का दीर्घ रूप है।

२ **बटुआ**—रुपया रखने की छोटी थैली। मनीबेग। इसे बन्टू भी कहते हैं।

(२१)

४ **हनि के मारना**—मुहावरा। जोरों से चोट करना। उदा०—

"राम रावण के हनि के मरले"

(२४)

३ **पतिआना**—विश्वास करना। उदा० "ताहारा बात के हम ना पतिया सकीं।" तुलसीदास-जी ने भी इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया है।

८ **बारी**—छोटा। संस्कृत के 'बाला' शब्द से इसकी निरुक्ति जान पड़ती है।

(२५)

२ **बारना**—जलाना। उदा० "अभी आगि नइखे बाराइल।"

५ **बइठाइबि**—यह 'बैठना' धातु के प्रेरणार्थक क्रिया का उ० पु० ए० व० का रूप है।

७ **दाल**—द्विदल। दल। दाल। चूँकि दाल चना, अरहर, मूँग आदि दो दलों से बनी हैं; अतः इन्हें 'द्विदल' कहते हैं। कालान्तर में 'द्वि' का लोप हो गया और दल दाल के रूप में परिणत हो गया।

७ **पूआ**—पूप। पूआ।

'कगचजतदपयवाँ प्रायो लोपः' से प लोपः।

९ **दुअरा**—द्वार। दुवार। दुआर। दुअरा।

'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' सूत्र से व लोपः।

(२६)

१ **कोइलिया आम**—वह अधपका आम, जो किसी कारण से काला हो जाता है 'कोइलिया आम' कहा जाता है।

४ **धेनु**—गाय। परन्तु दूध देने वाली गाय के लिए ही इस शब्द का विशेष प्रयोग किया जाता है।

७ **टाका टूकि**—दो पैसा को टका या टाका कहते हैं। टूकि का अर्थ टुकड़ा है; अतः टाका टूकि का अर्थ हुआ दो पैसे का टुकड़ा अर्थात् पैसा या अधेला।

६ **काजारा झरि जाई**—काजल का गिर जाना, अर्थात् इतना अधिक रोना, जिससे काजल धुल कर गिर जाय।

(२७)

३ **बलमुआ**—वल्लभ। बालम। बलमुआ। यह बालम का दीर्घ रूप है।

४ **सोहागिन**—सौभाग्यवती, जिसका पति जीता है।

६ **टँकिया**—टंक: टाँकी। टँकिया। टाँकी मारना—मुहावरा। छेनी से पत्थर को खोदने को टाँकी मारना कहते हैं; अतः इसका लाक्षणिक अर्थ हुआ—अमिट रेखा, या नहीं मिटने वाली वस्तु।

८ **फकिरिया**—फ़कीर। फक़ीरी। फकिरिया। फकिरिया लिखल बा—अर्थात् उसके भाग्य में साधु बनना बदा है।

१२ **दिहलू**—'देना' क्रिया का भूतकालिक म० पु० ए० व० का रूप।

(२८)

११ **गोहुँवन**—साँप की एक जाति, जो अत्यन्त विषैली होती है। दूसरी जाति डोण है। यह सर्प पानी में रहता है तथा विषैला नहीं होता।

(२९)

२ **आँचर**—अञ्चल। आँचल। आँचर। साड़ी का वह अग्र भाग, जिसे स्त्रियाँ सिर पर ओढ़ती हैं। इसी आँचर से अँचला शब्द बना है, जिसका अर्थ है वह छोटा वस्त्र, जो उत्तराङ्ग में लपेटा जाय। इसे साधु लोग ही प्रयोग में लाते हैं।

(३०)

२ **बिना**—रहित। अव्यय। यह शुद्ध तत्सम शब्द है।

(३१)

३ **साँवरों**—श्यामल। सामल। साँवर। साँवरो।

६ **चोली का बन्द टूटना**—स्तनों का अत्युन्नत होना।

१० **तिरियवा**—यह तिरिया का दीर्घ रूप है। इसकी निरुक्ति स्त्री शब्द के 'स्त्रिया' रूप से माननी चाहिए।

११ **लोर**—आँसू। यह भोजपुरी का ठेठ शब्द है।

झूमर

(टिप्पणियाँ)

(१)

४ **बात रखना**—मुहावरा। किसी के कहने को मान लेना। उदा० "हमरा आसा बा कि रउरा हमार बात जरूर राखबि।" मन रखना—मुहावरा। किसी की इच्छा के अनुसार काम करना। उदा० "हम अपना मतारी के मन जरूर राखबि"।

(२)

१२ **भुंइयाँ**—भूमि, भूइँ, भुइयाँ, जमीन पर।

(३)

१ **पँइयाँ**—पाद, पाँव, पँइयाँ।

६ **बोली करना**—मुहावरा। मजाक करना। उदा० "ओ गोरी बिटिउवा से तू बोली मति कर"।

(५)

३ **रसिया**—रसिकः। संस्कृत में रसिक गंभीर, शान्त रूप से प्रेम करने वाले पुरुष को कहते हैं; परन्तु भोजपुरी में रसिया का अर्थ उच्छृङ्खल कामी है। पहला शुद्ध प्रेम का पुजारी है, तो दूसरा रूप का लोभी।

७ **मान जाना**—क्रोध छोड़ कर प्रसन्न हो जाना। उदा० "जाये द, अब तू मानिजा"।

(६)

इस गीत में कोई स्त्री अपनी सास और ससुर को गाली देती है; परन्तु पति की बड़ी प्रशंसा करती है। इस गीत में हल्दी के राजा का उल्लेख है; अतः जान पड़ता है, यह गीत ऐतिहासिक है।

२ **जमलका**—पैदा हुआ अर्थात् पुत्र। भोजपुरी में इसके लिए दूसरा शब्द जामल है।

(८)

७ **रंडी**—वेश्या। यह संस्कृत के 'रण्डा' शब्द से निकला हुआ जान पड़ता है, जिसका अर्थ

विधवा है, मालूम होता है कि पहले विधवा स्त्रियाँ ही यह कुकर्म करती थीं। कालान्तर में रण्डा (हिन्दी राँड) का अपभ्रंश रण्डी हो गया।

८ **चाहीं**—'चाहना' क्रिया का आदर-सूचक रूप। खड़ीबोली में इसका रूप चाहिए होगा।

(९)

इस गीत में पति का स्त्री के पैरों पर गिरने का वर्णन है। यद्यपि यह कुछ अनुचित जान पड़ता है; परन्तु क्रीड़ा-विलास में ऐसी बातें औचित्य की सीमा के अन्दर ही समझी जाती हैं। जयदेव ने भी 'गीत गोविन्द' में श्रीकृष्ण का राधा के पैरों पर गिरने का वर्णन किया है। यहाँ पत्नी का पति के ऊपर पूर्ण अधिकार दिखाई पड़ता है।

४ **पाइबि**—'पाना' क्रिया का भविष्यत्काल उ० पु० ए० व० का रूप।

८ **गोड़**—पैर। यह भोजपुरी का ठेठ शब्द है। तुलसीदास ने इसका अनेक स्थानों पर प्रयोग किया है; परन्तु खड़ीबोली में इस शब्द का प्रयोग नहीं पाया जाता। हरिद्वार में भीम के पदों से चिन्हित एक स्थान है, जिसे 'भीम गोड़ा' कहते हैं। क्या यह 'गोड़ा' शब्द इसी भोजपुरी 'गोड़ा' से संबंध तो नहीं रखता?

(१०)

इस गीत में राधा के वियोग का बड़ा सुन्दर वर्णन हुआ है। प्रियतम के वियोग में पागल होना, प्रेम की पराकाष्ठा का सूचक है। राधा कृष्ण के वियोग में पागल हो गयी हैं और इस पागलपन की औषधि लेकर आने के लिए उनसे प्रार्थना करती हैं।

"पिया पिया कहत भइलीं हम पगली;
ओखधिया लेके अब उ अइहें कि ना"।

इस पद में कितनी मार्मिक वेदना, कितना प्रगाढ़ प्रेम तथा कितना मीठा उपालम्भ छिपा हुआ है।

७ **भइली**—'होना' क्रिया के भूतकालिक उ० पु० ए० व० का रूप।

८ **ओखधिया**—औषध, ओखध, ओखधिया।

७ **पगली**—प्रमत्तः। पागर, पगली। संस्कृत में प्रमत्तः, मत्तः, उन्मत्तः आदि पागलों के कई भेद होते हैं, जिनके अर्थ में अन्तर है। हिन्दी में इन सब के लिए 'पागल' ही प्रयोग में आता है।

(११)

८ **तरसना**—किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा से उसके लिए अत्यन्त लालायित होना। इसकी प्रेरणार्थक क्रिया 'तरसना' है। अर्थ—लालायित करना। उदा० "हमरा के काहे के तरसवले बाड़"।

(१२)

इस गीत में रहस्यवाद की एक बाँकी झाँकी हमें देखने को मिलती है। मृत्यु को गौने का रूपक देना, हिन्दी के रहस्यवादी कवियों—कबीर और जायसी—की प्राचीन परम्परा रही है। विशेष कर कबीर ने मृत्यु को गौना बतलाते हुए बड़ा ही अच्छा रूपक बाँधा है। विशेष विवरण के लिए 'भूमिका' भाग १ देखिए।

३ **दिन धराना**—मुहावरा। विवाहिता स्त्री के ससुराल जाने के लिए दिन निश्चित करने को 'दिन धरना या धराना' कहते हैं। उदा० "सहोदरी के दिन धराइल बा, एसी से उरोवत बिआ"।

६ **उदासी छाना**—चित्त का उदास हो जाना। उदा० "लरिका के मरि गइला से उनुकरा मन में उदासी छवले बा"।

९ **बायन**—जब किसी स्त्री के ससुराल या मायके से मिठाई या पकवान आता है, तब वह गाँव भर में बाँटा जाता है। प्रत्येक घर में मिठाई या पकवान का जो भाग दिया जाता है, उसे 'बायन' कहते हैं। इस शब्द का अर्थ हिस्सा या भाग है।

(१३)

८ **फुसिलाइबि**—लालच दिखा कर प्रसन्न करूँगी। बच्चों को मिठाई आदि का लालच दिखा कर प्रसन्न करने को 'फुसलाना' कहते हैं। इस गीत में भावज ने 'फुसलाना' शब्द का जो प्रयोग किया है, वह बड़ा ही सटीक, सारगर्भित तथा व्यंग्य है। उसका आशय यह है कि साड़ी के फटने तथा चोली के बन्धन टूटने से मेरे व्यभिचारिणी होने की आशंका से क्रुद्ध पति को मैं भोग-विलास का मजा चखा कर प्रसन्न कर लूँगी। जिस प्रकार किसी क्रोधित, रोते हुए बच्चे को मिठाई या पैसा देकर शान्त किया जाता है, उसी प्रकार से मैं अपने नादान पति को यह लालच देकर अनुकूल बना लूँगी—उसके क्रोध को शान्त कर दूँगी।

(१५)

६ **चाभेला**—'चाभना' क्रिया का वर्तमान कालिक अ० पु० ए० व० का रूप। इसका अर्थ चूसना है। किसी वस्तु को चबा कर भीतर निगल जाने को खाना कहते हैं; परन्तु उसके रस को चूसने का नाम 'चाभना' है। उदा० "उ आम चाभत बाड़े"।

(१६)

१ **भेंटत चोंटत**—भेंट-मुलाकात करते हुए। 'भेंट और चोट' ये जोड़े शब्द हैं और इसका प्रयोग साथ में ही हुआ करता है। उदा० "ए बबुनी! अब भेंट चोट कइल, जल्दी से असवारी पर चढ़ के बा"।

६ **गोड़ लेपरना**—पैरों पर गिरना या प्रणाम करना ; परन्तु गिरना और लेपरना में अन्तर यह है कि जहाँ लेपरना अत्यन्त विवशता, कातरता और दीनता का सूचक है, वहाँ 'गिरना' शब्द में इस भाव का अभाव है। उदा० "हम ताहार गोड़ लेपरत बानी, हामारा पर अब दाया कर"। इस गीत में 'लेपरना' शब्द का प्रयोग अत्यन्त अभिप्रायपूर्ण है। इसका आशय यह है कि पति इतना कामी है कि वह रुष्ट होता हुआ भी भोग-विलास के आनन्द को नहीं छोड़ सकता ; अतः क्रोधित होने पर भी वह कुछ समय के पश्चात् प्रसन्न हो जायेगा और सुरत का आस्वादन लेने के लिए मेरे पैरों पर स्वयं बार-बार पड़ेगा। इससे पति की कामुकता और स्त्री की दृढ़ता की व्यञ्जना होती है।

(१७)

९ **सुतली**—'सोना' क्रिया का भूतकालिक उ० पु० ब० व० का रूप। भोजपुरी में 'ल' प्रत्यय लगा कर भूतकाल बनाया जाता है।

(१९)

९ **रचि एक**—जरा सा, थोड़ा सा। 'इचि एक' शब्द का प्रयोग भी इसी अर्थ में किया जाता है।

३ **चुर-चार**—बचा-खुचा हिस्सा। इन शब्दों का प्रयोग सदा जोड़े में होता है। उदा० "मिठाई के चुर-चार ए लरिका के खाये के दे द"।

(२९)

२ **ठुनुकना**—धीरे-धीरे रुक-रुक कर रोने को ठुनुकना कहते हैं। बालक इसी प्रकार से रोते हैं ; अतः 'ठुनुकना' का प्रयोग उन्हीं के रोने के लिए किया जाता है। इसी शब्द से पति के नादान होने की ध्वनि निकलती है।

७ **भतार**—भर्ता, भतार। संस्कृत में भरण पोषण करने वाले को 'भर्ता' कहते हैं, जो 'डुभृञ् धारण-पोषणयोः' धातु से बना है। भोजपुरी में 'भतार' शब्द का भी यही अर्थ है।

९ **छीपा बाजे**—थाली का बजाना। हमारे समाज में पुत्र-जन्म के अवसर पर थाली बजाई जाती है, जो प्रसन्नता का सूचक है। परन्तु पुत्री-जन्म के समय यह थाली नहीं बजती; क्योंकि यह समय विषाद का अवसर समझा जाता है। इसी भोजपुरी प्रथा का इस गीत में उल्लेख है। प्राचीन समय में भी पुत्र-जन्म के शुभ अवसर पर मंगल वाद्य बजाने की प्रथा थी। कालिदास ने दिलीप के पुत्र-जन्म के समय वाद्य बजने का वर्णन निम्नांकित शब्दों में किया है—"सुखश्रवा मङ्गलतूर्यनिस्वनाः; प्रमोदनृत्यैः सह वारयोषिताम्। न केवलं सद्मनि मागधीपतेः ; पथि व्यजृम्भन्त दिवौकसामपि॥रघुवंश ३।१९। इसी प्राचीन प्रथा को अक्षुण्ण रखने के लिए प्राचीन संस्कृति के अभिमानी भोजपुरी लोग 'मंगल-वाद्य' के स्थान पर आज भी धनाभाव के कारण थाली बजा कर ही सन्तोष कर लेते हैं।

(२१)

इस गीत में सीता और राम का अर्थ राधा और कृष्ण समझना चाहिए। गीतों में प्रायः राम और कृष्ण में विशेष अन्तर नहीं पाया जाता। राम और सीता में परस्पर पत्र-व्यवहार से पता चलता है कि वयस्क होने पर ही पहले लड़के लड़कियों का विवाह होता था।

८ **करसु**—'करना' धातु के विधि लिङ के अ० पु० ए० ब० का रूप।

(२२)

५ **सी० आर० दास**—देशबन्धु स्वर्गीय चितरञ्जनदास।

३ **मालवी**—पं० मदनमोहन मालवीय।

(२४)

इस गीत में पति के परदेस चले जाने पर स्त्री की व्याकुलता का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है। वह उसके वियोग में पागल हो जाती है और अपनी स्वाभाविक लज्जा को छोड़ कर सास, ननद से पूछती है कि मेरा पति परदेस क्यों चला गया? अन्त में जमुना के तीर पर उसकी बंशी की आवाज पहचान कर उसको सन्तोष होता है।

२ **दरदिया**—दर्द, दरद, दरदिया। यह दरद का दीर्घ रूप है।

२१ **बहुआ**—बधू, बहू, बहुआ।

(२९)

२ **धेनुहिया**—धनुष, धेनुही, धेनुहिया।

४ **नइ नइ जाय**—झुक-झुक जाती है।

(३३)

१ **घइला**—पानी भरने के लिए मिट्टी का बना बड़ा जल-पात्र। इसे गगरी भी कहते हैं। खड़ीबोली में इसे घड़ा कहते हैं। जल भरने के लिए प्रयुक्त लोहे या पीतल के घड़े को 'गगरा' के नाम से पुकारते हैं।

(३४)

६ **कोरवा**—क्रोड़, कोरा, कोरवा।

(३५)

इस गीत में बाल विवाह का वर्णन बड़ा ही सुन्दर सजीव हुआ है। कोई स्त्री कहती है कि "जब मैंने अपने नादान, बालक पति को किसी अपराध पर डाँटा, तो वह डर कर रोने

लगा। तब मैंने उसे यह कह कर कि "मक्का के खेत में भेड़िया बोल रहा है, यदि रोओगे, तो खा जायेगा" शान्त किया। इस झूमर से पता चलता है कि पहले भी आजकल की भाँति बाल विवाह होता था। वर की उम्र इतनी छोटी होती थी कि वे भेड़िया की आवाज को भी सुनकर डर जाते थे।

८ **ई**—यह संकेत वाचक विशेषण है। उदा० "स्कूल में भेड़ियन के चरवाही, ई काम हमरा से न होई।"

१४ **जे**—जो। संबंधकारक में इसका रूप होता है जेकर, जिसका अर्थ है "जिसका"।

(३६)

२ **धप धप**—अत्यन्त स्वच्छ तथा उज्ज्वल। भोजपुरी में स्वच्छता तथा उज्ज्वलता की पराकाष्ठा दिखलाने के लिए 'धप धप' शब्द का प्रयोग किया जाता है। संभवतः स्वच्छता की अतिशयता दिखलाने तथा उस पर जोर देने के कारण 'धप्' शब्द की द्विरुक्ति कर दी जाती है। इसके ठीक विपरीत कालेपन को सूचित करने के लिए 'कुच-कुच' शब्द व्यवहृत होता है। उदा० "कोइलरि" करिया कुचकुच होखेले"। भोजपुरी में 'धप-धप, तथा 'कुच-कुच' शब्दों से स्वच्छता तथा कालिमा की जो भावना उत्पन्न होती है—आँखों के सामने जो दृश्य उपस्थित हो जाता है, वह अत्यन्त स्वच्छ तथा काला कहने से नहीं हो सकता।

(३७)

१९ **अगते**—अग्रतः अगतः, अगते। पहले से। पीलवान् या महावत अपने हाथी को आगे चलने के लिए "अगत अगत" शब्द का प्रयोग करते हैं। संभवतः यह 'अगत' भी इसी अग्रतः का ही अपभ्रंश रूप है, जिसका अर्थ आगे या पहले है।

(३८)

२ **पेहानवा**—पिधान, पिहान, पेहान, पेहनवा। 'खधथभां हः' २।२७ सूत्र से धकारस्य हकारः।

५ **बारह**—द्वादश, बारह, बारह। "उपरि लोपः कगडतदपषसाम्"

३।१ सूत्र से संयुक्त दकारस्य लोपः।

'संज्ञायाञ्च" २।१४ से दकार।

"दशादिषु हः" २।४४ सूत्र से श का ह हो गया।

८ **आगि**—अग्निः, अग्गि, आग, आगि।

(३९)

२ **सोरह**—षोड़श, सोरह।

'षशोः सः' सूत्र से ष का स हो गया।

"दशादिषु हः" '२।४४ सूत्र से श का ह।

'हृस्य च' २।३३ सूत्र से ड का ल।

रलयोरभेदः इस प्रकार से सोलह या सोरह शब्द बना।

(४०)

१ बरोही—वर (वट)+रुह=बरोह या बरोही। वट वृक्ष की शाखाओं से निकल कर नीचे लटकने वाली लम्बी जटाओं को बरोही कहते हैं।

३ सुलछन—सुलक्षण। अच्छे लक्षणों से युक्त अर्थात् मंगल-सूचक। कौओं का बोलना किसी के आने की सूचना का द्योतक है। इसीलिए विरहिणी स्त्रियों का वह बड़ा ही प्यारा पक्षी है। इसी लिए सुन्दर सन्देशा सुनाने के लिए उससे प्रार्थना की जाती है।

(४२)

इस झूमर में हमें वृद्ध विवाह की झाँकी मिलती है। कोई स्त्री शिव की पूजा केवल इसी-लिए करती है कि भगवान् आशुतोष प्रसन्न होकर जब वर देंगे, तब वह यही माँगेगी कि मुझे वयस्क पति मिले। इसीसे उसकी मनोवेदना तथा हृदय के भाव का कुछ अन्दाजा लगाया जा सकता है।

४ बउरहवा—यह 'बउराह' का दीर्घ रूप है, जिसका अर्थ पागल होता है। भोजपुरी में शिव के लिये 'बउराह' विशेषण संभवतः इसलिये लगाया जाता है कि वे भाँग और धतूरा खाकर सदा मस्त रहते हैं और सर्पों की माला पहन कर ताण्डव नृत्य किया करते हैं। नीचे के गीत में 'बउराह' का प्रयोग देखिए—

"गउरा आताना तपवा,
बउरहवे पवलू ना"॥

९ पथल—प्रस्तर, पथल।

'स्तस्य' थः ३।१२ सूत्र से 'स्त' का थ। र लोपः। रलयोरभेदः।

(४३)

१ अँगनइया—प्राङ्गण, आँगन, अँगनइया।

यह आँगन का दीर्घ रूप है।

३ बा—है। उदा० "हमरा पास ई किताब बा"। भोजपुरी में इसी अर्थ में बाटे शब्द का भी प्रयोग होता है। उदा० "ताहारा कीहाँ आँचार बाटे"। क्या 'वृत्' धातु से इसकी निरुक्ति नहीं हो सकती।

(४४)

इसी गीत से नथुनी जैसी तुच्छ वस्तु के भूल जाने के कारण किसी स्त्री को उसकी ननद गाली देती है, सास मारती है तथा पति बाँस की पतली छड़ी से उसकी पीठ-पूजा करता

है। भोजपुरी समाज में आज भी ऐसे अनपढ़ तथा कुपढ़ मनुष्य पाये जाते हैं, जो स्त्रियों के विषय में तुलसीदास की नीचे लिखी चौपाई को कहते आनन्द से फूले नहीं समाते और इसको कार्यरूप में भी परिणत करते हैं—

"शूद्र, गँवार, ढोल, पशु नारी;
ये सब ताड़न के अधिकारी"।

अतः उपर्युक्त वर्णन अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है।

१ **हेराना**—किसी वस्तु का खोजाना अथवा कहीं गिर जाना। उदा० "आजु हमार किताब हेराइ बा"।

इसीसे मिलता-जुलता दूसरा शब्द 'हेरना' है, जिसका अर्थ 'देखना' है। उदा० "तू का हेरत बाड़"।

(४५)

१ **मड़**—मुण्ड, मूड़।

९ **लवलसि**—'लगाना' क्रिया का भूतकालिक अ० पु० ए० व० का रूप।

(४६)

६ **नेहिया**—स्नेह, नेह, नेहिया।

(४७)

१ **माँग टीकना**—माँग में सिन्दूर लगाना।

९ **ओरहन**—उपालम्भ, उलाहना, ओरहन।

(४९)

४ **दलनिया**—दालान का दीर्घ रूप।

(५०)

३ **तोहार**—'तू' म० पु० सर्वनाम का संबंधकारक एकवचन का रूप।

६ **लाची**—इलायची। संस्कृत में इसे 'एला' कहते हैं।

७ **सवतिनियनि**—यह 'सवति' का दीर्घ रूप है। इसी शब्द के संबंधकारक में बहुवचन का यह रूप है।

कजली

(टिप्पणियाँ)

(१)

इस गीत में किसी स्त्री की अटूट पतिभक्ति स्पष्ट रीति से दिखलाई पड़ती है। वह अपने पति के साथ जोगिनी बन कर भी रहना चाहती है और भूख तथा प्यास को तिलांजलि देने के लिए तैयार है। धन्य है ऐसी स्त्रियाँ।

२ **जोगिनिया**—जोगिनी का विस्तृत रूप।

४ **देहिया**—देह का विस्तृत रूप।

४ **भभुतिया**—भभुति का विस्तृत रूप। विभूति, भभूति।

४ **भभूति रमाना**—शरीर में भस्म लगाना। साधू बनना। उदा० "मोहन भभूति रमाई के साधू बनि गइल"।

७ **पिअसिया**—पिआस का विस्तृत रूप।
पिपासा, पिआसा, पिआस।
'कगचजतदपयवां प्रायो लोपः' सूत्र से प लोपः

१० **जिनिगिया**—'जिन्दगी' का विस्तृत रूप।

(२)

इस गीत में चरखा चला कर स्वराज्य पाने का बहुत ही सरल तथा सुगम मार्ग बतलाया गया है। महात्मा गाँधी भी इसी का उपदेश कर रहे हैं। इस गीत में स्त्री का उत्साह तथा उत्कट देश-प्रेम वास्तव में प्रशंसनीय है।

१ **भदउवा**—भादो का विस्तृत रूप। उदा० "आरे करिया रे भदउवा केरी राति, कन्हैयाजी के जनम भयो"।

१ **बरिसतिया**—बरसात—बरसात का विस्तृत रूप।

३ **कतइबो**—कतवाउँगी। 'कातना' क्रिया का णिजन्द का भविष्यत्काल का रूप।

५ **इसस्कूल**—स्कूल। उच्चारण-सौकर्य के लिए स्कूल के पहले 'इस' का आगम हो गया। भाषा-शास्त्र के अनुसार कहते हैं।

८ **अलख जगाना**—गोरखपन्थी साधु 'जय हो अलख निरंजन' कह कर भगवान् का स्मरण करते हैं; अतः 'अलख जगाना' का अर्थ है—भगवान् के ध्यान में लीन होना।

(३)

४ **गोकुल**—मथुरा जिले में जमुना के किनारे एक गाँव, जहाँ श्रीकृष्ण ने नन्द के यहाँ रह कर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत की थी। यहीं उन्होंने ग्वालों के साथ गायों को चराया था। इस गाँव में आज भी कई सुन्दर मन्दिर हैं। जमुना के किनारे पक्के घाट बने हुए हैं, जिससे इस गाँव की शोभा अधिक बढ़ गयी है।

५ **पूतना**—यह एक राक्षसी थी, जिसे कंस ने भेजा था। इसने अपने दोनों स्तनों में विष लगा लिया था और उसे पिलाकर कृष्ण को मार डालना चाहती थी ; परन्तु कृष्ण ने इसकी चालाकी समझ ली और इसका वध कर दिया। इस गीत में पूतना को रानी कहा गया है, जो बिल्कुल ग़लत है।

७ **छाती**—वक्षस्थल ; परन्तु यहाँ स्तन से अभिप्राय है।

१० **भाग**—भाग्य, भाग। 'अधो मनयां' ३।३ सूत्र से य लोपः।

११ **चनिया**—चाँदी का विस्तृत रूप।

११ **दछिनवा**—दछिना का विस्तृत रूप। दक्षिणा, दच्छिना, दछिना।

१२ **दछिनदेस भेजना**—दक्षिण दिशा के स्वामी यमराज माने जाते हैं ; अतः दक्षिण दिशा में भेजने का अर्थ है—जमपुरी को पठाना अर्थात् मार डालना।

(५)

१ **सावन**—श्रावण। सावण, सावन।
'सर्वत्र लवराम्' ३।३ सूत्र से रकारस्य लोपः। णकारस्य नकारः।

२ **बदरिया**—बादर का विस्तृत रूप।

३ **त**—तो।

४ **डगरिया**—डगर का विस्तृत रूप। अर्थ—पगडण्डी।

६ **चकरिया**—चकरी का विस्तृत रूप। जाँत को देहातों में चकरी भी कहते हैं, जो 'चक्र' का अपभ्रंश जान पड़ता है।

(६)

१ **बहेला**—बहती है। भोजपुरी बोली में वर्तमानकाल दो प्रकार से बनाया जाता है। एक तो साधारण धातु से बनता है; जैसे—'बहना' से 'बहत बा'; परन्तु दूसरे प्रकार के वर्तमान-कालिक रूप तैयार करने के लिए 'ल' प्रत्यय का योग आवश्यक है। यदि अन्य पुरुष का साधारण रूप देखे, देखसि, देखसु, या देखस (ए० व०) देखन या देखनि (ब० व०) होता है, तो दूसरा रूप है–देखला, देखेला (ए० व०) देखले, देखलन, देखलनि, या देखाले, देखेलन देखेलनि (ब० व०) उदा० 'उ आदमी हमरा के हमेसा कनखी से देखेला"। इसी 'ल प्रत्ययान्त' देखेला के समान बहेला रूप भी ल प्रत्यय लगाकर बनाया गया है।

१ **जेवना**—जीमना धातु का अर्थ है—भोजन करना ; परन्तु जीमना का प्रयोग आदरसूचक अर्थ में किया जाता है। उदा० 'रउरा जेवें चली ना'। जेवना इसी जीमना क्रिया की संज्ञा (Verbal noun) है।

१ **परोसलों**—परोसा। भोजपुरी में वर्तमानकाल की भाँति भूतकाल बनाने के लिए भी 'ल' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे—देखले, देखलसि या देखलस (ए० व०)—उसने देखा। देखलन या देखलनि (ब० व०) उन्होंने देखा। उदा० "उ रास्ता में जात हमरा के देखलनि हाँ"। दूसरा—'कलसा भरि भरि आरारा चढ़वली केहू नाहीं अलगावे हो रामा" चैता।

५ **चुनि-चुनि**—'चुनना' धातु का पूर्वकालिक क्रिया का रूप। कथन में जोर देने के लिए 'चुनि' की यहाँ द्विरुक्ति की गयी है।

९ **पिया**—प्रियः। 'सर्वत्र लबराम्' ३।३ सूत्र से र लोपः। कोमलता तथा सुकुमारता-सूचक 'आ' प्रत्यय जोड़ा गया है ; जैसे—देवर से देवरा।

(७)

१ **गछिया**—गाँछ का विस्तृत रूप।

२ **पालाना**—वह छोटा झूला, जिसमें बालक को बैठा कर उसे झुलाते हैं।

(८)

अन्य समाजों की भाँति भोजपुरी समाज में भी तिलक तथा दहेज की कुत्सित प्रथा विद्यमान है। लड़कों के विवाह में लड़की वालों से मन चाहा धन ऐंठा जाता है। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि लड़की का जो पिता निर्धन होने के कारण दान-दहेज नहीं दे सकता और इस कारण पुत्री का विवाह किसी अच्छे कुल में नहीं कर सकता, वह अपनी प्राणप्रिय कन्या को किसी गरजू, गरीब आदमी के हाथ बेच देता है। फलस्वरूप यह खरीदी गई कन्या पति की सदा के लिए सम्पत्ति हो जाती है। वह न तो अपने मायके जा सकती है और न कहीं अन्यत्र ही। ऐसी किसी कन्या का वर्णन उपर्युक्त गीत में किया गया है। जब यह स्त्री मायके जाने के लिए कहती है, तो पति कहता है कि जितना रुपया तुम्हें खरीद कर लाने में लगा है, उतना रुपया दे दो, तब तुम घर जाओ। इस पर स्त्री ने बड़ा ही सुन्दर जवाब दिया, जिससे पति निरुत्तर हो गया।

१ **जइबो**—जाइबि। 'जइबो' यह ब्रजभाषा की क्रिया का रूप है। भोजपुरी रूप 'जाइबि' होगा। भोजपुरी में भविष्यकाल की सूचना देने के लिए उत्तम तथा मध्यम पुरुष में 'ब' प्रत्यय लगाया जाता है ; परन्तु अन्य पुरुष में 'ह' प्रत्यय लगाया जाता है ; जैसे—

उ० पु०—हम घरे जाइबि।

म० पु०—तू घरे जइब ? परन्तु अन्य पुरुष में 'उ घरे जइहें' होगा।

२ **बोला ब**—बुला दो। 'बुलाना' क्रिया का आज्ञा कालिक मध्यम पुरुष एक वचन का रूप।

(९)

१ **बरखा**—वर्षा, बरषा, बरखा।

२ **दिनहू**—दिन में भी। भोजपुरी में 'हू' का अर्थ भी होता है। उदा० 'का तूहू काशी जइब'—क्या तुम भी काशी जाओगे।

(१०)

इस गीत में रहस्यवाद की एक सुन्दर झलक दिखाई पड़ती है। आत्मा को सुग्गा तथा शरीर को पिंजड़े का रूपक देना रहस्यवादियों की प्राचीन परम्परा रही है। हिन्दी के सच्चे रहस्यवादी कवि कबीर और जायसी ने इसका बड़ा प्रयोग किया है।

१ **पहिनावे चीर**—मर जाने के बाद मृत शरीर को धोकर उसे नया कपड़ा पहनाते हैं, तब उसे जलाने के लिए श्मशान घाट ले जाते हैं। इसी प्रथा का उल्लेख इस कजली में है।

२ **चारिजना मिलि**— चार आदमी मिल कर। मृतक के शव को चार आदमी मिलकर कन्धे पर उठाते हैं।

(११)

१ **नथियवा**—नथिया का विस्तृत रूप।

२ **महतारी**—माता। ठेठ भोजपुरी शब्द। तुलसीदासजी ने भी रामायण में इस शब्द का अनेक स्थलों पर प्रयोग किया है।
उदा०—"बोली मधुर बचन महतारी"।

४ **दोसर**—दूसरा। पूरणार्थक संख्यावाचक विशेषण।

७ **त**—तो। संभवतः यह 'तो' का संकुचित रूप है ?

७ गोडहरा—पैर में पहनने का कड़ा। 'गोड़' भोजपुरी का ठेठ शब्द है, जिसका अर्थ पैर है। इसीलिए हमारे यहाँ प्रणाम करने को 'गोड़ लागना' कहते हैं। उदा०—"गोड़ लागतानी बाबाजी"। तुलसीदासजी ने भी इस शब्द का प्रयोग रामायण में किया है।

सोहनी

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **पातर**—पतला, दुर्बल, सँकड़ा। दूसरा अर्थ—नीच, तुच्छ या क्षुद्र। इसी से एक भोजपुरी "पानी के पातर" मुहावरा बनता है, जिसका अर्थ है पानी के समान पतला अर्थात् नीच या क्षुद्र। उदा० "उ त पानी के पातर ह, ओकरा बारे में का कहीं"। तीसरा अर्थ—पात्र, भोजन या बर्तन है। उदा० "तू पिटला के पातर हव"। अर्थात् तुम दण्ड के पात्र हो।

१ **कुँअवा**—कूप, कुँआ, कुँअवाँ। यह कुँआ का दीर्घ रूप है। 'कगचजतदपयवाँ प्रायो लोपः' सूत्र से प लोपः।

१ **पाताल**—बहुत दूर चला जाना। भोजपुरी मुहावरा।

खिलना—उदा० "धिया लागि खिलबों पाताल"। यहाँ पर इसका अर्थ है—अधिक दूरी पर प्राप्त होना। उदा० "ए इनार के पानी पाताल में खिलल बा।" अर्थात् पानी बहुत दूरी पर स्थित है।

२ **छयलवा**—छैला का दीर्घ या विस्तृत रूप। नौजवान, सुन्दर तथा शौकीन पुरुष को छैला कहते हैं। इसका प्रयोग बुरे अर्थ में ही होता है। उदा० "तू त आजु छैला बनल बाड़।"

३ **कम कर**—कर्मकारः' कमकार, कमकर। 'सर्वत्र लवराम्' सूत्र से र लोपः। अर्थ—काम को करने वाला। कमकर एक जाति का नाम है, जो पानी भरने, बर्तन मलने आदि काम को करते हैं। सेवावृत्ति का कार्य ही इनका प्रधान कर्म है। इसीलिए संभवतः इनका नाम 'कमकर' पड़ गया है।

३ **यार**—जारः ?

६ **मछरी**—मत्स्य, मच्छ, माँछ, मछरी। 'कगचज.....' म लोपः।

७ **सिर ढारना**—मुहावरा। अर्थ—मत्थे मढ़ना। उदा० "इ पाप हम तहरे सिर पर ढारबि"। इसका प्रयोग सदा बुरे अर्थ में ही होता है।

९ **बुढ़वा**—वृद्धः यह बूढ़ा का दीर्घ रूप है।

११ **भसुरः**—पति का बड़ा भाई। इसकी निरुक्ति का ठीक पता नहीं चलता।

(२)

१ **जंजीरिया**— जंजीर का दीर्घ रूप।

२ **ओसिये**—ओस से। ओस का करण कारक का रूप।

३ **सवति**—सपत्नी, सवति। 'पोवः' सूत्र से प का व। 'अधो मनयां' सूत्र से न लोपः।

३ **सँवलिया**—'साँवली' का दीर्घ रूप।

५ **चानवा**—चन्द्रः, चन्दो, चाँद, चानवा "द्रे रो वा" ३।४ र लोपः। यह चान का दीर्घ रूप है।

६ **भोजपुरवा**—भोजपुर का दीर्घ रूप। भोजपुर डुमराँव राज्य की प्राचीन राजधानी थी। आज कल यह एक छोटे से गाँव के रूप में स्थित है। इसी के नाम से इस प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा का नाम करण 'भोजपुरी' हुआ है।

७ **सान चढ़ाना**—किसी औज़ार को तेज करना। उदा०—"आजु हम अपना छूरी पर सान चढ़वनी हाँ"।

८ **झोंटवा**—झोंटा का दीर्घ रूप। स्त्रियों के असंस्कृत, परुष तथा गंदे सिर के बालों के समुदाय को झोंटा कहते हैं।

१० **ओखरि**—उलूखल, ओखल, ओखर, ओखरि। ल लोपः। रलयोरभेदः।

१० **लाचाकाई**—लचकना का अर्थ झुकना होता है। उदा० 'उनु कर डाड़ लचकता बा'। लचकना इसी की प्रेरणार्थक क्रिया है।

११ **जाँतावा**—यन्त्र, जन्त्र, जाँत, जातावा। यह जाँत का दीर्घ रूप है।

११ **लाहँगा**—घाँघरा। इसके पहनने की प्रथा यू० पी० के पश्चिमी जिलों में बहुत अधिक है।

१ **टुघुरलि**—धीरे-धीरे आकर। टुघुरना धीरे-धीरे चलने को कहते हैं। यह बच्चों की चाल के लिए प्रायः प्रयुक्त होता है। उदा० "का टुघुरल आवत बाड़"।

४ **अस**—समान। भोजपुरी में इसका पर्यायवाची दूसरा शब्द 'अहसन' भी है। संभवतः ये दोनों शब्द संस्कृत के इदृशः से निकले हैं।

६ **सेजरिया**—शय्या, सेज्जा, सेज, सेजरिया। 'ए शय्यादिसु' १।५ सूत्र से अकारस्य एकारः। 'शषोः स' २।४३ सूत्र से शकारस्य सकारः। 'ये शय्याभिमन्युपु जः' ३।१७ से यकारस्य जकारः।

७ **निहुरलि**—झुककर। बुढ़ापा के कारण झुककर चलने को 'निहुरना' कहते हैं।

१० **पीअर**—पीतर, पीअर। पीतर एक धातु को कहते हैं, जो पीली होती है। संभवतः पीअर शब्द उसी से निकला है।

१२ **हरदी**—हरिद्रा, हलद्दा, हलदी, हरदी। "हरिद्रादीनां रो लः" २।३० सूत्र से रेफस्य लकारः "अत् पथि हरिद्रा पृथिवीसु" १।१३ से इकारस्य अकारः "सर्वत्र लवराम्" ३।३ सूत्र से र लोपः। रलयोरभेदः। इस प्रकार हरदी शब्द बना।

१५ **चउथ**—चतुर्थः, चउथ, त लोपः। र लोपः।

१६ **पेट फूलना**—१ गर्भाधान होना। भोजपुरी मुहावरा। उदा० "उनकर भउजी के पेट आजु काल्हु फूलल लउकत बा"। २ किसी बात को गुप्त न रख सकना। उदा० "हम जानत बानी कि बात कहे खातिर ताहार पेट फूलत बा"।

१८ **कुबड़ी**—एक प्रकार का मोटा अन्न, जिसका सत्तू खाने से पेट फूल जाता है। अर्थात् बड़ा हो जाता है।

१८ **सतुआ**—सक्तू, सत्तू, सातू सतुआ। भूना हुआ चना चक्की में पीस देने पर सत्तू कहलाता है। यह भोजपुरी प्रान्त के ग्रामीण लोगों का प्रधान भोजन है। इसे नमक तथा पानी डाल कर पीते तथा खाते हैं। सत्तू खाने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन जान पड़ती है, क्योंकि महाभाष्य में भी इस शब्द का प्रयोग पाया जाता है। उदा० 'सक्तून् पिव देवदत्त !" परन्तु इसमें इतना अन्तर है कि आजकल की भाँति वह सान कर नहीं खाया जाता था वल्कि पीया जाता था। नैषध-चरित में भी इस सक्तू का प्रयोग किया गया है। उदा० "प्रतिदृट्टपथे घरट्टजा पथिकाह्लादनसक्तु सौरभैः। कलहान्न घनान् यदुत्थितानधुनाप्युज्झति घर्घरस्वरः॥

इस श्लोक से पता चलता है कि उस समय भी सक्तू खाया जाता था तथा इतना बारीक तथा सोंधा होता था कि उससे सुगन्धि निकलती थी। सक्तू नमक तथा हरी मिर्च (मरिचा) के साथ खाने से बड़ा ही स्वादिष्ट लगता है। इस विषय में भोजपुरी में एक दोहा अत्यन्त प्रसिद्ध है—

"सीतल प्रसाद, रामरस, लङ्का।
भोजन करहु, छाड़ि सब सङ्का॥"

हमारे यहाँ सत्तू का कितना महत्त्व है, इसका पता इसी से चल सकता है कि 'मेष संक्रान्ति' का नाम ही 'सतुआ संक्रान्ति' पड़ गया है; इस दिन सत्तू तथा कच्चा आम खाने का बड़ा माहात्म्य समझा जाता है॥

(४)

१ **बेइलिया**—बेला का दीर्घ रूप।

४ **कुसुमी**—कुसुम्भी रंग।

५ **बटिया**—बाट (पगडण्डी) का दीर्घ रूप।

७ **नेग**—जनेऊ, विवाह आदि मांगलिक उत्सवों के अवसर पर स्त्रियों को उपहार रूप में आभूषण, वस्त्र, रुपया आदि जो वस्तु मिलती है उसे नेग कहते हैं। घर की लड़कियाँ इस नेग के लिए बड़ी इच्छुक रहती हैं।

१० **बिरहिया**—व्यङ्ग वचन। यह विरह का दीर्घ रूप है। संस्कृत में विरह का अर्थ वियोग होता है; परन्तु भोजपुरी में इसका अर्थ व्यङ्ग वचन है। उदा० "का विरह बोलत बाड़ू"।

१२ **गिरहिया**—यह विरहिया की तुकान्त पुनरावृत्ति है। यह गिरह का दीर्घ रूप है। गिरह बाँधने का अर्थ किसी कार्य को सदा स्मरण रखना है।

१३ **हो राम**—यह पद की पूर्ति के लिए रक्खा गया है। इसका रहना अत्यन्त आवश्यक है; क्योंकि इससे लय में बड़ी सहायता मिलती है।

(५)

१ **दुलरुई**—प्यारी। दुलरुआ का स्त्रीलिङ्ग। दुलार का विशेषण।

२ **लचिया**—लाची का दीर्घ रूप। संस्कृत में इसे 'एला' कहते हैं।

४ **बुटिवाल**—बूँटेदार। किसी वस्त्र पर अंकित गोल चिन्ह को बूँटा कहते हैं। उस चिन्ह से युक्त वस्त्र बुंटिवाल कहा जाता है। भोजपुरी में 'वाला' (रखने वाला, युक्त) के अर्थ में 'वाल' प्रत्यय होता है, जैसे धरी (किनारी, कन्नी) से धरीवाल। उसी प्रकार बूँटा से बुटिवाल।

६ **मुरुझाई**—मूर्छित होकर। मुरुझाना का मौलिक अर्थ सूखना होता है। उदा० "हमार गेना के फूल मुरुझाई गइल"। इससे इसका व्यङ्गार्थ हुआ उदासीन होना, मूर्छित होना।

८ **बथेला**—'बथना' क्रिया का वर्तमानकालिक म० पु० ए० व० का रूप। 'बथना' का अर्थ 'दर्द होना' है। उदा० "आज हमार 'पेट बथत बा'। संभवतः इसकी निरुक्ति संस्कृत के 'व्यथित' शब्द से है।

१३ **साँचावा के ढारल**—साँचे में ढली हुई। भोजपुरी मुहावरा। किसी वस्तु की अप्रतिम सुन्दरता को प्रकट करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है; जैसे—"ओकर सुनराई के बारे में का कहीं, उ त साँचा के ढारलि ह"। चूँकि साँचे में ढाली वस्तु ठीक अनुरूप (न छोटी, न बड़ी) होती है, उसी प्रकार से सुन्दरता में दोषहीन।

१८ **सुरति**—सौन्दर्य। इसकी नि क्ति 'खूबसूरत' से है।

(६)

८ **टिकुलिया**—टिकुली का दीर्घ रूप। स्त्रियों के भाल की बिन्दी को भोजपुरी में टिकुली कहते हैं, यह प्रायः लाल होती है।

८ **कीनि देहु**—खरीद दो। कीनना का अर्थ खरीदना होता है। यह संस्कृत के 'क्री' धातु से निकला है, जिसका रूप 'क्रीणाति' (खरीदता है) होता है। इसलिए जो वस्तु खरीदी जाती है; जैसे—फल, शाक, मिठाई आदि, उसे भोजपुरी में 'केन' कहते हैं, जो संस्कृत के 'क्रेय' का अपभ्रंश रूप है। इस विषय में मजे की बात तो यह है कि संस्कृत के 'वि+क्री' धातु के विक्रीणाति का अपभ्रंश रूप 'बेचना' तो खड़ी बोली में मिलता है; परन्तु 'क्री' धातु के अपभ्रंश रूप का सर्वथा लोप है। इसका अपभ्रंश रूप "कीनना' (खरीदना) के रूप में हमें भोजपुरी बोली में ही मिलती है।

९ **इसर कीरिये**—ईश्वर की शपथ से। संस्कृत में क्रिया शब्द का अर्थ कार्य होता है; परन्तु भोजपुरी में किरिया—जो क्रिया का अपभ्रंश रूप है—का अर्थ शपथ है। यह भाषा-शास्त्र के शब्दों में अर्थ-परिवर्तन (Transference of Meaning) का उदाहरण है। संस्कृत के क्रिया—काम का अर्थ शपथ कैसे हो गया, यह कहना कठिन है। भोजपुरी में प्रयोग—"आँखी कीरिये हम झूठ नइखी कहत"।

१३ **कोख में आग लगाना**—भोजपुरी गाली। अर्थ—पुत्रहीन होना। हमारे यहाँ देहातों में जब स्त्रियाँ आपस में झगड़ा करती हैं तब वे अधिकतर आपस में पति तथा पुत्र को ही गालियाँ देती हैं। इसलिए उनकी गाली का पात्र प्रधानतया माँग (पति) और कोख (पुत्र) होता है। भोजपुरी ग्रामीण स्त्रियाँ अपना झोंटा खोल कर और हाथ फटकारती हुई चण्डी के रूप में जब आपस में झगड़ा करने लगती हैं, तब उनके मुँह से सदा यही गाली निकलती है कि "आरे तोर माँग धोवों" और "तोरा कोखी में आगि लगावों" जिसका अर्थ कि तुम्हारा पति मर जाय और तुम निःसन्तान हो जाओ। स्त्रियाँ 'माँग धोने' के स्थान पर गाली देने के लिए "तोरा माँग में खरी दरां" का भी कभी-कभी प्रयोग करती हैं। इन दोनों गालियों के अन्तर्गत एक भोजपुरी प्रथा की ओर संकेत है। हमारे' यहाँ जब किसी स्त्री का पति मर जाता है, तब मृत्यु के सातवें दिन—जिसे 'सतनहायन' कहते हैं—उस स्त्री के माँग में खली मल-मल करके उसके सिन्दूर को पानी से धोकर मिटा दिया जाता है जिससे उसके सधवापन का चिह्न जाता रहे। चूँकि यह क्रियाँ विधवापन का सूचक है। अतः 'माँग धोना' तथा "माँग में खरी दरना" गाली समझा जाता है।

१५ **फूल फूलना**—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—आनन्दित होना, सुशोभित होना, कृतार्थ होना।

१६ **साँच**—सत्य, सच्च, साँच। ठीक,सत्य, सुन्दर।

(७)

२ **भउजिया**—भातृजाया, भावज, भउजी, भउजिया 'भउजी' का दीर्घ रूप है।

५ **घरिला**—घट, घइला, घरिला।

६ **अलगाना**—अलग-अलग करना ; परन्तु भोजपुरी में इसका अर्थ 'उठाना' होता है। उठाना तथा अलगाना के अर्थ में थोड़ा अन्तर है। किसी वस्तु को स्वयं अथवा किसी की सहायता से सिर पर लेने को 'उठाना' कहते हैं ; परन्तु भार ढोने वाले की असमर्थता की दशा में उसके बोझ में सहायता देकर उसके सिर पर चढ़ाने को 'अलगाना' कहते हैं। इससे भारवाही की असमर्थता की सूचना मिलती है। उदा० "ए भइया ! हमार बोझवा इचि अलगा द"।

१२ **रोवत**—रोना क्रिया का Present Participle.

१५ **अन्हरी**—अन्धः, अन्ह, आँहर' अन्हरी।

१५ **ससुरइतिनि**—जो सधवा स्त्रियाँ मायके से अपनी ससुराल सदा आती जाती रहती हैं उन्हें ससुरइतिनि—ससुराल जाने वाली कहते हैं।

१६ **महुरा**—माहुर अर्थात् विष। क्या इसकी निरुक्ति संस्कृत के मधूक (महुआ) शब्द से तो नहीं है? जिसकी बनी हुई शराब बड़ी तेज तथा विषैली होती है।

१६ **पियइहें**—पिलायेगी। 'पिलाना' क्रिया का भविष्यत्काल का अन्य पुरुष एक वचन का रूप ।

१६ **गोतिनि**—गोत (गोत्र)+इनि=गोतिनि। गोत्रवाली अर्थात् कुटुम्बिनी। यहाँ स्त्रीलिङ्ग अर्थ में 'इनि' प्रत्यय जोड़ा गया है; जैसे—धोबी से धोबिनि आदि।

(८)

१ **सोतिया**—स्रोत, सोत, सोतिया। 'सर्वत्र लवराम्' सूत्र से र लोपः।

४ **डोरि**—रस्सी। उदा० 'इ डोरि बाडा नीमन बा"।

५ **पइसि**—प्रविश्य। पैसना (घुसना) की पूर्वकालिक क्रिया का रूप।

७ **बान्धावा**—बन्धन, बाँध, बाधावा।

९ **घरीनिया**—घरिनी (गृहिणी) का दीर्घरूप।

(९)

इस गीत में पुत्र के न होने से स्त्रियों का दुःख तथा उनकी अलंकार-प्रियता की अच्छी झाँकी हमें देखने को मिलती है। पुत्र के होने पर स्त्री के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए मधु के साथ पीपल पीस कर दिया जाता है। इसका उल्लेख उपर्युक्त गीत में है।

१ **बखानना**—प्रशंसा करना। बखान जिसका अर्थ प्रशंसा है, इसी का Verbal noun है। उदा० "तू का आपन बखान कइले बाड़"।

३ **ठाढ़ होना**—खड़ा होना। उदा० "तू इहवें ठाढ़ रह, हम आवते बानी"। तुलसीदास ने भी कवितावली में इसका प्रयोग किया है—

"जल को गये लच्छन हैं लरिका;
परिखो पिय छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े"।

४ **लहुरा**—लघु, लहु, लहुरा "खघथपधभां हः" २। २७ सूत्र से घकारस्य हकारः।

४ **धूमिल**— धूम्र। धूम+इल्ल=धूमिल। धुँवा से युक्त अर्थात् दुःखी, उदासीन।

६ **सुरुज मनाना**—सूर्य को अर्घ्यादि देकर प्रसन्न करना।

११ **भेसरिया**—भेसर (बेसर) का दीर्घ रूप।

११ **काढ़**—काढ़ना (निकालना) क्रिया का आज्ञा का म० पु० ए० व० का रूप।

१३ **फुफुतिया**—फुफुती का दीर्घ रूप। स्त्रियों की साड़ी के लटकते हुए निचले भाग को फुफुती कहते हैं।

(१०)

१ **रीन्हना**—पकाना। उदा० "हम आज बूँट के साग रीन्ह तानी"।

२ **खिरिया**—खीर (क्षीर) का दीर्घ रूप है। दूध में पके हुए चावल को—जिसमें किसमिस, पिस्ता आदि मिला रहता है—खीर कहते हैं। चूँकि यह क्षीर (दूध) में पकाई जाती है; अतः इसका नाम खीर पड़ गया है।

२ **बखिरिया**—यह 'खिरिया' की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

३ **अँवटना**—किसी द्रव पदार्थ को गर्म करना; परन्तु यह विशेष कर दूध को गर्म करने के लिए ही प्रयुक्त होता है। उदा० "आजु दूध नीमन अँवटाइल नइखे"।

४ **कुल बोरना**—भोजपुरी मुहावरा। अर्थ—कुल, खानदान या वंश को डुबो देना या नष्ट कर देना। उदा० "ए बबुआ ! बुझाता कि तू आपना कुल के बोरि देब"। इसी से कुल के नष्ट करने वाले पुरुष को 'कुल बोरन' कहते हैं। उदा० "इ आपना वंस में कुल बोरन जामल बाड़े" कुल बोरना इसी 'कुल बोरन' का तिरस्कार सूचक रूप है।

५ **अबेरिया**—अ + वेला, अबेल, अबेर। अर्थ—बेला (समय) का अतिक्रमण या राहित्य अर्थात् देर। यह 'अबेर' का दीर्घ रूप है।

६ **बिनुवा**—बीनना का अर्थ चुनना या इकट्ठा करना है। इससे 'बिनुवा' विशेषण बनता है, जिसका अर्थ है एकत्रित किया हुआ ।

७ **ओसिये**—ओस से। ओस के करण कारक का चिन्ह।

९ **रूप**—स्वरूप, सौन्दर्य, शोभा। इसमें 'आ' जोड़ देने पर 'रूपा' का अर्थ चाँदी हो जाता है।

१० **जोतिया**—ज्योति, जोति, जोतिया।

११ **लेखे**—लेखा या लेखे का अर्थ लिए होता है। यह भोजपुरी में सम्प्रदान कारक का चिन्ह है तथा प्रत्यय है (Post suffix) उदा० "हमारा लेखे अब चारु ओर अन्हरिया बा"।

११ **तारावा के धूरि**—मुहावरा। अर्थ—पैर की धूल के समान तुच्छ वस्तु। पैर के नीचे के भाग को तारावा (sole) कहते हैं। उदा० "तू हमरा तारवा के धुरियो नइख ।

(११)

१ **अँकरी**—१—एक घास। २—मिट्टी या पत्थर का अत्यन्त छोटा टुकड़ा, जो अन्न में मिला रहता है। उदा० "ए चाउर में अँकरी बहुत बा।" ३—अँकरे—उस गाय को कहते हैं, जो अभी पहिली बार बच्चा दे चुकी है। उदा० "इ गाइ अभी अँकरे ह"।

२ **झँखना**—दुःख करना। उदा० "अब का झँखत बाड़ । "झँख मारना।—मुहावरा। अर्थ-लाचार होना या विवश होना। उदा० "ताहरा झँख मारि के इ काम करे के होई"।

५ **दुबराना**—दुर्बल, दूबल, दूबर। दुबराना का अर्थ दुर्बल होना या कमजोर होना है। दूबर इसी का विशेषण है।

९ **जउरिया**—जाउर का दीर्घ रूप। दूध में पके हुए चावल को 'जाउर' कहते हैं। परन्तु खीर और 'जावर' में अन्तर यह है कि खीर दूध के अतिरिक्त किसमिस, गरी, पिस्ता, केसर तथा चीनी मिला कर तैयार की जाती है; लेकिन जाउर में दूध की कमी, सूखे मेवे का नितान्त अभाव तथा चीनी के स्थान पर गुड़ मिलाया जाता है। पहला शिष्ट समाज का स्वादिष्ट भोजन है, तो दूसरा देहाती किसानों का खाना।

१२ **अँचवना**—भोजन के उपरान्त जूठे हाथ को धोना। उदा० "रउरा अब अँचवे चलीं ना"। इसकी निरुक्ति संस्कृत के 'आचमन' शब्द से जान पड़ती है।

१३ **कापार घूमना**—मुहावरा। अर्थ—सिर में चक्कर आना। उदा० "आजु हमार कापार घूमत बा"।

१६ **मन मारना**—मुहावरा। उदासीन होना या दुःख को प्राप्त करना। उदा० "तू काहे मन मारि के बइठल बाड़"।

१९ **गुमनिया**—यह गुमान का दीर्घ रूप है। अर्थ—घमण्ड करने वाली।

२२ **करवट लेना**—एक करवट को बदल दूसरी करवट की ओर सोना।

२३ **सुनगुन**—शब्द की आहट, पता, अन्दाजा।

२४ **पूका फारि रोना**—मुहावरा। ज़ोर से चिल्ला कर रोना।

(१२)

ननद और भावज का झगड़ा शाश्वत विरोध का उदाहरण है। गाँवों में शायद ही ऐसा कोई घर हो, जहाँ ननद और भावज में कुछ मन मुटाव न हो। परन्तु इस गीत में ननद और भावज के परस्पर प्रेम का वर्णन है। यह गीत मुगलकाल का जान पड़ता है; क्योंकि इसमें परदेस में गये किसी पुरुष का मुगल की नौकरी करने का वर्णन है।

१ **गइले**—जाना क्रिया का भूतकालिक अन्य० पु० ए० व० का रूप।

४ **उदेसवा**—उद्देश्य, उद्देस, उदेस, उदेसवा। लक्ष्य, खोज या प्राप्ति।

६ **धुंई रमाना**—आग जलाकर तथा भस्म लपेट कर ईश्वर का ध्यान करना।

१२ **सिर उतारना**—मुहावरा। सिर को काट डालना। उदा० "लड़ाई में रामजी रावण के सिर उतार लिहले"।

१४ **नीरिव**—किसी किये गये उपकार के बदले में जो प्रत्युपकार किया जाता है, उसे "नीरिव" कहते हैं ; अतः 'नूनवा के नीरिव' का अर्थ है नमकहलाली या नमक खाने का बदला चुकाना।

१८ **गइलो**—गया हुआ सिन्दूर अर्थात् नष्ट पति। 'सेनुर का जाना'।

सेनुरवा—भोजपुरी मुहावरा है, जिसका अर्थ है पति का मर जाना। उदा० "का कहीं, उनु करा बिटिया के सेनुर चलि गइल"।

(१३)

६ **पसेनवा**—पसेना का दीर्घ रूप।

१० **मिमोरना**—ऐंठना, निचोड़ना। मिमोरना या ममोरना ऐंठना के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला कोमल शब्द है। स्त्रियाँ गाली देते समय इसका बहुत प्रयोग करती हैं। उदा० "खोभा समवनू ताहार मुड़िये ममोरबि"। गाली के साथ संबद्ध होने के कारण इस शब्द का प्रयोग प्रायः बुरे अर्थ में ही होता है।

१२ **मोरंग**—नेपाल की तराई का एक स्थान, जो प्राचीन काल में अत्यन्त प्रसिद्ध था।

(१४)

इस गीत में निर्धन पति-पत्नी का बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। गरीबी आने पर घर का गहना भी बेचना पड़ता है। परन्तु स्त्रियाँ व्यर्थ की मर्यादा के कारण उसे बेचना पसन्द नहीं करतीं।

१ **चढ़ले**—चढ़ना क्रिया का भूतकालिक अ० पु० ए० व० का रूप।

४ **ओड़ना**—किसी वस्तु को ऊपर से लेने के लिए वस्त्र फैलाना।

४ **हेठ**—नीचे। इसीलिए 'हेठे गिरने' का अर्थ है पतनोन्मुख होना।

५ **काँचाका**—कच्चा, काँच, काँचाका।

६ **खरची**—भोजन का अन्न। उदा० "आजु घर के खरची ओराइल बा"। चूँकि अन्न को भोजन के लिए रोज खर्च करते हैं; अतः इसे खरची कहते हैं।

८ **दरवा**—यह दर तथा देयाद का दीर्घ रूप है।

देयदवा—दर देयाद का अर्थ बन्धु-बान्धव होता है। यह शब्द सदा जोड़े में प्रयुक्त होता है।

(१५)

स्त्रियाँ स्वाभिमान तथा मनस्विता की साक्षात् मूर्ति होती हैं। इस गीत में माली के द्वारा तिरस्कृत होने पर वह स्त्री आत्महत्या करने के लिए तैयार है। धन्य हैं ऐसी स्त्रियाँ।

१ **भँवरा**—भौंरा। यह पति के लिए भी प्रयुक्त होता है। यहाँ पर इसका अर्थ पति ही है।

८ **सट-सट**—छड़ी के शरीर पर लगने से जो आवाज होती है, उसे सट-सट कहते हैं। यह ध्वन्यात्मक शब्द है।

९ **मन करना**—हृदय में आना, इच्छा करना। मुहावरा। उदा० "हमारा आम खाये के मन करत बा"।

१० **बूड़ना**—बूड़, बूड, बुडना। अर्थ—डूब जाना। अक्षर के परिवर्तन से भोजपुरी बूडना खड़ी-बोली में 'डूबना' बन जाता है।

११ **लुलुअइहे**—क्रोधित होकर बोलेंगी। 'लुलुआना' का अर्थ क्रोधित होकर, झिझक कर, बोलना होता है। उदा० "उ हमरा के लुलुआवत बाड़े"।

१२ **दइया**—दई का दीर्घ रूप। दई का अर्थ ईश्वर है। उदा० 'दई दई क्यों करत है; दई दई सो कबूलु"—बिहारी।

बिरहा

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **बरज**—वर्ज, बरजना। यह आज्ञा (लोट लकार) में म० पु० ए० व० का रूप है।

२ **जमुनवा**—यह जमुना का दीर्घ रूप है।

३ **रहेला**—रहना। वर्तमानकालिक क्रिया का अ० पु० ए० व०।

३ **गदेलवा**—यह 'गदेला' का दीर्घ रूप है। नादान बच्चे को 'गदेला' कहते हैं। संभवतः यह 'गन्दा' से बना हुआ है। गदेला के अर्थ में गदइल शब्द का भी प्रयोग होता है। उदा० "इ लरिका बाड़ा गदइल बा"।

४ **बटवार**—दुष्ट, नीच तथा किसी की वस्तु को सामने लूटने वाले के अर्थ में 'बटवार' शब्द का प्रयोग होता है। मल्लाह बिना अपना 'खेवा' लिये किसी अत्यन्त गरीब आदमी को भी पार नहीं उतारते, उनकी इसी दुष्टता को द्योतित करने के लिए भोजपुरी में एक कहावत प्रचलित है कि "घटमार बटवार होले स"। ब्रजभाषा में लुटेरा के अर्थ में 'बटपार या बटपरा' शब्द का व्यवहार होता है, जो बटवार का ही रूपान्तर है "सावधान के बटपरा, ये जागत के चोर"—बिहारी।

(२)

१ **सलेहरी**—सहेली, सलेही, सलेहरी। भाषा-शास्त्र का नियम है कि जब एक शब्द से दूसरा शब्द बनता है, तब उसमें प्रायः 'वर्ण व्यत्यय' हो जाता है। यह 'वर्ण व्यत्यय' उच्चारण की सुगमता के लिए भी हुआ करता है। अंग्रेजी में इसको Antithesis कहते हैं। जैसे—आदमी से आमदी, लालटेन से लटलेन, गुपचुप से गुचपुच। इसी प्रकार सल्हेली से वर्ण का परिवर्तन होने से सलेही बना और उससे सलेहरी।

४ **घटिया**—घाट का दीर्घ रूप। यह शब्द कभी-कभी विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है। जैसे—घटिया सोना अर्थात् अशुद्ध या अन्य धातु से मिश्रित सोना। भोजपुरी में घाट का अर्थ कमी या दोष भी होता है। उसी का यह विशेषण है।

(४)

२ **तूर**—त्रुट्, तुड, तोड़ना। आज्ञा काल में म० पु० ए० व० का रूप।

२ **परासवा**—पलाश, परास, परासवा।

२ **पात**—पत्र, पत्त, पात।

३ **बचिहैं**—बचना का भविष्यत्काल अ० पु० ए० ब० का रूप।

(५)

इस विरहे में ग्वालिनों ने श्रीकृष्ण को अच्छा उल्लू बनाया है। श्रीकृष्ण ने जब उनको दही देने के लिए तंग किया, तब उन्होंने उनसे दही खाने के लिए पलाश का पत्ता तोड़ कर लाने के लिए कहा। गोपियों की बातों पर विश्वास कर सरल-हृदय कृष्ण ज्यों ही पत्ता लाने के लिए गए, त्यों ही चट से नाव में बैठ वे जमुना के उस पार चली गयीं तथा उन्हें मज़ाक में गालियाँ देने लगीं।

३ **अँगूठा दिखाना**—मुहावरा। किसी के पंजे से छूट जाने पर उसका तिरस्कार करना। साहुकार को रुपया न चुकाना या छल को समझ कर निकल जाना। "मोहन साहु के अँगूठा दिखा देले"।

४ **मुवनू**—भोजपुरी गाली। मुवना या मुवनू (मृतक) दोनों शब्दों का प्रयोग होता है। उदा० "अरे ई मुवना के बाड़ा दुःख देत बा"

४ **लुवाठ खाना**—भोजपुरी गाली। जली हुई या जलती हुई लकड़ी को लुवाठ कहते हैं। इसीलिए क्रोध में आने पर स्त्रियाँ कहती हैं कि "ताहरा के एहि लुवाठे से मारबि"। अतः लुवाठ का व्यङ्ग अर्थ हुआ—ऐसा कोई भोज्य पदार्थ, जो जलकर खाने के अयोग्य हो गया हो। उदा० 'दालि जरि के लुवाठ हो गइलि"। इसी कारण 'लुवाठ खाना' गाली है। उदा० "आव ना, भात के लुवाठन खा"।।

(६)

२ **चारावाह**—गाय को चराने वाला। भोजपुरी में 'कर्तरि प्रत्यय 'वाह' भी लगता है। जैसे हर से हरवाह।

४ **घटवार**—घाटवाला अर्थात् मल्लाह।

(७)

१ **मकोइया**—मकोई का दीर्घ रूप। यह एक छोटा-सा फल है, जो खाने में स्वादिष्ट मालूम होता है।

२ **तूर**—'तोड़ना' क्रिया के तले लकार (आज्ञा) का म० पु० ए० ब० का रूप।

४ **तले**—तक। उदा० "कब तले रउरा आइबि" इसका दूसरा अर्थ 'नीचे' भी होता है। उदा० "जमुना का तीरवा कदम गँछिया, ताहि तले मुरली बजावेले मोहन रसिया"

(९)

३ **सरनिया**—यह सरन (=शरण) का दीर्घ रूप है।

(१०)

इस बिरहे में कोई पति अपनी स्त्री से कह रहा है कि यदि तुम मुझे उत्साहित करोगी, तो मैं ललकार कर बिरहा गाऊँगा। वास्तव में बिरहा सुनने का मजा तभी आता है, जब अहीर आपस में गाने की प्रतियोगिता करते हैं अथवा किसी अहीर को बिरहा गाने के लिए उत्साहित किया जाता है।

१ **जहिया**— यदा, जहा, जहिया।

४ **गइतीं**—हेतुहेतुमद्भूत के 'उ० पु० ए० व० का रूप।

(११)

इस गीत में स्त्री के अंगों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। शरीर की सब उपमाएँ ग्रामीण होने के कारण बड़ी ही स्वाभाविक जान पड़ती हैं। यह बिरहा बिल्कुल ठे तथा खालिस भोजपुरी का उत्तम उदाहरण है।

१ **हुरवा**—हूरवा का दीर्घ रूप। लाठी के निचले, मोटे गोलाकार भाग को हूरा कहते हैं।

२ **पूअवा**—पूव, पूआ, पूअवा।

३ **बाड़ू**—सहायक क्रिया 'बा' का वर्तमानकालिक म० पु० ए० व० का रूप।

४ **सुकुवार**—सुकुमार।

(१२)

१ **अँखीजनी**—अंजन हारी। आँख में पलकों के पास एक छोटा-सा घाव हो जाता है, उसे अँखीजनी कहते हैं। कभी कभी बड़ा हो जाने पर यह बहुत कष्ट देता है। गर्म पानी से रुई डाल कर सेंकने से यह दब जाता है।

२ **बरतोर**—किसी बाल के टूट जाने पर शरीर में जो घाव उत्पन्न होता है, उसे 'बरतोर' कहते हैं। यह घाव बड़ा ही कष्टदायक होता है। इसके छू जाने पर अत्यन्त पीड़ा होती है तथा सारा अंग सिहर उठता है। इसीलिए तुलसीदासजी ने इसकी दुःखदता का वर्णन करते हुए लिखा है कि—

'जिमि छुइ गयेउ घाव बरतोरू"।

संभवतः यह शब्द 'बाल तोड़' का अपभ्रंश रूप है। चूँकि यह रोग बाल के टूटने से उत्पन्न होता है; अतः इसे 'बरतोर' कहते हैं।

४ **मीसबि**—'मीसना' क्रिया के भविष्यत्कालीन उ० पु० ए० व० का रूप। धीरे-धीरे किसी वस्तु अथवा विशेषतः शरीर के अंगों को दबाने को मीसना कहते हैं। उदा० "हम राउर गोड़ जरूर मीसबि"

(१३)

१ **काजारा**—कज्जल, काजल, काजारा।

(१४)

१ **अनसाइल**—क्रोधित। 'अनसाना' क्रिया का अर्थ किसी कार्य से घबड़ा कर झुंझलाना है। इसमें व्याकुलता तथा क्रोध दोनों का भाव लिया हुआ है। खड़ीबोली में इस अर्थ का द्योतक कोई शब्द नहीं है। उदा०—

'इ काम कलूला से हमार मन अनसाइ गइल बा"।

३ **लुरिया**—यह 'लूरि' का दीर्घ रूप है। लूरया लूरि का प्रधान अर्थ तमीज है। उदा० "अभी ताहरा धोतिओ पहिने के लूरि नइखे"। कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग उपाय या ढङ्ग के अर्थ में भी होता है। उदा० "ए काम करे के हमरा लूरि नइखे मालूम"।

(१६)

२ **इनरा**—इन्द्र, इन्दर, इन्नर, इनार, इनरा। वैदिक काल में 'इन्द्र' जल को देने वाला देवता माना जाता था। चूँकि कुँआ भी जल देता है अतः बहुत संभव है; कि 'इन्द्र' के कार्य की समता को ध्यान में रख कर कुएँ को भी इन्द्र कहने लगे हों। इसी 'इन्द्र' शब्द से बिगड़ते हुए 'इनार' शब्द बना है। बहुत से विद्वान् 'इन्द्रागार' से इस शब्द की निरुक्ति मानते हैं; परन्तु मेरी समझ में यह ठीक नहीं है। भाषा-शास्त्र के अनुसार भी 'इन्द्र' से ही 'इनार' की निरुक्ति सिद्ध होती है न कि 'इन्द्रागार' से।

४ **बिटोर**—संज्ञा—संग्रह, इ-वढ़ा। यह बिटोरना क्रिया का संज्ञा रूप है।

(१७)

इस बिरहे में किसी स्त्री की युवास्था के क्रमिक ह्रास का वर्णन है। युवावस्था के ढलने के साथ ही स्त्रियों के कुचों की उन्नति में कमी तथा कठोरता का ह्रास होने लगता है। इसी बात को लक्षित करती स्त्री अपने पति से कहती है कि तुमने किस मूहूर्त (अशुभ समय) में मेरे स्तनों का स्पर्श किया था, जिससे उनकी उन्नति के बदले अवनति हो रही है। बड़ा ही सुन्दर भाव है। यह व्यंग्य कितना गम्भीर है।

३ **सइतिया**—साइत या शुभ मुहूर्त को साइत कहते हैं। देहातों में जब कोई काम करना होता है, तब पंडित जी से मुहूर्त पूछा जाता है और तभी कोई काम प्रारम्भ किया जाता है।

(१८)

इस बिरहे में कोई स्त्री अपने पति से चरवाह और छोटे देवर को घर से बाहर भेज कर एकान्त में आनन्द लूटने के लिए प्रार्थना कर रही है। भोजपुरी में एक कहावत प्रसिद्ध है—"अकेला घरे छकेला मारल" संभवतः इसी कहावत को ध्यान में रख कर यह बिरहा लिखा गया है।

४ **मजा उड़ाना**—मुहावरा। आनन्द उठाना। उदा० 'खूब माजा उड़ावत बाड़ा वें'

(१९)

१ **टुकुर-टुकुर**—लगातार एक टक किसी वस्तु को देखने को 'टुकुर-टुकुर चितवना' कहते हैं। संभवतः 'टक-टक' शब्द से ही 'टुकुर-टुकुर' की उत्पत्ति हुई है। उदा० "का टुकुर-टुकुर चितवत बाड़ू"।

१ **चिरइया**=चिड़िया, चिरिया, चिरइया। यह चिरिया का दीर्घ रूप है।

४ **अगोरि**—पूर्वकालिक क्रिया। किसी वस्तु की रक्षा करने के विचार से चिरकाल तक किसी स्थान पर बैठने को 'अगोरना' कहते हैं। जब कोई बच्चा पैदा होता है, तब उस घर की बूढ़ी स्त्री सूतिकागृह के द्वार पर सदा बैठी रहती है, जिससे कोई भूत, दूत भीतर प्रवेश न करें। 'अगोरना' का प्रयोग विशेषतया इसी प्रसंग में होता है। उदा० "मोहन के महतारी आजु काल सउरि अगोरत बाड़ी"।

(२०)

३ **घिउवा**—घृत, घी, घिउवा।

३ **ओरइले**—ओराना क्रिया का भूतकालिक अ० पु० ए० व० का रूप। किसी वस्तु की कमी होने अथवा घटने को 'ओराना' कहते हैं। उदा० "धन के ओरइला पर बाड़ा दुःख होला।"

४ **गारि**=गालिका, गाली, गारी।

(२१)

इस गीत में किसी स्त्री के ससुराल जाने का वर्णन है। बिदाई का समाचार सुनकर उसका शरीर सिहर उठता है। वास्तव में बिदाई के समय स्त्रियों को कितना कष्ट होता है, इसका अनुभव भी करना कठिन है।

१ **कानी**—कनिष्ठिका। हाथ में सबसे छोटी अँगुली को कानी अँगुली कहते हैं। भोजपुरी में कानी का दूसरा अर्थ एक आँख वाली भी है। यह शब्द संस्कृत के काणः, कान, कानी से बना है। उदा—"इ कानी मेहरारू बाड़ा झगड़ा करेले"।

३ **चरचा चालना** .—किसी आदमी या वस्तु के विषय में बात छेड़ देना।

४ **घहराई**—कम्पन पैदा होता है। शरीर में रोमांच होने को सिहराना कहते हैं। सिहराना प्रेम या दुःख की पूर्व पीठिका है, तो घहराना उत्तर पीठिका।

(२२)

१ **फुलानिया**—बिरहा का एक प्रसिद्ध गवैया।

२ **रसड़ा**—यू० पी० के बलिया जिले की एक तहसील। यह एक सुन्दर कस्बा है। यहाँ एक हाईस्कूल, अस्पताल तथा पुलिस स्टेशन है।

३ **रेपुरा**—यू० पी० के बलिया जिले का एक प्रसिद्ध गाँव। यह स्थान, हल्दीगाँव के पास है तथा यहाँ 'धनदेव' नामक बिरहा, लोरकी तथा विजयमल का सुप्रसिद्ध गवैया रहता है।

(२३)

२ **लरकोरि**—लड़का क्रोड़ अर्थात् गोदी में बालक वाली स्त्री। जिस स्त्री को अभी हाल ही में लड़का पैदा हुआ रहता है, उसे 'लरकोरि' कहते हैं। जब लड़का बारह दिन का हो जाता है, तब उसका 'बरही' नामक संस्कार होता है। उस दिन लड़के की माता को नया पीला वस्त्र पहनाया जाता है और ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। इसीलिए इस बिरहे में 'लरकोरि' स्त्री का पीला वस्त्र पहनने का वर्णन है।

३ **मथवा बन्धाई**—स्त्रियाँ जब अपने सिर के बालों में तेल लगा कर कङ्घी करती हैं और उन्हें एकत्रित करके वेणी के रूप में गूथती हैं, तब उसे 'माथ बन्हाना' कहते हैं। इस समय वे अपने भाल में रोरी का एक बूना (विन्दु) भी लगाती हैं।

बुनेलवा—बूना वाला अर्थात् विन्दु से युक्त। स्त्रियाँ अपने शरीर को सुसज्जित करते समय भाल में एक लाल टीका लगा लेती हैं, जिसे बूना या विन्दु कहते हैं। अतः बुनेलवा का अर्थ हुआ बूनावाली (बूना+वाली)—विन्दु से युक्त स्त्री।

(२४)

१ **उड़ावे**—इस बिरहे में पतंग उड़ाने का उल्लेख है। प्रायः पुरुष ही पतंग उड़ाया करते हैं।

पतरंगवा—परन्तु प्रेमाधिक्य को दिखलाने के लिए इस बिरहे में स्त्री की सहायता से पतंग उड़ाने का वर्णन है, जो बहुत कम पाया जाता है। यहाँ पर पुरुष के प्रेम को पतंग का रूपक दिया गया है, और स्त्री की प्रीति उस चंचल, सदा इधर-उधर घूमने वाली पतंग को नियम (कन्ट्रोल) में रखने वाली डोरी मानी गयी है। यह रूपक बहुत ही सुन्दर है; परन्तु साङ्ग नहीं है।

प्रेम को पतंग का रूपक देना, हिन्दी कवियों की प्राचीन परम्परा रही है। बिहारी तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी ऐसा किया है। बिहारीलाल कहते हैं—"कहा भयो जो बीछुरे, मो मन तो मन साथ। उड़ी जात कितहू गुड़ी, तऊ उड़ायक हाथ"। बिहारी ने दोहे के छोटे आकार के कारण अपने विषय को पल्लवित नहीं किया है; परन्तु भारतेन्दु जी ने प्रेम-पतंग के जिस साङ्ग रूपक का वर्णन किया है, वह हमारी आँखों के सामने एक चित्र-सा चित्रित कर देता है। आप लिखते हैं—

"रूप दिखाइ कै मोल लियो मन, बाल गुड़ी बहु रङ्ग न जोरी। चाहत भाँझो दियो

'हरिश्चन्द' जू; लै अपने गुन की रसडोरी। फेरि कै नैन परे तन पै; बदनामी की तापै लगाई पुँछोटी। प्रीति की चङ्ग उमङ्ग चढ़ाय कै; सो हरि हाय बढ़ाय कै तोरी ॥१॥"

—प्रेम-माधुरी, ८६

(२५)

इस बिरहे में पति की मूर्खता तथा उसकी काम-वासना का उल्लेख है। स्त्री कहती है कि मैंने पति से परदेस से कजली के दिन अर्थात् सावन के मनभावन महीने में आने को कहा था; परन्तु वह इतना मूर्ख तथा दगाबाज है कि वह उस समय न आकर पिड़िया के दिन अर्थात् कार्तिक के पवित्र मास में आया। स्त्री का आशय यह है कि सावन का सुन्दर महीना भोग-विलास के लिए उपयुक्त होता है और कार्तिक का पुरुषोत्तम मास स्नान, दान तथा व्रत आदि करने के लिए उचित है। परन्तु मूर्ख पति इस बात को नहीं समझता। उसने मेरे पिड़िया के व्रत को—जिस कारण मैं उपवास व्रत कर रही थी—अपनी वासना की तृप्ति कर नष्ट कर दिया। पति की ऐसी विषय-तृष्णा में मैं आग लगा दूँगी।

२ **पिड़िया**—कार्तिक के महीने में लड़कियाँ अपने भाई की कुशलता तथा मङ्गल-कामना के लिए पिड़िया का व्रत करती हैं। उसी का यह उल्लेख है।

४ **डलबों**—'डालना' का भविष्यत्काल में उ० पु० ए० व० का रूप।

४ **टिसुनवा**—तृष्णा, तन्हा, तिसुना, टिसुना, टिसुनवा, से रुण कान्ह हो गया 'ऋतो अत्' सूत्र से ऋ का अ हो गया। यह टिसुना का दीर्घ रूप है।

कोंहार के गीत

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **सवतिया**—सपत्नी, सपति, सवति, सवतिया, 'पोबः' सूत्र से प का न हो गया है

५ **बतीसी**—दाँत, क्योंकि ये बत्तीस होते हैं।

९ **रहनिया**—रास्ता, मार्ग, आचरण।

१२ **भतिया**—भक्तम्, भक्त, भात, भतिया।

१४ **हाथ फेरना**—मुहावरा। आशीर्वाद देना। किसी अभिप्राय से टटोलना।

(२)

४ **सतुआ**—सक्तु, सत्तू, सातू, सतुआ।

७ **रहलीं**—'रहन' का भूतकालिक रूप।

८ **मचान**—मञ्च, माँच, मचान।

(३)

१ **के**—कः, कौन।

२ **जइहें**—यास्यति, भविष्यत्काल का रूप।

३ **उरबी**—'पुरुबी' की तुकान्त पुनरावृत्ति है।

१२ **पियवा**—प्रियः, पिय, पियवा।

(४)

५ **अइसन**—इदृशः ?

६ **दुबिया**—दूर्वा, दूबा, दूब, दुबिया।

(५)

१ **चिरिय**—'चीरना' की पूर्वकालिक क्रिया।

७ **बिहरे**—विदीर्ण, विद्दिर, विहिर, बिहरना।

१ **हटिया**—हाटकः, हाट, हटिया।

(६)

६ **संकर**—शर्करा, शक्करा, शक्कर, संकर।

१ **मातल**—मत्तः, मात, मातल।

१२ **नीमन**—निम्नः, निमन, नीमन। यह Transfered meaning का उदाहरण है। सं० निम्न का अर्थ नीचा है ; परन्तु भोजपुरी 'नीमन' का अर्थ अच्छा सुन्दर है।

(७)

१ **चानावा**—चणकः, चनकः, चन, चना।

२ **घोन सारि ?**—घन शाला, घनसार, घोनसारि।

३ **दबिला**—दर्वी भाड़ में पड़े हुए अन्न को चलाने के लिए लोहे की मोटी कलछुल।

४ **मुरछाई**—मूर्छितः।

६ **बथेला**—व्यथितः।

११ **चान**—चन्द्रः, चान्द, चान।

१२ **हियरा**—हृदय, हिरदय, हियर, हियरा, 'विपर्यय, के नियमानुसार 'र' तथा 'य' वर्णों का विपर्यय हो जाने से 'हियरा' बना है।

निर्गुन

(टिप्पणियाँ)

(१)

इस निर्गुन से रहस्यवाद की एक बाँकी झाँकी हमें देखने को मिलती है। मृत्यु को गौने का रूपक देना और जीवात्मा तथा परमात्मा के मिलने का पति-पत्नी के समागम से तुलना करना, सच्चे रहस्य-वादियों की प्राचीन परम्परा रही है। कबीर ने अपनी कविता में इस प्रकार के अनेक रूपक बाँधे हैं। इस निर्गुन में मनुष्य की मृत्यु का गौने से रूपक बाँधा गया है। संसार के समस्त जीव पत्नी हैं और परमात्मा पति है। जब पति रुष्ट हो जाता है, तब गौना कराने ससुराल नहीं जाता। उसी प्रकार से परमात्मा जीव के पापों से रुष्ट होकर उससे मिलना नहीं चाहता। गौना होने के बाद स्त्री पालकी पर चलती है तथा उसे कँहार ढोते हैं। यहाँ कच्चे बाँस की बनी हुई रन्थी (विमान) ही पालकी है और यम के दूत ही कँहार है। जिस प्रकार स्त्री के ससुराल चले जाने पर मायके में स्थापित सारा स्नेह, प्रेम नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार शरीर से जीव के निकल जाने पर सारा धन-धान्य बेकार है। कितना सुन्दर साङ्ग रूपक है।

रुसल—रुष्ट, रूसट, रूठल, रूसल।

लफाई—बढ़ाकर। इस शब्द के अर्थ में एक विशेष भाव छिपा हुआ है। किसी व्यक्ति को हाथ बढ़ाकर पकड़ने को 'हाथ लफाना' कहते हैं। इससे ग्रहीता की कर्मण्यता तथा पकड़े गये व्यक्ति की असमर्थता सूचित होती है। यह रक्षा करने के भाव का द्योतक है। जैसे—

"गंगाजी में बहुत आदमी के हम हाथ लफाई के पकड़ि लिहनी"॥

(२)

ठाठाकाल—शुष्क ?

मड़इया—मण्डप।

हिरि—यह फिरि के साथ तुकान्त पुनरावृत्ति के लिए आया है; जैसे—लोटा, ओटा।

ताकना—देखना। परन्तु देखने और ताकने के अर्थ में थोड़ा अन्तर है। बिना किसी अभिप्राय के साधारण रीति से दृष्टिपात को 'देखना' कहते हैं; परन्तु कामुक चेष्टा अथवा observation की दृष्टि से साभिप्राय दृष्टिपात को 'ताकना' कहते हैं; जैसे—"उ लवणा के नाती हमरा के ताकत रहल हा" अर्थात् कामुक दृष्टि से वह दुष्ट युवक मुझे देख रहा था।

(३)

इस निर्गुन पद में पति की वह आदर्श पत्नी-भक्ति दिखाई पड़ती है, जिसका मिलना 'भोजपुरी समाज' में तो दूर रहा, भारतीय समाज में भी अत्यन्त कठिन है। भोजपुरी समाज में स्त्रियाँ प्रायः (विशेषकर देहातों में) उपेक्षा की दृष्टि से देखी जाती हैं; अतः ऐसी दशा में पति का यह पत्नी-प्रेम एक अनहोनी घटना है। इस गीत में पति का जो उत्कट स्त्री-प्रेम दिखलाया गया है, वह संस्कृत-साहित्य में भी अपना सानी नहीं रखता है। हाँ, कालिदास ने रघुवंश के अज-विलाप में अवश्य यह आदर्श दिखलाया है। वहाँ अज अपनी पत्नी इन्दुमती की मृत्यु के कारण फूट-फूट कर रोते हैं और अपने शरीर को भी उसके साथ जला देना चाहते हैं।

"बिलपन्निति कोसलाधिपः, करुणार्थग्रथितं प्रियां प्रति।
अकरोत् पृथिवीरुहानपि, स्रुत. शाखारसवाष्पदूषितान्" ॥८।१७॥

इस गीत में पति के द्वारा पत्नी की स्मृति में उसके दाँतों का यन्त्र मढ़ाना तथा बालों का चँवर डुलाना आदर्श प्रेम का द्योतक है।

इमिलिया—यह इमली का दीर्घ रूप है। भोजपुरी में कोमलता तथा सुकुमारता का भाव लाने के लिए प्रायः 'इया' प्रत्यय जोड़ देते हैं; जैसे—सेज—सेजिया, केम—केमिया। बटोही—बटोहिया, भाइ—भइया।

पाकल—पक्का। पाकव। पाकल।

मन मारना—यह भोजपुरी बोली का एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है उदासीन होना। जैसे "का मन मारि के बइठल बाड़"

मन का मतलबी—यह भी भोजपुरी बोली का एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है स्वतन्त्र; स्वेच्छानुसार काम करने वाला। जैसे "तोहार लड़िका अपना मन के मतलबी ह" भोजपुरी में मतलब का अर्थ स्वार्थ नहीं, बल्कि इच्छा है। यह Transfered meaning का अच्छा उदाहरण है।

देखुअ—दृष्टः। देखना का भूतकाल म० पु० का रूप।

(४)

बछरू—वत्स। बसरा। बछरा। बछरू।

कपार—कापाल। कपाल। कपार। कापार रलयोरभेदः।

टनकना—सिर का ज़ोर से दुःखना।

सनेसवा—सन्देश। सनेश। सनेस में कोमलता, सुकुमारता, तथा प्रेम का भाव द्योतित करने के लिए भोजपुरी में 'अवा' या 'वा' प्रत्यय भी जोड़ते हैं; जैसे—पिय से पियवा। अतः सनेस से सनेसवा रूप बन गया।

अवहना—शरीर में दुःख व्याप्त करने को 'अवहना' कहते हैं। अंग्रेजी में इसका पर्यायवाची "feel" है।

(५)

छूछ—शुष्क ?

दिन काटना—यह मुहावरा है। कष्टपूर्वक समय व्यतीत करने को 'दिन काटना' कहते हैं; जैसे—'कवनो तरी से दिन काटत बानी'।

(६)

रगरा मचाना—यह मुहावरा है। इसका अर्थ है झगड़ा करना; परन्तु इन दोनों के अर्थ में थोड़ा भेद है। आकस्मिक विरोध को झगड़ा कहते हैं। परन्तु जानबूझ कर, हठ वश, केवल तंग करने के लिए उत्पन्न किये विरोध को 'रगरा' कहते हैं। इसी लिए देहातों में कहते हैं "ई झगरा ना ह रगरा ह"। कृष्णजी गोपियों को केवल परेशान करने के लिए उन्हें तंग करते थे; अतः इसे 'रगरा मचाना' कहा गया है।

लाहारलि—लड़के पत्थर के टुकड़े को इस प्रकार से फेंकते हैं, जिससे वह डूबने के पहले कई बार जल को स्पर्श करता हुआ दूर तक चला जाता है। इसे 'लाहारलि'' या 'छिछली' काटना कहते हैं।

७

सबदिया—शब्द। शबद। सबद। सबदिया कोमलता का भाव लाने के लिए 'इया' प्रत्यय 'शब्द' में जोड़ दिया गया है।

फेरू—फिर। फेर। फेरू।

डगरिया—पगडण्डी।

(१०)

पहिले ओहिले—सर्व प्रथम। इन दोनों शब्दों का प्रयोग सदा जोड़े में होता है।

(११)

नेहिया—स्नेह। सनेह। नेह। नेहिया।

धुई रमाना—मुहावरा। ध्यान मग्न होना। कठिन तपस्या के द्वारा किसी वस्तु की प्राप्ति का अथक उद्योग।

देश भक्ति

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **तपना**—गर्म होना, चमकना, प्रभुत्व जमाना। उदा० "अकबर के राज में मानसिंह के बाड़ा तपल रहे"।

(२)

१ **गुनि-गुनि**—सोचकर। 'गुनना' का पूर्वकालिक क्रिया का रूप। जोर देने के लिए दो बार 'गुनि-गुनि' का प्रयोग किया गया है।

१ **बिहरति**—फटती है। संस्कृत में 'विहर' का अर्थ है विहार करना, आनन्द लेना परन्तु भोजपुरी में 'बिहरना' का अर्थ फटना है। जैसे—'इ हाड़ी बिहरि गइल बिआ'। संस्कृत से भोजपुरी में इस अर्थ परिवर्तन को भाषा-शास्त्र में 'अर्थ-परिवर्तन' 'Transference of meaning' कहते हैं।

२ **देस लागि**—देश के लिए। भोजपुरी में यह सम्प्रदान कारक का 'परसर्ग' (Post suffix) है जिसका अर्थ लिए हैं। उदा० "तोहरा लागि उड़वो अकास" बनारसी बोली में इसके लिए 'बदे' का प्रयोग किया जाता है। उदा० "तोहरे बदे हम जान देबे के तैयार हईं।" दूसरा उदा० "अपने के लोई लिहली है, कमरी भी बा धइल।

"किनली है रजा, लाल दुसाला तोरे बदे॥"

तेग अली—बदमाश-दर्पण।

५ **जालवा**—जाल (बन्धन) का दीर्घ रूप।

(३)

१ **सजन**—सज्जन, साजन, सजन।

ज लोपः, सकारस्य दीर्घः।

४ **कलेसवा**—क्लेश, कलेश, कलेस, कलेसवा।

५ **लाज**—लज्जा, लाज। जलोपः, दीर्घः।

८ **हटिहैं**—दूर होना, नष्ट हो जाना।

१ **परदेसिया**—परदेस में रहने वाला। इसी का पर्यायी दूसरा शब्द बिदेसिया है; परन्तु परदेस और बिदेश में थोड़ा अन्तर है। दोनों का शाब्दिक अर्थ एक होते हुए, भी जिस अर्थ

में ये शब्द प्रयोग में आते हैं, उनमें भेद है। अपने स्थान को छोड़ कर कोई दूसरा शहर या प्रान्त परदेस कहलाता है। जैसे बलिया में रहने वाले के लिए प्रयाग या पटना परदेस है (बिदेस नहीं) परन्तु बलिया वासी के लिए इङ्गलैण्ड या जर्मनी **विदेश** है। गीतों में इसका भेद स्पष्ट है। जब कोई पुरुष मोरंग या 'पूरबी बनिजिया' को जाता है तो उसकी स्त्री उसे परदेस (पर प्रान्त) जाना कहती है। उदा० "मोर बालम गइले **परदेसवा** मोहि के छोड़ि गइले हो"। परन्तु जब दूसरे देश का अर्थ है तब 'विदेशी' का प्रयोग किया गया है। उदा०—

'अब तोर नइया ना बचिहें **विदेसिया**'।

१० **रामनाम 'सत'**—हमारे यहाँ यह प्रथा है कि जब मृतक का शव ले जाते हैं, तब 'रामनाम सत्य है' कहते जाते हैं। महाराष्ट्र देश में इस समय 'श्रीराम, श्रीराम' कहते हैं तथा बंगाल में संभवतः 'हरिबोल, हरिबोल' पुकारते हैं; अतएव 'रामनाम सत होना' का अर्थ है—किसी वस्तु का नाश हो जाना, क्षय होना।

(५)

१ **कंगाल**—कंकालः, कंगाल। कंकाल का अर्थ है ठठरी, अस्थिपंजर। इसीलिए कंगाल उस आदमी को कहते हैं, जिसके शरीर में भोजन के अभाव से केवल ठठरी ही शेष हो।

५ **अशोक**—सुप्रसिद्ध मौर्य सम्राट् जिसने संसार में बौद्धधर्म का प्रचार किया।

५ **चन्द्रगुप्त**—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य। गुप्त-वंश का सब से प्रतापी सम्राट्, जिसने शकों को परास्त कर भारत से भगा दिया था।

पाराती

(टिप्पणियाँ)

(१)

१ **दुआर**—द्वार, दुआर।

व का उ सम्प्रसारण हो गया है।

२ **नून**—लवण।

२ **विदुर**—एक बार भगवान् ने विदुरजी के यहाँ प्रेमवश बिना नमक का ही भोजन ग्रहण किया था। इसी पौराणिक कथा की ओर इस गीत में संकेत है।

२ **जेवना**—'जेंवना' क्रिया है, जिसका अर्थ भोजन करना है। इसका Verbal noun **जेवँना** (संज्ञा) भी 'जेंवना' ही है।

उदा०—"सोने के थारी में जेंवना परोसलों"।

३ **सबरी**—यह एक भक्त तपस्विनी थी, जिसके यहाँ बनवास में रामचन्द्र ने जाकर जूठे बेर ग्रहण किये थे। रामायण में इसका बड़ा ही सुन्दर प्रसंग आया है।

३ **चीखि-चीखि**—'चखना या स्वाद लेना। पूर्वकालिक क्रिया का रूप।

४ **खम्भा**—स्तम्भः। खम्भः। खम्भा।

'स्तम्भे खः ३।१४ सूत्र से स्तकारस्य खकारः।

४ **हरनाकुस**—हिरण्यकश्यपु। भक्त प्रह्लाद इसी दुष्ट का पुत्र था। राम का नाम लेने से यह बहुत क्रोधित होता था। एक बार इसने पूछा कि राम क्या सर्वत्र है? प्रह्लाद ने कहा—हाँ। क्या खम्भे में भी? उत्तर—हाँ। इस पर भगवान् खम्भे को तोड़ कर नृसिंहावतार रूप में प्रकट हुए और नीच हिरण्यकश्यपु का बध कर डाला।

५ **बीनि-बीनि**—चुन-चुन करके। यह भोजपुरी का ठेठ शब्द है। तुलसीदास ने विनय-पत्रिका में इस शब्द का प्रयोग किया है। उदा०—

"बिनि बिनि अधम उधारे"

(२)

१ **फेरना**—उलटना-पुलटना। घोड़े को सवारी करने के बाद इधर-उधर घुमाना। खुसरो की पान के फेरने के विषय में एक उक्ति भी है, जिसमें दो प्रश्नों का उत्तर एक ही शब्द में है; जैसे—पान सड़ा क्यों? घोड़ा अड़ा क्यों?

उत्तर—फेरा न था।

४ **होइबि**—हूँगा। होना क्रिया का भविष्यत्काल का रूप।

(३)

इस गीत में स्त्री का अपने पति पर प्रगाढ़ प्रेम दिखलाई पड़ता है। वह पति के परदेस जाने के पहले ही उसके आने की अवधि पूछने लगती है तथा उसके परदेस से लौटने पर की जाने वाली तैयारी का वर्णन करती है।

१ **अइब**—'आना' क्रिया का भविष्यत्काल म० पु० का रूप।
३ **पिउब**—'पीना' " " " "
३ **बिरवा**—बीड़ा। पान का बीड़ा।

(४)

३ **असनान**—स्नान। इसका दूसरा अपभ्रंश रूप 'सनान' भी होता है। भाषा-शास्त्र के नियमानुसार संयुक्ताक्षरों के पहले—जब वे किसी शब्द के आदि में हों—उच्चारण की सुगमता के लिए प्रायः 'अ' या 'इ' का आगम हो जाता है। जैसे—स्कूल से इसकूल ; स्टेशन से इस्टेशन। इसी प्रकार से स्नान से असनान बन गया है।
५ **अपसोच**—अफसोस, दुःख।
९ **प्रीरिति**—प्रीति। प तथा त के बीच में 'इ' का आगम हो गया है।
१२ **डोलना**—बिना किसी उद्देश्य के घूमना। उदा०
"का बने बने डोलत बाड़" यहाँ पर जानकी का डोलना इसलिए कहा गया है कि भावी पति की चिन्ता से वे बेसुध, व्याकुल हो घूम रही हैं।

(५)

३ **धाउ**—धाव, दौड़ो।
९ **अइली**—आगता। 'आना' क्रिया का भूतकालिक अन्य पुरुष एक वचन का रूप।
१९ **गंगालाभ होना**—मरने के बाद मनुष्य जलाने के लिए प्रायः गंगा के तट पर पहुँचाया जाता है। अतः गंगा-लाभ का अर्थ मृत्यु है। उदा० "मोहन के मतारी के गंगालाभ हो गइल"
१९ **बाप**—पिता। उदा० "तोहरा बाप के का हम कवनो नोकर हईं"। इसका विशेषण बपौती है। प्रयोग—बपौती धन। तुलसीदास ने इस ठेठ भोजपुरी शब्द का प्रयोग इस प्रकार अपनी 'कवितावली' में किया है—

"राजिव लोचन राम चले"
तजि बाप को राज बटाउ की नाँई॥"

२६ **हाँकार**—बुलाहट, पुकार। हँकारना का अर्थ बुलाना होता है, उसी की यह संज्ञा (Verbal noun) है। संभवतः यह संस्कृत के 'ह्वे' धातु से निकला है।

३३ **आग लगना**—नष्ट हो जाना। भोजपुरी मुहावरा। उदा० "जे गरीब के दान ना देला, अइसन आदमी के धन में आगि लगि जाउ।"

३४ **जरि जाना**—खाक में मिल जाना। भोजपुरी मुहावरा।
उदा०—"तोहरा निअर कपूत जरि जाउ"।

३४ **वधू कारन बे**—स्त्री के कारण से। चूँकि कैकेयी के कारण ही सारा उपद्रव हुआ था; अतः प्रत्येक पद में यही टेक लाई गई है।

(६)

इस गीत में श्रीकृष्ण के द्वारा चीर-हरण का दृश्य आँखों के सामने चित्रित दिखाई पड़ता है। कृष्ण का गोपियों के चीर को चुरा कर कदम्ब पर चढ़ना तथा उनकी चीर दे देने की प्रार्थना, सचमुच बड़ी ही मनोहारिणी है। ऐसा सुन्दर वर्णन संभवतः 'सूर-सागर' में ही मिल सकता है, अन्यत्र नहीं। गोपियों की फौजदारी करने की धमकी वस्तुतः बड़ी ही लाजवाब है।

१ **बिसरत**—विस्मरण। भूल जाना। उदा० "ताहार बात हमरा बिसरत नइखे"।

६ **बहतर**—वस्त्र। बसतर। बहतर।

७ **कदम**—कदम्बः। ब लोपः।

१४ **अदित**—आदित्यः। आदित। अदित।
'अधो मनयाम्' ३।२ सूत्र से य लोपः।

१८ **फउदरिया**—फौजदारी का विस्तृत रूप।

२० **चिरउरी**—चिरौरी, प्रार्थना। ठेठ शब्द। उदा०
"हम तोहरा से कातना चिरउरी कहनी कि का कहीं"।

(७)

१ **उपजेला**—'उपजना' क्रिया का वर्तमानकाल का रूप।

३ **हवे**—है।

(९)

२ **मिसिरी**—मिश्री का अपभ्रंश रूप।

४ **दहिया**—दधि, दहि, दहिया।
'खघथधभां हः' २।२७ सूत्र से धस्य हः।

(१०)

४ **दस**—दश, दस। 'शषोः सः' २।४३ सूत्र से शकारस्य सकारः।

५ **सिंघासन**—सिंहासन:, सिंघासन।
५ **चँवर**—चामर, चमर, चँवर।

(११)

१ **दुहवैया**—दूहने वाला। भोजपुरी में कर्ता अर्थ में 'इया' प्रत्यय लगता है; जैसे—चरवैया' पुछवैया तथा नचवैया आदि।
३ **चुचुकी पारना**—पुचकारना। जब बच्चे रोते हैं, या सोना चाहते हैं, तो माता 'चू-चू' शब्द कर उन्हें मनाती है या सुलाती है।
इसी को चुचुकारना या पुचकारना कहते हैं। यह प्रेम-सूचक शब्द है।

(१३)

१ **अधपैया**—अर्धपाद। आधा पाव। कुछ परिमाण वाची शब्दों के अन्त इसी प्रकार 'ऐया' लगे हुए मिलते है; जैसे—'सवैया', अढ़ैया (ढ़ाई सेर)
२ **दुहाइबि**—'दुहना' धातु के भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष एक वचन के णिजन्त का रूप।
३ **लिहले**—'लेना' क्रिया का भूतकालिक अन्यपुरुष एक वचन का रूप।
३ **लकुड़िया**—लकुट या लकुड़ का विस्तृत रूप।

(१४)

१ **दुलरुवा**—प्यारा, पुत्र। 'दुलारना'' क्रिया का अर्थ है—प्यार करना। यह उसी की संज्ञा या Verbal noun है।
६ **केवार**—कपाट, कवाट, कवार, केवार।

(१५)

इस गीत में गोपियों का कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम दिखलाई पड़ता है। कृष्ण गोपियों को कितना भी तंग करते हैं; परन्तु वे उन्हें प्यार करने से बाज नहीं आतीं। कृष्ण का भी गोपियों के ऊपर सच्चा प्रेम है। जब गोपियाँ कृष्ण का मुख देखने के लिए आग्रह करती हैं तथा मुख न दिखलाने पर रोने लगती हैं, तब श्रीकृष्ण झट अपना मुँह निकाल उन्हें दिखला देते हैं। इस प्रकार गोपी-कृष्ण के प्रेम का सुन्दर रूप हम इस गीत में पाते हैं।

६ **रारि**—हठपूर्वक, जानबूझ के झगड़ा मचाना।
८ **मुंह देखना**—प्रातःकाल में किसी अच्छे आदमी का मुंह देखना शकुन माना जाता है। इसीलिए ग्वालिनें कृष्ण का मुँह देखने जाती हैं, जिससे उनके दही की बिक्री अधिक हो।

१० **बिआई**—पैदा करेगी। 'बिआना' का कार्य पैदा करना है; परन्तु दोनों के अर्थ में अन्तर है। गाय या भैंस के बच्चा देने को 'बिआना' कहते हैं। परन्तु स्त्री के प्रसव को पैदा करना कहते हैं। 'बिआना' 'Contraction of meaning अर्थ-संकोच का उदाहरण है। तुलसीदास ने भी इसका प्रयोग किया है—

"नतरु बाँझ, बरु वाद बिआनी"—रामायण।

भजन

(टिप्पणियाँ)

(१)

बेसाहू—खरीदना।

(२)

कानी कौड़ी—यह मुहावरा है। एक आँख से हीन व्यक्ति को काना कहते हैं। अतः कानी कौड़ी का अर्थ हुआ विकृत कौड़ी। यह अत्यन्त निर्धनता का सूचक है। जैसे—"ओकरा पास कानी कौड़ीओ नइखे'।

(३)

गोनि—जब नाव भार से बहुत भारी हो जाती है, तब दो-तीन मल्लाह नाव के मस्तूल को रस्सी से बाँध कर, जमीन पर उतर कर, किनारे-किनारे जिस रस्सी के सहारे नाव को खींचते हैं, उसे 'गोनि' कहते हैं। यह पतली तथा बड़ी मजबूत होती है।

(५)

नगरिया—नगर का विस्तृत रूप (lengthened form) है। इसमें भी 'इया' प्रत्यय जोड़ा गया है।

बिरिजा—व्रज। वृज। बिरिज। बिरिजा।

(६)

सँवारना—श्रृंगार।

मुरुकना—टूटना ; परन्तु दोनों शब्दों के अर्थ में अन्तर है। शरीर की हड्डी के दो टूक हो जाने को टूटना कहते हैं ; परन्तु हड्डी के अपने स्थान से स्थानान्तरित हो जाने को 'मुरुकना' कहते हैं। संभवतः हिन्दी में इसका कोई पर्याय शब्द नहीं है।

बेंचि-खोंचि—बिल्कुल बेच देना। ये दोनों शब्द साथ प्रयुक्त होते हैं।

(७)

छान—पैरों में बाँधा गया रस्सी का बन्धन। यह गदहे, घोड़े के अगले दोनों पैरों को पास पास जुटा कर बाँध दिया जाता है।

तड़वाही—शीघ्रता से। तड़ का अर्थ शीघ्र होता है; जैसे—"उ तड़ से खावा फानि गइले"
बयद—वैद्य। वैद। वयद।

(८)

आकास खिलना—मुहावरा। आकाश में लुप्त हो जाना।
दह—हृद। हृद। दह। 'विपर्यय' के नियमानुसार 'हृद' के अक्षरों के उलट जाने से 'दह' बन गया है।
सून—शून्य। शून। सून।

(११)

निनरिया—निद्रा। निदर। निनर। निनरिया।
पहर—प्रहर। पहर।
चउथा—चतुर्थः। चउथः। चउथा।

(१२)

मँझधार—मध्यधारा। मझधारा। मँझधार।

(१५)

अइले—आगतः। 'आना' का भूतकालिक रूप। भूतकाल बनाने के लिए 'ल' प्रत्यय लगा है।
छपित—क्षिप्तः। छपितः छपित 'क्षिप्तः' का अर्थ दूर फेंका गया है; अतः 'छपित' का अर्थ हुआ दूर 'फेंकी गयी वस्तु' अथवा जो आँखों से ओझल हो।
अलिये—यह गलिये तुकान्त की पुनरावृत्ति है।
पात—पत्र। पत्तर। पतर। पात।

विविध

टिप्पणियाँ

(१)

गीतों में तुक बहुत कम मिलती है। इस गीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें आदि से अन्त तक तुक मिलती गई है। बघनवा, नयनवा मधुबनवा पढ़ने में बहुत सुन्दर मालूम पड़ते हैं। इसी से इस गीत की लय बड़ी श्रोत्र-सुखद है। एक के बाद दूसरी लय की गति द्रुत होती हुई ऊँची उठती जाती है।

१ **गुजरिया**—गुर्जर, गुजर, गुजरिया। सर्वत्र लवराप' सूत्र से र लोपः। गुजरिया गूजरी का——जो गूजर शब्द का स्त्रीलिंग है—दीर्घ रूप है। आजकल गूजर ग्वाले-अहीर को कहते हैं। ये लोग यू० पी० के पश्चिमी जिलों में, विशेष कर सहारनपुर, मेरठ, मुजफ्फर-नगर में पाये जाते हैं। इनका प्राचीन नाम गुर्जर है। ये भारतीय इतिहास में गुर्जर प्रतिहार के नाम से विख्यात हैं। इन्होंने गुजरात में बहुत दिनों तक राज किया। संभवतः इन्हीं शासकों के नाम के कारण उस सारे प्रान्त का नाम 'गुजरात' पड़ गया।

२ **चुनरिया**—चूनरी का दीर्घ रूप। चूनरी उस वस्त्र को कहते हैं, जो कई रँगों में रंगा गया हो।

३ **रसे-रसे**—धीरे-धीरे। यह बड़ा मीठा तथा कर्ण मृदु शब्द है।

५ **गोहनवाँ**—गृह, गेह, गेहन, गोहनवा।

६ **उमड़ल जोबन**—बढ़ते हुए स्तन। अथवा प्रतिदिन बढ़ती हुई जवानी।

७ **मगही का पान**—मगहिया पान प्रसिद्ध है। यह पीला होता तथा खाने में बड़ा स्वादिष्ट लगता है।

११ **रसिया**—प्रेमी, रसिक। उदा०

"रसिया ले गइले गले का हार"

(२)

१ **पुरवा**—पूरब की ओर से बहने वाली हवा। इसको पुरवैया भी कहते हैं। गीतों में इसी शब्द का प्रयोग अधिकतर पाया जाता है। उदा०—

"बाव बहेला पुरवैया ए सजनी;
करिसिनि लागेला आगि हो"।

इसी प्रकार पच्छिम से बहने वाली हवा को पछुवा कहते हैं। पुरवैया हवा समुद्र की ओर से चलने के कारण शीतल तथा मन्द होती है; परन्तु पछुवा हवा रेगिस्तान से होकर आने से शुष्क तथा तेज बहती है। इसीलिए इस गीत में पुरवैया का धीरे-धीरे (फुरुफुरु) बहना तथा पछुवा का जोरों से बहना (बहेला ललकार) कहा गया है। पुरुवा हवा शीतल तथा मन्द होने के कारण शरीर को स्पर्श करने पर बड़ा सुख देती है; अतएव भोग-विलास के अवसर पर सदा पुरुवा हवा चलने का वर्णन पाया जाता है। परन्तु, संस्कृत के किसी कवि ने पुरुवा हवा की बड़ी निन्दा की है, जो सत्य होने पर एकांगी है।

उदा०—

"अङ्गानि मोटयति बारि करोत्यपेयं,
शुष्कान्यपि व्यथयति व्रण मण्डलानि।
यद्देशजः पवन एव करोति बाधां,
तद्देशजाः किमु नरा सुखदा भवन्ति"॥

२ **पलंग**—पर्यङ्कः।

१४ **बिसराई**—विस्मृतः भुलवा दिया।

११ **कुतुबन**—एक प्रतिभा-सम्पन्न भोजपुरी कवि। इसके जन्म-काल तथा वंश के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। नाम से मालूम होता है कि संभवतः यह मुसलमान था। जैसे बुलाकीदास का नाम 'चेता' बनाने वालों में सर्वश्रेष्ठ है, वैसे ही बारहमासा लिखने वालों में कुतुबन बहुत आदरणीय होंगे। इन्होंने कुछ बारहमासे बहुत ही सुन्दर लिखे हैं। दुःख है, इनके बारहमासों का अधिक संग्रह मैं नहीं कर सका हूँ। इनकी विशेषता यह है कि इनके सब बारहमासों के अन्त में तुक पाई जाती है।

(३)

१ **मउवतिया**—मृत्यु, मौत, मौवत, मउवतिया। यह "मौत" का दीर्घरूप है।

५ **दूब की छारी**—दूब की छड़ी। दूब कोमलता का प्रतीक है; अतः दूब की छड़ी से अभिप्राय है, कोई कोमल तथा पतली और मृदुल वस्तु। भाव यह है कि पति बाँस की छड़ी से तो कौन कहे, दूब जैसी मुलायम वस्तु की छड़ी से भी कभी मुझे नहीं छूता था।

६ **संघतिया**—संगति, संघति, संघतिया।

८ **जम्भु**—यम, जम, जम्भू।

(४)

इस गीत में पत्नी का प्रेम पति के प्रति झलक रहा है। उसका भाई अपने बहनोई को मारने के लिए तैयार है; परन्तु उसकी बहन उसे मना करती है और कहती है कि इस सुग्गे (पति) को मत मारो, नहीं तो इसके बिना मेरा कहीं भी आश्रय नहीं है। 'एहि

सुगवा के घरे बास हमार रे' में कितनी मार्मिक वेदना, हृदय की कितनी गहरी टीस छिपी पड़ी है। सचमुच पति ही स्त्री का एकमात्र अवलम्ब है।

१ रातुल--रक्तम्, रत्तम्, रात, रातुल।

रात का अर्थ लाल होता है। जायसी ने भी इसी अर्थ में इसका प्रयोग किया है। उदा०

"जब लग रुधिर न धोवौ,
तब लग होय न रात"।

रातुल शब्द इसी रात का विशेषण है।

३ चउपरिया—चौपाल, चौपार, चउरिया।

९ सुहवा—सुभगा, सुहगा, सुहवा।

९ सुहवा—सुभगा, सुहगा, सुहवा।

१७ जनि—मत। निषेधात्मक अव्यय। उदा०—

"तू इ काम जानि कर।" तुलसीदास जी ने भी इस शब्द का प्रयोग किया है; जैसे—
"जनि सपनेहुँ इनके बस होहू"।—रामायण

गीतों की अनुक्रमणिका

घ

च

भ

म

र

ल

स

ह